प्रूफादि शोधन करने कराने में अनवकाश होने पर भी बड़ी सहायता दी है। तथापि, भूल रह जाना मनुष्य की स्वभावही है अस्तु पुस्तक के अन्त में शुद्धाशुद्धपत्र भी लगवा दिया है। पाठकों को उचित है कि पढ़ने से पहले उसके अनुसार शुद्ध करलें। इति शिवम्।

सुखानन्द त्रिपाठी।

---

## व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोध की विषयानुक्रमणिका।

### अथ प्रथमोभागः।



### अथ द्वितीयो भागः।

S. N.......
LIBRARY.

# PREFACE.

The practice of speaking Sanskrit in India gradually declined during the Mohamadan rule until it became a dead language. Our humble thanks for its revival are specially due to our late lamented Queen-Empress as well as to the present King-Emperor, whose reigns have been marked with the resuscitation of this Aryan language. Now it would be well if every Indian who has any knowledge of Hindi acquired a practical knowledge of Sanskrit himself and teach it to his children before they join an English school. The profoundness of the Sanskrit language is generally admitted. Practical proficiency in Sanskrit is rather difficult to acquire. To supply this long-felt want is the object of the present work. It consits of two parts, I and II of 25 and 18 chapters respectively a brief sketch of which is given below.

The plan adopted is as follows:—

First, the Heading denotes the subjet matter. Secondly, important words of daily use are given. Lastly come the illustrations of Hindi and Sanskrit sentences in common use. The headings will, it is hoped, give the reader an adequate idea of the work. Great pains have been taken to collect and classify, as far as possible, all the important words in daily use with their Sanskrit equivalents. The substantives are put in the singular nominative to show their genders, as it is very difficult to determine gender in Sanskrit. In the same way the roots are given in the present tense (लट्) third person singular (अन्यपुरुष एकवचन) to show their conjugation etc. (गणपद इत्यादि).

There are already several Sanskrit translation books in the market. In my humble opinion, however, they are not

of much help to a student who wishes to acquire a practical knowledge of Sanskrit within a short period It is hoped that the student, who reads this work with a '*Guru*' or studies it himself carefully, will acquire some knowledge of colloquial Sanskrit Sanskrit proverbs letter writing religious principles and duties as well as the mode of Sanskrit translation together with the peculiarities of Sanskrit Grammar

No other Sanskrit translation book will be required upto the Matriculation and F A standards by a student who has thoroughly gone through this book after a preliminary study of my 'A GUIDE TO ANGLO SANSKRIT CONVERSATION FOR BEGINNERS' At first I intended writing this work in Anglo Sanskrit as I have done with my book for beginners referred to above, but considering that it would then be useful to English knowing students only, I have written it in the present form so that it may be useful to all

I offer a few hints for the benefit of teachers The chapters in the second part dealing with grammatical constructions should be gone through before taking up the book regularly from the beginning and in the first part the words with their synonyms in each chapter should be carefully mastered before using them in sentences

I conclude these remarks with a list of the chapters in both the parts

The names of the chapters in the first part are as follows —(1) Limbs parts etc of the human body (2) Clothes of every kind (3) Ornaments (4) House hold things (5) Vessels and the chief parts of a house (6) Cattle and conveyances (7) Birds (8) Poisonous animals and insects (9) Animals of the forest (10) Animals living in water (11) Things required for students in a school (12) Eatables (13) Words showing family relationships (14)

Caste and occupation of Indians. (15) Certain trees and flowers and Sanskrit numeration. (16) Heavenly bodies and divisions of day and night. (17) Heavenly beings and things and some mysteries of our religion. (18) Kinds of disease. (19) Medicines and weights. (20) Adjectives. (21) Remaining verbs. (22) Definitions of Sanskrit Grammar with English equivalents. (23) Miscellaneous sentences, idiomatic sentences, famous Sanskrit proverbs, shlokas for entertainment on occasions of marriage gatherings. (24) Addresses, letters, applications etc. and the important Sanskrit Metres. (25) The duties to be performed by a man during day and night.

The names of the chapters of the Second part are as follows :—

(1) The rules and examples of the Conjunction of Sanskrit letters (सन्धि). (2) Declension of great many words in common use in all the cases with their derivations (व्युत्पत्ति). (3) Indeclinables with their meanings (अव्ययार्थ). (4) Feminine affixes [स्त्रीप्रत्यय]. (5) Cases of nouns and pronouns with their uses [कारक]. (6) Rules, uses and examples of compounds [समास]. (7) Rules for nominal affixes [तद्धित]. (8) Conjugation [धातुरूप] of many important verbs with all constructions [प्रक्रियारूप] required. (9) Causative verbs [णिजन्त]. (10) Desiderative verbs [सन्नन्त]. (11) Frequentative verbs [यङन्त]. (12) Frequentative verbs rejecting यङ् [यङ्लुगन्त]. (13) Nominal verbs [नामधातु]. (14) Rules for the use of Parasmaipada [परस्मैपद प्रक्रिया]. (15) Rules for the use of [आत्मनेपद प्रक्रिया]. (16) Rules of intransitive passive [भावकर्म] and Passive and Active voices [कर्मकर्तृप्रक्रिया] (17) Rules for the use of Tense and Mood [लकारार्थ प्रक्रिया]. (18) Verbal affixes [कृत्प्रत्यय].

ALIGARH, Sept. 1907. S. N. TRIPATHI.

# विद्यार्थियों को परमोपयोगी पुस्तकें।

सदाचार सोपान—इसमें लड़कों को माता, पिता और गुरू की भक्ति करने के लाभ और प्रातःकाल से लेकर सोने तक के धर्म कर्म बड़ी उत्तमता से बताये गये हैं। मूल्य ~)

धर्मसोपान—इसमें धर्म के समस्त तत्व वेदादि धर्मग्रन्थों के अनुकूल ऐसी सुगमता से लिखे गये हैं कि थोड़ेही काल में धर्म का पूर्ण ज्ञान हो जाता है। मूल्य ।)

ब्रह्मचर्याश्रम—ब्रह्मचर्य की विद्यार्थियों का बड़ीही आवश्यकता है। इसी पर संसार के धर्मादि और परलोक की उन्नति निर्भर है। इसके पढ़ने से विद्यार्थियों का बहुत उपकार होगा। मूल्य ।) मात्र

चाणक्यनीतिदर्पण—यह नीति का सर्वोत्तम ग्रन्थ है। आजकल भारतवासी मात्र को इसका पढ़ना आवश्यक है इसीसे इसको एक विद्वान पण्डित के द्वारा सुन्दर हिन्दी टीका बनवा कर प्रकाशित कराई है। मूल श्लोक मोटे अक्षरों में और उन पर अन्वयाङ्क लिख कर नीचे पहले केवल अन्वयाङ्क के अनुसार संस्कृत हिन्दी में शब्दार्थ और फिर भावार्थ लिखा गया है। इससे संस्कृतज्ञ और नागरी जाननेवाले दोनों का विशेष उपकार सम्भव है। एक भाषा जान कर दूसरी भाषा भी सरलता से आसकी है। लगभग डेढ़ सौ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ॥~) मात्र रखा है।

धर्मसङ्गीत—भारतवर्ष भर के सुप्रसिद्ध विद्वान् कविराजों के धर्मरस चुहचुहाते सङ्गीतों का संग्रह बड़ीही उत्तमता से किया गया है। इसके सङ्गीत श्रवण करतेही चित्त आनन्द मग्न हो जाता है। और धर्म की जागृति हो जाती है। मूल्य ≡) मात्र

आङ्गल संस्कृत प्रदीपिका—इसके द्वारा थोड़ी सी हिन्दी जाननेवाला भी थोड़ेही समय में नित्त प्रति व्यवहार में आनेवाली अंग्रेजी और संस्कृत बोलना, लिखना और पढ़ना सीख सक्ता है। क्योंकि इसमें क्रम बहुत सुन्दर रक्खा गया है। पहले बहुत से छोटे२ शब्द और फिर उनका व्यवहार वाक्यों द्वारा दिखाया गया है। इसमें १० अध्याय हैं उनके नाम यहां लिखे देते हैं कि जिनसे इसका उपयोगी होना स्वयं ज्ञात हो जायगा। १ अध्याय में बहुत से व्यवहारिक शब्द, २ में समय व सङ्ख्या शब्द, ३-स्कूल सम्बन्धी ४ देह के अङ्गों के नाम, ५ रिश्तेदारी के शब्द, ६ सब प्रकार के कपड़ों के नाम, ७ भोजन के पदार्थ, ८ घर सम्बन्धी शब्द, ९ घर की वस्तुओं के नामादि, १० पशुपक्षी और धर्म सम्बन्धी बातें। इसपर भी दाम केवल ।) मात्र।

न्यायादर्श—न्याय के अति कठिन तर्कसंग्रह ग्रन्थ को कि जिसकी प्रत्येक बात कण्ठस्थ करना होती है विद्यार्थियों के हितार्थ बड़े परिश्रम से चित्रगर [नकशे] के रूप में प्रकाशित कराया है। जिसके द्वारा न्यायशास्त्र हस्तामलकवत् प्रतीत होने लगता है। दाम ~) मात्र।

मिलने का पताः— श्री सरस्वतीभण्डार काशी।

S. N.
G LIBRARY

श्रीगणेशायनमः ।

# व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोधः ।

गोत्राधिराजतनयातनयः सहितः श्रियां ।
पायात्प्रत्यूहसन्दोहवारणो वारणाननः ॥ १ ॥
अनङ्गशरखिन्नाङ्गीमालिङ्गन्गोपभामिनीम् ।
जायतां श्रेयसे वोऽद्य कृष्णः कलितकौस्तुभः ॥ २ ॥
अधीतविद्यानधुनातनांस्तान् विलोक्य तांन्तान् व्यवहारिकोक्तौ
शिष्यान् विनेतुं व्यवहारवाण्यामभाणि वाणी किलदेवतानाम् ॥ ३ ॥
यद्यत्र स्खलितं भवेन्मम कृतौ शोध्यं बुधैरेव तत् ।
प्रायासः प्रथमः प्रकल्पित इति ज्ञात्वा दयासागरैः ॥
इत्येवं विनतो निवेदयति वो डिम्भः सुखानन्दको ।
बालानां किल चेष्टितं गुरुजनानन्दाय सञ्जायते ॥ ४ ॥

## प्रथमोऽध्यायः ।

### देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहावयवविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| मनुष्य | पुरुषः, पूरुषः, ना, नरः, मर्त्यः । | बाल | केशः, कुन्तलः, कचः, चिकुरः. |
| बालक | बालः, शिशुः, अर्भकः । | रोम ✓ | रोमन्, लोमन् (न०) तनूरुहः. |
| स्त्री | नारी, अङ्गना, अबला, वामा, योषित्, (स्त्री) । | मूंछ ✓ | गण्डलोमन्, (न०) गुम्फः. |
| | | डाढी ✓ | श्मश्रु, (न०) कूर्चम्, मुख-रोमन् (न०). |
| बाँझ ✓ | वशा, वन्ध्या. | | |
| चोटी ✓ | शिखा, वेणिः (णी), धम्मिल्लः चूडा, कबरी. | सिर | शिरः (न०), शीर्षम्, मूर्धा (पुं०), मौलिः, मस्तकः-कम् |

१ । शोभया । २ । क्लान्तान् ।

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन— देहावयवविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| खोपड़ी | कपालः (लम्), कर्परः, शिरोस्थि (न०). | चूतड़ | नितम्बः |
| | | बाँह | दोः, [पु०] बाहुः, भुजः |
| माथा | ललाटम्, मस्तिष्कम्, मालपट्टम्, पटलम् | नाड़ी | स्नायुः (स्त्री०) शिरा, धमनिः मांसपेशी. |
| भौं | भ्रूः, भ्रूलता. | हाथ | हस्तः, पाणिः, करः, पञ्चशाखः |
| आँख | चक्षुः, (न०) नेत्रम्, नयनम्, अक्षि (न०). | कोहनी | कूर्परः, कफ [फो] णिः |
| | | उँगली | अङ्गुलिः-ली । |
| नाक | नासिका, घोणा, गन्धज्ञा नासा | अंगूठा | अङ्गुष्ठः । |
| मुँह | वक्त्रम्, आननम्, मुखम्, तुण्डम्. | चारउँगलियों के नाम | तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका, |
| दाँत | दन्तः, रदः, दशनः दंष्ट्रजम्भः. | हथेली— | करतलः लम्. |
| मसूड़े | दन्तमांसम्. | नोंह | नखः-खम्, कररुहः, नखरः-रम् |
| जीभ | जिह्वा, रसना, रसज्ञा. | शरीर | कायः, देहः, शरीरम्, वपुः (न०) गात्रम्. |
| तालुआ | तालु, (न०) काकुदम्. | | |
| फेफड़ा | फुप्फुसम्. | खाल | चर्म (न०) त्वक् (स्त्री०) |
| डाढ़ | दंष्ट्रा. | हड्डी | कीकसम्, कुल्यम्, अस्थि (न०) |
| हलक | कण्ठः, गलः, ककः, निगरणः. | मांस | पिशितम्, मांसम्, पललम्, क्रव्यम्. |
| जवान | युवा (पु०) तरुणः. | | |
| बूढ़ा | वृद्धः, स्थविरः. | चरबी | मेदः (न०) वसा, वपा. |
| कान | कर्णः, श्रोत्रम्. | हड्डीके भीतरकी चरबी | मज्जा, सारः |
| कानका मैल | कर्णकिट्टम्, कर्णमलम्. | | |
| ठोड़ी | चिबुकम्, हनुः (पु० स्त्री०) | खून. | रुधिरम्, असृक् (न०) अस्रम्, रक्तम्. |
| गर्दन | ग्रीवा, गलः, कन्धरः, शिरोधिः. | | |
| कन्धा | स्कन्धः, अंसः । | कलेजा | युकृत् (का), अग्रमांसम्. |
| पीठ | पृष्ठम्, पृष्ठदेशः | लार | सृणिका, स्यन्दिनी, लाला. |
| कमर | कटिः, श्रोणिः (णी), (स्त्री) | पैर की घुट्ठी. | घुटिके, गुल्फौ. |

## देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| जङ्घाका ऊपरीहिस्सा | ऊरुः, सक्थि (न०) | छिनार | कुलटा, पुँश्चली, बन्धकी. |
| | | विधवा | विश्वस्ता, विधवा, रण्डा. |
| मूत. | मूत्रम्, प्रस्रावः. | सखी | आलिः, वयस्या. |
| मल. | पुरीषम्, गूथम्, विष्ठा, शकृत्, (स्त्री). | सुहागिन | पतिवत्नी, सभर्तृका. |
| | | दूती | दूतिः, सञ्चारिका. |
| पुरुष का वीर्य्य | शुक्रः, [पुं.] वीर्यम्, रेतः, बीजम्. | वेश्या | वारस्त्री, वारांगना, गणिका. |
| | | खाविन्द | धवः, पतिः, भर्ता. |
| स्त्री का ,, | रजः, पुष्पम्, आर्तवम्. | जार लवार | जारः, उपपतिः. |
| अंडकोश | मुष्कः, वृषणः. | जेर | उल्वम्, जरायुः, गर्भाशयः. |
| कुचा | कुचः, स्तनः | सोवर | सूतिगृहम्. |
| दिल. | मनः, (न०) मानसम्, चित्तम् हृदयम्, हृत्, चेतः (न०) | गर्भ | गर्भः, भ्रूणः (कुक्षिस्थस्य प्राणिनः नाम). |
| मूत्राशय. | वस्तिः. | मानना | मन्यसे. |
| गुदा. | गुदम्, अपानम्, पायुः, (पुं०) मलद्वारम्. | लाना | आनयति, आहरति, आवहति प्रापयति । |
| बुद्धि. | बुद्धिः, मनीषा, धिषणा, प्रज्ञा, शेमुषी, धीः । | काजल लगाना | कज्जलं निदधाति, नियोजयति, अनक्ति. |
| | | सूँघना | जिघ्रति, |
| पेट. | उदरम्, जठरम्, तुन्दम्, कुक्षि | थूकना | ष्ठीव्यति, नि-ष्ठीवति । |
| ढूँढी. | नाभिः (भी), उदरावर्तः | निगलना | ग्रसते, निगिरति. |
| आँतें | अन्त्राणि । | डकारना | उद्गिरति । |
| लिंग. | लिंगम्, उपस्थः, शिश्नः, मेढ्र | छींकना | क्षौति, क्षवथुं करोति । |
| योनी. | योनिः, भगः-(गम्). | कै करना | वमति, उद्वमति । |
| पैर | पादः, पदम्, चरणः-णम्, अंघ्रि | नाक साफ़ करना | नसः मलं त्यजति । |
| पस्लें | प्रसृतिः. | | |
| चुटकी | छोटिका | खकारना खाँसना | कासते, क्षौति । |
| मुक्का, मुट्ठी | मुष्टिका. | | |

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| छूना | स्पृशति । | सीटी बजाना | शीशब्द करोति. |
| हँसना | स्मयते, ईषद्धसति, मन्दस्मितम् करोति । | मारना | हन्ति, प्रहरति, ताडयति, अभिहन्ति. |
| चिपटना | आश्लिष्यति, आलिङ्गनं करोति, सज्जति । | लातमुक्का मारना | लत्तया-पादेन, मुष्टिना-हन्ति, ताडयति, युध्यते, प्रहरति. |
| पेशाब क० | मेहति, मूत्रयति-ते । | खोदना | खनति, [भूमिं] अवदारयति, भिनत्ति |
| दिशा जाना | पुरीषमुत्सृजति, हदते । | | |
| स्त्री प्रसङ्ग करना | अभिगच्छति, संगच्छते, मैथुनंकरोति, | मरना | म्रियते, प्राणांस्त्यजति |
| भोजन करना | अत्ति, अश्नाति, खादति, अश्नाति भक्षयति, भुङ्क्ते, अभ्यवहरति | पहरना | परिधत्ते |
| | | उतारना | अवतारयति, अपनयति. |
| नहाना | स्नाति, मज्जति, गाहते | करना | करोति, विदधाति |
| कुल्ला क० | गण्डूषं करोति | गालीदेना | शपति-ते, अभिशंसति, शापं ददाति, आक्रोशति, गर्हयति. |
| चखना | आस्वादते, लेढि. | बुराकहना | |
| पकड़ना | गृह्णाति, गृह्णीते, धरति, धारयति, धत्ते. | आशीर्वाद देना | आशास्ते, आशिषं ददाति-ते, अभिनन्दति. |
| लेना | स्वी-अङ्गी-करोति, गृह्णाति. | | |
| उबटन क० | उद्वर्त्तनम्, उत्सादनम् करोति-ते, अभ्यनक्ति. | डूबना | निमज्जति, मज्जयति [ प्रे० ] |
| | | अभिमान करना | विकत्थते, दृप्यति. |
| कसरत क० | व्यायच्छति. | | |
| कुश्ती क० | मल्लयुद्धंकरोति बाहूबाहवि युध्यति. | तर्पणकरना | तर्पयति. |
| | | हवनकरना | जुहोति. |
| चलना | चलति, व्रजति, प्रक्रमते-ते | रोकना | अवरुणद्धि. |
| आना | आगच्छति, आयाति | जप करना | जपति, |
| सोना | स्वपिति, शेते, निद्राति. | कानाफूँसी करना | कर्णे जपति. |
| जागना | जागर्ति, प्रतिबुध्यते, निद्रां त्यजति. | | |
| | | शुरू करना | आरभते, उपक्रमते, प्रक्रमते. |

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| रोना | रोदिति, विलपति, आक्रन्दति, अश्रूणि पातयति. | काँपना | कम्पते, वेपते. |
| | | नाचना | नृत्यति, नटति. |
| हँसी करना | उपहासं करोति, उपहसति. | डरना | बिभेति, सं-वि-त्रस्यति उद्विजते. |
| आज्ञाकरना | आज्ञापयति आदिशति. | | |
| आज्ञा देना | अनुमन्यते, अनुजानाति, अनुमोदते, अनुजानीते. | घबड़ाना | मुह्यति. |
| | | साफ करना | शोधयति,मार्ष्टि,मार्जयति प्रे० |
| घूमना | परिभ्रमति, पर्य्यटति. | तलाकदेना | त्यजति, निराकरोति. |
| घुमाना | भ्रामयति. | डाहकरना | असूयति, ईर्ष्यति, [चतुर्थ्या सह] परोत्कर्षं न सहते, सूष्यति. |
| बहसकरना | विवदते. | | |
| भागना दौड़ना | पलायते, धावति-ते, अपक्रमति-ते, क्राम्यति, विद्रवति, परैति, अपधावति, सरति. | | |

पहिला पाठ—प्रथमः पाठः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| पुरुष अपनी बुद्धि से अत्यन्त बलवान् सिंहादि जीवों को भी वश कर लेता है. | पुरुषः स्वबुद्ध्याऽतीव बलवतोऽपि सिंहादीन् जीवान् वशमानयति. |
| स्त्री को चाहिये कि पति की सेवा करनेवाली होवे और उसको ही ईश्वर तुल्य माने. | योषित्पतिभक्ता भवेत् तमेव चेश्वरतुल्यं मन्येत. |
| माधव के बड़ी भारी चोटी है तू भी ऐसी ही रख. | अस्त्यतीव दीर्घो धम्मिल्लो माधवस्य त्वमप्येतादृशं स्थापय. |
| कृष्णदत्त के बाल मुलायम हैं. | कृष्णदत्तस्य केशाः सुकोमलास्सन्ति. |
| भोजदेव के बाल बड़े कड़े हैं. | भोजदेवस्य चिकुरास्त्वतीव प्रखराः. |

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन— देहावयवविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| तुम्हारे देह के बाल और डाढ़ी लोहरी हैं. | सन्ति लोहितवर्णानि तव देहलोमानि श्मश्रूणि च. |
| स्त्रियों के मुह पर मूछें नहीं होतीं. | स्त्रीणां गण्डस्थले गण्डलोमानि न भवन्ति. |
| बहुत से गोरे डाढ़ी मूँछ नहीं रखते. | बहवो गुरण्डाः श्मश्रुगुम्फौ न दधते. |
| गोविन्ददेव का शिर बुढ़ापे से कांपता है. | गोविन्ददेवस्य शिरः वार्धक्यात्कम्पते. |
| कृष्णदत्त ने रामदास के सिर में ऐसी लाठी मारी जिससे उसकी खोपड़ी फूट गई. | कृष्णदत्तेन रामदासमूर्ध्नि ईदृग्यष्टिप्रहारः कृतः येन तत्कपालो भग्नः। |
| नारायण का माथा बड़ा चौड़ा है इस लिये वह धनवान है. | नारायणस्य मस्तिष्कमतीव विपुलमत एव स धनाढ्यः. |
| केशवदत्त का भौं चलाना तो देखो. | केशवदत्तस्य भ्रूचालनन्तु पश्य। |
| आँखों के बिना जीने से क्या ? | विनाक्षिभ्यां (णी) किं जीवितेन ? |
| माधव की नाक तोते की सी दिखाई देती है. | माधवस्य नासिका (घोणा) शुकनासावद्दृश्यते। |
| उसके मुँह में बहुत से छाले हैं. | तस्य मुखे बहवो विस्फोटका विद्यन्ते. |
| गोविन्द रोज़मर्रा दाँतन करता है इसी लिये उसकी दांतों की क़तार बड़ी उजली है. | गोविन्दः प्रत्यहं दन्तधावनं करोति अत एव तस्य दन्तपंकिरतीव शुभ्रा. |
| जीवों को जीभ से ही रस का ज्ञान होता है. | जिह्वयैव रसज्ञानं भवति जीवानाम्। |
| देवदत्त ! आँखों में कज्जल लगालो. | देवदत्त ! अक्ष्णोः कज्जलं निधेहि। |
| कृष्ण अपनी नाक से फूल सूँघता है. | कृष्णः स्वनसा पुष्पाणि जिघ्रति. |
| देखो सांप आपके सामने मूसे को निगलता है. | सर्पो भवताम् समक्षं मूषकं ग्रसत इति पश्यत |
| दुष्ट ! नाक क्यों नहीं साफ़ करता. | दुष्ट ! नसः मलं कथं न त्यजसि क्षालयसि |

## देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| तालुए से बोले जानेवाले अक्षर तालव्य होते हैं. | तालुना प्रोच्यमाना वर्णास्तालव्या भवन्ति. |
| हिंसक जीवों की डाढ़ बड़ी मजबूत और पैनी होती हैं. | श्वापदानां दंष्ट्रा अतीव दृढा निशिताश्च भवन्ति. |
| नाका बेहलक होता है यह सुना जाता है क्योंकि यह जीवों को पकड़ के एक साथ निगल जाता है. | नक्रः निर्गलो भवतीति श्रूयते यतः स जीवानाक्रम्य (धृत्वा) युगपदेव निगिलति. |
| आज तू बहुतही खांसता है इसमें क्या सबब है. | अद्य त्वमतीव काससे (क्षौलि) इत्यत्र किंकारणम् ? |
| कल मैंने दही खाया था यही सबब होगा. | ह्यो मया दधि भक्षितमेतद्धि कारणं भवेत्. |
| देवदत्त कानों से ठीकर नहीं सुनता, तो क्या यह बहिरा है? और क्या. | देवदत्तः कर्णाभ्यां यथावन्न शृणोति, तर्हि स किं बधिरः? आम्,(अथ किं) [बाढम्]. |
| हनुमान की ठोढी बड़ी लम्बी चौड़ी थी. | हनुमतश्चिबुकमत्यायतमासीत्. |
| गोवर्धन की गर्दन बहुत बड़ी और शङ्ख कीसी है. | गोवर्धनस्य कन्धरातीव दीर्घा शङ्खाकृतिश्च विद्यते. |
| शूर वीरों के कन्धे बड़े ऊंचे होते हैं. | शूराणां स्कन्धावत्युन्नतौ भवतः. |
| भीमसेन कुन्ती सहित चारों भाइयों को अपनी पीठ पर चढ़ा कर सुरङ्ग द्वारा लाखा भवन से बाहर निकल गया. | भीमसेनः कुन्त्या सह चतुरोऽपि भ्रातॄन् स्वपृष्ठमारोप्य सुरङ्गया लाक्षाभवनाद्बहिर्निस्सृतः. |
| नचकैया अपनी कमर में (चूतरों के ऊपर) कौंधनी बांध कर नाचता है. | नर्तकः स्वकट्यां (नितम्बस्योपरि) क्षुद्रघण्टिकां बद्ध्वा नृत्यति. |
| स्त्री का रज और पुरुष का वीर्य मिल कर सन्तति उत्पन्न होती है. | स्त्रिया रजः पुरुषस्य शुक्रो मिलित्वा सन्ततिरुद्भवति. |

## देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| श्रीराम के भुज दण्ड के प्रताप से दुष्ट डरते हैं. | श्रीरामस्य दोर्दण्डप्रतापेन दुष्टास्त्रस्यन्ति. |
| वह हाथ से मुझे छूता है । | स हस्तेन मां स्पृशति |
| हकीमजी मेरे देह में कुछ हडचल है कृपा कर नाड़ी तो देखिये. | भिषग्वर! मम देहस्यास्वास्थ्यं वर्तते· कृपया नाडिन्तु परीक्षस्व. |
| जब उसने मुझ बेकसूर को भी कोहनी से मारा तब मैंने उसके लात मारी. | यदा स मां निर्दोषमपि कूर्परेणाताडयत् तदाहं त लत्तया प्राहरम्. |
| क्या तुम अंगुलियों के नाम भी जानते हो. | किं त्वमङ्गुलीनां नामान्यपि वेत्सि ? |
| जानता हूं तुम भी सुनो । पहिला तो अंगूठा, दूसरी तर्जनी, तीसरी मध्यमा (बीच की) चौथी अनामिका और पांचवी कनिष्ठिका (कनी). | वेद्म्यहं त्वमपि शृणु।प्रथमस्त्वङ्गुष्ठः द्वितीया तर्जनी तृतीया मध्यमा चतुर्थीअनामिका पञ्चमी कनिष्ठिकेति. |
| भाग्य उलटा होने पर हाथ में आई हुई चीज़ भी नष्ट हो जाती है. | दैवप्रातिकूल्ये करतलगतमपि वस्तु नश्यति. |
| मनुष्य अपने देहों की रक्षा करें क्यों कि यही धर्म कर्म के हेतु हैं. | मनुष्याः स्ववपूंषि रक्षेयुः यत एतान्येव धर्मकर्महेतूनि सन्ति. |
| उसकी खाल बड़ी कड़ी है हिंसक जीवों से भी फाटी नहीं जा सकी. | तस्य त्वगतीव कठिना श्वापदैरपि भेत्तुं न शक्यते. |
| रस, लोहू, माँस, चरबी, हाड़, मज्जा और वीर्य ये सात देह की धातु हैं. | रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि, इति सप्त देहस्था धातवः. |
| नाई को बुला कर इस बालक के नोह कतरवाओ. | नापितमाहूयास्य बालस्य कररुहान्कर्तय |
| इसका हिम्मत बहादुर दिल दु:ख की दशा में भी नहीं घबराता है. | अस्य साहसिकं मनः विषमावस्थायामपि न मुह्यति. |

## देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| दामोदरदास की बुद्धि सराहनीय है जो सोलहवें वर्ष में एम. ए. परीक्षा में पास हुए. | श्लाघ्या प्रज्ञा दामोदरदासस्य यः षोडशतमेऽब्दे मास्टर आफ आर्ट्सेति परीक्षायामुत्तीर्णोऽभवत्. |
| शङ्करदत्त का पेट तो बड़ा है परञ्च ज्यादह नहीं खाता. | शङ्करदत्तस्योदरन्तु पृथु परञ्चाधिकं न भुङ्क्ते. |
| गोपीवल्लभ की टूंडी बड़ी गहरी है यह हर रोज प्रातःकाल ही न्हाता है. | गोपीवल्लभस्य नाभिरतीव गम्भीरा वर्त्तते, स प्रत्यहं प्रत्यूष एव स्नाति. |
| मनुष्य भोजन के पीछे १६ कुल्ले करे. | जनः भोजनान्ते षोडशगंडूषान्कुर्यात्. |
| कृपा करो और यहां से जल्दी जाओ. | कृपां कुरु अतःशीघ्रं गच्छ च. |
| यह शहद हथेली पर रख कर उंगली से चाटता है. | स सारघं करतले धृत्वाऽङ्गुल्या लेढि. |
| मनुष्य पाखाना फिरने के बाद ढेले वगैरः से गुदा साफ करे और फिर जल से. | जनो मलत्यागानन्तरं लोष्ठादिना गुदं परिमार्जयेत् ततो जलेन च. |
| बड़े जोर से न पादे और न रोके. | नोच्चैरपानवायुं मुञ्चेत् नचावरुन्ध्यात्. |
| उसके मुंह पर बहुत सी फुन्सी हैं. | तस्य मुखे बह्वयः पिटिका विद्यन्ते. |
| श्रीराम का शरीर सर्व लक्षण सम्पन्न है. | श्रीरामस्य शरीरं सर्वलक्षणसम्पन्नमस्ति. |
| उसकी जाघें केले के खंभों की नाई हैं. | तस्याः ऊरू कदलीस्तम्भवरस्तः. |
| मेरी परिया में बैल ने लात मारी. | मम गुल्फे वृषभेणपादप्रहारः कृतः. |
| श्रीमान् गुरुजी के चरण कमलों को नमस्कार हो. | नमोनमः श्रीमद्गुरुचरणकमलेभ्यः. |
| मित्र! बहुत दिनों में देखा है आओ मुझसे मिलो. | मित्र! चिराद्दृष्टोऽसि एहि मामाश्लिष्य. |
| इस घड़े को पकड़ो नहीं तो ज़मीन में गिर पड़ेगा. | इमं घटं गृहाण नोचेदयं पृथिव्यां पतिष्यति. |
| इस बालक के मुख से बड़ी लार बहती है. | अस्य बालस्य मुखाद् महती लाला वहति. |

## देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| इस सींक को लाकर मेरे कान का मैल निकालो. | इमां शलाकामादाय मम कर्णकिट्टं निष्काशय. |
| हकीम रोग की जांच के लिये नाड़ी मल और मूत्र की जांच करते हैं. | वैद्याः रुक्परीक्षार्थं नाड़ीं मलमूत्रञ्च परीक्षन्ते. |
| मनुष्य को चाहिये कि वीर्य की बड़े जतन से रक्षा करे. | जनः शुक्रं यत्नेन परिरक्षेत. |
| बिना अण्डकोशों के घोड़े अरता कहलाते हैं. | अवृषणा अश्वा अरतेति कथ्यन्ते. |
| मोहनी नाम की स्त्री अपने जोड़ों को छातियों से दूध पिलाती है. | मोहिनी नाम्नी स्त्री स्वयमजौ कुचाभ्यां स्तन्यं पाययति. |
| उसके वस्ति (ढूंडी से नीचे का हिस्सा) प्रदेश में बड़ी तकलीफ है। डाक्टर को दिखाओ. | तस्य वस्तिप्रदेशे महती वेदना वर्तते। वैद्य प्रदर्शय. |
| माता ब्याह के वक्त बेटेका उबटन करती है. | माता विवाहसमये पुत्रस्योद्वर्तनं करोति. |
| गोविन्द व्याकरण पढ़कर अब काव्यादि पढ़ता है. | गोविन्दो व्याकरणमधीत्याधुना काव्यादीन्पठति. |
| उसने अजीर्ण में खा लिया इसीलिये कै कर दी. | सोऽजीर्णेऽभुङ्क्त अत एवोदवमत्. |
| जो रोज़ मर्रह कसरत करता है वह हमेशा चंगा रहता है. | यो नित्यं व्यायच्छति (व्यायामं करोति) स सदैव स्वस्थो वर्तते (आस्ते) (भवति). |
| आज मेले में बहुत से मल्ल कुश्ती लड़ेंगे सो ज़रूर ही देखना चाहिये. | अद्य महोत्सवे बहवो मल्लाः मल्लयुद्धं करिष्यन्ति तदवश्यमेव द्रष्टव्यम्. |
| घोड़ा अच्छा चलता है. | साधु विक्रमते वाजी. |
| जो मेरेसाथ चले वह आओ. | यो मया सह चलतु स आगच्छतु. |

## देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहावयवविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| आज कलके बहुत से लोग अपनी तुच्छ बुद्धि की युक्तियों से मूर्खों के साथ बहस करते हैं. | आधुनिका बहवो जनाः स्वक्षुद्रबुद्धि-युक्तीः पुरस्कृत्यापण्डितैः सह वियदन्ते. |
| जहां इनकी असलियत को जानने वाले पण्डित हैं तहां से तो भाग जाते हैं. | यत्र तन्मर्मज्ञाः पण्डिता विद्यन्ते ततस्तु परिद्रवन्ति. |
| क्या यह मदन मोहन सोता है ? | किमयं मदनमोहनः स्वपिति (शेते) ? |
| नहीं अभीतो जागता है. | न, अद्यापितु जागर्ति. |
| वहां सीटी कौन बजाता है. उसे यहां लाओ मैं मारूंगा. | कस्तत्र शीघ् शब्दकरोति। तमत्रानय ताडयिष्याम्यहम्. |
| भाई ! देवदत्त ने मुझको मुक्केसे मारा और मैंने उसको लातसे मारा. | भ्रातः ! देवदत्तो मां मुष्टिनाताडयत्, अहञ्च तं लत्तया प्राहरम्. |
| रास्ते में गड्ढा कभी न खोदो। जो खोदता है वही गिरता है यह मशहूर है. | मार्गे कदापि गर्तं न खन। यः खनति स एव पततीति प्रसिद्धम्. |
| अक्सर जीवों के कलेजे और हृदय में ज्यादह चरबी होती है. | प्रायो जीवानां वुक्कायां हृदये चाधिका वसा भवति. |
| प्यारे ! आज नये कपड़े पहिनो. | प्रिय !अद्य नूतनानि वस्त्राणि परिधत्स्व. |
| आपके गाँव में कल कौन मरा ? | भवतां ग्रामे ह्यः कोऽम्रियत ? |
| एक बूढ़ा कुम्हार मरगया यह सुना है. | एको वृद्धकुलालः प्राणानत्यजदितिश्रुतं. |
| सोवर में मत जाओ. | सूतिगृहे मागच्छ. |
| यह कौन छींकता है ? यह नारायण है और कोई दूसरा नहीं है. | कोऽयं क्षौति ? नारायणोऽयं न कोऽप्यपरः. |
| यह घोड़ा बहुत से बोझमे लदाहुआ दिखाई देता है इसका बोझ उतारो. | बहुभाराक्रान्तोयमश्वो दृश्यते, अस्य भारमवतारय. |
| खोटी स्त्रियां अपने पुरुषों को छोड़कर जारों से स्नेह रखतीं हैं. | पुंश्चल्यः स्वपतीन् हित्वा जारान् भजन्ते. |

## देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहावयवविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| देखो बन्दर तालाब में कैसे तैरते है. | वानरास्तडागे कथं प्लवन्त इति पश्य. |
| जो मनुष्य जल में तैरना नहीं जानता वह गहरे पानी में जरूर ही डूब जाता है. | योजनो जलप्लवनं न जानाति स गम्भीरजलेऽवश्यमेव निमज्जति. |
| जेर में लिपटा हुआ गर्भ पेट में ही माता के खाये हुए अन्न के रस से पुष्ट होता है. | उल्बेनावृतो गर्भः जठर एव मातृखादितेनान्नरसेन पुष्यति. |
| देवदत्त देवताओं के लिये रोज़ हवन करता है. | देवदत्तो देवानुद्दिश्य नित्यं जुहोति. |
| आज कल के महाशय इस हवन को पवन शोधन के लियेही कहते हैं परन्तु पहिले लोग नहीं उनका आपस का भेद तो देखो. | आधुनिका महाशया एतद्धवनं पवन. शोधनार्थमेव वदन्ति नतु पूर्वे पश्यत तेषां परस्परभेदम्. |
| जो हवा शुद्ध करनेही के लिये हवन होय तो अपने कपोल कल्पित ग्रन्थों में हवन मन्त्रों से क्या ? | यदि पवनशुद्ध्यर्थमेव हवनं स्यात् तर्हि स्वकपोलकल्पितग्रंथेषु हवन मन्त्रैः किम् ? |
| यह ख्याल करने की बात है. | एतच्चिन्त्यम् । |
| यह कौन है ? यह मेरी बँहदोली है। क्या यह सुहागिन है या विधवा. | केयं ? इयं ममालिः । किमियं पतिवन्ती विधवा वा. |
| आस्तिक लोग देवता और पितृ लोगों को तर्पण करते है. | आस्तिका देवान् पितॄंश्च तर्पयन्ति. |
| गणेशदत्त को बुलाओ. | गणेशदत्तमाकारय. |
| वहतो सन्ध्या करता है. | स तु सन्ध्यामुपास्ते. |
| सिर्फ अपने शास्त्रों के न जाननेवाले अंग्रेजी फारसी ज़बान के जाननेवाले फिज़ूल बकवाद करते हैं. | केवलमविदितस्वशास्त्रा इङ्गलिशपारसिकभाषावेत्तार एव वृथा विकत्थन्ते. |

## देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहावयवविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| इसकी आदत बहुत खराब है यह हमेशा दूसरों की बुराइयों को दूसरों के कानों में कहा करता है. | अस्य प्रकृतिरत्यतीव दुष्टाऽयं सर्वदा परदोषान् परेषां कर्णे जपति. |
| क्या वेश्या भी गर्भधारण करती है? | किं वारस्त्रियोऽपि गर्भन्धारयन्ति. |
| वह मृत्युञ्जय का जाप अरिष्ट निवारण करने के लिये शुरू करता है। | स मृत्युञ्जयस्य जापमरिष्टनिवृत्तय आरभते. |
| दूतियों का क्या लक्षण है? न मालूम. | दूतीनां किं लक्षणं? न जाने. |
| यह आपका सेवक मौजूद है मुझे हुकम दीजिये में क्या करूं. | एषोऽहं तव सेवकः आज्ञापय मां किमहं करोमीति. |
| यह कौन रोती है? कोई भूखी भिकारिन है. | केयं रोदिति? अस्ति काचित्क्षुधार्ता भिक्षुकी. |
| बालक उसकी हँसी करते हैं. | बालकास्तामुपहसन्ति. |
| बहुत से भिखारी एकही दिन में बहुत से गावों में भीख के लिये घूमते हैं. | बहवो भिक्षुका एकस्मिन्नेव दिने बहुषु ग्रामेषु भिक्षार्थम्पर्य्यटन्ति. |
| मैलनिकाला कानका मैल निकालता है. | कर्णमलनिस्सारयिता कर्णकिट्टं निष्काशयति. |
| अब्दुल्लाखां मुसलमान ने कल अपनी स्त्री को तलाक देदी. | अब्दुल्लाखाँभिधो यवनः ह्यः स्वस्त्रियं निराकरोत्. |
| पाँच महायज्ञ नीचे के श्लोक में दिखाये हैं. | पञ्च महायज्ञा निम्नश्लोके प्रदर्शिताः. |
| अध्यापन (पढ़ाना) ब्रह्मयज्ञ, तर्पण पितृयज्ञ, होम देवयज्ञ, बलि भौतयज्ञ, अभ्यागत पूजन नृयज्ञ. | अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् होमो दैवः बलिर्भौतो नृयज्ञो ऽतिथि पूजनं. |
| है तो परन्तु यह साफ नहीं है महरबानी कर इसको आप खुलासा करो यह किसी शिष्य की किन्हीं गुरुओं | अस्ति तु परन्त्वैतन्न स्पष्टं कृपया स्पष्टीकुर्वन्तु भवन्त इति कस्यचिच्छिष्यस्य काँश्चिद्गुरून्प्रत्युक्तिरियम्। |

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहावयवविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| के लिये कहन है । गुरु—सुनो, चेला—सुनता हू. | गुरुः—श्रुयतां, शिष्यः—शृणोमि. |
| अध्यापन अर्थात् वेदादि का पढ़ाना पहिला यज्ञ है; अन्नजल इत्यादि से पितृतर्पण करना दूसरा यज्ञ है; हवन और बलिवैश्वदेव यह तीसरा यज्ञ है, बलि (भेंट) देना यह चौथा यज्ञ है; घर आये हुए अतिथियों की अन्नजल से पूजा करना पाँचवाँ यज्ञ है. | अध्यापनं कोऽर्थः वेदादेः पाठनम् प्रथमोयज्ञः अन्नोदकादिनापितृणांतर्पणाद्वितीयः, होमः वैश्वदेवहोमश्चतृतीयः, बलिहरणं चतुर्थः, अतिथीनां गृहागतानामन्नादिना सपर्य्या पञ्चमइति. |

## दूसरा अध्याय—द्वितीयोऽध्यायः ।

### वस्त्र इत्यादि का वर्णन—वस्त्रविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| कपास | पिचुः, (पुं) तूलः, कार्पासः | अंगरखा | अङ्गरक्षणी. — |
| कपड़ा | वसनम्, अंशुकम्, वासः (न०) चैलम्. | धोती | अधोवस्त्रम्. |
| पगड़ी | उष्णीषम्. | पाजामा पतलून | जङ्घात्राणम्, जङ्घावस्त्रम्. |
| टोपी | शिरस्त्राणम्, शिरस्कम्, शिरोवेष्टनम्. | कमरबन्द | कटिसूत्रम्—रशना. — |
| | | मोज़े | पादत्राणम्. — |
| दुपट्टा चादरा | उत्तरीयः. | रजाई वा दुलाई | नीशारः. |
| गलेबन्द | गलबन्धनांशुकम्. | चादरजान पोश दरी | उत्तरच्छदः, शय्याच्छादनम्, प्रच्छदः. |
| मिर्जई कुर्ता, कोट | कञ्चुकः, निचोलः. | फेंटा | परिकरः. |

## वस्त्र इत्यादि का वर्णन—वस्त्रविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| तकिया | उपबर्हणम्, उपबर्हः, उपधानम्. | नारंगी | पिच्छिलः, कौसुम्भी-भः. |
| | | प्याज़ू | पलाण्डुवर्णः. |
| रूमाल | करवस्त्रम्. | हरा | हरित्, हरिद्वर्णः. |
| जाँघिया | जङ्घावस्त्रम्. | केशरिया | केशरवर्णः, कुंकुमवर्णः. |
| लोई, कंबल | रल्लकः, कम्बलः. | कपूरिया | कर्पूरवर्णः. |
| लँहगा | चण्डातकम्—कः | घुसना | प्रविशति. |
| आँगी | चोलः | सीना | वि नि सीव्यति (सिव्). |
| ओढ़ना साड़ी | शाटिका. | उठना, खड़ा होना | उत्तिष्ठति, अयतिष्ठति. |
| रेशमीवस्त्र | कौशिकम्, क्षौमम्, दुकूलम्, कौशाम्बरम्. | बिछाना | सं+आ+परिस्तृणाति. |
| | | खरीदना | क्रीणाति, क्रीणीते. |
| पड़दा | जवनिका, तिरस्करिणी. | बेचना | विक्रीणाति, विक्रीणीते. |
| रंग | वर्णः, रागः, रङ्गः. | कातना | कर्तति, कर्तयति, (प्रे०) वयति, तन्तून् करोति सृजति. |
| नीला | नीलः, श्यामः. | | |
| काला | कृष्णः, कालः, असितः. | | |
| पीला | पीतः, पीतलः, हरिद्राभः. | बुनना | वयतिते, वयतिने, गुम्फति, विरचयति. |
| लाल | रक्तः, लोहितः, शोणः. | | |
| भूरा सपेद | श्वेतः, शुक्लः, धवलः, सितः. | बैठना | तिष्ठति, आस्ते, निषीदति, उपविशति. |
| बैंजनी | धूम्रः, धूमलः, नीललोहितः. | | |
| गुलाबी | पाटलः, जपासवर्णः. | रंगना | रञ्जयति. |

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्रों को पहनता है तैसेही यह प्राणी पुराने देह को छोड़ कर नये को लेता है। | यथा नरो जीर्णानि वासांसि विहाय नवान्यं शुक्लानि परिधत्ते, तथैवायं देही पुराणं देहं परित्यज्य नूतनं गृह्णाति. |

## वस्त्र इत्यादि का वर्णन—वस्त्रविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
| --- | --- |
| कचहरी में बिना पगड़ी का कोई भी आदमी नहीं घुसता है. | अधिकरणे ऽनुष्णीषः कश्चिदपि जनो न प्रविशति. |
| मेरी टोपी कहां गई उसे ढूंढ कर यहां लाओ. | मम शिरस्त्राणं कुत्र गतं तदन्विष्यानय. |
| मेरा दुपट्टा तो खूँटी से उतार दो. | ममोत्तरीयन्तु नागदन्तादवतारय. |
| जाड़े के मौसम में गुलूबन्द बहुत सुखदायक होता है. | शीततौं शिरोधरांशुकमतीव सुखप्रदं भवति. |
| कल मैं दो कुर्ते सिलवाऊंगा. | श्वोऽहं द्वौकञ्चुकौ सेवयितास्मि. |
| क्या आपके पास मेरी धोती है? नहीं तो कैसे न्हाऊं. | किं तव सन्निधौ ममाधोंशुकमस्ति? न तर्हि कथं स्नायाम्. |
| तुम्हारे पाजामे में तो कमरबन्द भी नहीं है. | तव जङ्घात्राणे तु कटिसूत्रमपि नास्ति. |
| यह लो, मैं देता हूं। मोज़े भी पहन लो. | अहं ददामीदं गृहाण। पादत्राणेऽपि परिधत्स्व. |
| शूर वीर लोग फेंटा बांधकर लड़ाई के लिये खड़े होते हैं. | शूराः परिकरं बध्वा युद्धार्थमुत्तिष्ठन्ति. |
| रात में ओढ़ने के लिये चादरा लाओ. | रात्रौ परिधानार्थमुत्तरीयमानय. |
| खाट पर बिछौना बिछाओ. | शय्योपरि शय्याच्छादनं प्रस्तारय. |
| अब रज़ाई की ज़रूरत नहीं है. | नास्त्यावश्यकताधुना नीशारस्य. |
| जो कोई तकिया हो तो देओ. | यद्यस्ति किञ्चिदुपबर्हणं तर्हि देहि. |
| कल मैंने पांच रूमाल खरीदे. | ह्योऽहं पञ्चकरवस्त्राण्यक्रीणाम्. |
| कम्बल सब मौसमों में सुखदायक है. | सर्वर्तुषु कम्बलः सुखप्रदः. |
| बीकानेर की लोई बहुत अच्छी होती है. | बीकानेरस्य राङ्कवम् प्रशस्यतरं भवति. |
| वह स्त्री साड़ी उतार लहँगा पहनती है. | सा स्त्री शाटिकामवतार्य चण्डातकं परिधत्ते. |
| अक्सर स्त्रियां जाड़े के मौसम में दुलाइयां ओढ़ती हैं. | प्रायः स्त्रियः शीततौं नीशारान्परिदधते. |

## धंस्त्र इत्यादि का वर्णन — वस्त्रविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| उसकी अँगिया कहां है? | तस्याश्चोलः कुत्र वर्तते? |
| वह तो धोती ही में लिपट रही है. | स तु शाटिकायामेवालग्नः. |
| रेशमी और ऊनी कपड़ा भजन पूजा में अच्छा होता है. | क्षौमं और्णञ्च वसनं भजनपूजादिषु प्रशस्तं भवति. |
| यह पड़दा यहां क्यों लगाया है? | किमर्थमारोपितैषा जवनिकाऽत्र? |
| कपास से रूई निकलवा कर और उसे कतवा कर बहुत तरह के कपड़े बनाये जाते हैं. | कार्पासात्तूलं शोधयित्वा तत्कर्तयित्वा च बहुविधानि वस्त्राणि विरच्यन्ते, (निर्मीयन्ते). |
| कोई रँगरेज़ बुला कर ग्यारह ओढ़ने अलग २ रंग के रंगने के लिये दो. | कञ्चिद्रञ्जकमाहूयैकादशशाटिकाःपृथक्पृथक् वर्णरञ्जनार्थं प्रयच्छ. |
| आप कौन २ से रंग चाहते हैं सिर्फ उनके नामही ले दीजिये वे उसी रंग के हो जायँगे। बहुत अच्छा. | भवान् काँस्कान्वर्णानभिलषति तेषां नामान्येव केवलं ब्रवीतु तास्तु तद्वर्णा एव भविष्यन्ति । वरम्. |
| एक नीली, दूसरी काली, तीसरी पीली, चौथी लाल, पाँचवीं बेंजनी, छठी गुलाबी, सातवीं नारंगी, आठवीं प्याज़ू, नौवीं हरी, दसवीं केसरिया, ग्यारहवीं कपूरिया वग़ैरह. | एका नीला, द्वितीया कृष्णा, तृतीया पीता, चतुर्थी रक्ता, पञ्चमी नीललोहिता, षष्ठी पाटला, सप्तमी कौसुम्भी, अष्टमी पलाण्डुवर्णा, नवमी हरिद्वर्णा, दशमी केशरवर्णा, एकादशी कर्पूरवर्णा चेति. |
| सैमल की रुई और आक की रुई से भरा हुआ तकिया या बिछौना गरम और मुलायम होता है. | शाल्मलितूलेनार्कतूलेन भृतमुपबर्हणमास्तरणञ्चोष्णं कोमलञ्च भवति. |



## तीसरा अध्याय—तृतीयोऽध्यायः ।

### गहने इत्यादि का वर्णन—आभूषणविशेषाः उपाभरणाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| गहने | अलङ्कारः, आभरणम्, परिष्कारः. | बिछिया | नूपुरः-रम्, मञ्जीरम्. |
| तोड़ा, कठला, कण्ठा | कण्ठिका, कण्ठाभरणम्. | जञ्जीर | शृङ्खला, शृङ्खलः. |
| अंगूठी, छल्ले | अङ्गुलीयकम्, ऊर्मिका. | नथ | नासाभरणम्. |
| कौंधनी | मेखला, काञ्चिः-ञ्ची. | अल्मारी | काष्ठफलकम्. |
| दान्तकुरेदनी सुई | दन्तशोधनी सूचिः. | कंघी | प्रसाधनी, कङ्कतः-तिका, केशमार्जनी. |
| बोला | बालपाश्या, पारितथ्या. | ब्रुश | आकर्षणी, लोममयी मार्जनी वा शोधनी. |
| बन्दी, बेना | स्त्रीमस्तकाभरणम्. | दर्पण | मुकुरः, दर्पणः, आदर्शः. |
| चम्पाकली गुलीयन्द | ग्रैवेयकम्, कण्ठभूषा. | सुर्मा, काजल | अञ्जनं, कज्जलं |
| हार, माला | लम्बनम्, ललन्तिका, हारः. | साबन | फेनिलः, मार्जनलेपः, पल्यूलम्. |
| कर्णफूल | ताटङ्कः, कर्णिका, कर्णभूषणम्, कुण्डलम्, कर्णवेष्टनम्. | तेल, फुलेल | गन्धतैलम्, पुष्पवासितम्. |
| | | बिन्दी | बिन्दुः (पु) |
| बाजूबन्द, ओंगन | केयूरम्, अङ्गदम्. | शोभित होना | शोभते, राजति-ते. |
| गठिया | कङ्कणम्, करभूषणम्. | | |
| पहुंची | आवापकः, कटकः, वलयः. | बनवाना बनाना | निर्मापयति, निर्माति, निर्मिमीते, करोति, विधत्ते, विरचयति. |
| मोती | मुक्ता, मुक्ताफलम्, शुक्तिजम्. | | |
| आरसी | अङ्गुष्ठाभरणम्. | धारणकर्ना | धारयति. |
| चूड़ी | काचवलयम्. | (बाल) काढ़ना | (केशान्) प्रसाधयति. |
| पायजेब लच्छे | पादभूषणम्. | धोना | प्रक्षालयति. |

## गहने इत्यादि का वर्णन—आभूषणविशेषाः उपाभरणाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| लगाना | संयोजयति, निवेशयति. | सौगन्ध खाना | शपति, शपथं करोति. |
| चुराना | चोरयति, मुष्णाति, अपहरति. | | |

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| देखो गोविन्द की गर्दन में तोड़ा कैसा सोहता है. | पश्य गोविन्दस्य कण्ठे स्वर्णकण्ठिका कथं शोभते. |
| स्त्रियों का चूड़ी पहननाही अक्सर सुहाग का चिन्ह माना जाता है. | स्त्रीणां काचवलयधारणं हि प्रायः सौभाग्यलक्षणं मन्यते. |
| उस औरत की उंगलियाँ अंगूठी छल्लों से और अगूँठा आरसी से अच्छा लगता है. | तस्याः स्त्रिया अङ्गुलयः अङ्गुलीयकैः राजन्ते, अङ्गुष्ठोऽङ्गुष्ठभूषणेन च. |
| यह आदमी सोने की कौंधनी और सोने की जञ्जीर पहनता है. | अयं जनो हैमीं मेखलां हैमं गलभूषणञ्च परिधत्ते. |
| कल मैं सुनार से चाँदी की दान्तकुरेदनी सुई बनवाऊंगा. | श्वोऽहं स्वर्णकारात् राजतीं दन्तशोधनीं सूचीं निर्मापयिताऽस्मि. |
| स्त्रीलोग सिर में चोटा, बन्दी बैना माथे पर, कर्णफूल कानों में, चम्पाकली व हार गर्दन में, बाजू बाहों में, मठिया और पहुँची पहुँचे में, नथ नाक में, पायजेब लच्छे पाओं में, बिछिया पैरों की उँगलियों में, कौंधनी कमर में पहनती हैं. | स्त्रीयो वालपाश्यां शीर्षे, स्त्रीमस्तकाभरणञ्च मस्तके, ताटङ्कौ कर्णयोः, ग्रैवेयकं लम्बनञ्च ग्रीवायां, केयूरे बाह्वोः, कङ्कणे वलयौ च प्रकोष्ठे, नासाभूषणं घोणायां, पादभूषणानि पादयोः, नूपुरान् पादाङ्गुलीषु, मेखलाञ्च कट्यां धारयन्ति. |
| धनवानलोग अक्सर सोने की जञ्जीर गले में पहना करते हैं. | स्वर्णशृङ्खलां प्रायो धनिनः कण्ठे (गले) धारयन्ति. |
| गोपीनाथ आँखों में अञ्जन लगाता है. | गोपीनाथो नेत्रयोरञ्जनमनक्ति. |

## गहने इत्यादि का वर्णन—आभूषणविशेषाः उपाभरणाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| यह स्त्री माथे में सिन्दूर का बेंदा और दान्तों में मञ्जन लगाती है. | सा स्त्री मस्तके सिन्दूरस्य विन्दुं दन्तेषु मञ्जनञ्च संयोजयति (निवेशयति). |
| आल्मारी से कंघी लेकर बाल काढ़लो. | काष्ठफलकात् कङ्कतिकामादाय केशान् प्रसाधय. |
| क्या अभी तक मुँह नहीं धोया अपना मुँह तो शीशे में देख. | किमद्यावधि मुखं न प्रक्षालितं स्ववक्त्रन्तु मुकुरे पश्य. |
| आज मैं दुकान से ब्रुश और साबुन मोल लूंगा. | अद्याहं विपणितः लोममयीं मार्जनीं फेनिलञ्च केष्यामि. |
| चन्दन और ब्रुश मेरे लिये भी लाना. | चन्दनं चन्दनघर्षणखण्डञ्च मदर्थमप्यानय. |
| यह गन्धी अतर बेचता है. | गन्धतैलविक्रेताऽयं पुष्पवासितं तैलं विक्रीणीते. |
| यह अमीर मोतियों की माला पहनता है. | धनाढ्योऽयं मुक्ताफलस्रजं धारयति. |
| यह औरत मेरी औरत का गुलीबन्द चुरा लेगई. | सा स्त्री मम स्त्रियाः ग्रैवेयकमपहरत्. |
| उसको अकेले में बुलाकर पूछो. | तामेकान्ते आहूय पृच्छ. |
| जब उससे पूछा तब सोगन्ध खा गई कि मैंने कुछ नहीं चुराया. | यदा सा पृष्टा तदा मया न किमपि चोरितमिति शपथमकरोत्. |
| मोहनी नाम की स्त्री गुलीबन्दही पहनती हुई देखी है नकि करनफूल और घण्टी वेना. | मोहनी नाम्नी स्त्री ग्रैवेयकमेव दधाना दृष्टा न कर्णिकां ललाटिकाञ्च. |



## चौथा अध्याय — चतुर्थोऽध्यायः।

### गृहस्थी के वस्तु इत्यादि का वर्णन—गृहस्थवस्तूनि।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| खड़ाऊं | पादुका. | घड़ा | घटः, कलशः. |
| जूता | उपानत्(स्त्री)चरणपादुका. पादुः | इँढरी | घटाधारयन्त्रम्. |
| | | चलनी | चालनी, तितउः (पुं) |
| चौकी, स्टूल | काष्ठपीठः. | रई | मन्थः, मन्थदण्डकः. |
| | | बुहारी | संमार्जनी, शोधनी. |
| मेज़ | फलकः-कम्, मञ्चः, आधारः. | कुदारी | कुदारी, कुठारी, कुठारः. |
| आराम-चौकी | सुखासनम्. | फावड़ा | कुद्दालम्, अवदारणम्. |
| | | दीया-सलाई | दीपशलाका. |
| मूढ़ा,कुर्सी | विष्टरः, आसनम्, पीठम्, आसन्दी. | चकमक पत्थर | वन्हिसञ्जननग्रावा (पुं) |
| तिपाईबेंच | त्रिपादिका. | | |
| छाता | छत्रम्, आतपत्रम्, घर्मवारणम्. | फूकनी | नलिका. |
| | | चक्कूछुरी | छुरिका. |
| लठिया | लष्टिका,यष्टिका,यष्टिः (स्त्री) | छींका | शिक्यम्. |
| चक्की-चकला | पेषणी,पेषणयन्त्रम्,अरघट्टः | जूना | यूनम्. |
| | | रस्सी | रज्जुः, (स्त्री) |
| पनचक्की | जलचाल्यचक्रम्,जलयन्त्रम् | फ़र्श | भूतलास्तरणम्, - भूतलसंस्तरः. |
| चूल्हा | चुल्लिः, चुल्ली, अधिश्रयणी. | | |
| अंगीठी | अङ्गाराधानिका, अङ्गारशकटी, हसन्तिका. | सन्दूक-पिटारी | पेटिका, समुद्गकः, सम्पुटः पिटकः, मञ्जूषा. |
| मूसल | मुशलः-लम्. | चर्खा | तान्तवयन्त्रम्. |
| खाट | खट्वा. | तकुआ | तर्कुः (स्त्री). |
| पलंग | कशिपुः, पल्यङ्कः, मञ्चः. | हल | लाङ्गलम्, हलम्, फालः गोदारणम्, सीरः. |
| ओखली | उलूखलम्, उदूखलम्. | | |
| छाज | शूर्पम्. | कूँचा | कूर्चिका. |

## गृहस्थी के वस्तु इत्यादि का वर्णन—गृहस्थवस्तूनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| हरीस | ईषा लाङ्गलदण्डः. | पंखा | वीजनम्, व्यजनम्. |
| शिल, लोढ़ी | शिला, शिलापुत्रः | (खस का पंखा) | उशीरवीजनम्. |
| जोते | आयन्धः, योक्त्रम्, योत्रम्, | पीसना | पिनष्टि, क्षुणत्ति, चूर्णयति. |
| टोकरा | मञ्जूषा, पिटकः, करण्डः, कण्डोलः. | दलना | दलयति. |
| ताला, ताली | तालकम्, कुञ्चिका, ताली | बुहारना | मार्ष्टि, संमार्जयति. अपनयति. |

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| मेरा छाता और लाठी लेकर यहां आओ. | मदीयं छत्रं लष्टिकाञ्चादायात्रागच्छ. |
| खड़ाऊ पहन हुए एक साधु यहां आया. | काष्ठपादुके धारयन्नेकस्साधुरत्रागच्छत् |
| मैं फ़राकत जाता हूं मेरा जूता लाओ. | शौचार्थमहं गच्छामि मदुपानहावानय. |
| इस चौकी ही पर जल का घड़ा रक्खो. | अस्य काष्ठपीठस्योपर्य्येव वारिघटं स्थापय |
| मैं यहीं ही न्हालूंगा. | अहमत्रैव स्नास्यामि. |
| ये आरामचौकी है इस पर बैठिये और मेरी बात सुनिये. | सुखासनमिदं स्थीयतामस्योपरि मद्वार्ता श्रूयताम्. |
| इस मूढ़ें और इस तिपाई को उठाकर उस मेज़ के पास रख दो. | इमं विष्टरमिमां त्रिपादिकाञ्चात उत्थाप्य तत्फलकसमीपे स्थापय. |
| मेरी दफ़्तर में तो एक स्टूल है जो आप हुक्म दें तो लाऊं. | मम कक्षायान्त्वेकः काष्ठपीठो वर्त्तते आनयामि चेदाज्ञापयेयुर्भवन्तः. |
| मेरे घर दो चक्की हैं. | मम गृहे द्वे पेषणयन्त्रे स्तः. |
| ब्याह के लिये अपने गेहूं तो मैं पनचक्की में पिसवाऊंगा. | विवाहार्थं स्वगोधूमांस्त्वहं जलयन्त्रे पेषयिष्यामि. |
| चकला यहां ले आओ मैं पांच सेर चने दलूंगा. | पेषणयन्त्रमत्रानयाहं पञ्च सेटकान् चणकान्दलयिष्यामि. |
| इस घर में दो चूल्हे हैं. | अस्मिन्गृहे द्वे चुल्ल्यौ स्तः. |

## गृहस्थी के वस्तु इत्यादि का वर्णन—गृहस्थवस्तूनि।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| एक मूशल की बड़ी ज़रूरत है इसलिये अपने गाँव के बढ़ई से बनवा कर भेजो. | अस्त्यतीवावश्यकतैकस्य मुशलस्यातः स्वग्रामतक्षकान्निर्मापयित्वाऽत्र प्रेषय. |
| और भी गृहस्थ की बहुतसी सामग्री हैं उनको भी सुनो. | सन्त्यन्या अपि बह्व्यः सामग्र्यो गृहस्थस्य ता अपि शृणु. |
| खाट, पलङ्ग, मेज़, ओखली, छींका, छाज, चलनी, बुहारी, चर्खा, तकुआ, अंगीठी, कुदारी, टोकरा, कूँचा. | खट्वा, पल्यङ्कः, काष्ठफलकः, उलूखलम्, शिक्यम्, शूर्पम्, चालनी, संमार्जनी, तान्तवयन्त्रं, तर्कुः, अङ्गाराधानिका, कुदारी, करण्डः, कूर्चिका. |
| आँच निकालने का पत्थर, दीयासलाई, सिल, लोढ़ी, फुकनी, चाकू, ताला, कुञ्जी, घड़ा, रस्सी, सन्दूक, खस का पङ्खा, फ़र्श वग़ैरह. | वह्निसंजननग्रावा, दीपशलाका, शिला, शिलासुतः, नलिका, छुरिका, तालकम्, कुञ्चिका, घटी, रज्जुः, पेटिका, (मञ्जूषा) उशीरवीजनम्, भूतलास्तरणमित्यादयः. |
| वह स्त्री अपने घरको बुहारी से बुहारती है. | सा स्त्री स्वगृहं शोधन्या संमार्जयति. |
| यह लकड़हारा जूने में ईंधन बाँध कर बाज़ार में बेचने को लाता है. | स काष्ठकेता यूने इन्धनं बद्ध्वाऽऽपणे विक्रेतुमानयति. |
| यह कौन बुढ़िया है जो तकुआ से सूत कातती है. | केयं वृद्धा या तर्कुणा सूत्रं कर्तयति. |

## पांचवां अध्याय — पञ्चमोऽध्यायः ।

### गृहस्थ और वर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानांविशेषाः पात्रविशेषाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| राजमहल | प्रासाद | सुरङ्ग | सुरङ्गा, गूढमार्ग . |
| धनिकों का घर | हर्म्यम्. | खुण्टी | नागदन्त , भारयष्टि |
| झोंपड़ी, कुटी | उटज -जम्, कुटीर , पर्णशाला | खूटा | शिवक कीलक |
| रसोईघर | पाकशाला, महानसम् | भींत | कुड्यम्, भित्ति |
| न्हाने की जगह | स्नानागारम्. | अट्टा | अट्ट , अट्टालकम् |
| जीना | सोपानम् आरोहणम्. | छप्पर | तृणपटलम्, तृणच्छदि |
| नसैनी | निश्रेणि , आधरोहिणी | कुआ | कूप ,उद पानम्, अन्धु [पु] |
| पाखाना | शौचागारम् | बावड़ी | वापिका, दीर्घिका. |
| बैठक | अधिवेशनस्थानम, सत्कारालय | तालाव | तटाक , सर [न०] ह्रद |
| आँगन | अङ्गणम | ईंट [पक्का कच्चा] | इष्टका, पक्वेष्टका, आमेष्टका |
| चौतरा | चत्वरम् | देहली | गृहावग्रहणी, देहली |
| झरोखे | वातायनम्, गवाक्ष . | कलई | सुधा |
| कमरा या कोठरी | कक्षा, कोष्ठ ,शालागृहम | छत्त | छदि [स्त्री] पटलम् |
| खोठ | तुला, स्थूणा | पतनाला | प्रणाल |
| खम्भे | स्तम्भ | मोरी | जलनिर्गम , जलोच्छ्वास |
| किवाड़ | कपाटम् अररम्. | परेंडी | जलस्थानम्. |
| सकल | शृङ्खला लम्, निगड. | छज्जे | मञ्च [पु०प०] मञ्चसनाथ गृह |
| खिड़की | प्रच्छन्नम्, अन्तर्द्वारम् | दर्वाजा | द्वा , [स्त्री] द्वारम् . |
| सोने की जगह | शयनस्थानम् | घर | गृहम्, गेहम्, वेश्मन् [न०] |
| | | | पात्रविशेषाः । |
| | | थाली | पात्रम्, भाजनम् |
| | | कलशा घड़ा लोटा | कलश -शम् घट , उदक पात्रम् |

## गृहस्थ और बर्तन इत्यादि का वर्णन–गृहस्थानां विशेषाः पात्रविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| टोकनी | स्थाली, उखा, [स्त्री] पिठरः पिष्टपचनम्. | लोहा | अश्मसारः, अयः [न०] लोहः-हम्, कालायसम्. |
| चमचा | चमसः-सम्, दर्विः र्वी [स्त्री] | तांबा | ताम्रम्, शुल्बम्, उदुम्बरम्. |
| बर्तन | अमत्रम्, पात्रम्. | सोना | स्वर्णम्, सुवर्णम्, कनकम्, रुक्मम्, जाम्बूनदम्, चामीकरम्, काञ्चनम्, हेमन् [न०] हिरण्यम्. |
| पली | कंबिः-बी, दर्विः, खजाका. | | |
| कुप्पी | कुतूः [स्त्री०] | | |
| चीमटा | कंकमुखम्. | | |
| संडासी | संदंशः-कम्. | सीसा | सीसम्, नागम्, वप्रम्. |
| गिलास | पानपात्रम्, शरावः. | चान्दी | रजतम्, रूप्यम्. |
| कटोरा | चषकः-कम्, काचपात्रम्. | काच | क्षारः, काचः. |
| कूंडी, सोंटा | अश्मपात्रम्, लगुडः, यष्टिः [स्त्री०] | मैलाकरना | कलुषयति, आविली मलिनी करोति. |
| मथानी | मन्थनी, गर्गरी. | छवाना | आच्छादयति. |
| परात | बृहद्भाजनम्. | चाहना | अभिलषति, इच्छति, रोचते |
| बिलोट | कुठरः, विष्कम्भः. | फेंकना | प्रास्यति, आपातयति. |
| कड़ाही | कटाहकः, बृहत्कटाहः. | डालना | प्रक्षिपति. |
| घंटा, हांडी | हण्डी | लिप्पी-कराना | लेपयति. |
| नाद | द्रोणि-णी [स्त्री०] | | |
| तवा | ऋजीषम्, पिष्टपचनम्. | जलाना | दाहयति, ज्वलयति, तापयति. |
| पीतल | पित्तलम्, आरकूटः-टम्, रीतिः. | जलना | दहति, ज्वलति, तपति, प्लुष्यति. |
| कांसी | कांस्यम्. | | |

## गृहस्थ और बर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानांविशेषाः पात्रविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| राजाओं के घर "प्रासाद" धनवानों के घर "हर्म्य" और ऋषियों का "उटज" कहलाता है. | राज्ञां गृहं प्रासादः, धनिनां गृहं हर्म्यं, ऋषीणामुटज इति कथ्यते. |
| आप के घर में कोई अलग रसोई घर भी है. | भवतः वेश्मनि काचित्पृथक् पाकशालाप्यऽस्ति. |
| नहीं, तो धूँआ गृहस्थ की चीजों को काला करही देगा. | नहि, तर्हि धूमः गृहस्थानां वस्तूनि मलिनी करिष्यत्येव. |
| शादी वगैरह में भट्टी से काम चलता है मामूली चूल्हे से नहीं. | विवाहादौ बृहदधिश्रयण्या कार्यं भवति नतु सामान्यचुल्लिभिः. |
| मेरे घर में तो बैठक रसोई घर गुसलघर और पाखाना अलग २ हैं. | ममगृहेतु सत्कारालयः पाकशाला स्नानगृहम् शौचागारं च पृथक्पृथगस्ति |
| तुम्हारे घर में आँगन कैसा है. | तव गृहे कीदृगङ्गणमस्ति. |
| न बहुत लम्बा चौड़ा न छोटा ही. | नातिविस्तीर्णं न सङ्कीर्णमेव. |
| इस घर में बहुत से झरोखे, चार कोठे, चौंसठ शीशम की कड़िया, नीम के किवाड़, कितनीही खिड़कियां मौजूद हैं. | अस्मिन्गृहे बहवः गवाक्षाः, चत्वारः कक्षाः, चतुःषष्ठि.शिंशिपाया स्थूणा निम्बस्य कपाटानि अनेकान्यन्तद्वाराण्युपस्थितानिसन्ति. |
| क्या सब किवाड़े बाहर भीतर की जंजीर वाली हैं ? | बाह्यस्याभ्यन्तरस्य किं सर्वाण्यरराणि शृङ्खलामयानि सन्ति। |
| हां। सोने के कमरे में जाकर मेरा बिछौना बिछादो। तू कहां सोता है. | ओम्। शयनागारे गत्वा ममास्तरणमास्तारय त्वङ्कुत्र स्वपिषि. |
| गरमियों में और बर्सात में अट्टे पर और दूसरे मौसम में घर के भीतर. | ग्रीष्मे वर्षर्तौ चाट्टालकेऽन्यस्मिन्नृतौ गृहाभ्यन्तरे. |
| क्या वहां पंखा भी है ? है तो. | किं तत्र व्यजनमप्यस्ति ? अस्तितु. |
| कल मैं छप्पर बन्दों से छप्पर छाऊँगा. | श्वोऽहं तृणपटलकारेभ्यस्तृणपटलमाच्छादयितास्मि. |

## गृहस्थ और बर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानांविशेषाः पात्रविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| तुम्हारे घर की बड़ी ऊंची हवा रोकने वाली भीतियाँ हैं. | तव वेश्मनो ऽत्युन्नता वायुरोधका भित्तयस्सन्ति. |
| बिना पानी की जगह में मैं एक कूआ बनवाऊं यह चाहता हूँ. | निर्जलभूमौ निर्मापयेयमेकं कूपमित्यभिलषामि. |
| मैं भी अव्वलतो कच्ची ईंटों का, हाथ चलने पर पक्की ईंटों का घर बनवाऊंगा. | अहमपि प्रथमन्तु आमेष्टकानां, सति वैभवे पक्वेष्टकानामेव गृहं निर्मापयिष्यामि. |
| घर में सीढ़ी ज़रूर रखना चाहिये. | वेश्मनि सोपानमवश्यं निर्मातव्यम्. |
| तुम्हारे शहर में कोई तलाव या बावड़ी है. | अस्ति कश्चित्तडागो वापिका वा तव नगरे. |
| घर की देहली पर बैठ कर कभी मत खाओ. | गृहावग्रहण्यां स्थित्वा कदापि मा भुङ्क्ष्व. |
| छत के ऊपर चिकनी मिट्टी डाल दो. | पटलस्योपरि स्निग्धां मृत्तिकामापातय. |
| पतनाला तो पक्की ईंटों से बनवा कर चूना से लिप्पी करा दो. | प्रणालन्तु पक्वेष्टकाभिर्निर्माप्य चूर्णेन सुधया वा लेपय. |
| बलदेव के घर में मोरी बड़ी छोटी है और पलैंड़ा बहुत ऊँचा है. | बलदेवस्य गृहे जलनिर्गमोऽतीव सूक्ष्मः जलस्थानं चातीवोन्नतमास्ति. |
| मेरे घर में चार दर्वाज़े हैं दो पुरुषों के और दो स्त्रियों के. | सन्ति चत्वारि द्वाराणि मम वेश्मनि द्वे पुरुषाणां द्वे स्त्रीणाञ्च. |
| हमारे घर में छज्जे नहीं हैं इसी से बौछार घर में भीतर घुस जाती है. | अस्मद्गृहे गोपानसी नास्ति अत एव धारासम्पातोऽन्तर्गृहे प्रविशति. |
| गृहस्थ के बर्तन बयान करो. | गृहस्थपात्राणि वर्णय. |
| बर्तन जैसे घड़ा, टोकनी, चमचा, चीमटा वा सँड़ासी, सोने के बर्तन, चांदी के बर्तन, पत्थर के बर्तन, फूंकिनी, लोटा परात, गिलास, | पात्राणि, यथा घटः, स्थाली, दर्विः, कङ्कमुखं, स्वर्णपात्राणि, रजतपात्राणि, अश्मपात्राणि, लगुडः, बृहद्भाजनं, पानपात्रं, |

## गृहस्थ और वर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानां विशेषाः पात्रविशेषाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| कड़ाही, हांड़ी, कड़ाह, कुप्पी, तवा इत्यादि अनेक होते हैं. | कटाहिका, हण्डी, बृहत्कटाहः, कुतूः, ऋजीषमित्यादीन्यनेकानि सन्ति. |
| हकीम लोग सीसा जला कर नागेश्वर बनाते हैं. | वैद्याः सीसं दाहयित्वा नागेश्वरं निर्मापयन्ति. |
| राजा दशरथ बेटे के रंज से मरने के पीछे तेल की नाँद में भरत के आने तक रक्खा गया. | राजा दशरथः पुत्रशोकेन मरणानन्तरं तैलद्रोण्यामाभरतागमनात्स्थापितः. |
| यह स्त्री बिलोट के पास दही की कमोरी लाकर रई से दही बिलोती है और मक्खन बेटे को देती जाती है. | त्या स्त्री कुठरसमीपे दधिभाण्डं मन्थनीम्याऽऽदाय मन्था दधि मथ्नाति हैयङ्गवीनञ्च पुत्राय प्रयच्छति. |

## छठवाँ अध्याय—षष्ठोऽध्यायः ।

### मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पाद्विशेषा यानविशेषाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| गौ | गौः, धेनुः. | घोसी ग्वाला | घोषः, आभीरः, गोपः गोधुक्. |
| गौ के गले का चमड़ा | सास्ना, गलकम्बलः. | घोड़ा | अश्वः, तुरगः, हयः, घाजी, घोटकः. |
| बैल | बलीवर्दः, वृषः, उक्षन् (पुं०) | अयाल | केसराः, सटाः. |
| बछरा | गोवत्सः. | घुड़ सवार | अश्वारोहः, सादिन् (पु०). |
| भैंस | महिषी, महिषः. | गधा | खरः, रासभः गर्दभः. |
| थन | ऊधः (न०) आपीनम्. | घुड़ साल | अश्वशाला, मन्दुरा. |
| सींग | शृङ्गम्, विषाणः-णम्. | खिचर | अश्वतरः, वेसरः. |
| गोबर | गोमयः-यम्, गोविट्. | दराबी | अश्वतरपालः. |
| पेशाब | गोमूत्रः. | | |

## मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषा यानविशेषाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| बकरी | अजा, छागी. |
| ऊँट | उष्ट्रः, क्रमेलकः, मयः. |
| नाथ,नकेल | नस्योतः. |
| हाथी | गजः, हस्ती, करिन् (पुं०) मातङ्गः. |
| फीलवान | आधोरणः, हस्तिपः. |
| हाथीशाल | वारी, गजबन्धनी. |
| पूंछ | लाङ्गूलम्, पुच्छः-च्छम्, लूमम्, वालधिः. |
| लीद | पुरीषम्, विष्ठा, गूथम्, शकृत्. |
| खुर | खुरः, शफः-फम्. |
| सूअर | क्रोडः, वराहः, किरिः, कोलः. |
| आर्नेकण्डे | करीषम्. |
| बिटौरा | करीषराशिः. |
| घूरा | अवकरनिचयः. |
| भेड | एडका, मेषी, ऊर्णायुः. |
| भूसी | बुसः. |

### यानविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| रथ | रथः, स्यन्दनम्. |
| रथवान | सारथिः, सूतः, सव्येष्टृ(पुं०) |
| बग्घी टम-टम | लघुयानम्, रथः. |
| पालकी तामझाम | नरयानम्, शिबिका, याप्ययानम्, चतुरस्रयानम्. |

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| दहमर्दा | दशयानम्. |
| कपड़े-पहरना | वासः परिधत्ते. |
| नालबन्दी करना | खुरत्रं बध्नाति, खुरत्रेण सनाथीकरोति. |
| मुकाबला करना | प्रतियोधयति, वि-प्रति रुणद्धि, प्रतिकरोति, प्रत्यवतिष्ठते. |
| चरना | चरति, भक्षयति, अत्ति. |
| मलना | घर्षति, मर्दयति. |
| छकड़ा | अनः (न०) शकटः-टम्, वाहनम्, प्रवहणम्. |
| बहली | कर्णीरथम्, लघुशकटः-टम्. |
| विमान | विमानः-नम्, व्योमयानम्. |
| बुलाना | आकारयति, आह्वयति, हूयते |
| सिखाना | शिक्षयति. |
| चढ़ाना | आरोहयति. |
| चढ़ना | आरोहति. |
| तोड़ना | भिनत्ति. |
| तुड़वाना | भेदयति. |
| युद्ध करना | युद्ध्यति-ते, योधयति, विगृह्णाति, संप्रहरति. |
| चलाना हांकना | वाहयति, नोदयति, चालयति, प्रेरयति. |
| सिद्ध करना वा काम निकालना | साध्नोति, साधयति, राधयति. |

## मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषायानविशेषाश्च ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| विहारकर्ना खेलना | विहरति, क्रीडति. | कोशिश करना | यतते, उद्यच्छते, प्रयतते, व्यवस्यति. |
| | | उतरना | अवरोहति, अवतरति. |

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| तुम्हारे पास जो घोसी रहता है उस की गोशाला में कितनी गायँ कितने बैल हैं. | युष्माकं समीपे यो घोषो वसति तस्य गोशालायां कति धेनवः कत्युक्षाणः सन्ति. |
| पाँच गाय, सात बैल. | पञ्च गावः सप्त वृषभा इति. |
| घोसीलोगों से गौओं का दूध और गोवर बेचा जाता है. | गवां पयः गोमयञ्चापि विक्रीयते आभीरैः. |
| भैंसों का सींग गवल उनका दूध माहिष ऐसा कहलाता है. | महिषीणां शृङ्गं गवलं तासां पयो माहिषञ्चेत्यभिधीयते. |
| गौओं के गले में जो खाल लटकती है उसे मनुष्य "सास्ना" कहा करते हैं. | गवां गले या त्वक् प्रलम्बते तां सास्नामिति प्रचक्षते जनाः. |
| गोविन्द की घुड़साल में पाँच घोड़े हैं, उनमें एक घोड़ा अशिक्षित है उस को किसी चाबुकसवार को बुला कर सिखवाओ. | गोविन्दस्याश्वशालायां पञ्च तुरङ्गा विद्यन्ते, तेष्वेकस्तुरगो ऽशिक्षितोऽस्ति तं कमप्यश्वायेनेतारमाकार्य शिक्षय. |
| चौमासे में तो गोवर घूरे पर ही फेंक दिया जाता है. | चातुर्मास्ये तु गोमयमवकरनिचय एव प्रक्षिप्यते. |
| यह ग्वाला जल पीना चाहता है इसे जल पिलाओ. | पिपासत्ययं गोधुगेनं जलं पायय. |
| मरखने बैल नाथ से ही बस में लाये जाते हैं. | दुष्टवृषभा नस्योतेनैव वशीक्रियन्ते. |
| श्रीमान् गोपालदेव के राज्य में कितने घुड़सवार हैं? बेशुमार। | श्रीमद्गोपालदेवराज्ये कत्यश्वसादिनः सन्ति? असङ्ख्याः । |

## मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पाद्विशेषायानविशेषाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| घोड़े और सिंहों के अयाल होते हैं. | अश्वानां सिंहानाञ्च केशरा भवन्ति. |
| गधा बड़ा गरीब जानवर है. | अतिदीनपशूरासभोऽस्ति. |
| इसका मुह काला करके गधे पर चढ़ा कर शहर के चारों ओर घुमाओ. | अस्य मुखं श्यामं कृत्वा गर्दभस्योपरि आरोप्य नगरमभितः परिभ्रामयत. |
| ये दराची खच्चरों को लेजाकर लड़ाई को जाते हैं. | एतेऽश्वतरपालाः वेसराञ्जीत्वा युद्धार्थं गच्छन्ति. |
| बकरी का दूध भी पथ्य होता है. | अजादुग्धमपि पथ्यं भवति. |
| क्या फौजों में ऊँट और हाथी भी रक्खे जाते हैं? | किं पृतनासूष्ट्रा गजाश्चापि रक्ष्यन्ते. |
| ऊँट बोझा लेजाने के लिये हाथी तोपों के लेजाने के लिये रक्खे जाते हैं. | उष्ट्राः भारोद्वहनार्थं गजाः शतघ्नीनामुद्वहनार्थं रक्ष्यन्ते. |
| घोड़े की पूछ में बहुत बाल होते हैं. | हयपुच्छे बहूनि लोमानि भवन्ति. |
| गौओं का गोबर गोमय बोला जाता है. | गवां पुरीषं गोमयमिति शब्द्यते. |
| और संग साथ में भैंस का भी. | प्रसङ्गान्महिषीणामपि. |
| गौओं के खुर फटे और घोड़े वगैरह के समूचे होते हैं. | गवादीनां खुरा युक्ता अश्वादीनामयुक्ता भवन्ति. |
| दो सूअरों के बीच में सिंह भी पानी नहीं पीसक्ता लेकिन दो सिंहों के बीच में एक सूअर ज़रूरही जल पी आता है यह मशहूर है. | द्वयोर्वराहयोर्मध्ये सिंहोऽपि पानीयं पातुं न क्षमः परञ्च द्वयोः सिंहयोर्मध्ये एकः किरिः जलमवश्यं पिबत्येवेति प्रसिद्धम् . |
| पहिले ज़माने में रथी लोग रथों से ही लड़ाई में लड़ते थे. | पूर्वदा मृधे रथिनः रथैरेव युध्यन्ति स्म. |
| और सारथी लोगही रथ के घोड़ों को जोतते थे. | सूताश्चैव रथवाहान् वाहयन्ति स्म. |
| गाय वगैरह चौपाये अक्सर घास खाते हैं. | गवादयश्चतुष्पदाः प्रायशो घासं (शष्पं) चरन्ति. |

## मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पाद्विशेषायानविशेषाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| सईस घोड़ा खुजाता है. | अश्वपालोऽश्वं मर्दयति. |
| अब तो बहुत से धनवान् और बड़े ओहदेदार अहलकार लोग बग्घियों में इधर उधर जाया करते हैं. | इदानीन्तु बहवो धनाढ्या उच्चपदस्थायिनो राजसेवकाश्च छिन्नकादिषु लघुयानेष्वितस्ततो गच्छन्ति. |
| बहुत से धनवान् अब भी पालकी पर चढ़ कर जाते हैं. | बहवो धनिनोऽद्यापि शिबिकामारुह्य गच्छन्ति. |
| पांच के दर्जे के लोग छकड़े मझोलो या टमटमों से अपने काम निकाल लेते हैं. | मध्यमश्रेणिजना अनोभिः (शकटैः) लघुशकटैः लघुयानैर्वा स्वकार्याणि साधयन्ति. |
| सब सवारियों में रेलगाड़ी बहुत ही आराम देनेवाली और थोड़े खर्च की है. | सर्वेषु यानेषु रेलाख्य- शकटोऽतीव सुखप्रदोऽल्पव्ययश्च. |
| पहिले देवतालोग विमानों में विहार करते थे. | पुरा देवा व्योमयानेषु विहरन्ति स्म. |
| अब अङ्गरेजलोग विमान के रिवाज के लिये अकसर कोशिश कर रहे हैं. | अधुनाङ्गलदेशवासिनोऽऽकाशविमान-प्रचारार्थं प्रायो यतन्ते. |
| लेकिन उनसे अभी तक कोई ठीक २ चढ़ने उतरने की तरकीब नहींमिली. | परञ्च न प्राप्ता यथोचिता रोहणावरो-हणक्रियाऽद्यावधि. |
| मुल्क काबुल में उस मुल्क के रहने-वाले मुसल्मानलोग भेड़ का मांस खाते हैं और उसकी खाल का वस्त्र पहरते हैं. | काबुलाख्ये देशे तद्देशनिवासिनो यवनाः ऊर्णायोर्मांसमदन्ति तत्चर्मणश्च वासः परिदधते. |
| रथवान् अपने घोड़े के नाल बँधवाताहै. | सव्येष्टा स्वाश्वस्य खुरत्रं बन्धयन्ति. |
| भेड़ी भेड़िये का तब मुकाबला करती है जब इसका मेमना पास होता है. | मेषी तदा वृकं प्रति योधयति यदास्याः शावकस्समीपस्थो भवति. |

## सातवाँ अध्याय—सप्तमोऽध्यायः।

### पक्षी इत्यादि का वर्णन—पक्षिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| पक्षी | पतत्रिन् (पुं०) विहगः, खेचरः, खगः. | नीलकंठ | चाषः-सः, किकीदिविः. |
| | | टटीरी | टिट्टिभः |
| चोंच | चञ्चुः-चूः, (पुं० स्त्री०) त्रोटिः (स्त्री०), तुण्डम्. | चमगादड़ | जतुका, अजिनपत्रा. |
| | | उल्लू | उलूकः, कौशिकः, पेचकः. |
| पंख | पिच्छम्, पक्षः, गरुत् (पुं०) | घुग्घू | घूकः, दिवान्धः. |
| चिड़िया | चटकः, कलविङ्कः. | हंस | मरालः, राजहंसः. |
| कौआ | काकः, वायसः, ध्वाङ्क्षः. | खुटपावरी | दार्वाघाटः, शतपत्रकः. |
| पेंडुक | छिद्रगलः. | मोर | मयूरः, शिखी. |
| तोता | शुकः, कीरः, वक्रतुण्डः. | मोरपंख | बर्हः-र्हम्, चन्द्रकः, मेचकः. |
| मैना | सारिका. | मोरवाणी | केका, मयूरवाणी. |
| चील्ह | चिल्लः-ल्ला, आतापिन् (पुं०) कुररः. | पक्षियों की आवाज | रवः, रावः, कलकलः. |
| कबूतर | कपोतः, पारावतः, कलरवः. | घोंसला | कुलायः, नीड़ः. |
| मुर्गा | कुक्कुटः, ताम्रचूड़ः, नखायुधः. | पटवीजना | खद्योतः, ज्योतिरिङ्गणः. |
| | | तीतर | तित्तिरः. |
| गिद्ध | गृध्रः, दाक्षाय्यः. | बटेर | वार्तिरः |
| सारस | सारसः, कङ्कः, वकः, पुष्कराह्वः. | लवा | लावः. |
| | | कुलङ्ग | उत्क्रोशः, कुररः. |
| बाज | श्येनः, शशादनः, पत्रिन् (पुं) | चकवा | चक्रः, चक्रवालः, कोकः. |
| शिकरा | | बोलना | कूजति, रौति. |
| बाज पालने वाले | श्येनपालकः | रोशनहोना | प्रकाशते. |
| | | बसेरालेना | विश्राम्यति. |
| कोयल | कोकिलः, परभृत् (पुं०) | चमकना | द्योतते, शोभते, विद्योतते, प्रकाशते. |
| पपीहा | चापः, पिकः, चातकः. | | |

## पक्षी इत्यादि का वर्णन—पक्षिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| देखो आसमान में पखेरू उड़ रहे हैं. | पश्याकाशे पक्षिण उड्डीयन्ते. |
| ख़ास २ पखेरुओं के अलग २ नाम लो. | मुख्यविहगानां पृथक् पृथक् नामानि वर्णयतु. |
| चिरौटा, कौआ, तोता, मैना, चील्ह, कबूतर, मुर्ग, गिद्ध, सारस, शिकरा, कोयल, पपीहा, चामचिर्र, उल्लू, घुग्घू, हंस, खुटकबढ़ैया, मोर, तीतर, बटेर, लवा, वगैरह परन्द अक्सर मांस खाने वाले होते हैं. | चटकः, काकः, शुकः, सारिका, चिल्लः, कपोतः, कुक्कुटः, गृध्रः, सारसः, श्येनः कोकिलः, चापः, जतुका, उलूकः, घूकः, मरालः, दार्वाघाटः, मयूरः, तित्तिरः, वार्तिरः, लाव इत्यादयः पक्षिणः प्रायोमांसाशिनो भवन्ति. |
| पखेरू अपनी चोंचों सेही हाथ का काम निकालते हैं. | पक्षिणः स्वचञ्चुभिरेव हस्तकार्यं वाहयन्ति. |
| पटबीजने अक्सर जलवाली जगहों में रात में चमकते हैं. | खद्योताः प्रायशो जलसनाथेषु स्थलेषु रात्रौ द्योतन्ते. |
| परन्दों की आवाज़ "रव" या कलकल कहलाती है. | पक्षिणां शब्दो रवः कलकलो वेत्यभिधीयते. |
| मोर की पूंछ बर्ह और उसकी वाणी केका कहलाती है. | मयूरपिच्छं बर्हस्तद्वाक्केकेत्यभिधीयते. |
| मोर चौमासे में नीले बादलों को देख कर बहुत खुश होते हैं. | मयूराश्चातुर्मास्ये नीलबलाहकान्दृष्ट्वाऽतीव हृष्यन्ति. |
| क्या सूरज का भी नाम खद्योत है? है तो. | किं सूर्यस्यापि नाम खद्योतोऽस्ति? अस्ति नु. |
| बगीचे में इधर उधर पक्षी बोलते हैं. | उद्यान इतस्ततो खगाः कूजन्ति. |
| शाम को परन्द अपने २ घोंसलों में बसेरा लेते हैं. | सायंकाले पतत्रिणः स्वेषु स्वेषु नीडेषु विश्राम्यन्ति. |

## पक्षी इत्यादि का वर्णन—पक्षिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| सबेरे उठ कर उनकी मनचाही जगहों में जाने की इच्छा होगी. | कल्यमुत्थाय तेषां स्वेष्टदेशेषु जिगमिषा भविष्यति. |
| कबूतरबाज़ अपनी छत्री पर आये हुए दूसरों के कबूतरों को पकड़ कर उनके पर कैंच कर देते हैं. | कपोतपालकाः स्वछत्र आगतानन्येषां पारावतान्धृत्वा तत्पक्षाल्लुनन्ति. |

## आठवाँ अध्याय—अष्टमोऽध्यायः।

### दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनोजीवविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| चींटी | पिपीलिका, पिपीलकः. | छांह | अनातपः. |
| टीडी | शरभः, शलभः. | सांप | सर्पः, अहिः, दन्दशूकः, सरीसृपः. |
| खेत | क्षेत्रम्, वप्रः–प्रम्, भूमिः (स्त्री). | ,, का फन | फणा, स्फटा. |
| अजदहा | अजगरः. | ,, ,, विष | क्ष्वेडः, गरलम्, विषम्. |
| मक्खी | मक्षिका, सरघा (मधुमक्षिका). | सपेरा | आहितुण्डिकः. |
| | | विषवैद्य | जाङ्गुलिकः. |
| मोम, | मधूच्छिष्टम्, सि (सि) क्थम्. | बिच्छू | वृश्चिकः, द्रोणः. |
| छत्ता | मधुकोषः, चषालः, करण्डकः. | डंक | लूमम्. |
| | | कातर | शतपदी, |
| दीमक | श्वेतपिपीलिका. | कानसलाई | कर्णशलाका. |
| बमई | वल्मीकः–कम्, वामलूरः. | अण्डा | डिम्बः. |
| बरें | बरटा, गन्धोली. | गोह | गोधा |
| भौंरा | भ्रमरः, षट्पदः, अलिः, भृङ्गः. | छिपकली | पल्ली. |
| खटमल — | मत्कुणः, उद्दंशः, खट्वामलः. | मच्छर — | दंशः, मशः—कः, वनमक्षिका. |
| धूप | आतपः. | डाँस | |

## दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनोजीवविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| झींगर मजीरा | झीरुका, झिरिका, झिल्लिका. | भौंकना | बुक्कति. |
| | | काटना डंकमारना | दशति, व्यथयति. |
| चूहा | मूषकः, उन्दुरः-रुः, आखुः. | | |
| बिलाय | ओतुः, बिडालः, मार्जारः, आखुभुक्. | नाश करना | नाशयति. |
| | | ,, होना | नश्यति. |
| कुत्ता | श्वा, कुक्कुरः, सारमेयः. | खींचना | आकर्षति, कृषति, समाकर्षति. |
| गिलहरी | काष्ठमार्जारः, चमरपुच्छः. | रहना या रखना | वसति, नि-प्रति-वसति व-र्तते, तिष्ठति, अध्यास्ते. |
| कपास | कार्पासः, तूलः. | | |
| बन्दर | वानरः, कपिः, मर्कटः, शा-खामृगः. | मस्त होना | माद्यति. |
| | | जिंदा रहना | जीवति, प्राणान्धारयति. |
| लंगूर | कपिः, प्लवङ्गः, मर्कटः, दी-र्घलाङ्गूलः. | चुभाना | संलग्नीकरोति, निवेशयति, संश्लेषयति. |
| चीचरी कलीला | चर्चिका. | घुसना | संश्लिष्यति, संनिविशते, संलगति, संलग्नोभयति. |
| पतङ्ग | पतङ्गः, शलभः | चिपटना | आश्लिष्यति, आलिङ्गति, सज्जति, लगति, आ-अव+लंबते अनुबध्नाति. |
| जूँ | यूकः (पुं० स्त्री). | | |
| लीक | लिक्षा (स्त्री०). | | |
| घूँस | बृहन्मूषकः. | कतरना | कृन्तति, लुनाति, छिनत्ति, आवापयति |
| नौला | नकुलः, बभ्रुः, अङ्गूषः. | | |
| परकैंटा | कृकलासः, सरटः. | फाड़ना चीरना | विदारयति, विदृणाति, उ-ल्लुञ्चति. |
| बर्रा | दंशकः, गोमक्षिका | फटना | दृणाति, |
| छछून्दर | छुछुन्दरी, गन्धमुखी, दी-र्घतुण्डी, विषान्धिका. | छोड़ना | जहाति, त्यजति, उत्सृजति, उज्झति. |
| तुमुही | छिमुषा. | | |
| मकड़ी | तन्तुवायः, तन्तुनाभः, लूता मर्कटकः, ऊर्णनाभः. | टुकड़े रक० | खण्डयति, खण्डशः करोति. |
| | | फैलाना | तनुते, तनोति, विस्तारयति. |
| | | पीना | पिबति, धयति. |
| ,, जाला | जालं, तन्तुसन्ततिः. | रेंगना | सर्पति, मन्दंप्रसर्पति. |

## दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनोजीवविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| यह देखो लाल चींटी ने मुझे काट खाया. | रक्तपिपीलिकेयं मामदशदिति पश्य. |
| टीड़ी जिस खेत में गिरती हैं उसको जड़ से उड़ा देती हैं. | शलभा यस्मिन् क्षेत्रे पतन्ति तत्समूलं नाशयन्ति. |
| कभी तूने अजगर भी देखा है? नहीं. | दृष्टस्त्वया कदाप्यजगरः? न. |
| लेकिन सुना है कि वह अन्दाज में बीस सेर या इससे कम ज्यादह होता है. | परञ्च श्रुतं ममाने विंशति सेटकमित-स्तन्न्यूनाधिको वा भवति. |
| वह पास आये हुए जीवों को श्वास सेही खींच कर मुंह में निगल जाता है. | स समीपागताञ्जीवान् श्वासेनैवाकृष्य मुखेन निगिलति. |
| मोहार की मक्खी फूलों से रस खींच कर छत्ते में रखती हैं. | सरघाः पुष्पेभ्यो रसमाकृष्य मधुकोषे निदधते. |
| ये दीमक इस किवाड़ को खागई. | श्वेतपिपीलिका इमे एतत्कपाटमखादन्. |
| घेले का मोम लाओ. | अर्धताम्रखण्डस्य (पणार्धस्य) मधूच्छिष्टमानय. |
| मक्खी अक्सर मैली चीजों पर बैठती हैं. | माक्षिकाः प्रायोमलिनेषु वस्तुषु तिष्ठन्ति. |
| बमई में सांप रहते हैं। सांप आहिस्ते चला करता है। यही न समझो सांप तेजी में घोड़े को भी मात देता है. | वल्मीकेषु सर्पा निवसन्ति। सर्पो मन्दं प्रसर्पति। एतदेव नावबुध्यस्व सर्पो जवे घोटकमप्यतिक्रामति. |
| ततैये ने मुझे काट खाया जल्दी दीआ-सलाई या आक का दूध लाओ. | रक्तवरटा मामदशत्तूर्णं दीपशलाका-मर्कदुग्धं वानय. |
| फूलकी खुशबू सूँघ कर भौंरा मस्त होता है. | पुष्पगन्धमाघ्राय भ्रमरो माद्यति. |
| इस खाट में बड़े खटमल हैं इस को धूप में डालदो. | अस्यां खट्वायां बहवो मत्कुणास्सन्ति एनामातपे (घर्मे) निक्षिप. |
| सपेरा बमई से सांप पकड़ कर अपनी जीविका के लिये लाता है. | आहितुण्डिको वामलूरात्सरीसृपं धृत्वा स्वजीविकार्थमानयति. |

## दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनोजीवविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| सांप के जहर का हकीम (गायड़ी) आंगुलिक कहलाता है. | विषवैद्यो आंगुलिक इत्यभिधीयते. |
| काले सांप का बड़ा फण होता है उस का काटा हुआ जीव अक्सर नहीं जीता. | कृष्णसर्पस्य महती फणा वर्तते तद्दष्टो. जीवः प्रायो न जीवति. |
| बीछू ने अपना डंक मेरे पाँव के अंगूठे में चुभो दिया. | वृश्चिकः स्वलूमं मम पादांगुष्ठे समश्लेषयत्. |
| मेरे कन्धे पर छपकली गिर पड़ी इस का फल विचारिये. | मम स्कन्धेऽपतत्पल्ली फलमस्य विचार्यताम्. |
| कातर जहां कहीं चिपट जाती है वहीं अपने पैरों को गाड़ देती हैं. | शतपदी यत्र कुत्राप्याश्लिष्यति तत्रैव स्वपादान् संलग्नीकरोति. |
| चोरलोग गोह के सहारे महलों पर चढ़ जाते हैं यह सुना है. | चौरा गोधायाः सकाशाद्धर्म्याण्यारोहन्तीति श्रुतं |
| इस घास में बहुत से डांस हैं. | अस्मिन्घासे बहवो दंशा विद्यन्ते. |
| झींगर अक्सर रात में झींझीं शब्द किया करते हैं. | झीरुकाः प्रायो रात्रौ झींझींतिशब्दं कुर्वन्ति. |
| इस घर में बहुत से चूहे हैं उन्हों ने मेरी बहुतसी चीजें काट डालीं. | अस्मिन्गृहे बहवो मूषकास्सन्ति ते ममानेकानि वस्तून्यहन्तन्. |
| उनके दूर करने के लिये क्या करना चाहिये. | किं कर्त्तव्यं तेषां निवृत्यर्थम्. |

## दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनोजीवविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| कुत्ता भौंकता है-यहां जरूर कोई आदमी है. | कुक्कुरो बुक्कति अत्रावश्यं केनचिन्मनुष्येण भाव्यम्. |
| यह कुत्ता सामने रोरहा है यह खोटा शकुन दिखाई पड़ता है. | श्वायमभिरौतितिदुःशकुनोऽयं दृश्यते. |
| यह गिलहरी मुंह में रूई लेकर पेड़पर चढ़ती है. | काष्ठमार्जारोऽयं वक्त्रे तूलमादाय वृक्षमारोहति. |
| बन्दर जो कुछ चीज़ बाहर देखते हैं उसीको लेकर फाड़ डालते हैं. | वानरा यत्किञ्चिद्वस्तु बहिः पश्यन्ति तदेवनीत्वा दारयन्ति. |
| बन्दर भेड़ियों और लंगूरों से डरते हैं. | मर्कटाः वृकेभ्यो दीर्घलांगूलेभ्यश्च बिभ्यति. |
| चीचरी अक्सर गौ और भैंसों के थनों में चिपटी रहती हैं. | चर्चिकाः प्रायो गवां महिषीणाञ्च स्तने ष्वचलन्स्वन्ते. |
| पतङ्ग दीये पर आकर अपनी ज़िन्दगी से भी हाथ धो बैठते हैं. | पतङ्गाः दीपं प्रत्यागत्य स्वजीवितान्यपि त्यजन्ति. |
| घूस घरों की दीवारों को भी सब ओर से खोद डालती हैं. | बृहन्मूषका गृहभित्तीरपि सर्वतः खनन्ति. |
| न्यौले लड़ाई में सांपों को टुकड़े २ कर डालते हैं. | नकुला युद्धे सर्पान्खण्डयन्ति, खण्डशः कुर्वन्तीति वा. |
| छिपकली का गिरना और करकैंटे का चढ़ना भी शकुन होता है. | पल्लीपतनम् कृकलासारोहणञ्चापि शकुनम्भवति. |
| इस गौकी बग्घी को पकड़ कर और गोबर में रख दूर फैंक दो. | अस्या धेनोः गोमक्षिकां धृत्वा गोमये च निधाय दूरे प्रक्षिप. |
| यहां बड़े मच्छर हैं इसलिये मसहरी लाओ. | अत्र बहवो मशका अतो मशहरीमानय. |

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन--दुःखदायिनोजीवविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| बिल्ली छछुन्दर को चूहे के भोरे मार तो देती है लेकिन बसदय बदबू खाती नहीं. | मार्जारी दीर्घतुण्डीम् मूषकबुद्ध्या हन्ति परञ्च तां गन्धवशात्र खादति. |
| छछुन्दर जब मुंह से छुछ २ ऐसा शब्द करती है तभी उसके मुंह से बदबू निकलती है. | गन्धमुखी यदा छुछुछ इति शब्द-करोति तदैव तन्मुखाद्गन्धो-निस्सरति. |
| दुमुही छ महीने तक एक मुंह से और छः महीने दूसरे मुंह से खाती है यह सुना है. | द्विमुखा षण्मासपर्यन्तमेकमुखात् ष-ण्मासपर्यन्तञ्च द्वितीयमुखात् खाद-तीति श्रुतम्. |
| मकड़ी जाला पूरती है. | ऊर्णनाभस्तन्तुसन्तानं तनुते. |
| कुत्ता सूखे हाड़ के जरिये से निकले हुए अपने मुंह केही खून को खून मानता हुआ और उसे पीता हुआ खुश होता है यही दशा दुनिया के दुःखों को सुख माननेवालों की है. | श्वा शुष्कास्थिस्रुतं स्वमुखरक्तमेव रक्तंमन्यमानः पिबंश्च मोदते ह्यमेव दशा सांसारिकाणां संसृति दुःख-मेव सुखंमन्यमानानाम्. |

## नवाँ अध्याय—नवमोऽध्यायः ।

वन के जीव इत्यादि का वर्णन—वनजन्तुविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| सिंह | मृगेन्द्र, पञ्चाननः, हरिः, केसरी (पु०). | भेड़िया | वृकः, कोकः, ईहामृगः. |
| गेंडा | गण्डकः, खड्ग, गण्डशृङ्गः. | गीदड़ | गोमायुः, जम्बूकः, क्रोष्टा, शृगालः. |
| सेही | श्वाविध, (पुं०) शल्यः. | रोझ | गवयः. |
| बाघ | व्याघ्रः, चित्रक. द्वीपी (पुं०) | लोमड़ी | भूरिमायः, किखिः. |
| रीछ | ऋक्षः, भल्लूकः, भालुकः. | खरहा | शशः—कः. |

## वन के जीव इत्यादि का वर्णन—वनजन्तुविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| वनबिलाव | ओतुः, वनबिडालः, अरण्यमार्जारः. |
| वनमानुष | अरण्यमानुषः. |
| हिरन | हरिणः, कुरङ्गः, मृगः, एणः. |
| हिरन का बच्चा | मृगशावः पोतः. |
| बारहसिंगा | द्वादशशृङ्गः. |
| वनगाय | वनधेनुः, गवयः. |
| बरहेलू सूअर | वनशूकरः. |
| गोरखर | वनरासभः-गर्दभः. |

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| खंगोलना विलोना या बिथरना | गाहते. |
| शिकार होना | आमिषतांयाति, भक्ष्यंभवति' |
| „ करना | मृगयां करोति, मृगयते. |
| झुकना | आ-वि-नमति, आवृजति, वक्रीभवति. |
| झुकाना | नामयति, नम्रीकरोति, आवर्जयति, वक्रीकुरुते. |

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| शेर वन के जीवों का मालिक है परन्तु जहां आग जलती है वहां वह नहीं जाता. | सिंहो हि वनजन्तूनामधिपतिः परञ्च यत्राग्निर्ज्वलति तत्र स न गच्छति. |
| क्या तुमने गैंडा भी देखा है ? हां सम्वत् १९५२ में मैंने जयपुर के अजायबखाने में देखा था. | किं त्वया गण्डशृङ्गोऽपि दृष्टः ? बाढम् एकोनविंशत्युत्तरद्विपञ्चाशत्तमे विक्रमाब्दे मया जयपुरस्य कौतुकागारे दृष्टः. |
| सेही कांटों से अपने से बलवान् जीवों से मुकाबला करता है. | शल्यः स्वकण्टकैः स्वस्माद्बलवतोऽपि जीवान् प्रतियोधयति. |
| सिंह ज्यादह बलवान होने की वजह से सब वन को छान डालता है. | सिंहोऽतीव बलवत्त्वादखिलं वनं गाहते. |
| छोटे जीव डर सेही सिंह के शिकार हो जाते हैं. | क्षुद्रजन्तवो भियैव सिंहस्यामिषतां यान्ति. |

## वन के जीव इत्यादि का वर्णन—वनजन्तुविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| बाघ या चीता सिंहही की एक क़िस्म है. | व्याघ्रश्चित्रको वा सिंहस्यैव भेदः. |
| जाम्बवान रीछ ने वामन अवतार में विराट् रूप भगवान् की दो घड़ी में तीन परिक्रमा कीं. | जाम्बवता ऋक्षेण वामनावतारे विराड् रूपिणो भगवतः द्विघटिकाभ्याम् तिस्रः परिक्रमाः कृताः. |
| और भी वन के जीवों के नाम लिखो. | अन्येषामपि वनजन्तूनां नामानि लिख. |
| सुनिये, भेड़िया, गीदड़ गवय, लोमड़ी, खरहा, वनबिलाव, वनमानुस, हिरन, चीजू, बारहसिंहा, गोरखर, घरेला सूअर, वनगाय वग़ैरह होते हैं. | श्रूयताम्, वृकः, गोमायुः, गवयः, भूरिमायः, शशः, अरण्यमार्जारो ऽरण्यमानुषः, हरिणः, (चीजू), द्वादशशृङ्गः, वनगर्दभः, वनशूकरः, वनधेनुरित्यादीनि सन्ति. |
| हिरन का बच्चाही मृगशाव कहलाता है. | मृगशिशुरेव मृगशाव इत्युच्यते. |
| सूअर अपनी गर्दन इधर उधर मोड़ नहीं सक्ता है. | क्रोडः स्वकन्धरामितस्ततो नामयितुं न शक्नोति. |
| वनबिलाव अकसर पेड़ों की खोलों में रहते हैं. | अरण्यमार्जाराः प्रायस्तरुकोटरेषु निवसन्ति. |
| सबही हिंसक जीव रुधिर सहित मांस खाते हैं. | सर्वे श्वापदाः सरुधिरं पिशितमश्नन्ति. |

## दसवाँ अध्याय—दशमोऽध्यायः ।

### जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| समुद्र | समुद्रः, सरित्पतिः अब्धिः, अर्णवः, जलनिधिः. | किनारा | कूलम्, रोधः (न०) तीरम्, तटम्, (त्रि०). |
| नदी | सरित्, (स्त्री०) नदी. | कूआ | कूपः, उदपानम्, (ऽस्त्री) प्रहिः अंधुः (पुं०). |

## जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| नहर यम्बे | कुल्या, प्रणाली. | नाव | नौः, तरणिः, तरिः [स्त्री०] |
| प्याऊ जीवोंकी | आहावः, निपानम्. | (छोटी) | उडुपम्, प्लवः, कोलः. |
| | | नौका दंड | क्षेपणी. |
| प्याऊ | प्रपा, पानीयशालिका. | जौंक | यूका, जलौकसः [पुं०] जलौकस् [स्त्री०]. |
| बावड़ी | वापी, दीर्घिका. | | |
| पोखर तालाब | तडाकः, तडागः, जलाशयः. | शंख | शङ्खः, कम्बुः. |
| | | सीप | शुक्तिः [स्त्री०]. |
| जल | अम्भः [न०] तोयम्, पानीयम्, नीरम्, अम्बु [न०] | कूप की मन | वीनाहः. |
| लहर | तरङ्गः, ऊर्मिः, वीचिः, आवर्तः [भँवर] | मेंडक | मण्डूकः, भेकः, शालूरः, दर्दुरः |
| मच्छ | मत्स्यः, मीनः, झषः. | थामला | आलवालम्, आवालम्, आवापः. |
| बबूले | बुद्बुदाः. | जलब्याल | अलगर्दः. |
| मछुए | धीवराः, कैवर्ताः मत्स्योपजीविनः. | ऊदबिलाव | उद्रः, जलमार्जारः. |
| | | केंचुए | गण्डूपदः, किञ्चुलकः. |
| मछली का कांटा | बडिशम्. | खाई | खेयम्, परिखा. |
| ग्राह, नाक | नक्रः, कुम्भीरः, मकरः ग्राहः. | कीच | कर्दमः पङ्कः पङ्किलः [कीचदार]. |
| केंकड़ा | कुलीरः, कर्कटकः. | | |
| कछवा | कच्छपः, कूर्मः, कमठः. | काई | निपढरः, जम्बालः. |
| जल-मुर्गाबी | जलकुक्कुटः. | बतक | वर्तिका, कादम्बः, कलहंसः वर्तकः. |
| ढेंक | बलाका, बिसकण्ठिका | कमल | तामरसम्, पङ्केरुहम्, कमलम्, सहस्रपत्रम्. |
| बगला | बलाका, बकः, कह्वः. | | |
| जलमानुष | जलमानुषः. | कमल की डण्डी | मृणालम्, बिसम्. |
| ह्वेल | तिमिः, तिमिङ्गिलः. | | |
| नाव(बड़ी) | पोतः, यानम्. | ,, जड़ | करहाटः, शिफाकन्दः. |

## जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| कमल की केसर | किञ्जल्कः, केदारः. | मिलना | मिलति. |
| ग्रास करना | कवलयति [ना०धा०] ग्रसति. | उछलना छलांग भरना | उत्पतति, उत्प्लवते। भ्रत्येति, लङ्घते. |
| खुस होना | प्रीणाति, मोदते, हृष्यति. | सिकुड़ना सिकोड़ना | सङ्कुच्यते, आकुञ्च्यते, संह्रियते, सङ्कोचयति, संहरति, आकुञ्चयति, निमीलति. |
| बैठाना-रखवाना | स्थापयति. | | |
| ज़ाहिर करना | द्योतयति, प्रकाशयति दर्शयति, सूचयति, व्यञ्जयति, प्रकटीकरोति, आविष्करोति, व्यक्तीकरोति. | | |

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| समुद्र भी पूर्ण चान्द को देख कर खुश होता है और बढ़ता है मनुष्य तो कहां रहे. | समुद्रोऽपि पूर्णचन्द्रं दृष्ट्वा प्रीणाति वर्धते च किमुतान्ये जनाः. |
| मछुए लोग काँटे के ज़रिये से या जाल से मछलियों को खींच कर बाज़ार में बेचने को लाते हैं. | मत्स्योपजीविनो बडिशद्वारा जालेन वा झषानाकृष्य हाटके विक्रेतुमानयन्ति. |
| इस नदी में बड़े भयङ्कर नाके हैं, इसके किनारे पर भी न जाओ. | अस्यां नद्यामतीव भयङ्करा बहवो नक्रास्सन्ति, अस्यास्तीरेऽपि मागच्छ. |
| क्या तुमने कभी नाके की दाँतों की लड़ी भी देखी है. | किं त्वया कदापि मकरस्य दन्तपंक्तिरपि दृष्टा. |
| यह आदमियों को बिना टुकड़ेही किये निगल जाताहै येहलक होनेकी वजह से | अयं मनुष्यान्खण्डमकृत्वैव कवलयति निगलत्वात्. |
| क्या नहर, बम्बों में भी नाके होते हैं? | किं कुल्यासु प्रणालीषु चापि ग्राहाभवन्ति |

## जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| नहीं। कभी बड़ी नदियों से कोई आभी जाता है. | न। कदाचिद् वृहन्नदेभ्यः कश्चिदागच्छत्यपि। |
| इस बम्बे के दोनों किनारों पर बड़े पेड़ों की छाया है यहां छाते की जरूरत नहीं. | अस्याः प्रणाल्याः द्वयो रोधसोः महती वृक्षच्छाया वर्तते नास्त्यत्रावश्यकता छत्रस्य. |
| इस कूप पर पक्षी मन और जीवों की प्याऊ नहीं है. | अस्य कूपस्योपरि पक्षीनादो निपानञ्च न वर्तते. |
| गरमियों में बहुत से लोग प्याऊ रखवाते हैं. | ग्रीष्मर्तौ बहवो जनाः प्रपां स्थापयन्ति. |
| अब तो बावड़ी नहीं बनवाई जातीं. | इदानीन्तु वाप्योऽपि न निर्माप्यन्ते. |
| इस बड़े तलाव में जो जलजन्तु हैं उनके नाम बताओ। सुनिये—केकड़ा, कछवा, जलमुर्गाबी, ढेंक, जलमानुस, चकवा, बतक, बगला, जोंक, मेंडक, जल का साँप वगैरह। गिंडोये अक्सर चौमासे में पैदा होते हैं वे कभी देह को जल में सकोड़ लेते हैं कभी फैला देते हैं. | अस्मिन्बृहत्तडागे ये जलजन्तवस्तेषां नामानि ब्रूहि। श्रूयन्ताम् कुलीरकः, कूर्मः, जलकुक्कुटः, बलाका, जलमानुषः, चक्रः, वर्तकः, बकः, यूका, भेकः, अलगर्द इत्यादीनि। गण्डूपदाः प्रायश्चातुर्मास्ये जायन्ते, ते देहं जले कदापि सङ्कोचयन्ति कदापि विस्तारयन्ति. |
| हवा के जोर से पानी में लहरें पैदा हो जाती हैं. | वायुवेगाज्जले तरङ्गा उत्पद्यन्ते. |
| अथाह (गहरे) पानी में ही भमर पड़ते हैं. | अगाधजल एवावर्ताः पतन्ति. |
| उनमें नावों का चलानाही मल्लाहों की होशियारी जाहिर करता है. | तेषु तरणीनां प्रचालनमेव कर्णधाराणां कौशल्यं द्योतयति. |
| शङ्ख और सिप्पी भी अक्सर समुद्रों में ही मिलती हैं. | शङ्खाः शुक्तयश्चापि नदीशेष्वेव प्रायो मिलन्ति. |

## जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| (बड़े खेद की बात है) कि जहाज का कप्तान (मालिक) भी बहुत आदमियों के साथ हेल के जरिये जहाज टूटने से समुद्र में डूब गया. | अहो, पोताध्यक्षोऽपि बहुभिर्जनैस्सह तिमिद्वारा यानभङ्गेन सागरे न्यमज्जत. |
| मल्लाह लोग नदियों में भी पतवार के जरिये से नावों को चलाते हैं. | नाविका नदीष्वपि क्षेपणीद्वारोडुपानि चालयन्ति. |
| यह तालाब बड़ी कीचड़वाला है इसमें मत घुसो. | अतीव पङ्किलमिदं सरः मास्मिन्प्रविश. |
| इस तालाब में बहुत से कमल हैं. | अस्मिन्तडागे बहूनि तामरसानि सन्ति. |
| किले की खाईयों में अक्सर बहुत पानी होता है. | कोट[दुर्ग]परिखासु प्रायो महज्जलम्भवति. |
| इस थामले में तुलसी का पौधा लगादो. | अस्मिन्नावाले तुलस्या वृक्षं स्थापय. |
| बहुत सी मछलियां खाई के पानी से उछल जाती हैं और डूब जाती हैं. | बह्वो मत्स्याः परिखाजलादुत्पतन्त्यवपतन्ति च. |
| कमल की जड़ का साग बहुत अच्छा होता है. | करहाटस्यापि शाकमतीव शोभनं भवति. |
| इस्साल सूखा से पञ्जाब में रय्यत दुखी है. | वैषमः पञ्चालेष्ववग्रहेण पीडिता प्रजास्ति. |
| पारसाल बङ्गाली लोग तीरससाल मध्य देश के रहने वाले प्लेग से पीड़ित थे। अब ईश्वर सब जगह कुशल करे. | परुद्वङ्गदेशवासिनः परारिचमध्यदेशवास्तव्या महामारीरोगेण पीडिता आसन् अधुनेश्वरः सर्वत्र शं विदध्यात्. |



## ग्यारहवां अध्याय—एकादशोऽध्यायः।

### छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| किताब | पुस्तकम्. | तर्जुमा | अनुवादः. |
| स्लेट तख़्ती | अश्मपट्टिका, काष्ठपट्टिका. | जुगराफ़िया | भूगोलविद्याशास्त्रम्. |
| | | तारीख़ | इतिहासः. |
| काग़ज़ | पत्रम्. | साइन्स | पदार्थविज्ञानः, विज्ञानशास्त्रम्. |
| क़लम | लेखनी. | | |
| दवात | मसीपात्रम्— | ड्राइंग | आकर्षः, आकर्षणं, चित्रशालेख्यम्. |
| स्याही | मसिः-सी [स्त्री०]. | | |
| पेन्सिल | तूलिका, वर्तिका, सीसकशलाका. | न्याय | तर्कशास्त्रम्. |
| | | वेदान्त | दर्शनशास्त्रम्. |
| क़लमदान | लेखनीपात्रम्. | सालियाना इम्तहान | वार्षिकपरीक्षा. |
| बोर्ड | फलकः-कम्, काष्ठखण्डम्. | | |
| खड़िया | खटिका, कठिनी. | इनाम | पारितोषिकः. |
| नक़्शा | देशालेख्यम्, आलेख्यपत्रम्. | मदर्सा | पाठशाला, विद्यालयः. |
| गुजराती | गुर्जरभाषा. | रबर | घर्षकः, मार्जकः. |
| उर्दू ज़बान | उर्दूभाषा. | चिट्ठी ख़त | पत्रम्, सन्देशपत्रम्. |
| अंग्रेज़ी | आङ्ग्लभाषा. | | |
| बङ्गाली | वङ्गभाषा. | पता — | *नामुद्दिश्य, दत्तमङ्काद्यनाम.* |
| फ़ारसी | पारसीकभाषा | अक्षर | अक्षरम्, वर्णः. |
| हिसाब | अङ्कगणितः. | लेख | लेखनम्, लेखः. |
| जबर मुक़ाबला | बीजगणितः. | बोर्डिंगहौस | छात्रालयः मठः. |
| | | अहाता | मर्यादा, सीमन् [पुं०] अवधिः प्रान्तः. |
| रेखा गणित | रेखागणितः ज्यामितिः. | | |
| मसाहत | मापनम्, मितिः [स्त्री०] | इन्स्पेक्शन | निरीक्षणम्, अवेक्षणम्, निरूपणम्, दर्शनम्. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| नौकरी | उपचारः, परिचर्या, आसंश्रयः. | चालचलन | वृत्तम्, आचार' चर. |
| नतीजा | फलम्, उदर्कः, परिणामः. | फ़ीस, तनख्वाह | शुल्कः दकम्, वेतनम्, मासिकम्, भृतिः [स्त्री०]. |
| मैनेजर | प्रणेता, [पुं०] कार्याध्यक्षः अधिपतिः सम्पादकः. | जुर्माना | धन-अर्थ-दण्डः. |
| इन्स्पेक्टर | निरीक्षकः, अध्यक्षः. | सिफर | शून्यम्, बिन्दुः. |
| डाइरेक्टर | शासिता, अधिष्ठाता. | स्पेसिमेन | आदर्शः, प्रतिमा, प्रतिरूपम् |
| उस्ताद | गुरुः, अध्यापकः, आचार्यः. | चन्दा | अंशदानम्, उद्धारदानम्. |
| तालिब इल्म | विद्यार्थी [पुं०] छात्रः, अध्येता पठिता. | टूर्नामेन्ट | सादिक्रीडा युद्धम्. |
| मजमून | विषयः. | रेजिष्टर | लेख्यम्, लिपनस्थानम्. |
| डायरी | दिनपत्रिका, दैनिकवृत्त-पुस्तकम्. | कालेज | बृहद्विद्यालयः-यम्. |
| दिली | मानसी, मानसिकी. | प्रोफ़ेसर | अध्यापकः, गुरुः, आचार्यः. |
| रेजर | क्षुरः. | इन्स्टालमेंट | भागः, अंशः. |
| दर्जा | कक्षा, श्रेणिः-णी. | सनद | प्रमाण निर्णय-पत्रम्. |
| क्लास फ़ेलो | सहाध्यायी [पुं०]. | हमउमर | वयस्यः, मित्रम्, सुहृद् [पुं०] |
| स्कूल „ | पाठशालाध्यायी [सतीर्थ्यः]. | जल्दी | तूर्णम्, शीघ्रम्, झटिति. |
| जमनास्टिक | व्यायामः, मल्लक्रीडा. | बुलाना | आह्वयति ते, आकारयति. |
| मुब्तदी | आरब्धा [पुं०], नवच्छात्रः. | झिड़कना | निर्भर्त्सयते, तर्जयते; निष्ठुरमभि-धा; निन्दति अधिक्षिपति. |
| गेन्द | कन्दुकः, गेन्दुकः. | खर्चकरना | वि-उत्-सृजति, परित्यजति, नियुङ्क्ते, वियुङ्क्ते, क्षपयति, गमयति, यापयति [प्रे०]. |
| बल्ला | यष्टिः, [स्त्री०] लगुडः. | चुपचाप चलेजाना | निभृतं अलक्षितं अपयाति, अपगच्छति. |
| विकेट्स | क्रीडावधिकाष्ठानि. | | |
| लैक्चर | व्याख्यानम्, शासनम्. | | |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| पढ़ना | पठति, अध्येति, वाचयति, अधिगच्छति. | देना (अदा करना) | ददाति दत्ते, अर्पयति. |
| निपटना | निवर्तते. | पढ़ाना | अध्यापयति, शिक्षयति, पाठयति, उपदिशति. |
| गलती करना | भ्रमति, भ्राम्यति, मुह्यति, प्रमाद्यति अपराध्यति. | मना करना | अपलपति-वदति, नस्वीकरोति, निषेधति, प्रत्याख्याति, अप नि ह्नुते. |
| देर करना | चिरयति (ना० धा०). | बढ़ना | प्रवर्धते, प्रचीयते, उपचीयते |
| बताना मालूम कराना | विज्ञापयति. | निकलना | उदेति, उत्तिष्ठति, उत्पद्यते. |
| | | हिज्जे करना | यथाक्षरंसंख्याति - पठति, लिखति. |

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| ऐ प्यारे उठो। सूरज निकल आया और सवेरा हो गया. | उत्तिष्ठ वत्स। सूर्य उदतिष्ठत् प्रातःकालो जातश्च. |
| सुनो मुर्ग बाँग दे रहे हैं और पखेरू भी अपने घोंसलों को छोड़ कर आसमान में विहार कर रहे हैं. | शृणु कुक्कुटसङ्घो रौति पक्षिणश्चापि स्वनीडानुत्सृज्याम्बरे विहरन्ति. |
| पाखाना इत्यादि कामों से निबट कर मदर्से जाओ. | शौचादिकृत्येभ्यो निवृत्य पाठशालां गच्छ. |
| अच्छा। अभी जाता हूं. | बाढम्। गच्छाम्यहमधुनैव. |
| गोपालदत्त! क्यों देर करते हो क्या जुर्माने से नहीं डरते हो. | गोपालदत्त! कथं चिरयसि किमर्थदण्डान्न बिभेषि? |
| दोस्त! डरता तो हूं लेकिन अभी देर नहीं है. | बिभेमि त्वहं मित्र! परञ्चाद्य नातिकालः. |
| अच्छा, आओ२ देखो ये हमारे अंग्रेजी के उस्ताद जा रहे हैं. | वरम्, आगच्छागच्छ, पश्यैते ऽस्माकमाङ्ग्लभाषाध्यापका गच्छन्ति. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिवचनानि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| तो देर नहीं है हौले २ चलो. | तदाहि नातिकालः, शनैः शनैश्चल. |
| मङ्गलदत्त ! तुम्हारा कल्याण हो बहुत दिनों से पाठशाला में तुम्हारी गैर-हाजिरी का क्या सबब हुआ. | मङ्गलदत्त ! भद्रन्ते, बहुभिर्दिवसैः पाठशालायां तवानुपस्थितेः किं कारणं जातम्. |
| मित्र श्यामलाल ! मेरी माता बहुत दिनों से बुखार से पीड़ित थी यही मेरे न आने का कारण था. | वयस्य श्यामलाल ! ज्वरग्रस्तासीन्मदीया माता बहुभिरहोभिः, एतद्धि ममानागमनकारणम्. |
| क्या कोई और खबरगीरा न था ? | किं कश्चिदन्यो निरीक्षको नासीत् ? |
| नहीं मेरे पिता तो काशी गये और बड़े भाई कुरुक्षेत्र की यात्रा में. | न, मम पितरस्तु काशीं गताः ज्येष्ठभ्रातरश्च कुरुक्षेत्रयात्रायाम्. |
| तुम्हारा एक छोटा भाई भी तो है. | एकः कनीयान्भ्रातापि तव विद्यते. |
| हां, वह तो बालक होने से निगहबानी करने में असमर्थ है. | बाढम्, सतु बालत्वान्निरीक्षणाक्षमः. |
| अब तुम्हारी वालिदह (माता) कैसे हैं. | अधुना तवाम्बाः कथं विद्यन्ते ? |
| अब तो ईश्वर (खुदा) की कृपा (फ़ज़ल) है. | अस्तीश्वरानुकम्पा त्विदानीम्. |
| आज हमारे मदर्से में यह क्या भीड़ है यह पूछ कर जल्दी मुझको खबर दो. | अद्यास्माकं पाठशालायां कोऽयं महाजनसम्मर्द इति पृष्ट्वा तूर्णम् विज्ञापय माम्. |
| क्या तुम नहीं जानते कि आज कालेज का टूर्नामेन्ट होगा. | किं त्वं न जानास्यद्य आङ्ग्लविद्यालयस्य सादिक्रीडा भविष्यति. |
| इसका मुन्तज़िम कौन है ? | कोऽयमस्य निरीक्षकः ? |
| हमारे मदर्से के हेडमास्टर श्रीमान् महामहिममहोदय अपने अनुचर लोगों को खुश रखने वाले श्रीमान् कूपरसाहिब हैं. | अस्मत्पाठशालाध्यक्षः श्रीमन्महामहिममहोदयः स्वानुचरानुमोदप्रदः श्रीमत् कूपराभिधेमहाशयः. |
| निश्चयही इनका इन्तज़ाम तारीफ़ के लायक है. | खलु प्रशंसनीयोऽस्य प्रबन्धः. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| इनके वक्त में हमारी पाठशाला सब तरह से बहबूदी को प्राप्त हुई. | अस्य समये नः पाठशाला सर्वथोन्नतिं गता. |
| ऐसे हेडमास्टर जिनके वक्त में हम तालिबइल्म और उस्ताद लोग अपने२ कामों को होशियारी से करते हुए निडर रहते हैं, चिरजीव रहैं. | चिरञ्जीवत्वे तादृशोऽध्यक्षो यस्य समये वयमध्यापका विद्यार्थिनश्च स्वकृत्यानि सावधानतया कुर्वाणा निर्भीकाः (अकुतोभयाः) स्मः । |
| अब बहुत बातें होली जमनास्टिक का वक्त हो गया. | अलम्बहुभाषणेन; व्यायामसमयो जातः. |
| वहां जाकर पहिले तो एक कतार में खड़े हो. | तत्र गत्वा पूर्वन्त्वेकस्यामेव पङ्क्त्यामवातिष्ठध्वम्. |
| तब ड्रिलमास्टर के हुक्म से हरेक दर्जा कतार में ही अपने२ पढ़ने के स्थानों में जाओ. | ततो व्यायामाध्यक्षानुज्ञातः प्रत्येका कक्षा (श्रेणिः) पङ्क्त्यामेव स्वे स्वे ऽध्ययनालये गच्छतु. |
| इसके बाद विद्यार्थियों से पढ़ना शुरू किया जाता है. | ततो ऽध्ययनमारभ्यते छात्रैः. |
| यह अंग्रेजी का घण्टा है इसलिये हेड मास्टर साहिब के पास चलें. | अस्त्येषा घटिकाऽऽङ्ग्लभाषायाः अतः प्रथमाध्यापकसमीपे चलत. |
| कल संस्कृत और हिसाब में हमारा इम्तहान होगा. | श्वो भविता संस्कृते गणिते चास्माकम्परीक्षा. |
| देखिये कौन पास होता है कौन फेल. | पश्यन्तु क उत्तीर्णः कोऽनुत्तीर्णो भवेत्. |
| जो विद्यार्थी अपने मुकर्रिर किये हुए सबकों को मुकर्रिरहही वक्त पर नहीं याद कर लेते हैं। उनका पास होना मुश्किल है. | ये विद्यार्थिनः स्वनियतपाठान् नियतसमय एव न स्मरन्ति (कंठस्थान्कुर्वन्ति) तेषामुत्तीर्णता, दुस्साध्या, (कठिना वा). |
| इसीसे अक्लमन्द तालिब इल्म को चाहिये कि दिये हुए सबकों को मुकर्रिरहही वक्त पर याद कर ले. | अत एव विचक्षणश्छात्रः नियतपाठान् नियतसमय एवानुसरेत्. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| अक्लमन्द लोग या तालिबइल्म आज के काम को दूसरे दिन के लिये नहीं छोड़ते. | बुद्धिमन्तो जनाश्छात्रा वाद्यतनं कार्यं द्वितीयदिवसार्थं न परित्यजन्ति. |
| उस्ताद आते हैं खड़े हो जाओ. | अध्यापका आगच्छन्ति अभ्युत्थानमेभ्यो दीयताम्. |
| सब एक बारगीही खड़े होते हैं और गुरु को नमस्कार (प्रणाम) करते हैं. | सर्वे युगपदेवोत्तिष्ठन्ति गुरुं नमस्कुर्वन्ति च. |
| उस्ताद लोग अपने विद्यार्थियों को आशीर्वाद देकर पहिले तालिबइल्मों की हाज़िरी लेते हैं. | अध्यापकाः स्वच्छात्रानभिनन्द्य प्रथमं छात्राणां समुपस्थितिं गृह्णन्ति. |
| इसके बाद पहिले दिन पढ़ाये हुए सबकों को सुनते हैं. | तदनन्तरं पूर्वदिवसाध्यापितपाठान् शृण्वन्ति. |
| और लड़के अलग २ सुनाते हैं. | छात्राश्च पृथक् पृथक् श्रावयन्ति. |
| जो ठीक २ सबक नहीं सुनाता वह पिटता और जुर्माना किया जाता है. | यो यथावत्पाठं न श्रावयति स देहदण्डमर्थदण्डञ्च लभते (देहार्थदण्डभाक् भवति). |
| आजका उक़्लैदस का सबक बहुत मुश्किल है खुदाही खैर करे. | अद्यतनो रेखागणितपाठो ऽतीव कठिनः ईश्वर एव कुशलं विदध्यात्. |
| मणिधर ने कल मेरी पुस्तक चुराली. | मणिधरो ह्यो मदीयपुस्तकममुष्णात्. |
| हेडमास्टर साहब ने तहक़ीकात करके उसको ऐसा मारा जिससे वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा. | मुख्याध्यक्षो निर्णयानन्तरं तं भृशं तथाताडयद्यथा स निश्चेतनो भूत्वा भूमावपतत्. |
| यह हेडमास्टर साहब ने बहुत अच्छा किया. | शोभनं विहितमेतन्मुख्याध्यक्षैः. |
| वह फिर कुछ भी न चुरायेगा. | स पुनः न किमपि चोरयिष्यति. |
| कृपा और दण्ड तो धर्मही मालिकों के होते हैं. | अनुग्रहो निग्रहश्च द्वौ धर्मावेव प्रभूणां भवतः. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| सालियाने इम्तहान में पास हुए विद्यार्थियों में से पहिले दूसरे इनाम पायेंगे. | वार्षिकपरीक्षायामुत्तीर्णेषु विद्यार्थिषु प्रथमद्वितीयौ पारितोषिकं लप्स्येते. |
| मेरा तो तीसरा नम्बर है नहीं तो मैं भी इनाम पाता. | मदीया तु तृतीया संख्या नोचेदहमपि पारितोषिकमलप्स्ये. |
| मित्र तुम्हारा कौन सा नम्बर है. | मित्र तव कतमा संख्या ? |
| न मालूम, मगर आज मैं क्लर्क से पूछूंगा. | न जाने, परञ्चाहमद्य लिपिकारं (क्लर्क) प्रक्ष्यामि. |
| तुम्हारे मदर्से में कितने उस्ताद हैं और वे किस २ जाति के हैं. | तव पाठशालायां कतिपया अध्यापकाः सन्ति किं किं जातीयाश्च ते. |
| हेडमास्टर साहब तो यूरप देश के एकही है. | मुख्याध्यक्षस्तु यूरुपदेशीयो एक एव. |
| उनकी क्या तनख्वाह है ? ४०० रुपये. | तस्य किं वेतनम् ? मुद्राणां चतुःशतम्. |
| सैकिण्ड मास्टर कौन है ? एक ईसाई साहब हैं. | द्वितीयाध्यक्षः कः ? खीष्टमतानुयायी महाशय एकः. |
| उनको सौ रुपये तनख्वाह है. | तस्य भृतिर्मुद्राणां शतमस्ति. |
| थर्ड, फोर्थ, फिफ्थमास्टर कायस्थ हैं येभी क्रम से सत्तर, पचास, चालीस रुपये पाते हैं. | तृतीयचतुर्थपञ्चमाः कायस्थजातीयाः तेऽपि क्रमात्सप्ततिपञ्चाशच्चत्वारिंशन्मुद्रा लभन्ते. |
| सिक्स्थ मास्टर साहब गौड़ ब्राह्मण मुसम्मी ज्वालाप्रसाद हैं यह भी ४० रुपये मदर्से से और पचीस रुपये योर्डिङ्गहौस सुपरिटेण्डेण्टी के इस तरह मिला कर ६५ रुपये पाते हैं. | षष्ठो ऽध्यापको गौड़वंशीयो महाशयः ज्वालाप्रसादनामा सोऽपि चत्वारिंशन्मुद्राः पाठशालातः पञ्चविंशतिमुद्राश्छात्रनिरीक्षकपदव्या इत्येवं मिलित्वा पञ्चपञ्चाशन्मुद्रा लभते. |
| इसी तरह अपनी अक्ल से बना लो. | इत्थमेव स्वबुद्ध्या परिकल्पयेत्. |
| संस्कृत फारसी पढ़ानेवाले कितने हैं उनकी तलब (तनख्वाह) भी बताओ | संस्कृतपारसीकभाषाध्यापकाः कतिपयाः तेषां वेतनान्यपि विज्ञापय. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| संस्कृत और हिन्दी के पढ़ानेवाले दो हैं पहिले ३० रुपये, और दूसरे २० रुपये पाते हैं. | अमरमर्त्यवाण्योरध्यापकौ द्वौ, प्रथमस्तु त्रिंशन्मुद्राः द्वितीयश्च विंशतिरूपकाणि लभते. |
| अरबी फारसी के पढ़ानेवाले दो हैं ये भी क्रम से ३० और बीस रुपया पाते हैं. | अरबपारसीकभाषाध्यापकौ द्वौ तावपि क्रमात् त्रिंशद्विंशतिमुद्राश्च लभेते. |
| मैं पाखाने जाना चाहता हूं महरबानी कर मुझे हुक्म दीजिये । जाओ देर न करो. | अहं शौचार्थं जिगमिषामि कृपयाऽनुज्ञापयन्तु भवन्तः । गच्छ मा चिरय । |
| यह अहाते में कौन पेशाब करता है इसे पकड़ कर यहां लाओ. | कोऽयं परिसरभूमौ (प्र.ङ्गणे वा) मेहति इमं धृत्वाऽऽनय. |
| कोई गाँव का नावाकिफ आदमी है । अच्छा इससे आठ आने जुर्माने के लेकर और गर्दन पकड़ कर निकाल दो. | अस्ति कश्चिद्ग्रामीणो ऽनभिज्ञः। परम् अस्मादग्रणकाद् अर्धदण्डस्वादाया-र्धचन्द्रं दत्वा च निष्काशय ( निस्सारय ). |
| इतनीही सजा काफी है. | एतावानेव दण्डः पर्य्याप्तः. |
| क्या तू इस बेत से नहीं डरता जो अपना सबक याद नहीं करता. | किं त्वं न बिभेष्यस्माद्वेत्राद्यत्स्वपाठं नानुस्मरसि. |
| लायक तालिबइल्म उस्ताद के कहने कोही बहुत समझते हैं. | सुयोग्याश्छात्रा गुरूणां कथनमेव बहु मन्यते. |
| खोटे तालिबइल्म गुरु के बचनों को न मान कर पढ़ने से विमुख हुए अनेक तरह के खोटे मार्गों में पड़ कर जिन्दगी भर दुःख पाते हैं. | कुशिष्यास्तु गुरुवचांस्यनादृत्याध्ययनात् पराङ्मुखाः सन्तः नानाविधेषु कुमार्गेषु पतित्वा ऽऽजन्मावसीदन्ति. |
| अच्छे शिष्य अमृत तुल्य गुरु का वचन मान उनको माता पिता से भी ज्यादह मानते हुए आदर करते हैं. | सच्छिष्या अमृतकल्पं गुरुवचो मत्वा म पितृभ्यामपि सविशेष मन्यमाना आद्रियन्ते. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिवचनानि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| अपनी सिलेट निकाल कर हिसाब और जबरमुकाबले के सवाल लिखो. | स्वाश्मपट्टिकां निष्काश्याङ्कगणितबीजगणितप्रश्नान् लिखत. |
| मेरे पास तो कलम कागज है. | मत्समीपे तु लेखनीपत्रञ्च विद्यते. |
| क्या मैं इसी पर लिख लूं. | किमहमस्योपर्य्येव लिखानि ? |
| है तो यह हमारे हेडमास्टर साहब के हुक्म के खिलाफ़, मगर आज तेरा कसूर माफ करता हूं. | अस्त्येतस्याशाभङ्गो ऽस्माकं पाठशालाध्यक्षस्य परश्चाद्य तव दोषं क्षमे (उपेक्षे). |
| कल जरूर सिलेट हो नहीं तो सज़ावार होगा. | श्वो ऽवश्यमेवाश्मपट्टिकास्या नोचेद् दण्ड्यो भविष्यसि. |
| बहुत अच्छा । गुरूजी ! दफ्तरी से दवात ले आऊ. | वरम् । गुरवः ! मसीपात्राध्यक्षात्मसीप.त्रमानयानि. |
| यहां परही दवात है इसे लेलो. | अत्रैव मसिपात्रं वर्तते गृहाणैनत्. |
| इसमें स्याही नहीं है, तो क्या करूं ? | मसिरस्मिन्न वर्तते, तर्हि किं करवाणि ? |
| गंगाराम भी स्याही देने को मना करता है | गङ्गारामोऽपि मसि दातुं प्रत्याख्याति. |
| अच्छा, पेन्सिल सेही जल्द लिखो. | वरम्, तूलिकयैव तूर्णं लिख. |
| लड़को किताब बन्द करो यह किताब देखने का समय नहीं है. | पुस्तकानि पिधत्त छात्राः नास्त्ययं पुस्तकावलोकनसमयः. |
| क्या तुम्हारे सब सवाल ठीक है. | किं तवाखिलाः प्रश्ना उपपन्नाः (तथ्याः, अवितथाः) सन्ति. |
| हां, तो बीजगणित के सवाल को बोर्ड पर लिखकर अपने दर्जे के लड़कों को दिखला दो । जो आज्ञा. | ओम्, तर्हि बीजगणितप्रश्नं फलके (काष्ठखण्डे) लिखित्वाखिलान्स्ववर्गच्छात्रान् प्रदर्शय । यथाज्ञा. |
| तुम मेंसे नक्शे में कौन ज्यादह होशियार है । कृष्णदत्तशर्म्मा. | युष्माकं मध्ये देशालेख्ये कतमोऽतीव निपुणः ? कृष्णदत्तशर्म्मा. |
| इस दफा में कितने तालिबइल्म संस्कृत फारसी के हैं और कितने साइंस और ड्राइङ्ग के. | अस्मिन्वर्गे कतिपया विद्यार्थिनः संस्कृतपारसीकभाषयोः सन्ति कतिपयाश्चाकर्ये (चित्रविद्या)पदार्थविज्ञानयोः? |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

| हिन्दी। | संस्कृत । |
|---|---|
| ग्यारह संस्कृत के चौदह फारसी के और पांच २ साइन्स क्लास के हैं. | रुद्रसंख्याकाः संस्कृते चतुर्दश पारस्यां पञ्च पञ्चाकर्षपदार्थविज्ञानयोः . |
| क्या आठवीं दर्जे में मसाहत है. | किमष्टमकक्षायां मापन विद्यते. |
| नहीं, यह नवीं दर्जे से शुरु कराई जाती है. | न, तत्तु नवमकक्षात आरभ्यते. |
| अबके सालियाने इम्तहान में तर्जुमा बहुत कठिन था. | इदानीन्तनायां वार्षिकपरीक्षायामनुवादो ऽतीव क्लिष्ट (कठिन.) आसीत्. |
| पिछले एन्ट्रेन्स इम्तहान में शिवलाल शर्मा तवारीख जुगराफियह में फेल होगया था. | गते-ऐन्ट्रेन्सपरीक्षायां शिवलालशर्मेतिहासभूगोलशास्त्रयोरपतत्. |
| क्या तुम न्याय शास्त्र भी जानते हो? नहीं। विद्या तो पढ़ाने से पढ़ती है और तरह से नहीं | किं त्वं तर्कशास्त्रमपि जानासि ? नो। विद्यात्वध्यापनात्प्रवर्धते नान्यथा. |
| मैंने तो दर्शन शास्त्र पढ़ा है. | मया तु दर्शनशास्त्रमधीतम्. |
| यहां ककार ज्यादह है इसको रबर से मिटा दो. | ककारोऽयमत्राधिकः एनं घर्षकेण शोधय. |
| जिन लड़कों का अंग्रेजी और दूसरी ज़बान का लिखना अच्छा है वे क्लास से बाहर निकल आवें. | येषां छात्राणामाङ्ग्लभाषालिपिर्द्वितीयभाषालिपिश्च मनोहरा ते वर्गाद्बहिरागच्छन्तु. |
| उनका लेख लिखा कर आइन्दह महीने की पहिली तारीख को इन्स्पेक्टर साहब के पास भेजा जायगा. | तेषां लेख लेखयित्वाऽऽगामिनो मासस्य प्रथमतिथावध्यक्षमहाशयसन्निधौ प्रेषयिष्यते. |
| पिछले इन्स्पेक्शन का क्या नतीजा हुआ? अभी तक कुछ नहीं मालूम पड़ा. | गतनिरीक्षणस्य कः परिणामो जातः? नाज्ञायत कश्चिदद्यावधि. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| बहुत से मदर्से हैं जिनका बन्दोबस्त मैनेजर द्वारा होता है. | बह्व्यः पाठशालाः सन्ति यासां प्रणयनम् (अधिष्ठानं। व्यवस्थापनं। प्रवर्त्तनं) प्रणेतृद्वारा भवति. |
| अब हमारे डाइरेक्टर कौन हैं. | इदानीं (सम्प्रति) कोऽस्माकमधिष्ठाता [शासिता वा]. |
| श्रीमान् महोदय लूइस साहब. | श्रीमन्महोदया लूइसमहाशयाः. |
| उस्तादों के लिये शिष्य का क्या फर्ज़ है. | गुरून्प्रति शिष्यस्य किं कर्तव्यमस्ति. |
| जो मन से वाणी से कर्म से गुरुओं के भक्त हैं वेही अच्छे शिष्य हैं और नहीं. | ये मनसा वाचा कर्मणा गुरूणां भक्ताः त एव सच्छिष्या नेतरे. |
| गुरू भी ऐसे आजिज़ अच्छे शिष्य को बेटे सरीखा जान कर हमेशा उस को अच्छी नसीहत दे और हितकारी वचन बोले. | गुरुरप्येतादृशं विनयोपेतं सच्छिष्यम् पुत्रवज्ज्ञात्वा सदैव तस्मै सुशिक्षां दद्यात् हितकरं वचश्च ब्रूयात्. |
| बी. ए. इम्तहान में के मज़मून हैं ? छै. | सन्ति कति विषया बी.ए.परीक्षायाम् षट्. |
| आजकल के घमंडी तालिबइल्म थोड़ी भी विद्या पढ़ कर गुरुओं को कुछ नहीं समझते. | आधुनिकाः सदर्पाश्छात्रा अल्पामपि विद्यामधीत्य गुरूनवमन्यन्ते. |
| ऐसों का क्या नतीजा होता है ? | कः परिणामो भवत्येतादृशाम् ? |
| दुनियाँ में सुख न मिलना और अखीर में नरक में पड़ना. | संसारे सुखानुपलब्धिरन्ते निरयपातश्च. |
| इन्द्र पढ़नेवाला और बृहस्पतिजी पढ़ानेवाले और हज़ार दिव्य वर्ष तो भी विद्या की थाह न पाई। विद्या तो ऐसी है. | इन्द्रश्चाध्येता बृहस्पतिश्च प्रवक्ता दिव्यं वर्षसहस्रं तदापि नान्तं जगाम विद्यायाः। विद्या त्वेतादृशी. |
| जो थोड़ी भी विद्या पढ़कर अभिमान करते हैं वे मूर्ख हैं. | ये स्वल्पामपि विद्यामधीत्याभिमन्यन्ते ते मूर्खाः. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| तुम्हारी बैठक में बहुत सी तस्वीरें हैं वे तुमने कहां से पाईं. | युष्माकं सत्कारालये बहूनि आलेख्यानि सन्ति कुतस्त्वया तानि लब्धानि. |
| क्या तुम्हारे पास डायरी है. | किमस्ति तव सन्निधौ दैनिकवृत्तपुस्तकम्. |
| है तो, परन्तु मैं उसे काम में नहीं लाता. | अस्तितु; परन्त्वाहं तन्न प्रयुनज्मि. |
| चाकू लाने के लिये किसी नौकर को हुकम दो. | क्षुरानयनार्थं कञ्चिद्भृत्यमाज्ञापय. |
| अच्छा, नये तालिबइल्मों (सुब्तदियों) के लिये दिली हिसाब बहुत फायदे मन्द होता है. | वरम्, नवच्छात्रेभ्यो मानसिकोऽङ्कगणितो ऽतीवोपयोगी भवति. |
| तुम भी अपने छोटे भाई को इसे पढ़ाओ. | त्वमपि स्वकनिष्ठभ्रातरमेनमध्यापय. |
| हमसबकों के साथ हमेशा मेल से रहो. | स्वाध्यायिभिः सह सर्वेव सम्मेलनेन वर्तव्यम्. |
| हमारे मदर्से में हर रोज शाम को गेंद का खेल और कसरत होती है, अच्छा, कसरत की जगह मुझे भी दिखाओ. | अस्माकं पाठशालायां प्रतिदिनं सायंकाले कन्दुकक्रीडा व्यायामश्च भवति । वरम्, व्यायामभूमिं मामपि प्रदर्शय. |
| वहां कितने विद्यार्थी जमनास्टिकवाले हैं ? चवालीस लड़के. | तत्र कति च्छात्रा व्यायामशीलिनः (सेविन.) सन्ति चतुश्चत्वारिंशच्छात्राः. |
| क्या ये सबही बोर्डिङ्गहौस में रहनेवाले हैं ? नहीं. | किमखिला एव ते छात्रालयनिवासिनः ? न. |
| शहरी और बोर्डर दोनों की ये तादाद है. | नागराणां छात्रालयाध्येतॄणाञ्चोभयोरेषा संख्या. |
| तू थोट होगया वह गुझे दे. | त्वं थाशोऽभव. कन्दुकयष्टिं मां प्रयच्छ. |
| क्या तू गुजराती और बङ्गाली भी जानता है. | किं त्वं गुर्जरभाषां वङ्गभाषाञ्चापि वेत्सि. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| पहिली तो जानता हूं दूसरी नहीं. | प्रथमान्तु जानामि न चोत्तराम्. |
| बङ्गाली ज़बान तो संस्कृत जाननेवाले को बहुत आसान है क्योंकि उसमें अक्सर संस्कृत शब्दही इस्तैमाल किये जाते हैं सिर्फ़ बोलने में फ़र्क़ है. | वङ्गभाषा तु संस्कृतज्ञस्यातीव सुलभा, यतस्तस्यां प्रायः संस्कृतशब्दा एव प्रयुज्यन्ते केवलं भेदस्तूच्चारणे. |
| क्या तुम्हारे मदर्से में भी कभी व्याख्यान होता है. | किम् युष्मदीयायां पाठशालायामपि कदापि व्याख्यानम्भवति. |
| होता है शनैश्चर को. | भवति तु शनिवासरे. |
| व्याख्यान देनेवाले कौन हैं? हमारे हेड पण्डित. | व्याख्यानदाता कः? संस्कृतप्रथमाध्यापको नः |
| इन लेक्चरों का कुछ नतीजा भी है. | अस्तिकश्चित्परिणाम एषां व्याख्यानानाम्. |
| ठीक२ नहीं क्योंकि आज कल के बहुत से मन्दबुद्धि धर्मविरुद्ध उपदेशों को तो जल्दीही अपने मन में रख लेते हैं न कि धर्म युक्त उपदेशों को. | नास्ति याथातथ्येन, यत आधुनिका बहवः क्षुद्रबुद्धयो धर्मविरुद्धानुपदेशांस्तु झटित्येव स्वमनस्सु धारयन्ति न च धर्मोपेतान्. |
| यह ठीक है। यह महाराज कलियुग का प्रभाव है. | सत्यमेतत्। अस्त्येषः प्रभावः महाराजस्य कलेः. |
| विद्यार्थी दशा में हमेशा अपने बेटे इत्यादिक के सदाचार की रक्षा करे क्योंकि यह कच्ची हालत है. | छात्रावस्थायां स्वपुत्रादिवृत्तं सदैव गोपायेत् यत एषा ऽपक्वावस्था. |
| इस उम्र में सीखे हुए सदाचार या दुराचार जीवन पर्यन्त सुख दुःख देते हैं. | अस्यामवस्थायां शिक्षितानि सद्वृत्तानि असद्वृत्तानि वा यावज्जीवं सुखदुःखे प्रयच्छन्ति. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| जैसे कच्ची लकड़ी इधर उधर नवाई जाती है और सूखी लकड़ी नहीं ऐसेही हालत बालकों की होती है. | यथाऽपक्वः काष्ठ इतस्ततो नम्रीक्रियते ( नाम्यते ) नच शुष्ककाष्ठस्तथैव दशा बालानाम्. |
| तुम्हारी दफ़ःम की क्या फ़ीस है. | किमस्ति शुल्कं तव कक्षायाः. |
| ढाई रुपया. | सार्धरूपकद्वयम्. |
| इम्तहान के पर्चे छपाई के लिये धन कहां से आता है। लड़कों के चंदे से. | परीक्षापत्राणां मुद्रणार्थं व्ययः कुत आयाति ? छात्राणामंशदानात्. |
| तुम्हारे मदर्से में इम्तहान के पर्चों का क्या इन्तजाम है. | परीक्षापत्राणां कः प्रबन्धस्तव पाठशालायाम्. |
| वे हाथ के छापे (हैंड प्रेस) से यहीं छप जाते हैं. | तानि तु हस्तमुद्रणयन्त्रादत्रैव मुद्रितानि भवन्ति. |
| क्या तुम्हारे मदर्से में उस्ताद लोग अपने क्लास रजिस्टर अलग २ रखते हैं या कुल मदर्से का एकही रजिस्टर है. | किमध्यापकास्तव पाठशालायां स्वस्वगैलेख्यानि पृथक् पृथक् रक्षन्त्यथवा एकमेव लिखनस्थानं समग्रायाः पाठशालायाः. |
| तुम्हारे शहर में कोई कालिज है ? | अस्ति कश्चिद्विद्यालयस्तव पत्तने ? |
| है तो एक मुसलमानों का. | अस्ति त्वेको यवनानाम्. |
| वहां कौन प्रिन्सिपिल, साहब, और कौनरियाज़ी (हिसाब) के प्रोफ़ेसर हैं. | कस्तत्र प्रिन्सिपलमहाशयो गणिताध्यापकश्च. |
| अंग्रेजी विद्यारूपी समुद्र के पारगत दयालु मिस्टर मारिसन नामक साहब प्रिन्सिपिल हैं. | अस्त्याङ्ग्लविद्यापारावारपारीणो दयालुर्मिस्टरमारिसनाभिधो महाशयः प्रिन्सिपिलः. |
| हिसाब के प्रोफ़ेसर तो श्रीमान् महा प्रतापी, करुणार्द्रचित्त, कोमलवाणी वाले गणित विद्यारूपी समुद्र के पारंगत, श्रीमान् यादवचन्द्र चक्रवर्ती नामक बङ्गाली महाशय हैं. | गणिताध्यापकस्तु श्रीमन्महामहिममहोदयः करुणार्द्रचेताः कोमलवाक् गणितविद्याकूपारपारकृता श्रीमद्यादवचन्द्रचक्रवर्त्याख्यो बङ्गदेशीयो महाशयः. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| ऐसेही और भी उस्ताद लोग यहां लायक हैं । अच्छा. | इत्थमन्ये ऽप्यध्यापकास्तत्र सुयोग्याः। परम्. |
| संस्कृत के प्रोफ़ेसर का क्या नाम है? | संस्कृताध्यापकस्य किं नाम ? |
| संस्कृत-विद्या रूपी समुद्र के पारगामी षट्कर्म सावधान, इलाहाबाद निवासी श्रीमान् परम विद्वान् शिवाशंकरजी हैं. | अमरवाग्विद्यार्णवपारङ्गतः षट्कर्मदत्तचेताः प्रयागनिवासी श्रीमत् परमविद्वद्वर्यः शिवाशंकर इति. |
| तुम्हारे मदर्से में माहवारी फ़ीस एक ही ख़ज़ाने में भेजी जाती हैं अथवा दो इन्स्टालमेण्ट [हिस्सों] में. | तव पाठशालायां मासिकशुल्कमेकदैव कोषे प्रेष्यते ऽथवा द्वयोरंशयोः. |
| एक बारही। मोहनदत्त अपने दर्जे का रजिष्टर जल्दी लाओ. | एकदैव । मोहनदत्त स्ववर्गलेख्यं तूर्णमानय. |
| वह कहां है । गंगाराम को पूछो या नन्हेखाँ चपरासी को. | तत्तु कुत्र वर्तते । गङ्गारामं पृच्छाथवा नन्हेखाँभिधं भृत्यम्. |
| वे दोनोंही नहीं मिलते हैं । वे दोनों कहां गये पहिले उन्हीं को ढूंढो. | तावेव न मिलतः । तौ कुत्र गतौ प्रथमं तावन्विष्य. |
| हमेशा मेरे पते से चिट्ठी भेजो. | सदैव मामुद्दिश्य (इत्थमङ्घाद्यनाम) पत्रं प्रेषय (प्रहिणु). |
| यह लड़का आठवीं दफ़ा में भर्ती होना चाहता है. | छात्रोऽयमष्टमकक्षायांप्रविविक्षति. |
| इससे फ़ीस लेकर इसका नाम अपने क्लास रजिष्टर में लिख लो. | अस्माच्छुल्कमादायास्याभिधं स्ववर्गलेख्ये लिख. |
| यह हिसाब और अंग्रेज़ी में इस दफ़ा के नाक़ाबिल है. | अयमस्त्वयोग्योऽस्य वर्गस्य गणिताङ्ग्लभाषयोः. |
| अगरचे यह नाक़ाबिल है तौ भी इसकी कमज़ोरी बोर्डिङ्गहौस में रहने से दूर हो जायगी. | यदि चायमयोग्यस्तथाप्यस्यायोग्यता छात्रालयनिवासाद्दूरीभविष्यति. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| यह तालिबइल्म किस नाम का है। यद्रीप्रसाद. | किंनामायंछात्रः । यद्रीप्रसाद इति. |
| इसके बाप का क्या नाम और क्या पेशा है ? | किंनामास्य पितुः काच वृत्तिः ? |
| बाप का नाम गोपालदत्त, और सूद की जीविका है. | गोपालदत्तः पितुर्नाम, वृद्ध्याजीविस्य (कुसीदस्य) वृत्तिः । |
| पहिले इसने किसी सर्कारी मदर्से में भी पढ़ा है. | पूर्वमनेन कस्यामपि राजकीयपाठशालायामधीतम्. |
| किसी भी सर्कारी मदर्से में नहीं मगर यहां परही एक पब्लिक नाम के प्राइवेट मदर्से में. | न कस्यामपि राजकीयपाठशालायाम् परञ्च पब्लिकनाम्न्यामराजकीयपाठशालायामेव. |
| तो इसका दाखिला जाँच के बाद होगा. | तर्ह्यस्य प्रवेशः परीक्षानन्तरं भविष्यति. |
| बोर्डिङ्गहौस का माहवारी खर्च बताओ. | छात्रालयस्य मासिकव्यय उच्यताम्. |
| ३) रु० तो खाने में ४) रु० फुटेल खर्च में पड़ते हैं। यह तो मामूली खर्च है. | तिस्रो मुद्रास्तु भोजने चतस्रो मुद्रास्त्वतिरिक्तव्यये वियन्ति । एष तु साधारणो व्ययः. |
| चौथी दर्जा के पास हुए बिना सर्कारी मदर्से में दाखिला नहीं होता यह कायदा अब भी है-या नहीं. | चतुर्थ कक्षोत्तीर्णतां विना राजकीयपाठशालायामप्रवेश इति नियमोऽद्यापि वर्तते न वा. |
| वह कायदा टूट गया. | स नियमो निरस्तः खण्डितो वा. |
| तुम्हारा मदर्सा कब खुलेगा. | युष्माकं पाठशाला कदाऽपावरिष्यते (उद्घटिष्यति) ? |
| इस हफ्ते के अखीर में। तबही अपने भाई को लाऊंगा. | अस्य,सप्ताहस्यावसाने।"तदैव स्वभ्रातरमानेष्यामि. |
| इम्तहान का वक्त बहुत करीब है इस लिये इन दिनों में खूब पढ़ो. | परीक्षासमयस्त्वतीव समीपोऽतः सम्यक् अधीष्वेषु दिवसेषु. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयवस्तूनि।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| दिये हुए इम्तहान में तुम पास होगे या नहीं. | दत्तायाम्परीक्षायां त्वयोत्तीर्णता भविष्यति नवा. |
| आशा तो है परञ्च नतीजा तो ईश्वराधीन ही है. | आशासे त्वहं परञ्च फलन्तु दैवाधीनमेव. |
| बोर्डिङ्गहौस में खाने का इन्तजाम अच्छा नहीं है. | छात्रालये भोजनप्रबन्धो न प्रशंसनीयः. |
| कभी दालही स्वाद नहीं होती कभी रोटीही मोटी और कच्ची होती हैं. | कदापि द्विदलैव सुस्वाद्वी न भवति कदापि करपट्टिका एव स्थूला अपक्वाश्च भवन्ति. |
| यहां कोई अचम्भा नहीं है सभी बोर्डिङ्गहौसों में मैंने ऐसाही खाने का इन्तज़ाम देखा है. | न किञ्चिदत्राद्भुतं प्रायशः सर्वेष्वेव छात्रालयेष्वेतादृश एव भोजनप्रबन्धो मया दृष्टः. |
| चाहे जैसा हो तो भी यहां खाने का इन्तजाम और बोर्डिङ्गहौसों से अच्छाही है. | यथाकथञ्चिदस्यात्तथाप्यत्र भोजनप्रबन्धोऽन्येभ्यश्छात्रालयेभ्यः श्रेयानेव. |
| आज बहुत से नये तालिबइल्म दाखिले के लिये आरहे हैं. | अद्य बहवो नव्याश्छात्राः प्रवेशार्थमागच्छन्ति. |
| हां। जैसे आरहे हैं तैसेही बहुतों के नाम भी खारिज होंगे. | ओम्। यथागच्छन्ति तथा बहूनां नामान्यपि पृथग्भविष्यन्ति. |
| तुम्हारा निवास स्थान [दौलतखाना] कहां है. | तव निवासस्थानं कुत्रास्ति? |
| विजयपुर नाम के गाँव में। अपना भी निवास स्थान बताओ. | विजयपुराभिधे ग्रामे। स्वनिवासमपि कथय. |
| मैं तो अलीगढ़ शहर में रहता हूं. | अहन्तु अलीगढ़ाभिधे नगरे (पत्तने) वसामि. |
| आज बहुत से बादल आसमान को घेरे हुए हैं। | अद्य बहवो मेघा आकाशमाच्छादयन्ति. |

## छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तुनि ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| कल मेंह बहुत उपयोगी बरसा. | ह्यो मेघस्त्वतीवोपयोगी वृष्टः. |
| यह स्टूल यहां लाओ । लाता हूं भाई. | काष्ठपीठमत्रोऽऽनय । आनयामि भ्रातः. |
| क्यों चक्कर खाता है इस सवाल का और कायदा है. | किमर्थं भ्राम्यसि अस्य प्रश्नस्यान्या रीतिः. |
| जो तालिबइल्म कल देर करके आये थे उनको आज हेडमास्टर बुला कर डाँटेंगे. | ये विद्यार्थिनो ह्यो वेलातिक्रमं विधायागतास्तान्मुख्याध्यक्षोऽद्याकार्य्य भर्त्सयिष्यते. |
| गोविन्द जितना धन कमाता है उतना खो देता है. | गोविन्दो यावद्धनमर्जति तावद्गमयति. |
| हमको यह तोहारों की छुट्टियां खेल में ही गुजरती मालूम होती हैं. | अनध्यायमहोत्सवं खेलन्तः सम्भावयाम. |
| कोई मुझे जगह दीजिये यह मेरी प्रार्थना है और यह मेरी सनद देखिये. | कश्चित्संश्रयो मह्यं दीयतामित्यभ्यर्थना मदीयः। इदञ्च प्रमाणपत्रमपि दृश्यताम् |
| हमारे दर्जे में तो कृष्णदत्त अच्छे अक्षर लिखता है. | कृष्णदत्तोऽस्माकं श्रेण्यान्तु समीचीनान्यक्षराणि लिखति. |
| छात्रों से अपना पाठ रोज पढ़ लेना चाहिये नहीं तो भूल दिया जाता है. | छात्रैः स्वाध्यायो नित्यमध्येतव्यो नोचेद्विस्मार्यते. |
| गोपालदत्त मदर्से में आकर और छुट्टी न लेकरही चला गया था इसीसे हमारे हेडमास्टर साहब ने वह बेतों से मारा. | गोपालदत्त पाठशालामागत्यावकाशमगृहीत्वैव गतोऽत एवास्मदध्यक्षेण स वेत्रैस्ताडितः. |



## बारहवां अध्याय—द्वादशोऽध्यायः।

### भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| नाज | धान्यम्, शस्यः, व्रीहिः (पुं०) | लोभिया | शिंबिकः. |
| गेंहू | गोधूमः, सुमनः (पुं०) | तिल | तिलम्. |
| जौ | यवः, प्रवेटः. | जई | यवभेदः |
| चना | चणकः, वाजिमन्थः. | आम | आम्रः, रसालः-लम्, चूतः. |
| मटर | तुवरी, वर्तुलः, कलायः, हरेणुः त्रिपुटः. | नीबू | जम्बीरः, दन्तशठः. |
| | | बेर | कर्कन्धूः, बदरीफलम्. |
| अरहर | आढकी. | बिजौरा नीबू चकोतरा | बीजपूरः. |
| मसूर | मसूरः, मङ्गल्यकः. | | |
| धोवा दाल | सूपः, काञ्चनसूपः. | राई | राजिका. |
| | | खटाई | अम्लता, अम्लरसः. |
| दाल | द्विदला. | शहतूत | तूतम्. |
| उरद | माषः. | करौंदा | करमर्दकम्. |
| मूंग | मुद्गकः. | केला की फली | कदलीफलम्. |
| मोठ | मकुष्टः. | | |
| कोदों | कोद्रवः | परवर | पटोलकम्. |
| चावल | अक्षतम्, तण्डुलः. | अमरूद | अमृतफलम्. |
| भात | भक्तम्, ओदन-नम्. | खीरा | त्रपुसम्. |
| प्याल | नीवारः. | इम्ली | अम्लिका, चिञ्चा, तिन्तिड़ी. |
| माड़ | मण्डम्. | अनार | दाडिमफलम्, दाडिमम्. |
| सरसों | सर्षपः, तन्तुभः. | नारंगी | नारङ्गः, नागरङ्गः, नादेयी, नारङ्गफलम्, भूमिजम्बुका |
| मक्का | शस्यम्. | | |
| ज्वार | जुर्णली. | लोकाट | लवकटम्, कोमलवल्कला. |
| बाजरा | अणुः, प्रियङ्गुः | अङ्गूर | द्राक्षा, मृद्वीका. |
| काँगनी | कङ्गुः. | खिन्नी | क्षीरिकाफलम्. |

## भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषाः ।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| आलू रतालू | आलुकः-कम्. | मूली | मूलिका, काथली. |
| | | बैंगन | वृन्ताकम्. |
| कसेरू | कसेरुः. | गाजर | गृञ्जनम्. |
| ककड़ी | कर्कटिका. | मिर्च | मरीचम्, कलकम्. |
| फूट, खरबूजे | चिर्भटिका. | बनकरेले ककोड़े | कर्कोटकम्, कुड्मलः. |
| तरबूज | तरम्बुजम्, कालिङ्गम्, कलिङ्गकम्. | कचनार की कली | काञ्चनारोद्भवाः कलिकाः. |
| कासीफल | कुष्माण्डम्, कर्कारुः. | जमीकन्द | सूरणकम्. |
| फ़ालसे | परुषः. | करेले | कारवेल्लम्. |
| कद्दू | तुम्बी. | तोरई | कोशातकी, दीर्घफला. |
| मेथी का साग | मेथिका शाकम्. | बथुआ | वास्तुकः. |
| | | भिंडी | भिण्डिका. |
| नारी का साग | नाडिकाशाकम्. | बड़हल | लकुचः-चम्. |
| | | घुँइयां | आरवीकाः. |
| पालक | पालक्या. | सेम | सिम्बिः. |
| चौलाई | मेघनादः. | गोभी | गोजिह्वा. |
| कुलफा | कुलथी. | जंभीरानीबू | जम्बीरम्. |
| बेल | बिल्वफलम्. | कढ़ी | काथली, कथिता. |
| कैथ | कपित्थः, दधित्थः दधिफल | बड़ी | माषवटी. |
| सिंघाड़े | शृङ्गाटः. | मंगौरी | मुद्गवटी, माषरक्षी. |
| प्याज | पलाण्डुः, सुकन्दकः. | बड़े | वटकाः |
| लहसन | लशुनम्, रसोनकः. | काँजी के बड़े | काञ्जिकवटकाः. |
| टिण्डे | डिण्डिसम्. | | |
| कमरख | कर्मरङ्ग-क्षम्. | छुहारे | शुष्कखर्जूरः. |
| जामुन | जम्बुः-बु (स्त्री) जम्बुफलम्-जाम्बवम्. | बादाम | वादामम्. |

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| अखरोट | अक्षोट:-टम्. | मुरब्बा | रागखाण्डव:. |
| दाख | शुष्कद्राक्षा, गोस्तनी. | चिलुआ | चिर्भटम्. |
| गोला | नारिकेलफलम्. | आचार | सन्धितम्, सन्धानम्, सन्धितद्रव्यम्. |
| चिरौंजी | खरस्कन्धः. | | |
| चिलगोजा | पद्मबीजाभम्, पानीयफलम्. | चटनी | अवलेहः. |
| मखाने | निकुचः-चम्. | शकरपारे | शर्करा-पाल:-पालिका. |
| मसाले | वेसवार:. | मठरी | मण्ठः. |
| पापड़ | पर्पटः. | सेमई | सेविकाः |
| भर्ता | भरता. | भाँग | मातुलानी, भङ्गा. |
| परामठा | पोलिका. | दूध | दुग्धम्, पयः [न०] क्षीरम् |
| पूड़ी | पूलिका, शुष्कुली. | खीर | पायसम्. |
| रोटी | करपाट्टिका. | दही | दधि [न०] |
| बाटी | अङ्गारकर्कटी. | छाछ | तक्रम्. |
| बेड़ई | वेढमिका, माषगर्भा. | घी | सर्पिः [न०] आज्यम्, घृतम्. |
| पन्ना | पानकम्. | तेल | तैलः, अनाज्यम्. |
| सिखरन | शिखरणी. | पेड़ा | पेडा, पीडिका. |
| नैंनी, मक्खन | नवनीतम्, हैयङ्गवीनम्. | बरफी | बरफी, चक्रिका. |
| | | लड्डू | मोदकः. |
| सत्तू | सक्तु:. | फैनी | फेनिका. |
| बोहरी | धाना. | | |
| चिरवा | पृथुकाः. | जलेबी इमरती | कुण्डलिका. |
| खीलें | लाजाः, भर्जितव्रीहयः | खजला | खाजा. |
| होरा | होलकः | बालूसाई | मिष्टमण्ठ. |
| गरम मसाला | सौरभम्. | लपसी हलुआ | लप्सिका. |
| साठी चावल | षष्ठिका. | मालपूआ | मल्लपूपः, पूपसम्. |

## भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| गूँझा | संयावकम्. | रसोईया | सूदः, पाचकः, सूपकारः. |
| गुलाबजामन | दुग्धपूपिका. | अचार-डालना | उपस्कृणाति-णीते, सं-दधाति, धत्ते. |
| घेवर | घृतपूरः | राँधना | रध्यति. |
| रायता | दाधेयम्. | उबालना | उत्क्वथति, पचति, श्राति. |
| ताहरी | तापहरी. | सूखना, सुखाना | शुष्यति, शोषयति, शोषयति. |
| खिचड़ी | कृशरा. | तोड़ना | भनक्ति, खण्डयति. |
| गुड़ | गुडः. | लिपना | लिप्यति. |
| पोदीना | अजगन्धः. | भूलना | वि स्मरति, स्मृतेःभ्रंशते, भ्रश्यति. |
| शक्कर, बूरा | शर्करा, सिता, खण्डविकारः. | | |
| गन्ना | इक्षुकाण्डम्, इक्षुः, रसालः | पकना | पचति. |
| आँवरसे | इक्षुरसाः. | पकाना | पाचयति. |
| शहद | मधु [न०] क्षौद्रम्, सारघम्. | | |

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| अन्नही मनुष्यों का ज्यादह भोजन का हिस्सा है. | धान्यमेवाधिको भोजनांशो मनुष्याणाम्. |
| अन्नों को सुनो—गेंहू, जौ, चना, मटर, साठी चावल, चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, लोभिया, कांगनी वगैरह होते हैं। इनमें चावल और गेंहू अक्सर धनवानों का भोजन है और सब साधारण लोगों का. | धान्यानि शृणु-गोधूमो यवश्चणको वर्तुलः [ कलायः ] षष्ठिका, अक्षतः शस्यं जुर्णली, प्रियङ्गुः शिंबिकः कङ्गुरित्यादीनि सन्ति । एष्वक्षतगोधूमौ प्रायो धनिनां भोजनमन्यदखिलं सामान्यानाम्— |
| जिनकी दाल बनाई जाती हैं उन नाजों के नाम भी कृपा कर आप कहैं. | येषां द्विदला जायते तेषां धान्यानां नामान्यपि कृपया ब्रुवन्तु भवन्तः. |

## भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| मटर, अरहर, मसूर, उरद, मूँग, मोठ, चना वगैरह की धुली दाल और सतू-री दाल भी अक्सर मनुष्य खाते हैं. | तुवरी, आढकी, मसूरो माषो मुद्गको म-कुष्ठश्चणक इत्यादीनां क्षालनसूपं स-तुषां छिदलाश्चापि प्रायोजनाः खादंति. |
| क्या कोदों भी मनुष्य खाते हैं। नहीं. | किं कोद्रवमपि मनुष्याः खादन्ति। न. |
| तिल का तेल जाड़ों में सरसों का गरमी में हितकारी होता है. | तिलस्य तैलं शिशिरे, सर्षपस्य ग्रीष्मे पथ्यम्भवति. |
| शाग कितनी तरहके हैं उनके नामभी वर्णन करो. | कतिविधाः शाकास्तेषां नामान्यपि-वर्णयतु. |
| आलू, अरवी, ककड़ी, काशीफल कद्दू, मेथी, नारी कासाग, पालक, चौ-लाई, कुलफा, परवर, प्याज, टिण्डे मूली, बैंगन गाजर, ककोड़ा बथुआ कचनारकी कली, जमीकन्द, करेले तोरई, गोभी इत्यादि बहुतसे शाग होते हैं. | आलुका, आरवीकाः, कर्कटिकाः, कूष्मा-ण्डं, तुम्बी, मेथिका, नाडिका, पालक्या, मेघनादः, कुलथी, पटोलकं, पलाण्डुः डिण्डिसं, मूलिका, वृन्ताकं, गृञ्जनं, कर्कोटकं, वास्तुकः, काञ्चनारोद्भवाः कलिकाः, सूरणकं, कारवेल्लं, कोशातकी गोजिह्वेत्यादयो बहवः शाकाः सन्ति. |
| हरी मिर्च और करौंदों में राई जरूर डालो. | हरिन्मरीचेषु करमर्दकेषु च राजिकाम-वश्यं प्रक्षिप। |
| दो पैसे का आचार ले आओ. | द्वयोस्ताम्रखण्डयोः सन्धितद्रव्यमानय। |
| इस साल तुमने आम का अचार डा-ला था नहीं। डाला तो है. | अस्मिन्वर्षे त्वयाम्रस्य सन्धितं सन्धातं (उपस्कृतं) नवा। सन्धातन्तु. |
| अब आप फलों को बयान करें. | अधुना फलान्याख्यान्तु भवन्तः। |
| अच्छा। गिनो, आम, जँभीरा, बेर, बैल, बिजौरा, शहतूत, केला, कैत, अनार, नारंगी, इम्ली, अंगूर, कसे-रू, खिन्नी, फूट, तरबूज, खीरा, सिंघाड़े जामन इत्यादि बहुत से होते हैं. | वरम्। गणय, आम्रो जम्बीरः कर्कन्धू-र्बिल्वफलं, बीजपूरस्तूतं कदली-फलं, कपित्थोदाडिमो, नारङ्गः अ-म्लिकाफलं द्राक्षा कसेरुः, क्षीरिका चिर्भटिका, तरम्बुजं, त्रपुसं, शृङ्गाटो जम्बूफलमित्यादीनि बहूनि सन्ति। |

## भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| हे रसोइयेजी आज तो कहीं से तोड़ सहित दही या मट्ठा लाकर कढ़ी करो । अच्छा. | सूपकाराद्य दिने तु कुतोऽपि समस्त-दधि तक्रं वानीय क्वथितां कुरु । वरम्. |
| कल तैंने क्या रांधा था ? | ह्यः (गतेह्नि) त्वया किं राद्धम् ? |
| मंगौरी और उरदी. | मुद्गवट्यो माषरकूप्यश्च. |
| कल तो दही के बड़े और कांजी के बड़े करो । जो आज्ञा. | श्वस्तु दाधिवटकान् काञ्जिकवटकान्कुरु । यथाज्ञा. |
| धोया दाल और शाग के लिये मसाला पीसो ऐसी आज्ञा नौकर को रसोइया देता है. | सूपार्थं शाकार्थंश्च वेसवारं पिण्ढीत्याज्ञापयति भृत्य सूदः. |
| दो आने के पापड़ लाओ. | द्वयोराणकयोः पर्पटानानय. |
| बैंगन का भर्ता अच्छा, हितकारी और ठण्ढा होता है. | वृन्ताकस्य भारताशोभन ( सुस्वादु ) पथ्यं शीतलश्च भवति. |
| और भी खाने की चीजों के नाम बताओ. | अन्येषामपि भोज्यपदार्थानां नामानि ब्रूहि. |
| परामठे, पूरी, रोटी, बाटी, मठरी ताहरी, खिचड़ी कचौड़ी इत्यादि. | पोलिका, शुष्कुली, करपट्टिका अङ्गारकर्कटी, मण्ठः, तापहरी, कृशरा, वेढमिकेत्यादीनि. |
| अब मिठाओं को भी कहो. | अधुना मिष्टान्नान्यपि कथय. |
| लड्डू, फैनी, अन्दरसे, जलेबी इमर्ती, खीर, लप्सी [ हलुआ ], मालपूआ, गूँझा, गुलाबजामन, घेवर, शक्कर, बूरा गुड़ पेड़ा बरफी इत्यादि पदार्थ होते हैं. | मोदकः, फेनिका, इन्दुरसाः, कुण्डलिकाः पायसं, खाजा, लप्सिका, मल्लपूपः, संयावः दुग्धपूपिकाः, घृतपूरः, शर्करागुडः पीडिकाचक्रिकेत्यादिपदार्थाः सन्ति. |
| शक्कर वगैरह ईख के गन्नों से पैदा होती है. | शर्करादय इक्षुकाण्डेभ्य उत्पद्यन्ते. |

## भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| सेमई घी और शकर से ही गरिष्ठ नहीं होतीं इनके बिना गरिष्ठ होती हैं. | सेविकाः सर्पिःशर्करैरेवागरिष्ठा अन्यथा गरिष्ठाः. |
| हे मा ! इस कटोरे में मुझको कुछ दूध दे । देती हूं बेटा. | अस्मिँश्चषके मां किञ्चिद्दुग्धं देहि मातः । ददामि वत्स. |
| अब पिये जाने वाले पदार्थ सुनो । पना, सत्तू, शिखरन, दूध वगैरह. | पेयपदार्थान् शृणु । पानकं, सक्तुः, शिखरिणी दुग्धमित्यादयः. |
| दो पैसे का दूध मीठा लाओ. | सशर्करं दुग्धमानय द्वयोस्ताम्रखण्डयोः |
| लौनी, शहद, चटनी वगैरह लेह्य पदार्थ हैं. | नवनीतं, क्षौद्रं, अवलेह इत्यादयो लेह्याः. |
| चाबने योग्य पदार्थ जैसे बोहरी, खील चिड़वा, होले, भुनेचने, चिलवा इत्यादि हैं. | चर्व्याःयथा धानाः, लाजाः, पृथुकाः, होलकाः, भ्रष्टचणकाः, चिर्भटप्रभृतय सन्ति. |
| अब सूखे फलों को वर्णन करूंगा. | अथ घनानि कोऽर्थः शुष्कफलानि वर्णयिष्ये. |
| छुहारे, बादाम, अखरोट, किशमिश, गोला, वगैरह होते हैं. | शुष्कखर्जूरः, वातामं, अक्षोटः गोस्तनी नारिकेलफलमित्यादीनि सन्ति. |
| ऊपर कही चीज़ों मेंसे आधा २ सेर संजोये के लिये खरीद लो. | उपरोक्तेभ्यर्धमर्धं सेटकं निधाहप्रदर्शिन्यै क्रीणीहि. |
| यह फल कच्चा है इसको न तोड़ो. | शलाटुरिदं फलं माभिन्ध्येनत्. |
| आज कल कौन २ से शाक बाज़ार में मिलते हैं । बैंगन वगैरह बहुत से. | अद्यत्वे कानिकानि शाकानि विपणौ मिलन्ति । वृन्ताकादीनिबहूनि । |
| इन फलों के नाम किसी कागज़ पर लिख कर मुझे दे दो नहीं तो मैं भूल जाऊंगा. | एतेषां फलानां नामानि कस्मिंश्चित्पत्रे लिखित्वामां देह्यन्यथाहं विस्मरिष्यामि । |

## तेरहवां अध्याय—त्रयोदशोऽध्यायः ।

### सम्बन्ध जनानेवाले शब्दों का वर्णन—सम्बन्धद्योतकाः शब्दाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| बाप | पिता, जनकः. | बाबा | पितामहः. |
| मा | माता, जननी, अम्बा. | परबाबा | प्रपितामहः. |
| बेटा | पुत्रः, सूनुः, आत्मजः. | वृद्ध परबाबा | वृद्धप्रपितामहः. |
| बेटी | पुत्री, आत्मजा, दुहिता. | | |
| भाई | भ्राता, सहोदरः, अग्रजः-अनुजः. | साढू | पत्नीभगिनीपतिः. |
| | | धेवता | दौहित्रः. |
| भतीजा | भ्रातृजः, भ्रातृव्यः. | जमाई | जामाता, दुहितृपतिः. |
| बहिन | भगिनी, स्वसा. | बहनोई | भगिनीपतिः, आवुत्तः. |
| फुआ | पितृस्वसा. | देवर | देवरः, देवा (देवृ) (पुं०). |
| ,, फायेटा | पैतृष्वस्रेयः. | देवरानी जिठानी | यातृ (स्त्री०) |
| मामा | मातुलः, मामः. | | |
| ,, कायेटा | मातुलेयः. | जेठ | ज्येष्ठः, पत्युरग्रजः. |
| भानजा | भागिनेय, स्वस्रेयः. | चाचा | पितृव्यः. |
| बहू | भार्या, पत्नी, जाया, वधूः, कलत्रम्. | ताऊ | पितृव्यः, ज्येष्ठपिता. |
| पति | पतिः, भर्ता, धवः, कान्तः. | खान्दान | कुलम्, वंशः, अन्वयः, गोत्रम्, सन्ततिः, अन्ववायः. |
| साला | श्यालः. | | |
| सास | श्वश्रूः (स्त्री). | पुत्रवधू | पुत्रवधूः, स्नुषा. |
| ससुर | श्वशुरः. | पोता, नाती | नप्ता, पौत्रः. |
| मौसी | मातृष्वसा. | परनाती परपोता | प्रनप्ता, प्रपौत्रः. |
| ,, फायेटा | मातृष्वस्रेयः. | | |
| नाना | मातामहः. | सगाई | वाक्प्रदानविधिः. |
| परनाना | प्रमातामहः. | ब्याह | विवाहः, उद्वाहः, परिणयः. |
| वृद्धपरनाना | वृद्धप्रमातामहः. | थोड़ा, असबाब | द्रव्य, सामग्री, सम्भृति गृहोपस्करः. |

## सम्बन्ध जनानेवाले शब्दों का वर्णन—सम्बन्धद्योतकाः शब्दाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| व्याहकरना | परिणयति, उद्वहति, उपयच्छते. | बोझालादना | भारन्यस्यति, निदधाति, भारेणपीडयति, भारमारोपयति भाराक्रान्तंकरोति. |
| भजना, सेवनकरना | भजति—ते | लेटना | शेते, अध्यास्ते. |

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| तुम्हारे पिता कहां हैं ? | तव पिता कुत्रास्ति ? |
| वे तो लाहौर हैं. | ते तु लवपुरे वर्तन्ते. |
| तुमकै भाई हो ? पाँच | कति भ्रातरो यूयम् ? पञ्च. |
| तुम्हारी बहन का सम्बन्ध कहां हुआ ? | तव भगिन्याः सम्बन्धः कुत्राभूत् ? |
| पटना शहर में. | पाटलिपुत्रनाम्नि नगरे. |
| मेरे भाईके तीन बेटी हैं उनमें से एक तो लखनऊ ब्याही है दूसरी अल्मोड़ा शहर में और तीसरी की सगाई काशी में हुई है. | मम भ्रातुः तिस्रः पुत्र्यः सन्ति तासामेका तु लक्ष्मणपुरे परिणीता द्वितीया त्वल्मोड़नगरे तृतीयायाः वाक्प्रदानविधिर्वाराणस्यामभूत्. |
| मा चूचियों से पुत्र को दूध पिलाती है | माता स्तनाभ्यां पुत्रं दुग्धं पाययति. |
| मेरी एक फूआ, पांच फुफेरे भाई और चार भानजे दिल्ली में रहते हैं. | ममैका पितृष्वसा पञ्चपैतृष्वस्रेयाश्चत्वारो भागिनेयाश्चेन्द्रप्रस्थे निवसन्ति. |
| तुम्हारा मामा किसनाम का है ? शम्भुदत्त. | किन्नामा तव मातुलः ? शम्भुदत्तः. |
| मेरे दो मामाके लड़के लक्ष्मी प्रसाद और जुगल किशोर हैं. | मम द्वौ मातुलेयौ लक्ष्मीप्रसादयुगलकिशोराविति. |
| तुम्हारी स्त्री का कैसा सभाव है ? बहुत तारीफ़केलायक. | कीदृशी प्रकृतिस्तव भार्यायाः ? सुश्लाघ्या. |
| रामसेवक की स्त्री तो कुलटा है ऐसा सुना गया है. | रामसेवकस्य जाया तु कुलटेति श्रूयते. |

## सम्बन्ध जाननेवाले शब्दों का वर्णन—सम्बन्धद्योतकाः शब्दाः।

| | |
|---|---|
| कुलटा शब्दको मैंने नहीं जाना इससे खुलासा कहिये. | कुलटाशब्दमहं नाज्ञासिषमतो . |
| जो अपने पति को छोड़ जारको भजे-वही कुलटा है. | या पतिं हित्वा जारम्भजति सैव कुलटा. |
| तुम्हारे कोई साला है? कोई भी नहीं. | अस्ति कश्चिच्छ्यालस्तव। न कोऽपि. |
| ससुरके खान्दान में तो बहुत हैं परन्तु कोई ख़ास अपना नहीं है। मेरी सासतो जीती हैं. | श्वसुरान्वयाये तु बहवस्सन्ति परञ्च न कोपि स्वकीयः। मम श्वश्रूस्तु जीवति. |
| और भी रिश्तों के नाम लिखिये. | अन्येषां सम्बन्धानां नामान्यपि लिखत. |
| अच्छा सुनो. | वरम् शृणु. |
| मौसी, मौसेराभाई, साढ़ू, धेवता, जमाई, बहनोई, देवर, पतोहू, दौरानी या जिठानी, जेठ, चाचा ताऊ, ननद, पोता, परपोता नाती, नाना, परनाना, वृद्ध परनाना, बाबा, परबाबा, वृद्ध परबाबा, वगैरह हैं. | मातृष्वसा, मातृष्वस्रेयः पत्नीभगिनीपतिः दौहित्रः जामाता, भगिनीपतिः, देवरः स्नुषा, याता, ज्येष्ठः, पितृव्यः, ज्येष्ठपिता, ननान्दा पौत्रः प्रपौत्रः नप्ता मातामहः प्रमातामहः वृद्धप्रमातामहः पितामहः प्रपितामहः वृद्धप्रपितामह इत्यादीनि सन्ति. |
| स्त्री पुरुष "दम्पती" और "जम्पती" कहलाते हैं. | स्त्रीपुरुषौ दम्पती जम्पतीति शब्द्येते. |
| हमदोनों जोड़े भाई हैं. | आवां यमजौ भ्रातरौ. |
| मेरेपिता अब दूसरी स्त्री ब्याहेंगे. | मम पितापुनः द्वितीयां स्त्रियमुद्वक्ष्यति (परिणेष्यति.) |
| वहां आपकी पतोहू है इसलिये वहां न जाइये. | तत्र भवदीया स्नुषाघ्यास्ते ऽतस्तत्र मा गच्छतु. |
| ब्याहों में सबचीजें छकड़ों या ऊँटों में लादी जाती हैं. | विवाहसमये वस्तुजातं शकटेषु उष्ट्रेषु वा भारत्वेन न्यस्यते. |
| उसका बेटा, भतीजा और ममेरा भाई लाहौर कालेज में अंग्रेज़ी पढ़ते हैं. | तस्य पुत्रः, भ्रातृजः, मातुलेयश्च लवपुरविद्यालयेऽऽङ्गलभाषामधीते. |

## चौदहवां अध्याय—चतुर्दशोऽध्यायः।

### जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| ब्राह्मण | भूसुरः, वाडवः, विप्रः, अग्रजन्मा (पुं०) द्विजः. | यज्ञकर्नेवाला | यायजूकः. |
| क्षत्री | क्षत्रियः. | साकल्य | चरुः. |
| वैश्य | वैश्यः, विट् (पुं०) ऊरुजः, अर्यः. | देवान्न | हव्यम्. |
| | | पित्र्यन्न | कव्यम्. |
| शूद्र | शूद्रः, वृषलः, पादजः, जघन्यजः, अन्त्यजः. | महाराजा | राजन्यः, मण्डलेश्वरः, सम्राट्. |
| विद्वान् | विपश्चित्, कोविदः, बुधः, पण्डितः. | दीवान | मन्त्री [पुं०], सचिवः अमात्यः. |
| वेदपाठी | वेदाध्यायी, श्रोत्रियः, छान्दसः. | ड्योढ़ीवान् | प्रतिहारः, द्वारपालः वेत्रधरः, कञ्चुकी. |
| पढ़ानेवाला | उपाध्यायः, अध्यापकः, आचार्यः. | खोजा | षण्ढः, शण्ढः. |
| | | दुश्मन | रिपुः, वैरी, [पुं०] अरिः, शत्रुः, द्विट्. |
| यज्ञ | क्रतुः, मखः यज्ञः, सवः, अध्वरः. | मित्र | वयस्यः, स्निग्धः, मित्रम्, सुहृत्. |
| पुरोहित | पुरोधाः [पुं०] पुरोहितः. | | |
| आचमन | उपस्पर्शः, आचमनम्. | दूत | दूतः, सन्देशहरः. |
| पूजा | पूजा, सपर्या अर्चा, नमस्या. | गुप्तदूत | चरः, स्पशः, गुप्तदूतः. |
| सभा | समज्या, संसत्, सभा, गोष्ठी, परिषत् [स्त्री]. | रस्तेगीर | पान्थः, पथिकः. |
| | | भेंट | उपायनम्, बलिः, उपहारः. |
| सभासद | सदस्याः, सभ्याः, सामाजिकाः. | विवाह | परिणयः, उद्वाहः, पाणिपीडनम्. |
| ज्योतिषी | दैवज्ञः, गणकः, ज्योतिर्विद्. | दहेज | यौतकम्, यौतुकम्. |
| व्रत | उपवासः, उपोषणम्, व्रतम्, नियमः. | स्त्रीप्रसंग | व्यवायः, ग्राम्यधर्मः, मैथुनम्. |

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| घूस | उत्कोचः, उपायनम्. | बहादुर | शूरः, वीरः. |
| चौर | चमरम्, चामरम्. | फौज | सेना, पृतना, चमूः, बलम्. |
| राजासन | नृपासनम्, सिंहासनम्. | लाश | कुणपः, शवम्. |
| सोनेकी झारी | भृङ्गारः, कनकालुका. | मरघटा | श्मशानम्, पितृवनम्. |
| | | छुरी | छुरी, छुरिका. |
| संग्राम | युद्धम्, आयोधनम्, समरः, मृधः. | मौंगरा | मुद्गरः. |
| किला | दुर्गम्, कोटः, कोट्टिः. | डेरा, छावनी | निवेशः, शिविरम्. |
| पहरा | सन्नहनम्, उपरक्षणम्. | हाथीकामद | मदः, दानम्. |
| तलवार | असिः, खड्गः. | | |
| ढाल | चर्म [न०] | हाथी कोशूल | कुथम् (स्त्रि). |
| धनुष | धनुः, [न०] चापः, शरासनः | | |
| बन्दूक, तोप | वह्नियन्त्रम् नालिकायन्त्रम्. | ,, चिंघाड़ | चित्कारः. |
| | | ,, गलेफू | गण्डः, कटः, कपोलः. |
| बाण | शरम्, इषुः, मार्गणः. | हथिनी | करिणी, धेनुका, वशा. |
| तरकस | इषुधिः, तूणीरः, निषङ्गः. | आँकुस | अङ्कुशः, सृणिः |
| जेलखाना | बन्दीगृहः, कारागृहः-गारः-प्रग्रहः. | घोड़ा | वाजी, [पुं.] वाहः, हयः, अश्वः. |
| मौत | मृत्युः, निधनः, पञ्चत्वम्, मरणम्. | घोड़ी | अश्वा, वड़वा, वामी. |
| | | घोड़ी की हिनहिनाट | हेषा, ह्रेषा. |
| जन्म | जनुः [न०] जननम्, जन्म [न०] | कोड़ा | कशा. |
| सिरह्-बख्तर | वर्म [न.] कवचः, शिरस्त्रम् शीर्षण्यम्. | लगाम | कविका, खलीनः [ऽस्त्री.] |
| | | रथ | रथः, स्यन्दनः, शताङ्गः. |
| फरसा | परशुः. | जूआ | कूबरः, युगन्धरः. |
| भाला | भल्लः. | पैदल | पत्तिः, पदातिः पदगः. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| उधार | उद्धारः, ऋणम्, पर्युदञ्चनम् | सुनार | स्वर्णकारः, कलादः रुक्मकारकः. |
| बदला | परिवर्तः, विनिमयः. | कसौटी | शाणः, निकषः, कषः मूषा [सोना पकाने का पात्र]. |
| जिन्स | याचितकम्. | लुहार | लोहकारः अयस्कारः. |
| साहूकार | उत्तमर्णः. | धौंकनी | भस्त्रा, चर्मप्रसेविका दृतिः [पु० ]. |
| कर्ज़दार | अधमर्णः. | राज | लेपकः,सुधाजीवी,पलगण्ड |
| रोजगार | जीविका, वृत्तिः आजीवः | बसूली | टङ्कः, पाषाणदारणः. |
| ब्योपार | वाणिज्यम्. | धोबी | रजकः, निर्णेजकः. |
| धन | वित्तम्, स्वापतेयम्, वसु, द्रविणम्, अर्थः. | इस्त्री | अयोयन्त्रम्. |
| धरोहर | उपनिधिः, न्यासः. | कुँभार | कुम्भकारः, कुलालः. |
| परचूनिया | चूर्णविक्रेता (पु०) | चाक | चक्रम्. |
| गोन्द | प्रसवः स्यूतः | अवा | पाकपुटी, आपाकः. |
| बोरा | शाणपुटः गोणी. | चितेरे | कारुः, शिल्पी. |
| सुतली | सूत्रम्, तन्तुः. | माली | मालाकारः मालिकः. |
| हलवाई | आपूपिकः, भक्ष्यकारः | मनिहार | काचकङ्कणविक्रेता. |
| बजाज | वस्त्रविक्रेता-विक्रयी [पुं०] | चूड़ी | काचवलयम् कङ्कणम् कटकम्. |
| अत्तार | औषधिविक्रेता—विक्रयी | न्यारिया | द्रावकः |
| ब्याज | अर्थप्रयोगः, कुसीदम्, वृद्धिजीविका. | भरभूजा | भर्जकः |
| पैसा | पणः, ताम्रखण्डम् | भाड़ | भर्जनयन्त्रम् |
| रुपया | रूपकः रजतमुद्रा, | रंगरेज | रञ्जकः वस्त्ररागकृत् [पुं०] |
| अशर्फी | स्वर्णमुद्रा, दीनारः | चमार | चर्मकारः पादूकृत् [पुं०] |
| अठन्नी | रूपकार्धम् | चंपी | आरा, चर्मप्रभेदिका. |
| चौअन्नी | चतुराणकः | खटीक | शाकविक्रेता |
| दुअन्नी | आणकद्वयम् | | |
| कायथ | कायस्थः. | | |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| कंघावनानेवाला | कङ्कतकृत् | सरोता | सङ्कुला. |
| | | तमोली | ताम्बूलिकः |
| सिकलगर | शस्त्रमार्जकः, असिधावकः | कहार | जलवाहः, उदवाहः |
| पखवाजी | मार्दङ्गिकाः, मौरजिकाः | बँहगी | जलानयनयन्त्रम् |
| कत्थक | चारणः, कुशीलवः | प्याऊ | पानीयशालिका, प्रपा. |
| सितारिया | वीणावादः, वैणिकाः | प्यास | तृट्, तर्षः, पिपासा. |
| बाजा | वादनम्, वाद्यम् | प्यासा | तृषितः पिपासितः |
| सितार | वीणा, वल्लकी, विपञ्ची | तेली | तैलिकः तैली [पुं०] |
| बांसरी | वंशी वेणुः | कोल्हू | तैलपेषणी |
| मृदंग | मृदङ्गः, मुरजः | कान का मैल निकालनेवाला | कर्णमल निस्सारयिता |
| ढोल | आनकः, पटहः | | |
| नगारा | दुन्दुभिः | | |
| डोंडी | डिण्डिमः | | |
| तुरई | तूर्यम्, तूरी. | कलाल | शौण्डी, मण्डहारकः सुराजीवी, शौण्डिकः |
| कसाई | मांसविक्रेता, मांसिकः, वैतंसिकः | शराब | मदिरा, सुरा, मद्यम्. |
| धुना | तूलमार्जकः | शराबघर | शुण्डापानम्, मदस्थानम् |
| बहुरुपिया | बहुरूपधारी-धारकः | प्याला | चषकः पानपात्रम् |
| दर्जी | सूचिकः सौचिकः सूचिकर्मा [ पुं० ] | छीपी | वस्त्रमुद्रकः |
| | | मल्लाह | नाविकः कर्णधारः |
| कैंची | कतरी-रिका, छेदनी | आरा | क्रकचः, करपत्रम् |
| जुलाया-(कोली) | तन्तुवायः, पटकारः | बढ़ई | तक्षकः सूत्रधारः, रथकारः स्थपतिः, वर्धकिः, |
| नाई | नापितः, क्षौरिकः, क्षुरिः, मुण्डी | मेढ़ | मेधिः मेथिः [पुं०] |
| | | किसान | कृषकः कृषीवलः, हालिकः |
| उस्तरा | क्षुरः | खेती | कृषीः. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| खेत | वप्रः, केदारः, क्षेत्रं. |
| पैना | तोदनम्, प्राजनम्, तोत्रम्, |
| टोकरा बनानेवाला | वैणवः, विदलकारः. |
| महतर | श्वपचः, संमार्जकः |
| नट | नटः, शैलाली, शैलूषः, जायाजीवः |
| कंजर इत्यादि | अन्त्यजाः |
| गड़रिया | जाबालः, अजाजीवः |
| चिड़ीमार | जीवान्तकः, शाकुनिकः |
| जांलिया | वागुरिकः, जालिकः |
| नौकर | भृतकः, भृत्यः, वैतनिकः |
| होशियार | चतुरः, पेशलः, पटुः, दक्षः |
| व्याध | मृगयुः लुब्धकः मृगवधाजीवः |
| शिकारी कुत्ता, | विश्वकद्रुः, कौलेयकः |
| बकरा | बर्करः |
| शिकार | मृगव्यम्, आखेटः मृगया |
| चोर | स्तेनः, दस्युः, तस्करः, मोषकः |
| चोरी | स्तैन्यम्, स्तेयम् चौर्यम् |
| प्रतिमा | प्रतिमानम्, प्रतिबिम्बम्, प्रतिकृतिः, प्रतिनिधिः |
| ज्वारी | कितवः, अक्षधूर्तः |
| पासे | अक्षः, देवनः, पाशकः. |

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| जूआ | कैतवम्, पणः, अक्षवती. |
| नचकैया | नर्तकः, लासकः |
| घूरा | अवकरनिकरः |
| कूड़ा | अवकरः, सङ्करः |
| यज्ञकरना | यजति |
| पूजाकरना | अर्चयति, पूजयति. |
| आचमन-करना | उपस्पृशति, आचामति, |
| ठण्डाहोना | शाम्यति |
| भूनना | भर्जयति. |
| जूआखेलना | दीव्यति |
| पैनाना, पैनवाना | उत्तेजयति. |
| बजाना | वादयति—ते |
| बजना | रणति, क्वणति, विरौति. |
| गाना | गायति। कूजति, रौति [ पक्षिणां ] |
| हजामत-बनाना | मुण्डयति, वापयति |
| डौंडी पिटना | घोषयति. |
| बोना | वपति—ते |
| बदलना | प्रतियच्छति, विनि-मे-ते। |
| खींचना वा हल जोतना | कर्षति |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

| हिन्दी। | संस्कृत । | हिन्दी। | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| कघावना-नेवाला | कङ्कतहृत् | सरौता | सङ्कुला. |
| | | तमोली | ताम्बूलिकः |
| सिकलगर | शस्त्रमार्जकः, असिधावकः | कहार | जलवाहः, उदवाहः |
| पखवाजी | मार्दङ्गिकाः, मौरजिकाः | बँहगी | अलानयनयन्त्रम् |
| कत्थक | चारणः, कुशीलवः | प्याऊ | पानीयशालिका, प्रपा. |
| सितारिया | वीणावादः, वैणिकाः | प्यास | तृट्, तर्पः, पिपासा. |
| बाजा | वादनम्, वाद्यम् | प्यासा | तृषितः पिपासितः |
| सितार | वीणा, वल्लकी, विपञ्ची | तेली | तैलिकः तैली [पुं०] |
| बांसरी | वंशी वेणुः | कोल्हू | तैलपेषणी |
| मृदंग | मृदङ्गः, मुरजः | कान का मैल नि-काले-वाला | कर्णमल निस्सारयिता |
| ढोल | आनकः, पटहः | | |
| नगारा | दुन्दुभिः | | |
| डौंडी | डिण्डिमः | | |
| तुरई | तूर्यम्, तूरी. | कलाल | शौण्डी, मण्डहारकः सुरा जीवी, शौण्डिकः |
| कसाई | मांसविक्रेता, मांसिकः, वै-तंसिकः | शराब | मदिरा, सुरा, मद्यम्. |
| धुना | तूलमार्जकः | शराबघर | शुण्डापानम्, मदस्थानम् |
| बहुरुपिया | बहुरूपधारी-धारकः | प्याला | चषकः पानपात्रम् |
| दर्जी | सूचिकः सौचिकः सूचि-कर्मा [ पुं० ] | ढँपी | घस्त्रमुद्रकः |
| | | मल्लाह | नाविकः कर्णधारः |
| कैंची | कतरी-रिका, छेदनी | आरा | क्रकचः, करपत्रम् |
| जुलाहा-(कोर्ली) | तन्तुवायः, पटकारः | बढ़ई | तक्षकः सूत्रधारः, रथकारः स्थपतिः, वर्धकिः, |
| नाई | नापितः, क्षौरिकः, क्षुरिः, मुण्डी | मेढ़ | मेधिः मेथिः [पुं०] |
| | | किसान | कृषकः कृषीवलः, हालिकः |
| उस्तरा | क्षुरः | खेती | कृषीः. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| खेत | वप्रः, केदारः, क्षेत्रं. |
| पैना | तोत्त्रम्, प्राजनम्, तोत्रम्, |
| टोकरा बनानेवाला | वैणवः, वैदलकारः. |
| महतर | श्वपचः, संमार्जकः |
| नट | नटः, शैलाली, शैलूषः, जायाजीवः |
| कंजर इत्यादि | अन्त्यजाः |
| गड़रिया | आवालः, अजाजीवः |
| चिड़ीमार | जीवान्तकः, शाकुनिकः |
| जालिया | वागुरिकः, जालिकः |
| नौकर | भृतकः, भृत्यः, वैतनिकः |
| होशियार | चतुरः, पेशलः, पटुः, दक्षः |
| व्याध | मृगयुः लुब्धकः मृगवधाजीवः |
| शिकारी कुत्ता, | विश्वकद्रुः, कौलेयकः |
| बकरा | बर्करः |
| शिकार | मृगव्यम्, आखेटः मृगया |
| चोर | स्तेनः, दस्युः, तस्करः, मोषकः |
| चोरी | स्तैन्यम्, स्तेयम् चौर्यम् |
| प्रतिमा | प्रतिमानम्, प्रतिबिम्बम्, प्रतिकृतिः, प्रतिनिधिः |
| जुआरी | कितवः, अक्षधूर्तः |
| पासे | अक्षाः, देवनः, पाशकः. |

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| जूआ | कैतवम्, पणः, अक्षवती. |
| नचकैया | नर्तकः, लासकः |
| घूरा | अवकरनिकरः |
| कूड़ा | अवकरः, सङ्करः |
| यज्ञकरना | यजति |
| पूजाकरना | अर्चयति, पूजयति. |
| आचमन करना | उपस्पृशति, आचामति, |
| ठण्ढाहोना | शाम्यति |
| भूनना | भर्जयति. |
| जूआखेलना | दीव्यति |
| पैनाना, पैनवाना | उत्तेजयति. |
| बजाना | वादयति—ते |
| बजना | रणति, क्वणति, विरौति. |
| गाना | गायति। कूजति, रौति [ पक्षिणां ] |
| हजामत बनाना | मुण्डयति, वापयति |
| डौंडी पिटना | घोषयति. |
| बोना | वपति—ते |
| बदलना | प्रतियच्छति, विनि-मे-ते। |
| खींचना यादल | कर्षति |
| जोतना | |

## जाति इत्यादि का वर्णन — ज्ञातिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| शकल-बनाना | रूपं—आकार-विद्धाति । | काटना | द्यति, छिनत्ति, छन्तति, लुनाति—ते |
| गोली मारना | आग्नेयास्त्रमुञ्चति, शरंमुञ्चति अस्यति । | दांत से काटना | दन्तेन छिनत्ति |
| चिराना | विरेति, विदारयति . | आरे से चीरना | क्रकचेन-करपत्रेण—छणाति दारयति पाटयति, छिनत्ति |
| पाँओं से कुचलना | पद्भ्यां—पादयान-आक्रामति. मर्दयति | हस्तरी करना | चित्राणयति । |
| शोक्ष होना | समभ्यापतति, उपतिष्ठति-ते, घटते, सम्पद्यते | | |

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| चार जाति हैं ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र. | चत्वारोवर्णाः ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यः शूद्रश्च. |
| चार आश्रम हैं ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास. | आश्रमाश्चत्वारो ब्रह्मचर्यं गार्हस्थ्यं वानप्रस्थ सन्यासश्च. |
| न्यायजाननेवाला नैयायिक, मीमांसा जाननेवाला मीमांसक, वेदान्त जाननेवाला वेदान्ती, वेद पढ़नेवाला श्रोत्रिय सांख्य जाननेवाला कापिल ऐसा कहा जाता है. | न्यायवेत्ता नैयायिकः मीमांसाज्ञोमीमांसकः वेदान्तज्ञोवेदान्ती, वेदाध्यायी श्रोत्रियः साङ्ख्यज्ञः कापिल इत्युच्यते. |
| गंगा जमनाके बीच में श्रीमान् श्रीधर-नाम के पण्डित अत्यन्तविद्वान् हैं. | श्रीमच्छ्रीधराभिधेयपण्डितोऽतीवविद्वान् गंगायमुनयोर्मध्ये वर्तते. |
| ब्राह्मणोंके छः कर्म सुनेजातेहैं वे कौन से हैं. | विप्राणां षट्कर्माणि श्रूयन्ते तानिकानि सन्ति. |
| यज्ञकरना, पढ़ना, दानदेना, यज्ञकराना पढ़ाना और वैसही दानलेना इन-कर्मोंसे युक्त छः कर्मवाला ब्राह्मण-कहलाता है. | इज्याध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः षट्कर्माविप्रउच्यते. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
| --- | --- |
| जिस तरह यह यज्ञकरनेवाला यज्ञ करताहै तैसे तुम भी यज्ञकरो. | यथायं यायजूकोयजति तथा त्वमपि यज. |
| देवदत्त देवताओं की पूजा करता है. | देवदत्तो देवानर्चयति. |
| भक्तलोग अपने इष्टदेवों की पूजाकरते हैं. | भक्ताः स्वेष्टदेवानां सपर्यां कुर्वन्ति । |
| पांच महायज्ञ कौन से हैं ? | पञ्च महायज्ञाःके ? |
| उनको तो पहिले अध्याय में देखलो. | तांस्तु प्रथमेऽध्याये पश्य. |
| जगत् का कारण शून्य है ऐसा माननेवाले नास्तिक होते हैं. | जगत्कारणं शून्यमिति मन्तारोनास्तिकाः |
| सभा काही दूसरा नाम गोष्ठी है. | सभाया एव द्वितीयं नाम गोष्ठी. |
| जो तुम व्याकरण जानते हो तो इसका अक्षरार्थकरो. | यदित्वं वैयाकरणोऽसितर्हास्या अक्षरार्थं कुरु. |
| अच्छा ! गो अर्थात् अनेक वाणी जहां पर हों वह गोष्ठी है. | परम् ! गावोऽनेकावाचस्तिष्ठन्त्यस्यां सा गोष्ठी. |
| अग्निद्वारा देवताओंके लिये जो अन्न दिया जाताहै वह हव्य होता है. | अग्निमुखेन देवेभ्योयद्दीयतेतद्धव्यम्. |
| ब्राह्मण मुख से पितृलोकों को दिया हुआ अन्न कव्य ऐसा कहाजाता है. | विप्रमुखेन पितृभ्योदीयमानमन्नंकव्यमित्युच्यते. |
| बूढे बड़ों के लिये और गुरुओं के लिये हमेशा अभ्युत्थान दो. | वृद्धेभ्योगुरुभ्यश्च सदाभ्युत्थानं देहि. |
| न्हानेसे पहिले और भोजन से पीछे आचमन करे. | स्नानात्प्राक् भोजनान्तरञ्चोपस्पृशेत् |
| खाने के वक्त चुप होकर रहे. | भोजनावसरे मौनमेवावतिष्ठेत. |
| उपवास और दूसरे व्रत भी बालक बूढे और आतुर [मुसीबत जिदा] को छोड़कर करते हैं. | उपोषणमन्यान्यपि व्रतानि बालवृद्धातुरान्विनोक्तानि. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| राजन्य और बाहुज,क्षत्रिय के ही पर्याय [ हममानी ] हैं. | राजन्यबाहुजौ क्षत्रियस्यैव पर्यायौ. |
| मामूली राजाओं के नाम भूप, क्ष्माभृत् नृप वगैरह हैं. | सामान्यराजानां नामानिभूपक्ष्माभृन्नृपादयस्सन्ति. |
| मण्डल अर्थात् बहुतसे देशोंका मालिक सम्राट् कहलाता है. | मण्डलेश्वरः सम्राडितिकथ्यते. |
| उस राजराजेश्वर का दीवान वीरसिंह पुरोहित आदित्यशर्मा, और शंकरनाथ ड्योढ़ीवान् है. | तस्य सम्राजोऽमात्यो वीरसिंहः आदित्यशर्मा पुरोधाः, शङ्करनाथः प्रतीहारः. |
| राजाओं के महलोंके दर्वाज़े पर पाँच खोजे हैं. | राज्ञामन्तःपुरद्वारि पञ्च षण्ढा विद्यन्ते |
| उस प्रतापी राजाके शत्रु अपने आपही शान्त होजाते हैं. | तस्य प्रतापिनो राज्ञो रिपवः स्वयमेव शाम्यन्ति. |
| वामदेव उस राजाका लंगोटिया मित्र है. | वामदेवस्तस्यनृपस्य वयस्यः सुहृत्. |
| मेरेगाँव में एक मशहूर ज्योतिषी है. | मम ग्रामेऽस्त्येकः प्रसिद्धो दैवज्ञः. |
| जो राजाही घूस लेतो इन्साफ़ कौन करे. | यदि राजानप्योत्कोचं गृह्णीयुस्तदा न्यायं कः कुर्यात्. |
| राजाओं के बहुत से ख़ुफ़िया एलची घूमा करते हैं. | राज्ञां बहवो गुप्तदूताः पर्यटन्ति. |
| राजाओं के सुलहनामे दूत लोग ले-आते हैं. | राज्ञां सन्धिपत्रं सन्देशहरैर्नीयते. |
| राज्य के सात अङ्ग कहो। | राज्यस्य सप्ताङ्गानि ब्रूत. |
| स्वामी, मंत्री, राज्य, किला, ख़ज़ाना सेना, और आपस में मदद देनेवाले मित्र, ये सात अङ्गवाला राज्य कहलाता है. | स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रञ्च दुर्गं कोशो बलं सुहृत्। परस्परोपकारीदं सप्ताङ्गं राज्य मुच्यते. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—जातिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| साम, दान, भेद, और दण्ड ये राजाओं के चार उपाय हैं. | सामदानश्च भेदश्च दण्डश्चेत्युपायचतुष्टयं राज्ञाम्. |
| इसको भी आप खुलासा करें। अच्छा | एतदपि स्पष्टीकुर्वन्तु भवन्तः। वरम्. |
| साम अर्थात् मीठा बोलना, दान अर्थात् धनका देना, भेद अर्थात् फूट उलजाना वा मिलेहुओं का अलग कर देना और दण्ड अर्थात् सज़ा देना. | साम प्रियवचनादि; दानं धनादेः समर्पणं, भेदः (उपजापः) संहतयोर्द्वैधीकरणमित्यर्थः दण्डनंदण्ड इति. |
| दो तीन रोज़ में हमारे शाहंशाह महाराज अपने चरण पधारकर इस राजधानी को सुशोभित करेंगे यह अफ़ुआ कानोंकान सब नगर में फैल गया. | द्वित्रेषु दिनेषु राजराजेश्वरोसार्कः सम्राट् पादार्पणेन इमां राजधानीमलंकरिष्यतीति किम्वदन्ती श्रोत्राश्रोत्रिअखिलेनगरेप्रथिताऽभवत्. |
| छोटे राजा मण्डलेश्वर अर्थात् चक्रवर्त्ती राजाके लिये भेंट देते हैं. | क्षुद्रराजानो मण्डलेश्वराय बलिं प्रयच्छन्ति. |
| राजा भोजदेव अपनी लड़की के व्याह के दहेज़ में एक अक्षौहिणी सेना, एक सोने की झारी फ़ीलवानों और सोनेके अंकुशों सहित पचास हाथी, घुड़ सवार सहित सौ घोड़े, साठ रथ, तीनसौ छकड़े, दो सौ पालकियाँ, दो चमर, एक तख़्तशाही एक तलवार, तरकस सहित एक धनुष लड़ाई के वक्त में पहरनेके लिये एक ज़िरह बख्तर (कवच), शिरस्त्रेप, एक फरसा, दो भाले, एक छुरी, और एक मुद्गर अपने जमाई के लिये देता हुआ. | राजा भोजदेवः स्वकन्योद्वाहयौतुके एकामक्षौहिणीं सेनामेकं भृङ्गारं साधोरणान्सस्वर्णाङ्कुशान्पञ्चाशद्द्विपान्, ससादिनः शतं वाहान्, षष्टिं स्यन्दनानि, शतत्रयमनांसि, शतद्वयं शिबिकाः, द्वे चमरे, एकं सिंहासनं, एकमसिं, सतूणीरमेकं धनुः, युद्धसमये धारणार्थमेकं वर्म, शिरस्त्रञ्चैकं परशुं द्वौ भल्लौ एकां छुरिकां मुद्गरञ्चैकं स्वजामात्रे ददौ. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| अक्षौहिणी का अन्दाज़ भी कृपाकर कहो. | अक्षौहिण्याः प्रमाणमपि कृपया वदतु. |
| अक्षौहिणी का अन्दाज़ तो यह है कि २१८७० हाथी, इतनेहीं रथ, इससे तिगुने घोड़े और पचगुने पैदल. | अक्षौहिण्याः प्रमाणन्तु खांगोष्टकाद्रि कै गंजैः रथैस्तैर्हयैस्त्रिघ्नैः पञ्चघ्नैश्च पदातिभिरिति. |
| राजा भोजके समधी ने भी ब्याह की खुशी में १५० कैदी अपने जेलख़ाने से छोड़ दिये. | भोजस्य सम्बन्धिनापि विवाहहर्षे सार्धशतम्बन्दिनः स्वकारागृहान्मोचिताः. |
| राजाओं के हरेक डेरेमें पहरा रहता है. | राज्ञां प्रत्येकशिबिरे उपरक्षणं वर्तते. |
| फ़ौजके जो बहादुर मरे (फौतहुए) थे मरघटों में लेजाकर सिपाहियोंने जलादिये. | पृतनाया ये वीराः पञ्चत्वमागता स्ते पितृवने नीत्वा राजपुरुषै र्दाहिताः. |
| न जलाई हुई लाशों पशु पक्षियों ने खा डालीं. | अदाहितानि शवानि पशुपक्षिभिः खादितानि. |
| व्यूह शब्दका क्या अर्थ है ? | व्यूहशब्दस्य कोऽर्थः ? |
| फ़ौज का तरतीब से रखना व्यूह कहलाता है. | सैन्यस्य रचनाविशेषेण स्थापनं व्यूहः कथ्यते. |
| जैसे किसीने कहा है. | यथा केनापि भणितम्. |
| मुहँपर रथ, पीछे घोड़े, उसके पीछे पैदल, और इधर उधर बगलों में हाथी करने चाहियें यह व्यूह कहा गया है. | मुखे रथा हयाः पृष्ठे तत्पृष्ठे च पदातयः पार्श्वयोश्च गजाः कार्याः व्यूहोऽयम्परिकीर्तितः. |
| लड़ाई के लिये जाते हुए फौजी लोग रास्तेमें बहुत से छोटेजीवों को पैरों से कुचलडालते हैं. | युद्धार्थं गच्छन्तः सैनिका मार्गे बहून् क्षुद्रजीवान् पद्भ्यामाक्राम्यन्ति, |
| किन्हीं हाथियों के गले कुओं से मद बहा करता है. | केषाञ्चिद्धस्तिनां गण्डेभ्यो दानं प्रस्रवति. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| हाथीसाल वारी कहलाती है. | गजशाला वारीत्युच्यते. |
| ये हथिनियाँ अपने बच्चों सहित जाती हैं. | इमाः करिण्यः सकलभा गच्छन्ति. |
| इस घोड़े की लगाम कहाँ है ? | अस्याश्वस्य कविका कुत्र वर्त्तते ? |
| वह तो तेरे सोंहीही ज़मीन पर रक्खी है मेरी आखों से तो देख. | सा तु तव सम्मुख एव पृथिव्यां धृता मदीयाक्षिभ्यां तु पश्य. |
| इस घोड़ी की पूँछ कैसी उम्दा मालूम होती है. | कथं शोभते लूममस्या बडवायाः. |
| रथवान् इन दोनों घोड़ों को चाबुक से मार कर जूए में जोड़ता है. | सारथिरेतावश्वौ कशया ताडयित्वा युगन्धरे योजयति. |
| अब वैश्यों के रोज़गारों को बताओ. | अथ वैश्यानां वृत्तीर्ब्रूहि. |
| खेत, व्योहार उधार, ब्याज लेना, चीजों का अदल बदल करना, और ग़रीब किसानों के लिये राव (जिंस) देना वग़ैरह जीविका हैं. | कृषिः, वाणिज्यं, उद्धारदानं कुसीदग्रहणं वस्तूनां विनिमयः अन्येभ्यो निर्धनेभ्यो कृषीवलेभ्यो याचितकस्य दानमित्यादयो जीविकाः सन्ति. |
| तुम्हारे गांव में कौन २ साहूकार हैं; कोई नहीं. | तव ग्रामे के के उत्तमर्णाः; न केऽपि. |
| ये साहब मेरे ५०० रुपये के कर्जदार हैं. | अधमर्णोऽयं महाशयो मे पञ्चशतमुद्राणाम्, अथवा<br>एष महाशयः मत्तः पञ्चशतं धारयति. |
| अब तो सबही जाति खेती करते हैं. | इदानीन्तु सर्वे ज्ञातय एव कृषिं कुर्वन्ति. |
| मोहनसिंह हल कन्धे पर रख, बैल जूए में जोड़ और आगे कर. सीधे हाथ में पैना ले, खेत जोतने के लिये जा रहा है. | मोहनसिंहो लाङ्गलं स्कन्धे कृत्वा वृषौ योक्त्रे नियुज्य पुरतश्च कृत्वा सव्यहस्ते तोदनञ्च गृहीत्वा क्षेत्रकर्षणार्थे गच्छति. |
| उसका बेटा फावड़ा और कुदारी ले पीछे से आता है. | तत्पुत्रः कुद्दालं कुठारीञ्च नीत्वा पृष्ठतो याति. |

## जाति इत्यादि का वर्णन — ज्ञातिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| हिसं ईषा कहलाती है. | लाङ्गलदण्ड ईषेति कथ्यते. |
| अनाज और भुस अलग करने के लिये जो बहुत से बैल एक लकड़ी में बांधे जाते हैं वह मेढ़ कहलाती है. | धान्यं बुशञ्च पृथक्करणार्थं या वृषसंहति रेकस्मिन्काष्ठे निबध्यते सा मेधिरिति कथ्यते. |
| इन चनों को बोरे में भर कर सूए से और सुतली से सीम दो. | एताञ्चणकान्प्रसेवे भृत्वा बृहत्सूचिकया सूत्रेण च सीव्य. |
| बहुत से बनिये परचूनिया, हलवाई, दूध दही बेचनेवाले, बजाज, कवाड़ी, लोहिया, कसेरे, अत्तार, घी तेल बेचनेवाले और आढ़तिये (नाज बेचनेवाले) होते हैं. | बहवो वैश्याश्चूर्णविक्रेतार, आपूपिकाः, पयोदधिविक्रेतारः वस्त्रविक्रेतारः, मुञ्जशणरज्जुविक्रयिणः, अयोवस्तु विक्रयिणः, ताम्रकाँस्यपित्तलविक्रयिणः, औषधिविक्रयिणः आज्यानाज्यविक्रेतारः धान्यविक्रेतारश्च भवन्ति. |
| इस जिले में बहुत से कायस्थ कचहरी में नौकर हैं. | बहवोऽत्र मण्डले कायस्थाः राज्यद्वारे नियुक्ताः. |
| किसी पास के परचूनिये से दो आने का गेंहू का आटा आध आने की उरद की दाल डेढ़ आने का घी एक पैसे का मसाला जल्दी लाओ. | कस्माच्चित्समीपवर्तिनश्चूर्णविक्रेतुराणकद्वयस्य गोधूमचूर्णमर्द्धाणकस्य माषद्विदला सार्धाणकस्य घृतमेकस्य पणस्य (ताम्रखंडस्य) वेसवारञ्च शीघ्रमानय. |
| अच्छा सवा चार आने मुझे दो. | वरम् सपादचतुराणकान् मां देहि. |
| लो। गोपालदत्त! क्या बाजार जाते हो? हां जाता तो हूँ. | गृहाण। गोपालदत्त! किं पण्यवीथिकां व्रजसि? ओम्। गच्छामि तावत्. |
| भैया! मेहरबानी कर मेरे लिये भी तीन पैसे का दूध बूरा और धेले के पान ले आना. | भद्र! कृपया मदर्थमपि पणत्रयस्य दुग्धं शर्करां, पणार्धस्य ताम्बूलञ्चानय. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| और भी जातियों को बयान करो। सुनो. सुनार, लुहार, राज, बढ़ई, धोबी, कुंभार, भरभूजा, रंगरेज, चमार, कौजड़ा, धुना, कड़ी बनानेवाले, दर्जी, जुलाया, नाई, कहार, तेली, कलाल, मनिहार, छींपी, घोसी, माली, भङ्गी वगैरह जाति होती हैं. | अन्या अपि ज्ञातीर्वर्णय। श्रूयन्ताम्. स्वर्णकारोऽयस्कारः सुधाजीवी, तक्षकः रजकः कुम्भकारः, भर्जकः रञ्जकः चर्मकारः, शाकविक्रेता, तूलमार्जकः, कङ्कतकृत्, सूचिकः, तन्तुवायः, नापितः, जलवाहः, तैलिकः, शौण्डिकः, काचकङ्कणविक्रेता, वस्त्रमुद्रकः, गोपः, मालाकारः, श्वपच इत्यादयो ज्ञातयः सन्ति. |
| सुनार चान्दी के गहने आम की खटाई और वालू से साफ करता है. | स्वर्णकारो राजतान्याभूषणानि आम्राम्लेन सिकतया च धवलीकरोति (स्वच्छीकरोति). |
| लुहार धौंकनी से लोहा आग में तपाकर अहरन के ऊपर रख कर पीटता है. | अयस्कारो भस्त्रया लोहमग्नौ ध्मात्वा घनोपरि निक्षिप्य ताडयति. |
| न्यारिया मिलाव की चांदी को मूसे में रख कर आग में सोधता है. | द्रावकोऽसंस्कृतं रजतं मूषायां धृत्वाऽग्नौ शोधयति. |
| सोने की जाँच तो कसौटी पर ही होती है. | स्वर्णपरीक्षा तु शाण एव भवति. |
| राज बसूली के ज़रिये ईंट साफ कर भीत बनाता है. | लेपकः टङ्कद्वारेष्टकाः संशोध्य भित्तिं निर्मिमीते. |
| धोबी वस्त्र धोता है और इस्त्री से इस्त्री करता है. | रजको वस्त्राणि प्रक्षालयति अयोयन्त्रेण च चिक्कणयति. |
| कुँभार चाक पर मिट्टी के बर्तन बना कर अवे में पकाता है. | कुम्भकारश्चक्रे मृद्भाण्डानि निर्माय पाके पाचयति. |
| भरभूजा भार में जौ भून कर दूकान पर बेचता है. | भर्जको भर्जनयन्त्रे व्रीहीन्भृष्ट्वापणे विक्रीणाति. |
| रंगरेज़ अलग २ रंग के कपड़े रंगता और सुखाता है. | रञ्जकः पृथग्वर्णानि वस्त्राणि रञ्जयति शोषयति च. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| मोची रांपी से खाल साफ कर जूतियां बनाता है. | पादूकृदारया चर्म संशोध्योपानहः करोति. |
| ज्वारी पासों से जूआ खेलता है। शास्त्रों में जूआ मना है. | कितवो ऽक्षैर्दीव्यति। शास्त्रेषु कैतवं निषिद्धम्. |
| यह जयपुर की बनी हुई अत्यन्त सुन्दर संगमर्मर की गणेशजी की मूर्त्ति है इसे लो. | अतीवसुन्दरेयं जयपुरनिर्मिता स्फटिक प्रतिमा गणेशस्य, गृहाणैनाम्. |
| जुलाया तुरी वेमादि से कपड़ा बुनता है. | तन्तुवायस्तुरीवेमादिना वस्त्रं वयति. |
| नाई उस्तरे और कैंची से बाल कतरता और बनाता है. | नापितः क्षुरेण कर्तर्या च कचान् कर्तयति मुण्डयति च. |
| यह नाई अपने उस्तरे को सिलीगर से पैनाता है. | नापितोऽयं स्वक्षुरं शस्त्रमार्जकादुत्तेजयति. |
| बढ़ई आरे से लकड़ी चीरता है. | वर्द्धकिः क्रकचेन काष्ठं दारयति. |
| आज एक मेला है सो धीवरलोग प्याऊ के लिये जल लाते हैं. | अद्यैको महोत्सवः धीवराः पानीयशालिकार्थं जलमानयन्ति. |
| तेली कोल्हू में सरसों पेल कर तेल और खल बाजार में वेचता है. | तैलिकस्तैलपेषण्यां सर्षपं संपीड्य तैलं पिण्याकञ्चापणे विक्रीणाति. |
| और भी शूद्रजातियों को बताओ. | अन्या अपि शूद्रजातीस्सूचय. |
| चितेरे, शिकलगर, गड़रिया, पखावजी, नट, चारण, सितारिया, कसाई चिड़ीमार, जालिया, बहेलिया वगैरह. | चारवः,शस्त्रमार्जकाः,अजाजीवाः,मार्दङ्गिकाः, नटाः, चारणाः, वैणिकाः, वैतालिकाः,जीवान्तकाः,वागुरिका, मृगयव इत्यादयः. |
| यह सितारिया सिर्फ सितारही नहीं बजाता वरन सब बाजों के बजाने में होशियार है. | एष वैणिकः केवलं वीणामेव न वादयति परञ्चाखिलवाद्यानां वादने प्रवीणः. |
| इसकी उगली में क्या है? मिजराव. | अस्याङ्गुलौ किम्? कोणः. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| बाजे बयान करो. | वाद्यानि वर्णय. |
| बांसुरी, मृदङ्ग, ढोल, नक्कारे, वगैरह हैं. | वंशी, मृदङ्ग आनको दुन्दुभिरित्यादीनि. |
| इस ब्याह में तुरई कौन बजाता है. | अस्मिन्विवाहे तूरीं को वादयति. |
| हैगा एक मुसलमान. | अस्त्येको यवनः. |
| यह क्या मनादी है बाहर जाकर तो पूछो. | केयं घोषणा बहिर्गत्वा तु पृच्छ. |
| आज बहुत से हवा से गिराये हुए दरख्तों का नीलाम हमारे मदर्से में होगा. | अद्य दिने बहूनां पवनपातितवृक्षाणाम् घोषणापूर्वको द्रव्यविक्रयोऽस्माकं पाठशालायाम्भविष्यति. |
| ये होशियार शिकारी, शिकारी कुत्तों के साथ सूअर की शिकार के लिये बहुत से नौकरों के साथ जाते हैं. | एते दक्षा मृगयवः कौलेयकैस्सह शूकरस्य मृगयार्थं बहुभिर्भृत्यैस्सह गच्छन्ति. |
| एक मूसा अपने आपही सांप की पिटारी को कतर कर सांप के मुंह में घुसा और मर गया. | एको मूषकः स्वयमेव सर्पपेटकम्भित्वा सर्पमुखे प्रविष्टो मृतश्च. |
| यह किसका बकरा है इसको चोरों से बचाना. | कस्यायं बर्करः एनं दस्युभ्यो रक्षय. |
| जो आदमी चोरी करते हैं वे राजपुरुषों से सजा दिये जाते हैं. | ये जना स्स्तैन्यं कुर्वन्ति ते राजपुरुषैर्दण्ड्यन्ते. |
| कोई आदमी शराबघर में जाकर कलाल सराव प्याले में लेकर पीताहै. | कश्चिज्जनः शुण्डापाने गत्वा मण्डहारकान्मद्यं चषक आदाय पिबति. |
| नचवैये शरमीले नहीं होते. | नर्तका ह्रीमन्तो न भवन्ति. |
| ठीक, जो वे शर्मीलेही हों तो उनका नाचना भी अच्छा न होवे. | सत्यम्, यदि ते त्रपावन्त एव भवेयुस्तर्हि तेषां ताण्डवमपि शोभनं न स्यात्. |
| यह बड़ी सभा है इस जगह बहुत से राजा और सभासद् जेवर पहने हुए दिखाई देते हैं. | महतीयं समज्याऽत्र बहवो राजानः सदस्याश्च सालङ्कारा दृश्यन्ते. |

## जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
| --- | --- |
| ताराचन्द्र के पास तो बहुत धन है परन्तु वह अपने पास नहीं रखता उस की धरोहर बहुत से धनवानों पर रहती है. | ताराचन्द्रसमीपे तु विपुलं अर्थं परन्तु स स्वसमीपे न स्थापयति तस्योपनिधिर्बहुषु धनिषु वर्तते. |
| चौमासे से पहलेही आनें उपलों के दस थोरे खरीदूंगा. | चातुर्मास्यात्प्रागेव करीषाणां दशद्रोणपुटाः क्रेष्यामि. |
| मा यह देवदत्त मुझे चिराता है. | मातर्देवदत्तोऽयं मां चिरौति. |
| लावा खेत दरान्त से काटता है. | लावकः क्षेत्रं दात्रेण छिनत्ति. |

## पन्द्रहवां अध्याय—पञ्चदशोऽध्यायः ।

### पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
| --- | --- | --- | --- |
| पेड़ | तरुः, पादपः, वृक्षः. | पीपल | अश्वत्थः, पिप्पलः. |
| जड़ | मूलम्. | ,, लाख | लाक्षा, जतुः (न०) |
| धड़ | प्रकाण्डः, स्कन्धः. | बड़ | बहुपाद्, वटः, न्यग्रोधः. |
| शुद्दे | शाखा, लता. | गूलर | पनसः, उदुम्बरः. |
| छाल | वल्कलः-लम्, त्वक् [स्त्री.] | ढाक | किंशुकः, पलाशवृक्षः. |
| पत्ते | पत्रम्, पर्णम्, छदम्, दलम् | आक | अर्कवृक्षः |
| गुच्छा | गुच्छकः. | गोंद | निर्यास, रसः. |
| आम | आम्रः, रसालः, चूतः. | कंजा | करञ्जः. |
| बगीचा | उद्यानम्, उपवनम्, वाटिका. | कीकर | कण्टकवृक्षः, बर्बुरः. |
| जामन | जम्बुवृक्षः. | इम्ली | अम्लिका, चिञ्चावृक्षः. |
| शहतूत | तूतवृक्षः. | पिलखन | प्लक्षः. |
| अनार | दाडिमीवृक्षः. | महुआ | मधुकः. |

## पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| सैंजना | शिग्रुः. | अरंड | एरण्डः, चित्रकः, चञ्चुः. |
| नारंगी | नारङ्गः, भूमिजम्बुका. | छौंकरा | शमी. |
| बेल | बिल्वः शाण्डिल्यः. | फूल | पुष्पम्, कुसुमम्, सुमनः (न.) |
| खैर | खदिरः. | गुलाब | पाटलम्. |
| केला | कदली, रम्भा. | ओड़हुल | जपापुष्पम्, ओड्रपुष्पम्. |
| नारियल | नारिकेलः, कौशिकफलम्. | चम्बेली | जातीपुष्पम्, मल्ली, नव-मल्लिका. |
| बेर | बदरीवृक्षः. | | |
| नीम | निम्बः, पारिभद्रः. | बेला | बेला. |
| बकायन | महानिम्बः. | कनेर | कर्णीरः. |
| अमरूद | अमृतफलम्. | जुही | यूथिका. |
| कचनार | काञ्चनारः. | कमल | सहस्रपत्रम्, उत्पलम्, शतपत्रम्. |
| पीलू | पीलुः. | मौलसिरी | बकुलम् पुष्पम्. |
| नीबू | दन्तशठः, जम्बीरः. | टेसू | किंशुकः. |
| शीसम | शिंशिपा. | चम्पा | चम्पकम्. |
| कदम | कदम्बः. | नारंगी का फूल | नारम्भजम्. |
| सिरस | कपीतनः, शिरीषम्. | | |
| करील | करीरः, क्रकरः. | चन्दन का फूल | श्रीखण्डम्. |
| धतूरा | धातूरः. | | |
| सिमर का पेड़ | शाल्मलिः. | गुलाला | गौलालम्. |
| | | मरुआ | मरुवम्. |
| खिन्नी | क्षीरिका. | नीला कमल | नीलोत्पलम्. |
| खजूर | खर्जूरम्. | कमोदनी | कुमुद्वत्. |
| ताड़ | तालः. | केतकी | कैतकम्. |
| कदम | कदम्बः. | खिला फूल | विकचम्, स्फुटम्, प्रफुल्लम्, विकसितम्. |
| ओंगा | अपामार्गः. | | |

## पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| बन्द फूल | मुकुलितम्-पुष्पम्. | इतना | इयत्. |
| मुरझाया हुआ | म्लानम्. | जितना | यावान्. |
| | | तितना | तावान्. |
| पुष्परस | मकरन्दः. | उतना | एतावान्. |
| पुष्पकीधूल | परागः. | एक प्रकार से इत्यादि | एकधा, द्विधा, त्रिधा इत्यादि |
| पहिला | प्रथमः, आदिमः, अग्रिमः. | | |
| दूसरा | द्वितीयः, अपरः. | गूंजना | गुञ्जति, विरौति. |
| तीसरा | तृतीयः. | नौतना | आमन्त्रयते. |
| चौथा | चतुर्थः, तुर्यः, तुरीयः. | मस्तहोना | माद्यति. |
| पाँचवाँ | पञ्चमः. | गिनना | गणयति. |
| छठी | षष्ठः. | मोत्तर-करना | अनुवासयति. |
| सातवाँ | सप्तमः. | | |
| आठवाँ | अष्टमः. | हिलना | प्रकम्पते, वेपते, धुनोति-धुनाति. |
| नवाँ | नवमः. | | |
| दसवाँ | दशमः. | हिलाना | वेपयति, प्रचालयति, कम्पयति. |
| ग्यारहवाँ | एकादशः. | | |
| बीसवाँ | विंशः, विंशतितमः. | एक | एकः एका, एकम्. |
| तीसवाँ | त्रिंशः, त्रिंशत्तमः. | दो | द्वौ, द्वे, द्वे. |
| सौवाँ | शततमः इत्यादि. | तीन | त्रयः, तिस्रः, त्रीणि. |
| एक बार | सकृत्. | चार | चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि. |
| दो ,, | द्विः. | पाँच | पञ्च. |
| तीन ,, | त्रिः. | छः | षट्. |
| चार ,, | चतुः. | सात | सप्त |
| पाँच ,, | पञ्चकृत्वः (ऽ). | आठ | अष्टौ, अष्ट. |
| छः ,, | षट्कृत्वः इत्यादि (ऽ). | नौ | नव |
| कितना | कियत्; कति (कितने). | दश | दश |

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| ग्यारह | एकादश. | सैंतीस | सप्तत्रिंशत्. |
| बारह | द्वादश. | अड़तीस | अष्टात्रिंशत्. |
| तेरह | त्रयोदश. | उन्तालीस | एकोनचत्वारिंशत्. |
| चौदह | चतुर्दश. | चालीस | चत्वारिंशत्. |
| पन्द्रह | पञ्चदश. | इकतालीस | एकचत्वारिंशत्. |
| सोलह | षोडश. | ब्यालीस | द्विचत्वारिंशत्, द्वाचत्वा-रिंशत्. |
| सत्रह | सप्तदश. | | |
| अठारह | अष्टादश. | तेतालीस | त्रिचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वा-रिंशत्. |
| उन्नीस | एकोनविंशतिः. | | |
| बीस | विंशतिः. | चौवालीस | चतुश्चत्वारिंशत्. |
| इक्कीस | एकविंशतिः. | पैंतालीस | पञ्चचत्वारिंशत्. |
| बाईस | द्वाविंशतिः. | छ्यालीस | षट्चत्वारिंशत्. |
| तेईस | त्रयोविंशतिः. | सैंतालीस | सप्तचत्वारिंशत्. |
| चौबीस | चतुर्विंशतिः. | अड़तालीस | अष्टचत्वारिंशत्-अष्टाचत्वा-रिंशत्. |
| पचीस | पञ्चविंशतिः. | | |
| छब्बीस | षड्विंशतिः. | उनचास | एकोनपञ्चाशत्. |
| सत्ताइस | सप्तविंशतिः. | पचास | पञ्चाशत्. |
| अट्ठाइस | अष्टाविंशतिः. | इक्यावन | एकपञ्चाशत्. |
| उन्तीस | एकोनत्रिंशत्. | बावन | द्विपञ्चाशत्. |
| तीस | त्रिंशत्. | त्रेपन | त्रिपञ्चाशत्. |
| इकतीस | एकत्रिंशत्. | चौअन | चतुःपञ्चाशत्. |
| बत्तीस | द्वात्रिंशत्. | पचपन | पञ्चपञ्चाशत्. |
| तेतीस | त्रयस्त्रिंशत्. | छप्पन | षट्पञ्चाशत्. |
| चोंतीस | चतुस्त्रिंशत्. | सत्तावन | सप्तपञ्चाशत्. |
| पैंतीस | पञ्चत्रिंशत्. | अट्ठावन | अष्टपञ्चाशत्. |
| छत्तीस | षट्त्रिंशत्. | उनसठ | एकोनषष्टिः. |

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| साठ | षष्टिः. | छयासी | षडशीतिः. |
| इकसठ | एकषष्टिः. | सतासी | सप्ताशीतिः. |
| बासठ | द्विषष्टिः. | अठासी | अष्टाशीतिः. |
| तेसठ | त्रिषष्टिः. | नवासी | एकोननवतिः. |
| चौंसठ | चतुःषष्टिः. | नब्बे | नवतिः. |
| पैंसठ | पञ्चषष्टिः. | इक्यानवे | एकनवतिः. |
| छयासठ | षट्षष्टिः. | बानवे | द्विनवतिः. |
| सड़सठ | सप्तषष्टिः. | तिरानवे | त्रिनवतिः. |
| अड़सठ | अष्टषष्टिः. | चौरानवे | चतुर्नवतिः. |
| उनहत्तर | एकोनसप्ततिः. | पिचानवे | पञ्चनवतिः. |
| सत्तर | सप्ततिः | छयानवे | षण्णवतिः. |
| इकहत्तर | एकसप्ततिः. | सत्तानवे | सप्तनवतिः. |
| बहत्तर | द्विसप्ततिः. | अट्ठानवे | अष्टनवतिः. |
| तिहत्तर | त्रिसप्ततिः. | निन्यानवे | एकोनशतम्. |
| चौहत्तर | चतुःसप्ततिः. | सौ | शतम्. |
| पिचहत्तर | पञ्चसप्ततिः. | एकसौ एक | एकोत्तरशतम्. |
| छियत्तर | षट्सप्ततिः. | डेढ़ सौ | सार्धशतम्. |
| सतत्तर | सप्तसप्ततिः. | दो सौ | द्विशतम्. |
| अठत्तर | अष्टसप्ततिः. | तीन सौ | त्रिशतम्. |
| उनासी | एकोनाशीतिः. | चार सौ | चतुश्शतम्. |
| अस्सी | अशीतिः. | हज़ार | सहस्रम्. |
| इक्यासी | एकाशीतिः. | दस हज़ार | अयुतम्. |
| ब्यासी | द्व्यशीतिः. | लाख | लक्षम्. |
| तिरासी | त्र्यशीतिः. | दस लाख | प्रयुतम्. |
| चौरासी | चतुरशीतिः. | करोड़ | कोटिः. |
| पिचासी | पञ्चाशीतिः. | दस करोड़ | दशकोटिः. |

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| अरब | अर्बुदम्. | दस नील | दशनिखर्वः. |
| दस अरब | दशार्बुदम्. | पदम | पद्मः. |
| खर्व | खर्वः. | दस पदम | दशपद्मः. |
| दस खर्व | दशखर्वः | सङ्ख | शङ्खम्. |
| नील | निखर्वः. | दस सङ्ख | दशशङ्खम्. |

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| हवा से पेड़ हिला करते हैं. | वातेन वृक्षाः प्रकम्पन्ते. |
| करील के पेड़ जो रग पत्ते नहीं आते तो वसन्त का क्या दोष है. | करीरवृक्षे पत्राणि चेन्नागच्छन्ति तर्हि वसन्तस्य को दोषः. |
| पीपल के पेड़ में से बन्दा उखाड़ दो. | अश्वत्थवृक्षाद्वृन्दाकमुत्पाटय. |
| कीकर और ढाक का गोंद प्रायः स्त्री लोग खाती हैं. | कण्टकवृक्षाणां पलाशवृक्षाणां च निर्यासं प्रायस्त्रियः खादन्ति. |
| पीपल की लाख भी बड़े काम की होती है. | अश्वत्थस्य लाक्षापि महदुपयोगिनी भवति. |
| अमलतास का गूदा दस्त कराने को दिया जाता है. | (अमलतास) मस्तिष्कं गेर्दं वा विरेचनार्थं प्रयुज्यते. |
| आक के पेड़ अपने आपही पैदा हो जाते हैं. | अर्कवृक्षास्तु स्वयमेवोत्पद्यन्ते. |
| क्या अमरूद के पेड़ तुम्हारे बगीचे में नहीं हैं. | किं (अमरूद) वृक्षास्तव वाटिकायां न सन्ति. |
| महदी के पत्तों से स्त्रियां अपने हाथ रचाती हैं. | (महदी) पत्रैः स्त्रियः स्वहस्तौ रञ्जयन्ति. |
| *औंगा की लकड़ी भी हवन में लीजाती है.* | अपामार्गस्यापि समिद्धवने गृह्यते. |
| और भी बहुत सी समिध हैं. | अन्या अपि समिधो बह्व्यः सन्ति. |

## पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| जैसे—आक, ढाक, खैर ओंगा, पीपल, गूलर, छोंकर, दूब और कुशा यों नौ तरह की समिध होती हैं. | यथा—अर्कपलाशखदिरः अपामार्गोऽथपिप्पलः उदुम्बरशमीदूर्वा कुशेति नवधा समित्. |
| इस पेड़ का मोटा धड़ नरम पत्ते और कड़ी छाल है. | अस्य वृक्षस्य स्थूलः प्रकाण्डः कोमलानि पर्णानि कठिना त्वक् च वर्तते. |
| मेरे बगीचे में एक बड़ का पेड़ दो पीपल के, तीन शहतूत के, चार अनार के, पांच गूलर के, छः इमली के, सात जामुन के, आठ पिलखन के, नौ ढाक के, दस आम के, ग्यारह महुए के, बारह करञ्जे के, तेरह सैंजने के, चौदह बेल के, पन्द्रह खैर के, सोलह नारियल के, सत्रह केले के, अठारह मारझी के, उन्नीस बेर के, बीस नीम के, इक्कीस कचनार के, बाईस पीलू के तेईस सेमल के, चौबीस खिरनी के, पचीस खजूर के, छब्बीस ताड़ के, सत्ताईस कदम्ब के, अट्ठाईस सिरस के, उन्तीस नीबू खट्टों के, तीस शीशम के, इकत्तीस कैथ के, बत्तीस छौंकरे के, तेतीस चारों ओर बबूल के हैं. | ममोद्याने एको वटतरुर्द्वौ पिप्पलवृक्षौ त्रयस्तूतवृक्षाश्चत्वारो दाडिमीवृक्षाः पञ्चोदुम्बराः षडम्लिकावृक्षाः सप्त जम्बुवृक्षाः अष्टप्लक्षाः नव पलाशवृक्षाः दशाम्रवृक्षा एकादशमधूकाः द्वादशकरञ्जवृक्षास्त्रयोदश शिग्रुवृक्षाश्चतुर्दशबिल्ववृक्षाः पञ्चदशखदिरवृक्षाः षोडशनारिकेलवृक्षाः सप्तदशरम्भावृक्षा, अष्टादशभूमिजम्बुकाः, एकोनविंशतिः बदरीवृक्षा विंशतिः पारिभद्रा एकविंशतिः काञ्चनारवृक्षाः, द्वाविंशतिः पीलवः, त्रयोविंशतिः शाल्मलिवृक्षाः, चतुर्विंशतिः क्षीरिकावृक्षाः पञ्चविंशतिः खर्जूरवृक्षाः षड्विंशतिस्तालाः सप्तविंशतिः कदम्बाः, अष्टाविंशतिः कपीतनाः, एकोनत्रिंशत् दन्तशठवृक्षाः त्रिंशत् शिंशपावृक्षाः, एकत्रिंशत् कपित्थाः, द्वात्रिंशत् (छौंकरा) वृक्षाः त्रयस्त्रिंशत् परितः कण्टकवृक्षाश्च सन्ति. |

## पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| जैसे एक चन्दन का वृक्ष कुल वनको सुगन्धित कर देता है तैसेही सत्पुत्र अपने खान्दान को शोभित कर देता है. | यथैकश्चन्दनवृक्षोऽखिलमरण्यमनुवासयति तथैव सत्पुत्रः स्वकुलमनुभूषयति. |
| हे ज्योतिषी हिसाब की गिन्ती का क्रम श्लोक से कहिये. | गणितज्ञ गणितगणनाक्रमः श्लोकेन उच्यतां; वरम्. |
| एक १<br>दश १०<br>शत १००<br>सहस्र १०००<br>अयुत १००००<br>लक्ष १०००००<br>प्रयुत १००००००<br>कोटि १०००००००<br>अर्बुद १००००००००<br>वृन्द १०००००००००<br>खर्व १००००००००००<br>निखर्व १०००००००००००<br>शङ्ख १००००००००००००<br>पद्म १०००००००००००००<br>सागर १००००००००००००००<br>अनन्त्य १०००००००००००००००<br>मध्य १००००००००००००००००<br>परार्ध १०००००००००००००००००० | एकम्, दश, शतम् (चैव) सहस्रम् अयुतं (तथा); लक्षञ्च प्रयुतञ्चैव कोटिरर्बुदमेव च। वृन्दं खर्वो निखर्वश्च शङ्खं पद्मश्च सागरः; अन्त्यं मध्यं परार्धञ्च दशवृद्ध्या यथाक्रमम्. |
| आप की बगीची में कितनी तरह के फूल हैं. | भवदीय वाटिकायां कतिविधानि पुष्पाणि सन्ति. |
| सुनो, गुलाब, कनेर, चमेली, बेला, जूही, मौलसिरी, नारङ्गी का फूल, चम्पा, गुलाला, चन्दन का फूल, मरुआ, केतकी का फूल वगैरह फूल हैं. | शृणु, जपापुष्पम्, कर्णेर, जातीपुष्पम्, बेला, यूथिका, बकुलपुष्प, जाम्भज चम्पकं, गौलालं, श्रीखण्ड, मरुब [गुलाब], कैतक मित्यादीनि पुष्पाणि सन्ति. |

## पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| कमल, नील कमल, कमोदनी वगैरह फूल अक्सर बड़े तालावों में पाये जाते हैं. | सहस्रपत्र, नीलोत्पल, कुमुद्वादित्यादीनि पुष्पाणि प्रायः बृहत् कासारेषु लभ्यन्ते. |
| सूरजमुखी फूल तो अक्सर जैसे सूरज घूमता है वैसेही घूमता है. | सूर्यमुखाभिधं पुष्पं तु प्रायो यथा सूर्यः परिभ्रमति तथैव भ्राम्यति. |
| जितने बर्तन मिल सकें उतने ब्राह्मणों को न्योता दो. | यावन्तोऽमत्राणि सम्भवन्ति तावन्तो ब्राह्मणानामन्त्रयस्व. |
| यह लड़का शिशुमाही इम्तिहान में अपने दर्जे में आठवां है. | षाण्मासिकपरीक्षायामष्टमोऽयंछात्रः स्वकक्षायाम्. |
| तुम दोनों में से कौन नैयायिक है. | कतरो भवतो नैयायिकः. |
| तुम सब में कौन व्याकरण जाननेवाला है | कतमो भवतां वैयाकरणः. |
| परशुराम इकीस बार पृथ्वी को अत्रियरहित करते हुए. | परशुराम एकविंशतिकृत्वो निःक्षत्रियां महीञ्चकार. |
| इस दर्जे में कितने लड़के हैं. | अस्मिन्वर्गे कतिच्छात्राःसन्ति. |
| सौ तक भी तुम गिन सके हो या नहीं? | यावच्छतमपि गणयितु शक्नोषि नवा. |
| हां गिन सका हूं। यह कितनी गिनती है। मैं कुल गिनती गिन दूं. | ओम् शक्नोमि। एषा सख्या तु कियती। अहमखिलां संख्यां गणयेयम्. |
| रसिकभौंरे फूलों से रस लेकर मस्त होते हैं. | रसिका भ्रमराः पुष्पेभ्यो रसमाकृष्य माद्यन्ति. |
| रुद्रदत्त बीस ब्राह्मणों के लिये रोज अन्न देता है. | ब्राह्मणानां विंशतये रुद्रदत्तः प्रत्यह मन्नं प्रयच्छति. |
| बीस क्षत्रिय सौ शूद्रों से मुकाबला कर सके हैं. | विंशतिः क्षत्रियाः शतशूद्रेभ्यः प्रतियोद्धुं क्षमाः. |
| तेतीस करोड़ देवता, आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह सूर्य हैं. | त्रयस्त्रिंशत्कोटिर्देवा अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्यास्सन्ति. |
| शहद की मक्खी फूलों पर गूँजती हैं. | सरघाः पुष्पेषु गुञ्जन्ति. |

## सोलहवां अध्याय—षोडशोऽध्यायः।

### आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन-आकाशपदार्था अहोरात्रादिविभागाश्च

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| आकाश | नभः, वियत्, व्योम, गगनं, खम्. | कौम्हरा दुपहर | पूर्वाह्ण, प्राह्ण. |
| बादल मेह | मेघः,वारिवाहः,अभ्रम्,घनः | पहर | यामः, प्रहरः. |
| चन्द्रमा | चन्द्रमाः, चन्द्रः, ग्लौः, मृगाङ्कः, कलानिधिः. | तीसरा पहर | अपराह्णः. |
| ग्रहण | उपरागः, ग्रहः. | साँझ | सायम्, सन्ध्या. |
| सूर्य्य | सूर्य्यः, अर्यमा, आदित्यः. | आधीरात | अर्धरात्रिः, निशीथः. |
| तारे | नक्षत्रम्, ऋक्षम्, भम्, ताराः, तारकाः, उडुगणाः. | दिन रात | अहोरात्रः, नक्तन्दिवम्, नक्तंदिवा. |
| बिजली | तड़ित, विद्युत्, चपला. | रात | निशा, रात्रिः, त्रियामा, रजनी, क्षपा. |
| ओला | वर्षोपलः, करकाः. | | |
| इन्द्रधनुष | इन्द्रधनुः, चापम्. | वक्त | कालः, दिष्टः समयः. |
| पारस | परिवेशः, परिधिः. | गुड् मोर्निंग | शुभस्तेप्रातःकालोभूयात्. |
| बरफ | तुषारः, तुहिनम्, हिमम्. | सवेरे का भजन | प्रातरुपासना. |
| ध्रुव | ध्रुवः, औत्तानपादिः. | लालटेन | प्रच्छन्नदीपः,आवृतदीपिका. |
| मेह की बौछार | शीकरः, अम्बुकणाः. | अफुआ | किम्वदन्ती, जनश्रुतिः. |
| ,, झड़ी | आसारः, धारासम्पातः. | आज | अद्यदिने. |
| **अहोरात्रादिविभागाः।** | | कल [बीता हुआ] | ह्यः. |
| दिन | घस्रः, दिनम्, अहः, (न०) दिवसः. | परसों [बीता हुआ] | परह्यः. |
| सवेरे | प्रभातः, प्रत्यूषः. | कल [आनेवाला] | श्वः. |
| दुपहर | मध्याह्नः. | | |

## आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन-आकाशपदार्थां अहोरात्रादिविभागाश्च

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| परसों [आनेवाला] | परश्वः. | २ पाख | = एकोमासः. |
| वार | वासरः. | १२ महीना | = एकःसम्वत्सरः, वत्सरः, अब्दः, वर्षः, हायनः. |
| अंधेरी रात | तमिस्रा. | इस साल | ऐषमः (ऽ). |
| उजेली रात | ज्योत्स्ना. | पार साल | परुत् (ऽ). |
| उजाला | चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना. | त्यौरस „ | परारि (ऽ). |
| १८ पलक | काष्ठा. | ठहरने की जगह | विरतिः, विरामः, यतिः. |
| ३० काष्ठा | एकाकला. | बरसना | वर्षति. |
| ३० कला | एकःक्षणः. | घेरना | आवृणोति-ते. |
| १२ क्षण | मुहूर्त (दो घड़ी) एकः. | जमना | श्यायते, शिली-घनी-भवति. |
| ३० मुहूर्त्त | अहोरात्र एकः. | | |
| १५ अहोरात्र | एकःपक्षः. | | |

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| देखो बादलों से घिरा हुआ यह आकाश कैसा अच्छा लगता है. | पश्य मेघैरावृतमिदं नभः कथं शोभते. |
| शीघ्रही मेह बरसेगा नीली घटाओं से यह अनुमान होता है. | सद्य एव वारि वर्षिष्यतीति सम्भाव्यते नीलघटाभिः. |
| कभी पूर्व में कभी दक्षिण में कभी पश्चिम में कभी उत्तर में बिजलियाँ भी चमकती हैं; तारे भी तो अब अच्छी तरह नहीं चमकते. | कदाचित्प्राच्यां कदाचिदवाच्यां कदाचित्प्रतीच्यां कदाचिदुदीच्यां विद्युतोऽपि चकासन्ते; नक्षत्राण्यपि तु यथावन्न द्योतन्तेऽधुना. |
| चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहण पर बहुत से यात्री कुरुक्षेत्र वगैरह पवित्र स्थानों में जाकर और वहां नहाकर दीन ब्राह्मणों के लिये वित्तानुसार दान देते हैं. | चन्द्रसूर्योपरागे बहवो यात्रिणः कुरुक्षेत्रादिपुण्यस्थलेषु गत्वा तत्र स्नात्वा च यथाशक्ति दीनेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दानम्प्रयच्छन्ति. |

## आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन-आकाशपदार्था अहोरात्रादिविभागाश्च

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| यहां कौओं की तरह अपनाही पेट पालनेवाले नास्तिक आजकल के नवीन मतों को ग्रहण करनेवालों की यह बात नहीं है. | नात्र काकवदुदरम्भरीणां नास्तिकानामाधुनिकमतावलम्बिनामेषा वार्ता. |
| मेह की बौछार ओलों के साथ तिरछी पड़ रही है. | मेघासाराः सकरकास्तिर्यक् पतन्ति. |
| ध्रुव तो उत्तर दिशा में ही हमेशा रहता है. | ध्रुवस्तूदीच्यामेव दिशि सदा वर्तते. |
| कल मैंने चन्द्रमा के मण्डल में वारस देखा था इसी से यह मेह वरसता है. | ह्यो मया चन्द्रमण्डले परिधिर्दृष्ट अत एवायं मेघो वर्षति. |
| जल के आने का यह एक सगुन है. | जलागमनस्यैष शकुनः. |
| जलके किनके ही शीकर कहलाते हैं. | अम्बुकणा एव शीकरा इत्युच्यन्ते. |
| आज ज़्यादह जाड़ा है इसी से आज रात को ज़रूर ही पाला जमेगा. | अद्याधिकः शीतो वर्तते ऽतएवाद्य रात्राववश्यमेव हिमं द्रवयिष्यते. |
| १८ पलकों की एक कला; ३० कलाओं का एक क्षण; १२ क्षण का एक मुहूर्त; ३० मुहूर्त का एक दिनरात; १५ दिन रात का एक पाख; २ पाख का एक महीना; १२ महीनों का एक वर्ष; मनुष्यों के एक महीने का पित्रीश्वरों का दिनरात; मनुष्यों के एक वरस का देवताओं का दिनरात होता है. | अष्टादश निमेषाणां (पलानां) मेका कला त्रिंशत्कलानामेकः क्षणः, द्वादशक्षणानामेको मुहूर्तः, त्रिंशन्मुहूर्तानामेकोऽहोरात्रः, पञ्चदशाहोरात्राणामेकः पक्षः, द्वयोः पक्षयोरेको मासः, द्वादशमासानामेको वर्षः, मनुष्यमासेनैकोऽहोरात्रः पितॄणां, मनुष्यवर्षेण देवानामहोरात्रः स्यात्. |
| तहां उत्तरायण देवताओं का दिन और दक्षिणायन रात होती है. | तत्रोत्तरायणं दिनं, दक्षिणायनं रात्रिर्देवानाम्. |

00762

## आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन आकाशपदार्थो अहोरात्रादिविभागाश्च

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| देवताओं के ३६५ दिनरात का एक दिव्य वर्ष होता है. | देवाहोरात्राणां पञ्चषष्ट्यधिकशतत्रयेण दिव्यं वर्षम्. |
| देवताओं के १२ हज़ार वर्षों के मनुष्यों के चार युग होते हैं, और वही देवताओं का एक युग होता है, ऐसे देवताओं के हज़ार युग का ब्रह्मा का एक दिन होता है यही प्राणियों का स्थितिकाल है, और उतनीही रात्रि प्राणियों का प्रलयकाल है. | दिव्यैर्द्वादशभिर्वर्षसहस्रैर्मानुषचतुर्युगम्भवति, तदेव देवानामेकं युगं एतादृशानां देवयुगानां सहस्रस्य ब्रह्मण एक दिनम् तत्तु भूतानां स्थितिकाल. तावत्येव रात्रिर्भूतानां प्रलयकालः. |
| इसही क्रम से सौ वर्ष की ब्रह्मा की परमायु है उसके बाद महाप्रलय होती है जिसमें चौदह लोकों का खातिमा होजाता है. | अनेनैव क्रमेण वर्षाणां शतस्य परमायुर्ब्रह्मणस्तदनन्तरं महाप्रलयो यस्मिंश्चतुर्दशलोकानां परिसमाप्तिर्भवति. |
| ब्रह्मा के रोज़मर्रे की प्रलय में तो तीन लोकही नष्ट होते हैं. | दैनन्दिनप्रलये तु त्रयो लोका एव नश्यन्ति. |
| अथवा, देवताओं के ७१ युगों का एक मन्वन्तर होता है, एक मन्वन्तर में चौदह इन्द्र राज्य भोगते हैं ऐसे चौदह मन्वन्तरों का ब्रह्मा का एक दिन होता है. | अथवा, दिव्यानां युगानां येकसप्ततिस्तन्मन्वन्तरम्, एकस्मिन्मन्वन्तरे चतुर्दशेन्द्राः राज्यं भुञ्जते, तैश्चतुर्दशमन्वन्तरैर्ब्रह्मणो दिनम्भवति. |
| मरने के बाद जीव के साथ पुण्य पाप ही जाते हैं. | मरणानन्तरं जीवेन सह पुण्यपापे एव गच्छतः. |
| मोक्ष में रोक लगानेवाले काम क्रोध लोभ मोह चार ही हैं. | मुक्तौ प्रतिबन्धकाः कामक्रोधलोभमोहाश्चत्वार एव. |
| अज्ञानही संसार की पैदायश का सबब है | अविद्यैव जगदुत्पत्तेः कारणम्. |
| क़िस्मतही प्राणियों का कल्याण और अकल्याण करती है. | भाग्यमेव जीवानां मङ्गलञ्चामङ्गलं विदधाति. |

## आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन—आकाशपदार्था अहोरात्रादिविभागाश्च

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| यह मेरा कहना पण्डितों की खुशी के लिये और मूर्खों के घमण्ड दूर करने के लिये हो. | एषा मदीयोक्तिर्विदुषां मुदेऽविदुषाञ्च दर्पापहाराय भवतु. |
| हमारे हेडमास्टर जल्दही इन्स्पेक्टर होंगे यह अफुआ मैंने मोतबिर आदमियों से सुना है. | अस्मद्धेडमास्टरः सद्य इन्स्पेक्टरो भविष्यतीति किम्वदन्ती मया विश्वासपात्रेभ्यः पुरुषेभ्यः श्रुता. |
| जैसे दिन में चार पहर होते हैं तैसे रात में भी. | यथा दिने चत्वारो यामास्तथा रात्राविपि भवन्ति. |
| (गुडमॉर्निंग) तुम्हारे लिये सबेरा मङ्गलदाता हो. | शुभस्ते प्रातःकालो भूयात्. |
| कृष्णदत्त सबेरे की संध्या करता है.. | कृष्णदत्तः प्रातरुपासनां करोति. |
| आज मैं दुपहर को, कल तीसरे पहर को, परसों फोम्हरे दुपहर अपनी नौकरी से लौटूंगा। अच्छा. | अद्य दिनेऽहं मध्यान्हे श्वो ऽपराह्णे परश्वः पूर्वाह्णे स्ववृत्तितो निवर्तिष्ये। वरम्. |
| कल शाम को और परसों आधी रात को मेरी भी वारी थी. | ह्यः सन्ध्यायां परह्योऽर्धरात्रौ च ममापि वार आसीत्. |
| आजकल तो अंधेरी रात है और शुक्ल से चांदनी आवेगी. | अद्यत्वे तु तमिस्रा रात्रिः शुक्लाच्च ज्योत्स्ना आगमिष्यतिः |
| यह रात तो उजाली है यहां लालटैन की जरूरत नहीं. | एषा रात्रिस्तु चन्द्रिकयान्विता वर्तते नास्त्यावश्यकतात्र प्रच्छन्नदीपस्य. |
| समय का इतनाही विभाग मैंने दिखाया. | एतावानेव कालविभागो मया प्रदर्शितः. |
| महरबानी करके आप विराम की निशानियां भी वर्णन करें. | विरतेश्चिन्हान्यपि कृपया वर्णयतु भवान्. |

## आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन—आकाशपदार्था अहोरात्रादिविभागाश्च

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| , यह निशान अल्प विराम का है, ; यह चिह्न अर्ध विराम का है, : यह चिह्न अपूर्ण विराम का है, . या। यह चिह्न पूर्ण विराम का है, " " यह चिह्न दूसरे के कथन का है, ? यह चिह्न सवाल का है, ! यह चिह्न विस्मयबोधक व सम्बोधन का है, ( ) यह चिह्न कोष्ठ अथवा अन्तरित वाक्य का है, वगैरह. | , एतच्चिह्नमल्पविरामस्य, ; एतच्चिह्नमर्धविरामस्य, : एतच्चिह्नमपूर्णविरामस्य, . वा,। एतच्चिह्नम्पूर्णविरामस्य, " " एतच्चिह्नम्परोक्तेः, ? एतच्चिह्नंप्रश्नस्य, ! एतच्चिह्नंविस्मयसम्बोधनयोः, ( ) एतच्चिह्नं कोष्ठनामान्तरितवाक्यस्य इत्यादीनि. |
| इस्साल जेठकी सब तपा खण्डित हो गई इससे ऐसा भान होता है कि सूखा पड़ेगा. | एषमो ज्येष्ठस्य वर्षाप्रतिबन्धकानि नक्षत्राणि खण्डितानि अतो वृष्टिर्न भविष्यतीति सम्भाव्यते. |
| पारसाल और त्योरस साल दुनियाँ के लिये आनन्ददायक थे. | परुत्परारिवर्षौ प्रजाभ्य आनन्ददायिनावास्ताम्. |

## सत्रहवाँ अध्याय—सप्तदशोऽध्यायः।

### स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| परमेश्वर . | विष्णुः, नारायणः, कृष्णः, गोविन्दः, इत्यादि. |
| लक्ष्मी . | पद्मालया, पद्मा, श्रीः, हरिप्रिया, कमला, इत्यादि. |
| हरिवाहन . | गरुड़ः, तार्क्ष्यः, वैनतेयः, खगेश्वरः, इत्यादि. |
| हरि गदा, शंख, खड्ग, चक्र और मणि. | कौमोदकी, पाञ्चजन्यः, नन्दकः, सुदर्शनम्, कौस्तुभः. |
| ब्रह्मा . | स्रष्टा, प्रजापतिः, वेधाः, विधाता, विधि इत्यादि. |
| ब्रह्मा की स्त्री . | सरस्वती, वाग्देवी, इत्यादि. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| महादेव . | शिवः, शङ्करः, उग्रः, श्रीकण्ठः, हरः इत्यादि. |
| महादेव की स्त्री . | सती, दाक्षायणी, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, उमा इत्यादि. |
| इन्द्र . | मघवा, पुरन्दरः, शक्रः, शचीपतिः, वासवः, इत्यादि. |
| इन्द्र की स्त्री . | शची, इन्द्राणी, पुलोमजा इत्यादि. |
| इन्द्र का लोक . | स्वर् (ऽ) स्वर्गः, नाकः, त्रिदशालयः, त्रिदिव इत्यादि |
| इन्द्र का हथियार . | वज्रम्, कुलिशम्, भिदुरम्, पविः इत्यादि. |
| गणेश . | विनायकः, गणाधिपः, लम्बोदरः, गजाननः, इत्यादि |
| देव सेनापति . | कार्तिकेयः, षडाननः, स्कन्दः, गुहः, इत्यादि. |
| देवताओं के खज़ानची . | कुबेरः, त्र्यम्बकसखः, यक्षराट्, पौलस्त्यः इत्यादि. |
| खज़ाना . | निधिः (पुं.), शेवधिः (पुं.) इत्यादि. |
| अग्नि . | वैश्वानरः, वह्निः, ज्वलनः, कृशानुः, अनलः इत्यादि. |
| अग्नि की चिनगारी . | स्फुलिङ्गः, अग्निकणः. |
| धर्मराज . | कृतान्तः, यमः, शमनः, पितृपतिः, काल, इत्यादि. |
| जलदेवता . | प्रचेताः, वरुणः, पाशी, यादसांपतिः अपांपतिः इत्यादि |
| पवन . | समीरः, मारुतः, गन्धवहः, वायुः, अनिलः, इत्यादि. |
| देव भोजन . | पीयूषम्, अमृतम्, सुधा इत्यादि. |
| देव वृक्ष . | मन्दारः, पारिजातकः, सन्तान, कल्पवृक्षः, हरिचन्दनं-नः. |
| देहस्थ पवन . | प्राणः, अपानः, समानः, उदानः, व्यानः. |
| देवता . | अमराः, निर्जराः, देवाः, सुराः, आदितेयाः इत्यादि. |
| दैत्य . | असुराः, दनुजाः, दानवाः, शुक्रशिष्याः इत्यादि. |
| राक्षस . | कौणपाः, क्रव्यादः, अस्रपाः इत्यादि. |
| कामदेव . | पुष्पधन्वा, रतिपतिः, मकरध्वजः, कामः, स्मरः इत्यादि. |
| रवि, . | सूरः, सूर्यः, आदित्यः, दिवाकरः. |
| किरण . | मयूखः, उस्रः, अंशुः. |

## आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन—आकाशपदार्थो अहोरात्रादिविभागाश्च

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| , यह निशान अल्प विराम का है, ; यह चिह्न अर्ध विराम का है, : यह चिह्न अपूर्ण विराम का है, . या । यह चिह्न पूर्ण विराम का है, " " यह चिह्न दूसरे के कथन का है, ? यह चिह्न सवाल का है, ! यह चिह्न विस्मयबोधक व सम्बोधन का है, ( ) यह चिह्न कोष्ठ अथवा अन्तरित वाक्य का है, वगैरह. | , एतच्चिह्नमल्पविरामस्य, ; एतच्चिह्नमर्धविरामस्य, : एतच्चिह्नमपूर्णविरामस्य, . वा । एतच्चिह्नम्पूर्णविरामस्य, " " एतच्चिह्नम्परोक्तेः, ? एतच्चिह्नंप्रश्नस्य, ! एतच्चिह्नंविस्मयसम्बोधनयोः, ( ) एतच्चिह्नंकोष्ठनामान्तरितवाक्यस्य इत्यादीनि. |
| इस्साल जेठकी सब तपा खण्डित हो गई इससे ऐसा भान होता है कि सूखा पड़ेगा. | वर्षमो ज्येष्ठस्य वर्षाप्रतिबन्धकानि नक्षत्राणि खण्डितानि अतो वृष्टिर्न भविष्यतीति सम्भाव्यते. |
| पारसाल और त्योरस साल दुनियाँ के लिये आनन्ददायक थे. | परुत्परारिवर्षौ प्रजाभ्य आनन्ददायिनावास्ताम्. |

## सत्रहवां अध्याय—सप्तदशोऽध्यायः ।

### स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| परमेश्वर . | विष्णु, नारायणः, कृष्णः, गोविन्दः, इत्यादि. |
| लक्ष्मी . | पद्मालया, पद्मा, श्रीः, हरिप्रिया, कमला, इत्यादि. |
| हरिवाहन . | गरुडः, तार्क्ष्यः, वैनतेयः, खगेश्वरः, इत्यादि. |
| हरि गदा, शंख, खड्ग, चक्र और मणि. | कौमोदकी, पाञ्चजन्यः, नन्दकः, सुदर्शनम्, कौस्तुभः. |
| ब्रह्मा . | स्रष्टा, प्रजापतिः, वेधाः, विधाता, विधि इत्यादि. |
| ब्रह्मा की स्त्री . | सरस्वती, वाग्देवी, इत्यादि. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| महादेव . | शिवः, शङ्करः, उग्रः, श्रीकण्ठः, हरः इत्यादि. |
| महादेव की स्त्री . | सती, दाक्षायणी, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, उमा इत्यादि. |
| इन्द्र . | मघवा, पुरन्दरः, शक्रः, शचीपतिः, वासवः, इत्यादि. |
| इन्द्र की स्त्री . | शची, इन्द्राणी, पुलोमजा इत्यादि. |
| इन्द्र का लोक . | स्वर्(ऽ) स्वर्गः, नाकः, त्रिदशालयः, त्रिदिव इत्यादि. |
| इन्द्र का हथियार . | वज्रम्, कुलिशम्, भिदुरम्, पविः इत्यादि. |
| गणेश . | विनायकः, गणाधिपः, लम्बोदरः, गजाननः, इत्यादि. |
| देव सेनापति . | कार्तिकेयः, षडाननः, स्कन्दः, गुहः, इत्यादि. |
| देवताओं के खज़ानची . | कुबेरः, त्र्यम्बकसखः, यक्षराट्, पौलस्त्यः इत्यादि. |
| खज़ाना . | निधिः (पुं.), शेवधिः (पुं.) इत्यादि. |
| अग्नि . | वैश्वानरः, वह्निः, ज्वलनः, कृशानुः, अनलः इत्यादि. |
| अग्नि की चिनगारी . | स्फुलिङ्गः, अग्निकणः. |
| धर्मराज . | कृतान्तः, यमः, शमनः, पितृपतिः, कालः, इत्यादि. |
| जलदेवता . | प्रचेताः, वरुणः, पाशी, यादसांपतिः अप्पतिः इत्यादि |
| पवन . | समीरः, मारुतः, गन्धवहः, वायुः, अनिलः, इत्यादि. |
| देव भोजन . | पीयूषम्, अमृतम्, सुधा इत्यादि. |
| देव वृक्ष . | मन्दारः, पारिजातकः, सन्तानः, कल्पवृक्षः, हरिचन्दनं-नः. |
| देहस्थ पवन . | प्राणः, अपानः, समानः, उदानः, व्यानः. |
| देवता . | अमराः, निर्जराः, देवाः, सुराः, आदितेयाः इत्यादि. |
| दैत्य . | असुराः, दनुजाः, दानवाः, शुक्रशिष्याः इत्यादि. |
| राक्षस . | कौणपाः, क्रव्यादः, अस्रपाः इत्यादि. |
| कामदेव . | पुष्पधन्वा, रतिपतिः, मकरध्वजः, कामः, स्मरः इत्यादि. |
| रवि, . | सूरः, सूर्यः, आदित्यः, दिवाकरः. |
| किरण . | मयूखः, उस्रः, अंशुः. |

स्वर्गीयवृत्तान्ताः धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| रवि सारथी . | सूरसूतः, अरुणः, अनूरुः. |
| चन्द्र . | हिमांशुः, चन्द्रमाः, चन्द्रः, ग्लौः, मृगाङ्कः, इत्यादि. |
| मङ्गल . | अङ्गारकः, कुजः, भौमः, महीसुतः, इत्यादि. |
| बुध . | रौहिणेयः, बुधः, सौम्यः, इत्यादि. |
| बृहस्पति . | गीष्पतिः, सुराचार्यः, गुरुः, इत्यादि. |
| शुक्र . | उशना भार्गवः दैत्यगुरुः इत्यादि. |
| शनिश्चर . | शौरिः, शनैश्चरः इत्यादि. |
| राहु, केतु . | तमः, (ऽर्ह्णा) स्वर्भानुः, सैंहिकेयः, विधुन्तुदः इत्यादि. |
| अगहन. . | मार्गः, मार्गशीर्षः, सहाः (पुं०) |
| पूस . | पौषः, तैषः, सहस्यः. |
| माह . | तपाः, [पुं०] माघः. |
| फागुन . | तपस्यः, फाल्गुनिकः, फाल्गुनः. |
| चैत . | चैत्रः मधुः चैत्रिकः. |
| वैसाख . | वैशाखः, माधवः राधः. |
| जेठ . | ज्यैष्ठः शुक्रः. |
| आषाढ . | शुचिः, आषाढः. |
| सावन . | श्रावणः, नभा [पु०] श्रावणिकः. |
| भादों . | नभस्यः, भाद्रः, भौष्ठपदः. |
| क्वार . | आश्विनः, इषः, आश्वयुजः. |
| कातिक . | बाहुलः ऊर्जः, कार्तिकिकः. |
| दिशायें . | दिशः, ककुभः काष्ठा, आशाः, हरितः, इत्यादयः. |
| जीतना, जयहोना . | जयति, विजयते. |
| पैदाहोना, करना . | उत्पद्यते, जायते, रोहति, स्फायते, सञ्जनयति-ते, उत्पादयति. |
| जाना . | गच्छति, व्रजति, चलति, याति, एति, सरति, क्राम्यति. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| तारीफ़करना . | स्तौति, श्लाघते, प्रशंसति, विकत्थते. |
| प्राप्तकरना . | लभते, आप्नोति, अधिगच्छति, अर्जति, विन्दति-ते |
| उपासनाकरना . | उपास्ते. |
| गिरना . | पतति, च्यवते, स्रंसते, भ्रंशते, भ्रश्यति, गलति, |
| तरना, धारके सामने तैरना | तरति, प्लवते । प्रतीपंतरति. |
| बयानकरना . | वर्णयति, कथयति, आचष्टे वदति, ब्रवीति, ब्रूते, वक्ति, व्याख्याति, भणति. |
| नामलेना . | अभिदधाति, नामगृह्णाति. |
| कहाजाना . | उच्यते शब्द्यते, निगद्यते, अभिधीयते. |
| होना . | अस्ति, भवति, वर्तते, विद्यते, सम्पद्यते. |
| सुनना . | शृणोति [प्रे०] श्रावयति । आकर्णयति, निशाम्यति [प्रे०] निशामयति. |
| जानना . | वेत्ति, जानाति, अवगच्छति. |
| खुलासाकरना . | विवृणोति—ते. |
| समाना . | माति. |
| उड़ना . | डीयते, उड्डयते, उत्पतति, आकाशेनयाति, खे विसर्पति. |
| देखना वा ढूंढना . | पश्यति, ईक्षते, आ-अवलोकते । निरूपयति, निर्धारयति, लक्षयति, अन्विष्यति, मृगयति. |
| रक्षाकरना वा रखना . | रक्षति, पाति, त्रायते, निदधाति, स्थापयति, न्यस्यति—ते. |
| पढ़ना, सीखना . | शिक्षते, अधीते, पठति, अधिगच्छति । वाचयति, अध्येति. |
| निकालना . | निष्काशयति, अपवाहयति, निःसारयति. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| रवि सारथी . | सूरसूतः, अरुणः, अनूरुः. |
| चन्द्र . | हिमांशुः, चन्द्रमाः, चन्द्रः, ग्लौः, मृगाङ्कः, इत्यादि. |
| मङ्गल . | अङ्गारकः, कुजः, भौमः, महीसुतः, इत्यादि. |
| बुध . | रौहिणेयः, बुधः, सौम्यः, इत्यादि. |
| बृहस्पति . | गीष्पतिः, सुराचार्यः, गुरुः, इत्यादि. |
| शुक्र . | उशना भार्गवः दैत्यगुरुः इत्यादि. |
| शनिश्चर . | शौरिः, शनैश्चरः इत्यादि. |
| राहु, केतु . | तमः, (ऽस्त्री) स्वर्भानु, सैंहिकेयः, विधुन्तुदः इत्यादि |
| अगहन. . | मार्गः, मार्गशीर्षः, सहाः (पुं०) |
| पूस . | पौषः, तैषः, सहस्यः. |
| माह . | तपाः, [पुं०] माघः. |
| फागुन . | तपस्यः, फाल्गुनिकः, फाल्गुनः. |
| चैत . | चैत्रः मधुः चैत्रिकः. |
| बैसाख . | वैशाखः, माधवः राधः. |
| जेठ . | ज्येष्ठः शुक्रः. |
| आषाढ . | शुचिः, आषाढः. |
| सावन . | श्रावणः, नभा [पुं०] श्रावणिकः. |
| भादों . | नभस्यः, भाद्रः, भौष्ठपदः. |
| क्वार . | आश्विनः, इषः, आश्वयुजः. |
| कातिक . | बाहुलः ऊर्जः, कार्तिककः. |
| दिशायें . | दिशः, ककुभः काष्ठा, आशाः, हरितः, इत्यादयः. |
| जीतना, जयहोना . | जयति, विजयते. |
| पैदाहोना, करना . | उत्पद्यते, जायते, रोहति, स्फायते, सञ्जनयति-ते, उत्पादयति. |
| जाना . | गच्छति, व्रजति, चलति, याति, एति, सरति, क्राम्यति. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| तारीफ़करना . | स्तौति, श्लाघते, प्रशंसति, विकत्थते. |
| प्राप्तकरना . | लभते, आप्नोति, अधिगच्छति, अर्जति, विन्दति-ते |
| उपासनाकरना . | उपास्ते. |
| गिरना . | पतति, च्यवते, स्रंसते, भ्रंशते, भ्रश्यति, गलति, |
| तरना, धारके सामने तैरना | तरति, प्लवते। प्रतीपंतरति. |
| बयानकरना . | वर्णयति, कथयति, आचष्टे वदति, ब्रवीति, ब्रूते, वक्ति, व्याख्याति, भणति. |
| नामलेना . | अभिदधाति, नामगृह्णाति. |
| कहाजाना . | उच्यते शस्यते, निगद्यते, अभिधीयते. |
| होना . | अस्ति, भवति, वर्तते, विद्यते, सम्पद्यते. |
| सुनना . | शृणोति [प्रे०] श्रावयति। आकर्णयति, निशाम्यति [प्रे०] निशामयति. |
| जानना . | वेत्ति, जानाति, अवगच्छति. |
| खुलासाकरना . | विवृणोति—ते. |
| समाना . | माति. |
| उड़ना . | डीयते, उड्डयते, उत्पतति, आकाशेनयाति, खे विसर्पति. |
| देखना वा ढूंढना . | पश्यति, ईक्षते, आ-अवलोकते। निरूपयति, निर्वर्णयति, लक्षयति, अन्विष्यति, मृगयति. |
| रक्षाकरना वा रखना . | रक्षति, पाति, त्रायते, निदधाति, स्थापयति, न्यस्यति—ते. |
| पढ़ना, सीखना . | शिक्षते, अधीते, पठति, अधिगच्छति। वाचयति, अध्येति. |
| निकालना . | निष्काशयति, अपवाहयति, निःसारयति. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| राधामाधवकी जयहो । | राधामाधवौ विजयेताम् । |
| परमेश्वर ही जगत् का कारण है उसही से स्थावरजङ्गमरुपसृष्टि उत्पन्नहोतीहैं और उसही में लयको प्राप्त होती हैं. | परमेश्वरोहि जगतां कारणं तस्मादेव स्थावरजङ्गमरूपं जगती उत्पद्येते तस्मिन्नेव लयं गच्छतश्च. |
| भक्त उसको "हरि कृष्ण, गोविन्द नारायण, वासुदेव" इत्यादि नामों से स्तुति करते हैं. | भक्तास्तं हरि कृष्ण गोविन्द नारायण वासुदेवेत्यादिनामभिः स्तुवन्ति. |
| ईश्वरपाने केलिये दोही मार्ग पहिले आचार्यों ने कहेहैं पहिला प्रवृत्तिमार्ग और दूसरा निवृत्ति मार्ग. | ईश्वर प्राप्तये द्वावेव मार्गौ पुराणाचार्यैः प्रोक्तौ प्रथमः प्रवृत्तिमार्गः द्वितीयो निवृत्तिमार्गश्च. |
| नहीं नष्ट हुए हैं सम्पूर्ण पाप जिनके और जानना रहाहै जाननेयोग्य पदार्थ जिनको ऐसे अल्पज्ञ, भृगु इत्यादि महर्षियों से दिखाया हुआजो प्रवृत्तिमार्ग तिससेही श्रीकृष्ण की भक्ति में तत्पर हुए उस ईश्वरको प्राप्तकरते हैं. | अहताखिलकल्मषाः विदितवेदितव्या अल्पज्ञा भृग्वादिप्रदर्शितप्रवृत्तिमार्गेणैव श्रीकृष्णभक्तितत्परास्सन्तः तमीश्वरं लभन्ते. |
| नष्टहोगये हैं सम्पूर्ण पाप जिनके और रागद्वेषादि दोषरहित महात्मालोग सनकादि महर्षियों से दिखाये हुए रास्ते सेही योगादि के जरिये से उस सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्मको प्राप्त करते हैं. | निर्धूताखिलकल्मषाः रागद्वेषादिदोषशून्या यतयः सनकादिप्रदर्शितमार्गेणैव योगादिद्वारा तत्सच्चिदानन्दस्वरूपं ब्रह्माधिगच्छन्ति. |
| अपने धर्म में मौतभी अच्छी है और दूसरों का धर्म भय दायक होता है. | स्वधर्मे मृत्युरपि श्रेयान् परधर्मश्च भयप्रदः. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| जो पुरुष चित्तकी सफ़ाई और रागद्वेषादि रहित हुएबिना निवृत्ति मार्ग को ग्रहण करते हैं वे अनधिकारी कहने मात्र के ज्ञानी दोनों ओर से (इसलोक व परलोक से) भ्रष्ट हुए नरक में ही अवश्य पड़ेंगे (क्योंकि) उनमें पाण्डित्यका अभाव होने से. | ये जनाः चित्तशुद्धिं रागद्वेषादिदोषराहित्यञ्च विना निवृत्तिमार्गमुपासते तेऽनधिकारिणो वाचकज्ञानिन उभयतो भ्रष्टा निरये एवावश्य पतिष्यन्ति तेषु पाण्डित्याभावात्. |
| इससे संसार समुद्र को तरने की इच्छा करता हुआ मनुष्य हमेशा आस्तिक होकर सनातनधर्मरूपी नौका को आश्रय ले कर भक्ति रूपी डाँड़ के ज़रिये से संसार समुद्र को तरजाय. | अतः संसारार्णवं तितीर्षुर्बुद्धिमान् जनः सदास्तिको भूत्वा सनातनधर्मपोतमेवावलम्ब्य भक्तिक्षेपणीद्वारा तं तरेत्. |
| चतुर्भुज रूप विष्णु के हथियार वर्णन करो कौमोदकी नाम गदा, नन्दक नाम तलवार पाञ्चजन्यनाम शंख, सुदर्शन नाम चक्र. | चतुर्भुजरूपिणः विष्णोरायुधानि वर्णय कौमोदकी गदा, नन्दकः खड्गः, पाञ्चजन्यः शङ्खः चक्रं सुदर्शनमिति. |
| भगवान् की सवारी कौन है? गरुड़. | हरिवाहनः कः? गरुडः. |
| भगवान् की पत्नी का क्या नाम है? श्री लक्ष्मी वगैरह. | तत्पत्न्याः किं नाम? श्रीः लक्ष्मी-रित्यादि. |
| रुद्र और प्रजापति की स्त्रियों का क्या नाम है. | रुद्रप्रजापत्योः स्त्रियोः किं नाम? |
| उमा, और सरस्वती. | उमा सरस्वती च. |

(१)—विद्याविनय संपन्न ब्राह्मण में गौमें और हाथी में कुत्ते में और चाण्डाल में पण्डित समदर्शी होते हैं। यह गीताका वाक्य है।

(१)—विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः । १ । इति गीता वाक्यात्.

## स्वर्गादिवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
| --- | --- |
| यही भगवान् सृष्टि के उत्पन्न करने के समय स्रष्टा, प्रजापति इत्यादि नामों से, और पालन समय में विष्णु इत्यादिनामों से, और प्रलय समय में रुद्र इत्यादि नामों से बोले जाते हैं. | स एव भगवान् सृष्टेरुत्पादनसमये स्रष्टा प्रजापति रित्यादिनामभिः, पालनसमये विष्णु रित्यादिनामभिः प्रलयसमये रुद्र इत्यादिनामभिः शब्द्यते (अभिधीयते निगद्यते वा). |
| देवताओं का राजा कौन है? और उस की पत्नी कौन है? | देवराजः कः? तत्पत्नी च का? |
| इन्द्र । शची. | इन्द्रः । शची. |
| गणेशजी की पूजा सबही सनातन धर्म को मानने वालों के घर सबही अच्छे कामों में विघ्न दूर करने के लिये पहिलेही होती है. | गणेशस्य पूजा सर्वेषामेव सनातनधर्ममतावलम्बिनां गृहे सर्वेषु शुभकार्येषु विघ्नविघाताय प्रथममेव भवति. |
| देवताओं के सेनापति और खज़ानची का क्या नाम है? | देवसेनान्यः, धनाध्यक्षस्य च किं नाम? |
| कार्तिकेय और कुवेर. | कार्तिकेयः कुवेरश्च. |
| धनके ख़ज़ाने के दोनाम निधि और शेवधि हैं. | द्रव्यसमूहस्य निधिः शेवधिश्च द्वे नाम्नी स्तः. |
| आंच के धौंकने से चिनगारी उड़ती हैं. | अग्नेः प्रध्मापनात्स्फुलिङ्गाः उत्पतन्ति. |
| धर्मराज के नाम भी कृपा कर सुनाओ. | धर्मराजनामान्यपि कृपया श्रावयतु. |
| कृतान्त, यम, शमन वग़ैरह. | कृतान्तः यमः शमनः, इत्यादीनि. |
| जलके अधिष्ठाता देवके नाम अब कृपा कर जताओ. | विज्ञापयाधुना कृपया जलाधिष्ठातृदेवस्य नामानि. |
| वरुण, प्रचेता और अप्पति वग़ैरह. | वरुणः प्रचेताः, अप्पतिः, इत्यादीनि. |
| हवा के नाम भी कहो. | वायोर्नामधेयान्यपि ब्रूहि. |
| समीर, मारुत और अनिल वग़ैरह. | समीरः, मारुतः, अनिलः, इत्यादीनि. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| देहकी वायु कितनी हैं उनके स्थान भी अलग २ वर्णन करो। सुनो. | कतिसंख्याका देहस्थवायवः तेषां स्थानान्यपि पृथक्तया व्याख्याहि [१]शृणु. |
| हृदय में प्राण, गुदा में अपान, ढूंडी में समान, कण्ठ में उदान, सबदेह में व्यान इस प्रकार पांच देहकी वायु हैं. | हृदि प्राणः, गुदेऽपानः, नाभौ समानः कण्ठ उदानः अखिलशरीरे व्यान. इत्थं पञ्च देहस्था वायवः सन्ति. |
| संसार को वश करने वाले कामदेव के नाम भी कहो. | जगद्वशकर्तुः कामदेवस्य नामान्यपि भण. |
| काम, स्मर, कन्दर्प वगैरह जानो. | कामः, स्मरः, कंदर्पः इत्यादीनि विद्धि. |
| स्वर्ग में देवता और दानवों के नाम भी बताओ. | त्रिदिवे सुरासुराणां नाम्न्या अप्याख्याहि |
| देवता तो देव, निर्जर, अमर वगैरह नामों से और असुर दैत्य, दनुज, दानव वगैरह नामों से मशहूर हैं. | सुरास्तु देवाः, अमराः, निर्जरा इत्यादि नामभिः, असुराश्च दैत्याः, दनुजाः, दानवा इत्यादिनामभिः प्रसिद्धाः. |
| आठसिद्धि जो सुनीजाती हैं उन्हें खुलासा कहो. | अष्टसिद्धयो याः श्रूयन्ते ताः समासेन ब्रूहि. |
| अणिमातो पहिलीसिद्धि है दूसरी महिमा कहलाती है, तीसरी गरिमा कही है चौथी लघिमा, तैसेही | अणिमातु प्रथमा सिद्धिः द्वितीया महिमोच्यते तृतीया गरिमा प्रोक्ता चतुर्थी लघिमा तथा पञ्चमी |

| | |
|---|---|
| १ अणिमा=सूक्ष्म शरीर धारण करना. | १ अणोर्भावः=अणिमा कोऽर्थः सूक्ष्मशरीरधारित्वम्. |
| २ महिमा=जिससे ब्रह्माण्ड में न समाय. | २ महतोभावः=महिमा कोऽर्थः येन ब्रह्माण्डे न माति. |
| ३ गरिमा=इतना भारी होजाय कि बडे बलवानों से भी न लेजाया जा सके. | ३ गरिमा=गुरोर्भावः कोऽर्थः येनोरुप्रबलवद्भिरपि अनूह्यः स्यात्. |
| ४ लघिमा=जिससे रुई के तुल्य होकर जहां मन में आवे वहां उड़जाय. | ४ लघोर्भावः=लघिमा कोऽर्थः येन तूलसदृशो भूत्वा यथेष्टमुड्डीयेत्. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| पांचवी प्राप्ति नाम की है छठी प्राकाम्य, यहां से आगे सातवीं ईशित्व और तैसेही आठवीं वशित्व कहा है. | प्राप्तिनाम्नीस्यात्पष्ठी प्राकाम्यं मित्यत ईशित्वं सप्तमी प्रोक्ता वशित्वं चाष्टमी तथा. |
| इनके अर्थ भी क्रमसे टिप्पणी में देखो नवग्रहों के प्रसिद्धपर्यायों कोभी अलग २ इसी पाठकी लफ़्ज़ों की श्रेणी में देखो. | एतासामर्थानपि टिप्पण्यां क्रमतः पश्य नवग्रहाणां प्रसिद्धपर्यायानपि पृथक्पृथक्त्वस्यैव पाठस्य शब्दश्रेण्यां पश्य. |
| सप्तर्षि कौनहैं उनके नाम श्लोक बद्ध कहो. सुनिये. | सप्तर्षयः के तन्नामानि श्लोकबद्धानि वद. श्रूयताम्. |
| मरीचि, अङ्गिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वशिष्ठ ये सात बुद्धिमानों ने सप्तर्षि माने हैं. | मरीचि रङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः। वशिष्ठश्चेति सप्तैते प्राज्ञैस्सप्तर्षयो मताः. |
| चौदह लोक कौन से हैं ? | चतुर्दशलोकाः के ? |
| भूः भुव, स्वर, जन, तप, मह और सत्य ये सात ऊपरके लोक हैं. | भूः, भुवः, स्वः, जनः, तपः, महः सत्यः एते सप्तोपरिस्था लोकाः. |
| तल, वितल, सुतल, महातल, तलातल रसातल, पाताल ये सात नीचे के लोक जानने. | तलः, वितलः, सुतलः, महातलः, तलातलः, रसातलः, पातालः एते सप्ताधःस्था लोका ज्ञेयाः. |
| १ प्राप्ति=उंगली की नोक से चन्द्रमा आदि अलभ्य चीजोंका जिससे लाभ हो. | १ प्राप्तिः=कोऽर्थः अंगुल्यग्रेण चन्द्रादीनामलभ्यवस्तूनां येन लाभः. |
| २ प्राकाम्य=इच्छा न मारी जाय. | २ प्रकामस्य भावः= प्राकाम्यं कोऽर्थः इच्छानभिघातः. |
| ३ ईशित्व=जिससेस्थावर भी आज्ञाकारी हों. | ३ ईशिनो भावः=ईशित्वं कोऽर्थः येन स्थावरा अपि आज्ञाकारिणः स्युः. |
| ४ वशित्व=जिससे पृथ्वीमें भी उन्मज्जन निमज्जन होजाय. | ४ वशिनोभावः=वशित्वं कोऽर्थः येन भूमावपि उन्मज्जननिमज्जने स्याताम् |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| साल के दो अयन होते हैं दक्षिणायन और उत्तरायण. | वर्षस्य द्वेअयने स्तः दक्षिणायनमुत्तरायणञ्च. |
| एक साल में छः ऋतु नीचे लिखी तरतीब से होती हैं. | एकस्मिन् वत्सरे षड्ऋतवो निम्न क्रमेण भवन्ति. |
| अगहन और पूस में हेमन्त; माह और फागुन में शिशिर वा जड़; चैत्र और वैशाख में वसन्त; जेठ और असाढ़ में ग्रीष्म; सावन और भादों में वर्षा वा प्रावृट्; क्वार और कातिक में शरद् | मार्गपौषेच हेमन्तः ऊष्टो (शिशिरः) माघे च फाल्गुने; चैत्रराधे (वैशाखे) वसन्तः स्यात्, शुचौशुके (आषाढे) चग्रीष्मकः, वर्षतुः श्रावणेभाद्रे; आश्विने कार्तिके शरद् इति. |
| पूर्वदिशा प्राची, पश्चिमदिशा प्रतीची दक्षिणदिशा अवाची और उत्तर दिशा उदीची कहलाती है. | पूर्वादिक् प्राची, पश्चिमा दिग् प्रतीची, दक्षिणा दिगवाची उत्तरादिगुदीचीति भण्यते. |
| सहित्य सम्बन्धी आठ रस बयान करने चाहियें. | साहित्यविषयकाः अष्टौ रसाः वर्णनीयाः |
| शृङ्गार, वीर करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक, बीभत्स, रौद्र ये आठ रस जानने. | शृङ्गारः, वीरः करुणः, अद्भुतः, हास्यः, भयानकः, बीभत्सः, रौद्रः इत्यष्टौरसा ज्ञेयाः. |
| कान, खाल, नेत्र, जीभ और नाक ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय; वाणी, हाथ, पाँव, गुदा और लिंग ये पाँच कर्मेन्द्रिय हैं इस प्रकार मिलकर दस इन्द्रिय हैं। और दिल दोनों तरह का है. | श्रोत्रं, त्वक, चक्षुः, रसना, घ्राणमिति पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, वाक्, पाणिः, पादः, पायुः, उपस्थः, इति पञ्च कर्मेन्द्रियाणि एवं मिलित्वा दशेन्द्रियाणि सन्ति. उभयात्मकं मनः. |
| शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पाँच तरतीब वार ज्ञानेन्द्रियोंके विषय हैं. | शब्दः, स्पर्शः, रूपम्, रसः, गन्धः इत्येते पञ्च क्रमशो ज्ञानेन्द्रियाणां विषयाः. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| पांचवीं प्राप्ति नाम की है छठी प्राकाम्य, यहां से आगे सातवीं ईशित्वं और तैसेही आठवीं वशित्वं कही है. | प्राप्तिनाम्नीस्यात्षष्ठी प्राकाम्यं मित्यत ईशित्वं सप्तमी प्रोक्ता वशित्वं चाष्टमी तथा. |
| इनके अर्थ भी क्रमसे टिप्पणी में देखो नवग्रहों के प्रसिद्धपर्यायों कोभी अलग २ इसी पाठको लफ्ज़ों की श्रेणी में देखो. | एतासामर्थानपि टिप्पण्यां क्रमतः पश्य नवग्रहाणां प्रसिद्धपर्यायानपि पृथक्पाठस्यैव पाठस्य शब्दश्रेण्यां पश्य. |
| सप्तर्षि कौनहैं उनके नाम श्लोक पद्द कहो. सुनिये. | सप्तर्षयः के तन्नामानि श्लोकपद्धानिवद. श्रूयन्ताम्. |
| मरीचि, अङ्गिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वशिष्ठये सात बुद्धिमानों ने सप्तर्षि माने हैं. | मरीचि रङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः । वशिष्ठश्चेति सप्तैते प्राज्ञैस्सप्तर्षयो मताः. |
| चौदह लोक कौन से हैं ? | चतुर्दशलोकाः के ? |
| भूः भुव, स्वर्, जन, तप, मह और सत्य ये सात ऊपरके लोक हैं. | भूः, भुवः, स्वः, जनः, तपः, महः सत्यः एते मत्तोपरिस्था लोकाः. |
| तल, वितल, सुतल, महातल, तलातल रसातल, पाताल ये सात नीचे के लोक जानने. | तलः, वितलः, सुतलः, महातलः, तलातलः, रसातलः, पातालः एते सप्ताधःस्था लोका ज्ञेयाः. |

१ प्राप्ति=उंगली की नोक से चन्द्रमा आदि अलभ्य चीजोंका जिसमें लाभ हो.
२ प्राकाम्य=इच्छा न मारी जाय.
३ ईशित्व=जिससे स्थावर भी आज्ञाकारी हों.
४ वशित्व=जिससे पृथ्वीमें भी उन्मज्जन निमज्जन होजाय.

१ प्राप्तिः=कोऽर्थः अंगुल्यग्रेण चन्द्रादीनामलभ्यवस्तूनां येन लाभः.
२ प्रकामस्य भावः= प्राकाम्यं कोऽर्थः इच्छानभिघातः.
३ ईशिनो भावः=ईशित्वं कोऽर्थः येन स्थावरा अपि आज्ञाकारिणः स्युः.
४ वशिनोभावः=वशित्वं कोऽर्थः येन भूमावपि उन्मज्जननिमज्जने स्याताम्

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| साल के दो अयन होते हैं दक्षिणायन और उत्तरायण. | वर्षस्य द्वेअयने स्तः दक्षिणायनमुत्तरायणञ्च. |
| एक साल में छः ऋतु नीचे लिखी तरतीब से होती हैं. | एकस्मिन् वत्सरे षड्ऋतवो निम्न क्रमेण भवन्ति. |
| अगहन और पूस में हेमन्त; माह और फागुन में शिशिर वा जड्; चैत्र और बैशाख में वसन्त; जेठ और असाढ़ में ग्रीष्म; सावन और भादों में वर्षा वा प्रावृट्; क्वार और कातिक में शरद्. | मार्गशीर्षेच हेमन्तः जड्डो (शिशिरः) माघे च फाल्गुने; चैत्रराधे (वैशाखे) वसन्तः स्यात्, शुचौशुक्रे (आषाढ़े) चग्रीष्मकः, वर्षतुः श्रावणभाद्रे; आश्विने कार्तिके शरद् इति. |
| पूर्वदिशा प्राची, पश्चिमदिशा प्रतीची दक्षिणदिशा अवाची और उत्तर दिशा उदीची कहलाती है. | पूर्वादिक् प्राची, पश्चिमा दिक् प्रतीची, दक्षिणा दिगवाची उत्तरादिगुदीचीति भण्यते. |
| साहित्य सम्बन्धी आठ रस बयान करने चाहियें. | साहित्यविषयकाः अष्टौ रसाः वर्णनीयाः. |
| शृङ्गार, वीर करुणा, अद्भुत, हास्य, भयानक, बीभत्स, रौद्र ये आठ रस जानने. | शृङ्गारः, वीरः, करुणः, अद्भुतः, हास्यः, भयानकः, बीभत्सः, रौद्रः इत्यष्टौरसा ज्ञेयाः. |
| कान, खाल, नेत्र, जीभ और नाक ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय; वाणी, हाथ, पाँव, गुदा और लिंग ये पाँच कर्मेन्द्रिय हैं इस प्रकार मिलकर दस इन्द्रिय हैं । और दिल दोनों तरह का है. | श्रोत्रं, त्वक्, चक्षुः, रसना, घ्राणमिति पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, वाक्, पाणिः, पादः, पायुः, उपस्थः, इति पञ्च कर्मेन्द्रियाणि एवं मिलित्वा दशेन्द्रियाणि सन्ति. उभयात्मकं मनः. |
| शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पाँच तरतीब वार ज्ञानेन्द्रियोंके विषय हैं. | शब्दः, स्पर्शः, रूपम्, रसः, गन्धः इत्येते पञ्च क्रमशो ज्ञानेन्द्रियाणां विषयाः. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| जीभ से अनुभव किये हुए छः रसों को कौन २ रस कहां २ हैं इस प्रकार खुलासा वर्णन करो. | जिह्वानुभूतान् षड्रसान् कुत्र कुत्र कः कः रसः इति समासेन व्याख्याहि. |
| पहिला मीठा जलमें; दूसरा लवण लाहौरी नमक में; तीसरा कडुआ मिर्च इत्यादि में, चौथा तीखा नीम वगैरह में; पाँचवा खट्टा इमली इत्यादि में; छटवाँ कसैला हरड इत्यादि में यह छः रस जानने. | प्रथमो मधुरः जले, द्वितीयो लवणः सैन्धवादौ, तृतीयः कटुः मरीचादौ, चतुर्थस्तिक्तः निम्बादौ, पञ्चमोऽम्लः तिन्तिडयादौ, षष्ठः कषायः हरीतक्यादौ इतिषड् रसाः ज्ञेयाः. |
| गाने बजाने की विद्या में सात स्वर कहां २ और कैसे २ हैं अलग २ वर्णन करो. | गानवाद्यविद्यायां सप्त स्वराः कुत्र कुत्र च कीदृशाः इतिपृथक्तया वर्णय. |
| पहिला निषाद (हाथी के नाद सरीखा), दूसरा ऋषभ (गौओं के नाद तुल्य), तीसरा गान्धार (बकरियों के नाद तुल्य), चौथा षड्ज (मोरों के नाद तुल्य), पांचवा मध्यम (क्रौंच के नाद तुल्य), छठा धैवत (घोड़े के नाद तुल्य), सातवां पञ्चम (कोइल के नाद तुल्य) ये सात स्वर वीणा के कण्ठ से निकलते हुए जानने. | प्रथमो निषादः (गजनादवत्), द्वितीयो ऋषभः (गवांनादवत्) तृतीयो गान्धारः(अजादीनांनादवत्), चतुर्थः षड्जः (मयूरनादवत्), पञ्चमो मध्यमः (क्रौञ्चनादवत्), षष्ठो धैवतः (अश्वनादवत्), सप्तमः पञ्चमः (कोकिलनादवत्) इति सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिता स्वराः ज्ञेयाः. |
| चौदह विद्या कौन हैं? | चतुर्दश विद्याः काः? |
| ब्रह्मज्ञान, रसायन, श्रुतिकथा, वैद्यक, ज्योतिष, व्याकरण, धनुर्विद्या, तैरना, गाना, नाचना, घोड़े पर चढ़ना, कोकशास्त्र, चोरी में होशियारी, चतुराई ये १४ विद्या हैं. | ब्रह्मज्ञानं, रसायनं, श्रुतिकथा, वैद्यकं, ज्योतिषं, व्याकरणं, धनुर्धरत्वं, जलतरत्वं, सङ्गीतं, नाट्यं, अश्वारोहणं, कोकशास्त्रं, स्तेयप्रागल्भ्यं, चातुर्यंमनाश्चतुर्दशविद्याः. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| जीव की चार अवस्था कौन हैं? | चतस्रोऽवस्था जीवस्य काः? |
| जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीया ये चार अवस्था हैं. | जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुरीया इत्यवस्थाश्चतस्रः. |
| कृपा कर नौ प्रकार की भक्ति भी बयान करो. | कृपया नवधां भक्तिमपि वर्णयतु. |
| भगवान् का स्मरण, कीर्तन, कथा श्रवण, पाद सेवन, पूजन, वन्दना, दास्य, और सख्य और अपने आपे का निवेदन कराना इस प्रकार नौ प्रकार का है. | स्मरणं कीर्तनं विष्णोः श्रवणं पादसेवनं; अर्चनं वन्दनं दास्यं; सख्यमात्मनिवेदनमिति नवधा. |
| पृथ्वी, अप्, अग्नि, वायु, आकाश आदि पांच तत्व हैं. | पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशानि पञ्च तत्त्वानि. |
| छः दर्शन शास्त्र उन २ के आचार्यों सहित वर्णन करो. | षड्दर्शनानि तत्तदाचार्यसहितानि वर्णय. |
| गौतम का किया हुआ न्याय, कणाद का किया हुआ वैशेषिक, कपिल का किया हुआ सांख्य, पतञ्जलि का किया हुआ योग, व्यास का किया हुआ वेदान्तदर्शन, जैमिनि का किया हुआ मीमांसादर्शन ये छः दर्शन हैं. | गौतमकृतो न्यायः, कणादकृतं वैशेषिकम्, कपिलकृतं साङ्ख्यम्, पतञ्जलिकृतो योगः, व्यासकृतं वेदान्तदर्शनम्, जैमिनिकृतं मीमांसादर्शनमिति षड् दर्शनानि सन्ति. |
| ६४ कला जो भक्तवत्सल श्रीकृष्ण भगवान् ने ६४ दिन में श्रीसान्दीपन नाम के गुरु से पढ़ीं उन को स्पष्ट रीति से सुनो. | चतुःषष्टिः कला या भक्तवत्सलेन श्रीकृष्णेन भगवता चतुःषष्टिदिवसेषु श्रीसान्दीपनाभिधाद्गुरोरधीताः ताः समासेन श्रूयन्ताम्. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| गाना, बाजा, नाच (गात्रविक्षेप), नाटक | गीतं, वाद्यं, नृत्यं, नाट्यं, आलेख्यं, वि- |
| (भावप्रदर्शन), तस्वीर, अति सूक्ष्म | शेषकच्छेद्यम्, तण्डुलकुसुमवलि- |
| वस्तु का छिधा करना, तण्डुलकुसु- | प्रकाराः, पुष्पास्तरणं, दशनवसना- |
| मवलि प्रकार, फूलों का बिछौना, | ङ्गरागाः, मणिभूमिकाकर्म, शयन- |
| दाँत वस्त्र और शरीर का रंगना, | रचनं, उदकवाद्यं, उदकघातः, चित्र- |
| मणियों की भूमि (फर्श) बनाना, | योगाः, माल्यग्रन्थनविकल्पाः, शेख- |
| शय्या का रचना, जल का बाजा, | रापीडयोजनं, नेपथ्ययोगाः, कर्ण- |
| उदकघात, चित्रों का योग करना, | पत्रभङ्गाः, सुगन्धयुक्तिः, भूषणयो- |
| फूलों का गूँथना, मुकुट बनाना, | जनं, ऐन्द्रजालं, कौतुमारयोगाः, |
| नेपथ्ययोग (अलङ्कार धारण) कर्ण- | हस्तलाघवं, चित्रशाकापूपभक्ष्यवि- |
| भूषण रचना, अतर निकालना, भू- | कारक्रियाः, पानकरसरागासवयो- |
| षणों की योजना, इन्द्रजाल, कामो- | जनं, सूचीकर्म, सूत्रक्रीडा, प्रहेलिका, |
| द्दीपन करना, हाथ की फुर्ती, वि- | प्रतिमाला, दुर्वचकयोगाः, पुस्तक- |
| चित्र शाक पूआ इत्यादि भक्ष्य | वाचनं, नाटकाख्यायिकादर्शनं, का- |
| पदार्थों की क्रिया, ठंडाई रस अनेक | व्यसमस्यापूरणं, पट्टिकावेत्रवाण- |
| प्रकार के रङ्गयुक्त आसव बनाना, | विकल्पाः, तर्ककर्माणि, तक्षणं, वा- |
| दर्जी का काम, सूत्रक्रीडा, पहेली | स्तुविद्या, रूप्यरत्नपरीक्षा, धातु- |
| बनाना व जानना, माला समतुल्य | वादः, मणिरागज्ञानं, आकरज्ञानं, |
| कुछ बनाना, दुर्वचकयोग, पुस्तक- | वृक्षायुर्वेदयोगाः, मेषकुक्कुटलावक- |
| वाचन, नाटक की कथा का दिखाना | युद्धविधिः, शुकसारिकाप्रलापनं, |
| काव्य समस्या पूर्ति, पट्टी बेंत और | उत्सादनं, केशमार्जनकौशलं, अक्षर- |
| बाण इनकी रचना, तर्ककर्म, बढ़ई | मुष्टिकाकथनं, म्लेच्छितकुतर्कविक- |
| का कर्म, घर बनाना, रूपारत्न | ल्पाः, देशभाषाज्ञानं, पुष्पशकटिका- |
| परीक्षा, धातुओं का कहना, मणि | निमित्तज्ञानं, यन्त्रमातृका, धारण- |
| रंगज्ञान, खानों का ज्ञान, वृक्षों के | मातृका, संवाच्यं, मानसीकाव्य- |
| आयुर्वेद का योग, मेंढा, तीतर, | क्रिया, अभिधानकोशः, छन्दोज्ञानं, |

स्वर्गापवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| मुर्गा इत्यादि लड़ाने की रीति, तोता मैना का बुलावना, स्थानान्तर दूरीकरण, केश मार्जनकी चतुराई, अक्षरों से और मुष्टिका से कथन अशुद्ध तर्क रचना, देशभाषा ज्ञान, फूलों की गाड़ी बनाने की क्रिया, यन्त्रों के निर्माण की विधि, धारण करने की विधि, समय की कहना मानसी काव्यक्रिया, अभिधानकोष छन्दज्ञान, अनेक क्रियाओं का करना छलने के उपाय, वस्त्र रक्षण, जूआ विशेष, आकर्ष (खींचनेकी) क्रीड़ा बालकों के खिलोने बनाना, वैनायक (विघ्नकर्ता) और वैतालों की विद्या का ज्ञान ये चौंसठ कला हैं. | क्रियाविकल्पा, छलितकयोगाः, वस्त्रगोपनानि, द्यूतविशेषः, आकर्षक्रीड़ा, बालक्रीड़नकानि, वैनायिकानां वैतालिकानाञ्च विद्यानांज्ञानमिति चतुःषष्टिः कलाः. |
| जो इन ऊपर की कही हुई कलाओं को ६४ दिन में पढ़लेते हुए और जो पांचवर्ष के गोवर्धन पहाड़ को उखाड़कर कानी उंगली की नोक पर धारण करते हुए और इन्द्रके डर से ब्रजवासियों को बचातेहुए उनको आजकल के मन्दमति "मनुष्य" मानते हैं यह उनकी भूल है. | य एता उपरोक्ताःकलाश्चतुःषष्टिदिवसैरेवाधिजगे, यः पञ्चहायनो गोवर्द्धनगिरिमुत्पाट्य कनिष्ठिकया सप्तदिवसपर्य्यन्तं दधार ब्रजवासिनश्चेन्द्रत्रासाद् ररक्ष तमाधुनिकाः क्षुद्रमतयः मनुष्यं मन्यन्त इति तेषां मतिभ्रमः. |
| तीन ताप हैं—आध्यात्मिक, आधिभौतिक, और आधिदैविक. | तापास्त्रयः आध्यात्मिकः, आधिभौतिकः, आधिदैविक इति. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| तीन प्रकारके कर्म हैं-सञ्चित, प्रारब्ध, और क्रियमाण. | त्रिविधंकर्म्म—सञ्चितं, प्रारब्धं, क्रियमाणञ्चेति. |
| तीन अवस्था देहकी बाल, युवा और वृद्ध हैं. | अवस्थास्तिस्रोदेहस्य–बाल्यं यौवन, वार्धक्यञ्चेति. |
| चारवेद ऋक्, यजु', साम और अथर्व हैं. | चत्वारो वेदाः ऋग्यजुःसामाथर्वेति. |
| उपवेद भी चार हैं ऋग्वेदका आयुर्वेद, यजुर्वेदका धनुर्वेद, ( शस्त्रविद्या ) सामवेद का गान्धर्व (गानविद्या) अथर्व का स्थापत्य ( शिल्प विद्या. ) | उपवेदा अपि चत्वारः–ऋग्वेदस्यायुर्वेदः यजुर्वेदस्य धनुर्वेदः (शस्त्रविद्या) सामवेदस्य गान्धर्वः [गानविद्या] अथर्वणश्चस्थापत्यः [शिल्प] |
| दश उपनिषद् कौन से हैं ? | दशोपनिषदः के ? |
| ईश केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य, तैत्तिरीय ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्य, दश उपनिषद् हैं. | ईशकेनकठप्रश्नमुण्डकमाण्डूक्यतैत्तिरीयैतरेयछान्दोग्यबृहदारण्यका दशोपनिषदः. |
| अठारह स्मृतियों के नाम लिखो. | अष्टादशस्मृतीनां नामानि लिख. |
| मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क उशना, अंगिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्त, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास शङ्ख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप, वशिष्ठ इन २ नामोंके ऋषियों से बनाई हुई स्मृति जानना. | मनु', अत्रिः, विष्णु', हारीतः, याज्ञवल्क्य', उशना, अङ्गिराः, यम', आपस्तम्ब', संवर्तः, कात्यायनः, बृहस्पतिः, पाराशरः, व्यासः, शङ्खः, लिखितः, दक्षः, गौतमः, शातातप', वशिष्ठ', इत्येतन्नामभिः ऋषिभिः प्रणीता स्मृतयो ज्ञेयाः. |
| द्विजातियों के १६ संस्कार वर्णनकरो. | द्विजातीनां षोडश संस्कारा वर्ण्यन्ताम्. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नाम क्रिया, निष्क्रम, अन्नप्राशन, पचनक्रिया कर्णवेध, व्रतादेश, वेदारम्भ क्रियाविधि वेदान्तःस्नान, उद्वाह, विवाहाग्निपरिग्रह, त्रेता अग्नि संग्रह ये १६ संस्कार हैं. | गर्भाधानं, पुंसवनं सीमन्तो जातकर्मच, नामक्रिया निष्क्रमोऽन्नप्राशनं पचनक्रिया। कर्णवेधोव्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः वेदान्तःस्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः त्रेताग्निसंग्रहश्चेव संस्कारापोडशस्मृताः. |
| अठारहों पुराणों के नाम सुनो. | अष्टादशपुराणानां नामानि शृणुत. |
| ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण शिवपुराण, श्रीमद्भागवत या देवी भागवत, व नारद पुराण, मार्कण्डेयं पुराण अग्नि पुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्म वैवर्तपुराण, लिंगपुराण, वाराह पुराण, स्कन्दपुराण, वामनपुराण कूर्मपुराण, मत्स्यपुराण, गरुड़पुराण और ब्रह्माण्डपुराण ये अठारह पुराण हैं. | ब्रह्मपुराणं, पद्मपुराणं, विष्णुपुराणं शिवपुराणं, श्रीमद्भागवतं देवीभागवतं वा, नारदपुराणं, मार्कण्डेयपुराणं, अग्निपुराणं, भविष्यपुराणं, ब्रह्मवैवर्तपुराणं, लिङ्गपुराणं वाराहपुराणं, स्कन्दपुराणं वामनपुराणं। कूर्मपुराणं, मत्स्यपुराणं, गरुड़पुराणं ब्रह्माण्डपुराणञ्चैतान्यष्टादशपुराणानि. |
| खाने की चीजें के प्रकार की हैं? | भोजनपदार्थाः कतिधाः? |
| चाटे जाने योग्य, चींखने योग्य, पीने योग्य, खाने योग्य, चावने योग्य ये छः तरह की हैं. | लेह्यं, चोष्यं, पेयं, भक्ष्यं, भोज्यं, चर्व्यमिति षड्धाः. |
| नौ रत्न सुनिये. | नवरत्नानि श्रूयन्ताम्. |
| मोती, सुवर्ण, वैडूर्य, पद्मराग, पुष्पराग और गोमेद, नीलम, गारुत्मत तैसही प्रवाल ये नौ रत्न कहे हैं. | मुक्ताफलं, हिरण्यञ्च, वैडूर्यं, पद्मरागकं, पुष्परागञ्च गोमेदं, नीलं, गारुत्मतं, तथा प्रवालयुक्तान्युक्तानि महारत्नानि वै नव. |

## स्वर्गीयवृत्तान्ताः धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| मांग में सिंदूर, भाल में तिलक, ठोढ़ी में तिलक लगाना, मेंहदी लगाना, आभूषण पहरना, पुष्पधारण, सुगन्ध लगाना, मुखराग, अधरराग, चन्दन अंग में लगाना, दान्त रँगना, काजल लगाना. | सीमन्तकः(शिरसि सिन्दूरधारणम्) भालतिलकः, चिबुकतिलकः, हस्तरञ्जनम्, आभरणधारणम्, पुष्पधारणम्, सुगन्धलेपनम्, मुखरागः, ओष्ठरागः, चन्दनलेपनम्, दशनरागः, कज्जलनिवेशनमित्यादयः. |
| वेद के अंग ६ हैं–१ शिक्षा में वर्णस्थानोच्चार वर्णन, २ कल्प में कर्म करने की रीति, ३ व्याकरण में शब्द सिद्धि और शुद्धता का वर्णन, ४ निरुक्त में वेद के कठिन शब्दों का अर्थ वर्णन, ५ छन्द में अक्षर और मात्रा के वृत्तों का वर्णन, ६ ज्योतिष में गणितादि वर्णन, | वेदस्याङ्गानिषट्—प्रथम शिक्षा यस्यां वर्णस्थानोच्चारवर्णनम्; द्वितीयं कल्पः यस्मिन् कर्मकाण्डरीतिः, तृतीयं व्याकरणम् यस्मिन्शब्दसिद्धिशुद्धतावर्णनं, चतुर्थम् निरुक्तं यस्मिन्वेदस्य गूढशब्दार्थविवर्णनम् पञ्चमं छन्दः यस्मिन्नक्षरमात्रावृत्तवर्णनं षष्ठं ज्योतिष यस्मिन्गणितादिवर्णनम्. |
| योनि चौरासी लाख हैं–जिनमें जलचर नौ लाख, मनुष्य चार लाख, स्थावर सत्ताईसलाख, कृमि ग्यारह लाख, पक्षी दश लाख, चौपाये तेईस लाख | चतुरशीतिलक्षं योनयः, यासु जलचरा नवलक्षं, मनुष्याः चतुर्लक्षं, स्थावराः सप्तविंशतिलक्षं, कृमय एकादशलक्षं, पक्षिणो दशलक्षं, चतुष्पादास्त्रयोविंशतिलक्षमिति. |



## अठारहवाँ अध्याय—अष्टादशोऽध्यायः ।

### रोग इत्यादि का वर्णन—रोगविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| रोग | रुक्, रोगः, गदः, आमयः. | कोढ़ | कुष्ठः-ष्ठम्, श्वित्रम्, मण्डलकम्. |
| शफाखाना | चिकित्सालयः. | | |
| दवाखाना | औषधालयः. | लकुआ | वातरोगः, अर्द्धाङ्गः. |
| बुखार | ज्वरः. | हैज़ा | विसूचिका. |
| जाड़ा | शीतज्वरः. | जिरियान | प्रमेहः, मेहः. |
| दवा | अगदः, भेषजम्, औषधम्. | पैरजारी होना | प्रदरः [स्त्रीरोगः]. |
| कफ | कफः, श्लेष्मन् [पु०] | | |
| पित्त | मायुः, पित्तम्. | घाव | व्रणः, ईर्मम्, अरुः. |
| वात | वातः. | आतशक, सुज़ाक | उपदंशः. |
| शीतला | विस्फोटकः, शीतला, मसूरी-रिका. | आँखदुखना | अक्षिशूलम्, चक्षुःपीड़ा. |
| खाँसी | कासः क्षवथुः. | अफरा | आनाहः. |
| दस्त | सङ्ग्रहणी, प्रवाहिका. | बवासीर | अर्शः. |
| कै | प्रच्छर्दिका, वमिः, वमथुः. | शिरकादर्द | शिरोवेदना. |
| खूनफ़िसाद | रक्तविकारः. | दाँतकादर्द | दन्तवेदना. |
| बदहज़मी | मन्दाग्निः. | कानकादर्द | कर्णवेदना. |
| खुजली | कण्डुः, कच्छूः. | पथरी | अश्मरी. |
| दाद | दद्रुः द्रूः. | बहुमूत्र | मूत्रकृच्छ्रम्. |
| शूलकादर्द | शूलम्. | मृगी | अपस्मारः. |
| पीनस | प्रतिश्यायः, पीनसः. | फीलपाया | श्लीपदम्, पादवल्मीकम्. |
| सूजन | शोथः शोफः. | हकीम | वैद्यः, भिषक्, चिकित्सकः. |
| फोड़ा फुंसी | विस्फोटकः, पिटकः. | हुचकी | हिक्का. |
| बिवाई | पादस्फोटः, विपादिका. | छींक | छिक्का. |
| श्वेत कोढ़ | किलासम्, सिध्मम्. | घाव | व्रणः, क्षतः. |

## रोग इत्यादि का वर्णन रोगविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| फ़स्त | शिरामोक्षः. | मालूम होना | भा-प्रति-भाति, दृश्यते लक्ष्यते. |
| भोगना (दुःख) | उपभुङ्क्ते, विहसते, क्लिश्यते पीड्यते, तप्यते. | फूटना फोड़ना | स्फुटति, दलति, स्फोटयति दलयति. |
| बढ़ना | वर्धते, एधते. | | |
| चीरना | विदारयति. | | |

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| कोई दवाखाना और शफ़ाख़ाना तुम्हारे शहर में है. बहुत हैं. | सः कौऽपि दौषधालयचिकित्सालयौ भवदीयपत्तने. बहवस्सन्ति. |
| यह रोग़मर्रह कमज़ोर होता जाता है इसके रोग का किसी होशियार हकीम से इलाज कराओ और माकूल दवाइयां दिलाओ. | प्रतिदिनमयं निर्बलो जायते ऽस्य रुजः केनापि सुशिक्षितेन वैद्येन चिकित्सां कारयानुकूलानौषधींश्च दापय. |
| वात पित्त कफ़ इनके ज़ोर होनेपर जब सन्निपात हो जाताहै तभी हकीम की अक़्लमन्दी देखी जाती है. | वातपित्तकफानां वेगे सञ्जाते यदा सन्निपातो जायते तदैव वैद्यस्य बुद्धिकौशलं दृश्यते. |
| मैं एक हफ़्ते से जाड़े बुख़ार में मुब्तिलाहूं. | अहमेकसप्ताहाच्छीतज्वरेण क्लिश्ये. |
| क्या तुम्हारा बेटाभी शिरमें फोड़ो से पीड़ित है. | किं तव पुत्रोऽपि शिरसि विस्फोटकैः परिपीड्यते. |
| पांचदिन से देवदत्त को खांसी और मन्दाग्नि दिक़ कर रही है. | आपञ्चदिवसेभ्यः क्षवथुर्मन्दाग्निश्च देवदत्तम्बाधते. |
| कमज़ोर आदमी की फ़स्त कभी न खोले. | दुर्बलस्य शिरामोक्षो कदापि न कुर्वीत. |
| यह बिचारा मुसल्मान दस्त, खूनफ़िसाद और खुजली से दुखी है. | यवनोऽयं वराकः संग्रहण्या, वमथुना, रक्तविकारेण कंड्वाच परितप्यते. |

## रोग इत्यादि का वर्णन—रोगविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| इसने ज्वर में खटाई खाकर सब शरीर में सूजन करली. | अनेन ज्वरेऽम्ललामस्वा सर्वदेहे शोथः कृतः. |
| हमारा कमलसिंह भी शूल, जुकाम और प्रमेह से दुखी है इसकी रोगशान्ति डाक्टरी इलाज सेही होगी ऐसा मालूम होता है. | अस्मत्कमलसिंहोऽपि, शूलेन, प्रतिश्यायेन, मेहेन च परिक्लिश्यतेऽस्यरोगशान्ति डाक्टरीचिकित्सयैव भविष्यतीति प्रतिभाति. |
| रामदत्त के पांवों में बड़ी बिवाई हैं. | रामदत्तस्य पादयो र्महत्यो विपादिकास्सन्ति. |
| इस सालतो खुदाके फ़ज़ल से हैजा और मरीरोग नाम कोभी नहीं सुना. | अस्मिन्वर्षे ईश्वरकृपया विसूचिकारोगो महामारीरोगश्च नाम्नाऽपि न श्रुत. |
| रामसिंह के शिर में बड़े फोड़े हैं इनको शफाखाने में जाकर चिरवाओ. | रामसिंहस्य शिरसिमहान्त. [अधिकाः] पिटकास्सन्ति एतांश्चिकित्सालयं गत्वा विदारय. |
| मेरा फोड़ा रात में फूटगया. | मम स्फोटको रात्रौ अस्फुटत्. |
| क्या इस बीमारी का कोई इलाज है. | अस्ति काचिच्चिकित्साऽस्य रोगस्य ? |
| देवदत्त फ़ोतों की सूजन व हिचकी की बीमारी से पीड़ित है । लीलावती वायरोग से और पैर रोग से पिड़ित है. | देवदत्तो वृषणशोथेन हिक्कारोगेण च पीडितोस्ति । लीलावती वातरोगेण प्रदररोगेणच परितप्यते. |
| यह मनुष्य सफेद कोढ़ में मुब्तिला है. | किलासग्रस्तोऽयजनः. |
| किलास क्या ? कोढ़काही यहएक भेद है. | किलास किम् ? कुष्ठस्यैवायमेको भेद. |
| मेरी बाँह में एक घाव है. | मद्बाहावेको व्रणः वर्तते. |
| ग्यारह दिनों से मैं नेत्र पीड़ा और दाँत का दर्द भोग रहाहूं. | एकादशेभ्यो दिनेभ्योऽहमक्षिशूलन्दन्तवदनाञ्चोपभुञ्जे. |
| मेरा दुश्मन सूजाक जलधर और भगन्दर वगैरह रोगों स पीड़ित है. | मम शत्रुरुपदंशजलन्धरभगन्दरादिभिर्गदैः पीडितोऽस्ति. |

## रोग इत्यादि का वर्णन—रोगविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| केदारसिंह जाट सिरके दर्द और बवासीर से दुखी है. | केदारसिंहोजट्टः शिरोवेदनयार्शरोगेण च परितप्यते. |
| अंग्रेजी डाक्टर ने कल कृष्णसिंह की पथरी निकाली. | आङ्ग्लवैद्यो ह्यः कृष्णसिंहस्याश्मरीं निरकाशयत्. |
| मृगी का रोग बड़ा भयङ्कर होता है वह आग और पानी को देखकर बकता है यह हमने सुना है. | अपस्माररोगो महद्भयङ्करो भवति सोऽग्निजलञ्च दृष्ट्वा धत इतिश्रुतमस्माभिः |
| पादवल्मीकयालारोगी भाषामें फीलपाँव कहलाता है. | पादवल्मीकवान् रोगी फीलपाँव इति भाषायां कथ्यते. |
| और भी बहुत से रोग हैं ग्रन्थ बढ़ने के डरसे नहीं लिखे. | सन्त्यन्येऽपि बहवो रोगा ग्रन्थभूयस्त्वभयान्न लिखिताः. |

## उन्नीसवां अध्याय–एकोनविंशोऽध्यायः ।

### औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च ।

| हिन्दी। | संस्कृत । | हिन्दी। | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| लौंग | लवङ्गम्, देवकुसुमम्. | मनिहारी नमक | सौवर्चलः. |
| सौंठ | शुण्ठिः-ण्ठी, विश्वा-श्वम्. | | |
| मिर्च | मरीचम्, कालकम् [रक्तश्यावौ भेदौ अस्य] | सैंधानमक | सैन्धवः—वम्. |
| | | सांभर | रौमकम्, वसुकम्. |
| पीपर | पिप्पली, कणा, वैदेहजम् | काला | पाक्यः, विडम्, क्षारम् [खारी.] |
| ज़ीरा सफेद | जीरकः–कम्, जरणः, अजाजी. | हींग | हिङ्गु [न०] जतुकम, रामठम्, वाल्हिकम्. |
| „ काला | सुषवी, कारवी, उपकुञ्चिका. | | |
| सौंफ | शतावहिका. | हड़ | हरीतकी. |

## औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| आमले | शिवः. | धनिया | छत्रा, धान्याकम्, धन्याकम्. |
| बहेड़ा | विभीतकः. | बेलगिरी | बिल्वमज्जकः, माल्धजाफलम्. |
| ,, मींग | मज्जकः. | जवाखार | यवक्षारः यवजः. |
| बड़ी इलायची | एला, निष्कुटिः. | हलदी | हरिद्रा, काञ्चनी, पीता. |
| छोटी ,, | त्रिपुटा, तुत्था. | चौलाई | पयोनादः. |
| अदरक | आर्द्रकम्, शृङ्गवेरम्, गुल्ममूलम्. | पान | ताम्बूलम्. |
| शहद | क्षौद्रम्, माक्षिकम्, मधु [न०] | चूना | चूर्णकम्. |
| | | कत्था | खदिरम्. |
| | | सुपारी | पूगम्—पूगीफलम्. |
| छत्ता | मधुकोषः, करण्डः. | कमलगट्टा | अरविन्दबीजकम्. |
| अजमाइन | सालेयः, मधुरिका. | सिरका | शुक्तम्, चौक्तिकम्. |
| भांग | जया, भङ्गा. | राल | यक्षधूपः, रालः. |
| अमचूर | आम्रचूर्णः—र्णं | कस्तूरी | मृगमदः, कस्तूरिका. |
| गिलोय | अमृता, गुडूची. | गावजबां | गोजिह्वा. |
| अरक़ | रसः, द्रवः, आसवः. | अगर | अगरु. |
| काढ़ा | क्वाथः, कषायः. | असगंध | अश्वगन्धा. |
| चटनी | अवलेहः | खसखस | खाखसम्. |
| मिश्री | सिताखण्डः, खण्डमोदकः. | केशर | घुसृणम्, कुङ्कुमम्. |
| दारचीनी | त्वचा. | कपूर | कर्पूरम्, घनसारः. |
| बंस लोचन | त्वक्क्षीरी, वंशरोचना [स्त्री]. | चन्दन | मलयजः, भद्रश्रीः, चन्दनः. |
| | | लाल ,, | पत्राङ्गम्, रक्तचन्दनम्. |
| नागरमोथा | मुस्ताभम्. | अफीम | अहिफेनम्, अफेनम्. |
| मुनक्का | शुष्कद्राक्षा, गोस्तनी. | जवासा | यासः, यवासः, धन्वयासः. |
| जायफल | जातिफलम्, जातीफलम्. | फिटकरी | स्फटी, तुवरी, सौराष्ट्री. |
| | | चौंटली | गुञ्जा, कृष्णला. |

## औषधि के तोल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| पारा | सूतः, पारदः चपलः. |
| अभ्रक | अभ्रजम्, गिरिजामलम्. |
| सुरमा | स्रोतोञ्जनम्, सौवीरम्, यामुनम्, अञ्जनम्. |
| तूतिया | तुत्थम्. |
| गन्धक | गन्धाश्मा, गान्धि-(न्ध)कः, |
| जस्तका-सुर्मा | रीतिपुष्पम्, कुसुमाञ्जनम्. |
| हरताल | पिञ्जरम्, पीतनम्, तालम्, हरितालम्. |
| शिलाजीत | शिलाजतु, गैरेयम्, अश्मजम्. |
| सिन्दूर | सिन्दूरम्, नागसम्भवम्. |
| मनसिल | मनःशिला, नागजिह्विका. |
| सज्जी खार | सांर्जिकाक्षारः, सुजिकाक्षारः. |

### मानविशेषाः.

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| कांटा | पपणी, पपणिका, नाराची. |
| तोल | मानम्, भारः, तोलः परिमाणम्. |
| तराजू | तुला, घटः तुलायन्त्रम्. |
| १ तोला | कर्षः. |
| ¼ तोला | टङ्कः. |
| ४ तोले | पलः. |

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| १६ तोलें आवसेर | कुडवः. |
| ६४ तोला १ सेर. | प्रस्थः. |
| ३२ तोला ½ सेर | शरावकम्. |
| १०० पल | तुला. |
| २० तुला | भारः. |
| रुपया | कार्षापणः, कार्षिकः. |
| पैसा | पणः, ताम्रखण्डम्. |
| ५ प्रस्थ | आढकम् (५ सेरका.) |
| ८ आढक वा १ मन | द्रोणः. |
| २ द्रोण वा २ मन | शूर्पः |
| ३ मन सा धे शूर्प | खारी. |
| २ शूर्प वा ४ मन | द्रोणी वा भारः. |
| ४ भार वा ८ मन | वाहः. |
| बाट | वणड्कः. |
| तोलना | तोलयति. |
| इकट्ठा करना | सञ्चिनोति. |

## औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| गरम मसालेके लिये लौंग कालीमिर्च-ज़ीरा और इलायची लाओ. | ऊष्णवेसवारार्थं लवङ्गानि कृष्णमरीचानि जीरकमेलाश्चानय. |
| सोंठ, मिर्च, पीपल, दोजीरे, सैंधा नमक अजमोद और हींग इकट्ठाकर हिंग्वाष्टक चूर्ण बनताहै. | शुण्ठि, मरीच, पिप्पली जीरके द्वे सैन्धवमजमोदं हिङ्गुचं पिण्डीकृत्य हिङ्ग्वष्टकाभिधचूर्णं सम्पद्यते. |
| सौंफ बिना पूपअच्छे और स्वाद नहीं होते. | शताह्विकाम्बिना पूपाः शोभना सुस्वादवो वा न भवन्ति. |
| शहद के साथ अदरक खांसी दूर करनेवाला है. | सक्षौद्रमार्द्रकं कासहरम्. |
| बड़ी हर, बहेड़ा आमले मिलाकर त्रिफला और सोंठ मिर्च पीपल मिलाकर त्रिकुटा कहलाती है. | बृहद्धरीतकी विभीतकः आमलकाः पिण्डीकृत्य त्रिफलेति शुण्ठिमरीचपिप्पल्यः त्रिकुटेति शब्द्यते. |
| पांच नमक सैंधा, साँभर, काला, मनिहारी, खारी वगैरह होते हैं. | पञ्चलवणानि सैन्धवं,रौमक, विडं, सौवर्चलः, क्षारमित्यादीनि सन्ति. |
| मिश्री, वंशलोचन, छोटी इलायची पीपर [छोटी] दालचीनी, गिलोयसत्त ये इकट्ठी करके हलके बुखार के दूर करने वाला, भूख बढानेवाला सितोपलादि चूरन होता है. | सिता त्वक्क्षीरी, त्रिपुटा, पिप्पली, दारचीनी अमृतासार एताः पिण्डीकृत्य मन्दज्वरघ्न बुभुक्षावर्धनश्च सितोपलादिचूर्णम्भवति. |
| बैंगन के शाग केलिये एक पैसेकी खटाई लाओ. | वृन्ताकशाकार्थमेकस्य पणस्याम्रचूर्णमानय. |
| नमक के साथ अनारका खोपड़ा, या अजमाइन भी खांसी दूर करनेवाली है. | सलवणः दाडिमत्वक् सालेयोऽपि वा क्षवथुहरः. |
| इस छत्ते में शहद है या नहीं. | अस्मिन्मधुकोषे मध्वस्ति न वा. |
| क्या भाँग भी भूखलगानेवाली है ? | किंभयापि बुभुक्षा दायिका. |

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| है तो मगर अक़ल को गुम करनेवाली है. | अस्ति तु परञ्च बुद्धिहरा. |
| पञ्चभद्र [गिलोय, पित्तपापड़ा, सौंठ, नागर मोथा, चिरायता] का काढ़ा नय बुखारों को दूर करनेवाला है. | पञ्चभद्रस्य क्वाथोऽखिलज्वरहरो भवति. |
| सिरके की चटनी दीपन और पाचन है. | शुक्तस्यावलेहो दीपकः पाचनश्च. |
| आलूबुखारा और मुनक्का प्यास बुझाने के लिये दिया जाता है. | बौखारालुका गोस्तनी च तृट्शान्त्यर्थं दीयते. |
| बेलगिरी दस्तों में हित होती है. | बिल्वमज्जकः सङ्ग्रहण्यां हितम्. |
| कीड़े के काटने पर सिरके का लेप योग्य है. | कीटक्षते शुक्तस्य लेपो युक्तः. |
| पेशाब बन्द होनेपर मिश्री सहित धनिया जल में पीसकर और कपड़े में छानकर पीवे. | मूत्रावरोधे ससित धान्याक जले पिष्ट्वा पटे स्रावयित्वा पिबेत्. |
| सुपारी चूना कत्था सहित पान मनुष्य खाते हैं. | सपूगचूर्णखदिरं ताम्बूलं जनः खादते. |
| क्या चौलाई भी मत में है ? है तो. | किं पयोनाडोऽपि मतेऽस्ति अस्तितु. |
| क्या कमल गट्टा भी कोई दवा है ? न मालूम. | अस्ति काचिदौषधिररविन्दबीजकमपि ? न जाने. |
| और दवाओं के भी नाम बताओ. | अन्यासामप्यौषधीनां नामानि कथय. |
| राल, कस्तूरी, जायफल, अगर, असगन्ध, सिन्दूर, खसखस, केसर, मनसिल, फिटकरी, कपूर, बिसखपरा, सुर्मा, जस्तका सुर्मा, सिलाजीत, जवासा, चन्दन, लाल चन्दन, गावजुबां, सज्जीखार, अफ़ीम चौंटनी वगैरह हैं. | यक्षधूपः, मृगमदः, जातीफल, अगरु, अश्वगन्धा, सिन्दूरं, खसखस, कुङ्कुम, मन शिला, तुवरी, कर्पूर, पुनर्नवा, स्रोतोञ्जन, रीतिपुष्प शिलाजतु, यवासः, मलयजः, पत्राङ्गं, गोजिह्वा, सर्जिकाक्षारः, अहिफेनं गुञ्जेत्यादीनि सन्ति. |

## औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| इसी सिलसिले में तोल भी सुनो. | प्रसङ्गवशात् मानमपि शृणु. |
| ६४ तोलों का एक प्रस्थ या सेर. | तोलकानां चतुःषष्ठ्यैकः प्रस्थः सेटको वा. |
| १६ तोलों का एक कुड़व या पावसेर. | षोडशतोलकानामेकः कुडव [पावसेर]. |
| ४ तोलों का एक पल. | चतुर्णां तोलकानामेकः पलः. |
| तोले का चौथाहिस्सा टंक होता है. | कर्षस्य चतुर्थांशष्टङ्कः स्यात्. |
| १ तोले का एककर्ष होता है. | एकस्य तोलकस्य एकः कर्षः स्यात्. |
| ३२ तोलोंका एक शरावक होता है. | द्वात्रिंशत्तोलकानामेकं शरावकम्. |
| १०० पलों की एक तुला होती है. | पलानां शतस्यैका तुला स्यात्. |
| २० तुला का एक भार होता है. | तुलाया विंशतेरेको भारः. |
| ८ चावलोंकी एक रत्ती होती है. | अष्टाक्षतानामेका रक्तिका भवति. |
| ८ रत्तियोंका एक मासा. | अष्टरक्तिकानां (गुञ्जानां) एको माषः. |
| १२ मासों का एक तोला, पांच तोलोंकी एक छटांक, सोलह छटांकों का एक सेर, ४० सेर का एक मन. | द्वादशमाषानामेकस्तोलकः, पञ्चतोलकानामेकश्छटकः, षोडशछटकानामेकस्सेटकः, चत्वारिंशत्सेटकानामेको मणः. |
| यह आजकल की तोल है. | एतत्त्वाधुनिकम्मानम्. |
| उपधातु भी दवाओं में इस्तेमाल की जाती है. | उपधातवोऽपि औषधिषु प्रयुज्यन्ते. |
| चान्दी, सोना, पीतल, तामा, लोहा काँसा, सीसा, पारा, भुकभुक, तूतिया, गन्धक, हरताल वगैरह जलाकर इनकी खाक मुख्तलिफ़ रोगों में हकीम काम में लाते हैं. | रजतं, रुक्मं, पित्तलं, ताम्रं, लोहं कांस्यं, सीसं, सूतं, अभ्रकं, तुत्थं, गन्धकं, पिञ्जरमित्यादीन्, दग्ध्वैतेषां भस्म विविधेषु गदेषु प्रयुञ्जन्ति वैद्याः. |
| यह पुरुष अफ़ारे से पीड़ित है इसे हकीम को दिखलाओ. | आनाहेन पीडितोऽयञ्जन एनं भिषजं प्रदर्शय. |

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| जस्त का सुर्मा आंखों के लिये बड़ा लाभ दायक होता है. | रीतिपुष्पमाक्षिभ्यां महदुपयोगि भवति. |
| लघूगूर शिलाजीत खाता है इसी सबब बहुत दूर कूदजाता है और जो अपनी चाहीहुई जगह को पाने में नाक़ाबिल होता है तो पहिली ही जगह पर फिर लौट आता है यह सुना है. | दीर्घलाङ्गूलः शिलाजत्वत्ति अत एव स महदन्तरमुत्प्लवते यद्यशक्तोऽभि-दिष्टस्थानमधिगन्तुं तर्हि पूर्वस्थान एव पुनरावर्तते इति श्रुतं. |
| शहद की मक्खी फूलों से शहद बटोरती है. | सरघाः पुष्पेभ्यो मधु सञ्चिन्वन्ति. |

## बीसवां अध्याय—विंशोऽध्यायः।

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| भाग्यवान् | सुकृती (पुं०) पुण्यवान्, धन्यः | दाता | दानशौण्डः, वदान्यः. |
| फ़ैय्याज़ उदार | महेच्छः, महाशयः. | खुशदिल | हर्षमाणः, प्रमनाः (पुं०) हृष्टमानसः. |
| साफ़दिल | हृदयालुः, सुहृदयः, महोत्साहः, महोद्यमः. | व्याकुल-चित्त | विमनाः, दुर्मनाः. |
| | | उत्कण्ठित | उत्कः, उन्मनाः. |
| प्रवीण होशियार | निपुणः, अभिज्ञः, विज्ञः, निष्णातः. | सीधा | दक्षिणः, सरलः. |
| | | योग्य | समर्थः, क्षमः, शक्तः. |
| फ़िकरमन्द | सांशयिकः, संशयापन्नमानसः. | मशहूर | प्रतीतः, प्रथितः, ख्यातः, विश्रुतः. |

## विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| धनी | इभ्यः, आढ्यः, धनवान्, सधनः. | बहरावा | दीर्घसूत्री—त्रः, विलम्बी, मन्दः, मन्थरः. |
| गरीब | निर्धनः, दरिद्रः, दीनः. | गञ्जा | खल्वाटः. |
| मालिक | नायकः, पतिः, अधिपतिः, प्रभुः. | कुबड़ा | कुब्जः, न्युब्जः. |
| दयावान् | दयालुः, कृपालुः, कारुणिकः | नकटा | विग्रः, विखुः, विनासिकः, |
| स्वाधीन | स्वतन्त्रः, अपावृतः. | बौना | खर्वः, ह्रस्वः, वामनः. |
| पराधीन | परतन्त्रः, परायत्तः. | चपटी-ना कवाला | अवटीटः, नतनासिकः. |
| आधीन | अधीनः, आयत्तः. | लोभी | गृध्नुः, लुब्धः, अभिलाषुकः. |
| अन्धा | अन्धः, नेत्रविकलः, अदृक्. | अति लोभी | लोलुपः, लोलुभः. |
| बहरा | बधिरः, श्रोत्रविकलः, एडः. | ढीठ | धृष्टः, अविनीतः, समुद्धतः. |
| काना | वलिरः, केकरः, काणः. | बातहजीब | सौम्यः, प्रश्रितः, सुशीलः, सुविनीतः. |
| लूला लंगड़ा | पङ्गुः | मतवाला | मत्तः, शौण्डः, क्षीबः. |
| हकलागूंगा | अवाक्, मूकः. | कामी | कामुकः कम्रः, कमनः कामयिता. |
| आलसी | मन्दः, अलसः. | वश में रहने वाला | वश्यः, प्रणेयः. |
| भूखा | बुभुक्षितः, क्षुधार्तः, क्षुधितः, बुभुक्षुः. | नम्रतायुक्त | निभृतः, प्रश्रितः. |
| प्यासा | पिपासितः, पिपासार्तः, पिपासुः. | शरमिन्दा | सलज्जः, सव्रीडः, सत्रपः, लज्जालुः. |
| पिटमरू | आत्मम्भरिः. | आस्तिक (श्रद्धावान) | श्रद्धालुः, आस्तिक्यबुद्धिमान्. |
| खाने वाला | अद्मरः, भक्षकः, घस्मरः. | घबड़ाया हुआ | अधीरः, कातरः. |
| बहादुर | शूरः, वीरः. | गुस्सेवर | क्रोधी (पुं०) कोपी, क्रोधनः अमर्षणः. |
| डरपोक | त्रस्तः, भीरुकः, भीतः. | | |
| दगाबाज | शठः, धूर्तः, कितवः. | | |
| लुटेरा | लुण्टाकः | | |

## विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| जागनेवाला | जागरूकः. |
| सोनेवाला | निद्रालुः, शयालुः, सुप्तः, शयितः. |
| विमुख | पराङ्मुखः, पराचीनः. |
| बहुत बोलने वाला | वावदूकः, अतिवक्ता. |
| निन्द्यवचन बोलनेवाला | वाचालः, वाचाटः. |
| अंडबंड बकनेवाला | मुखरः दुर्मुखः अबद्धमुखः. |
| अतिमूढ़ | अज्ञः, जड़ः. |
| चुपचाप | तूष्णींशीलः, तूष्णीकः. |
| नंगा | नग्नः, अवासाः (पुं०) दिगम्बरः. |
| ठगा हुआ | वञ्चितः, विप्रलब्धः. |
| ठग | धूर्तः, वञ्चकः, प्रतारकः. |
| चुगल | पिशुनः, दुर्जनः, खलः. |
| मंगता | मार्गणः, याचकः, अर्थी (पु०) |
| घमंडी | अहंयुः, अहङ्कारवान्. |
| मनोहर | सुन्दरम्, रम्यम्, रुचिरम्, मनोज्ञम्, मञ्जुलम्. |
| कठोर | नृशंसः, क्रूरः. |

वस्तुविशेषणानि।

| | |
|---|---|
| दिलचस्प | सुन्दरम्, रुचिरम्, चारु, मनोरमम्. |

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| दिलपसन्द | अभीष्टम्, अभीप्सितम्, हृद्यम, प्रियम्. |
| खराब | निकृष्टः, प्रतिकृष्टः. |
| नीच | अधमः, कुत्सितः, अवद्यः, गर्ह्यः. |
| मैला | मलीमसम्, कच्चरम्, मलिनम्. |
| पवित्र | पूतम्, पवित्रम, मेध्यम. |
| रीता | शून्यम, रिक्तकम, तुच्छम्. |
| प्रधान | प्रधानम्, प्रमुखः, उत्तमः, वरेण्यः, वर्यः. |
| मामूली | अप्राग्रथम्. उपसर्जनम्. |
| बड़ा | पृथु (न०) विशालम्, बृहत्, महत्, विपुलम्. |
| मोटा | पीनम्, पीवरम्, पीवन्(न०) |
| थोड़ा | स्तोकः, अल्पः, क्षुल्लकः. |
| सूक्ष्म | सूक्ष्मम्, श्लक्ष्णम्, कृशम्, तनु, अणुः. |
| बहुत | प्रचुरम्, प्रभूतम्, अदभ्रम्, बहुलम्. |
| सब | विश्वम्, कृत्स्नम्, समस्तम्, अखिलम्, पूर्णम्. |
| गाढ़ा घना | घनम्, निरन्तरम्, सान्द्रम्. |
| पासका | समीपः, आसन्नः, निकटः, अभ्यासः-शः, उपकण्ठः, अन्तिकः. |

## विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| बहुत पास का | नेदिष्टम्, अन्तिकतमम्. | नया | प्रत्यग्रः, अभिनवः, नव्यः, नवः, नूतनः. |
| दूर | दूरम्, विप्रकृष्टम्. | मुलायम | कोमलम्, मृदुलम्, मृदु. |
| बहुत दूर | दवीयः, दविष्टम्, सुदूरम्. | फिजूल | व्यर्थम्, निरर्थकम्, मोघम्. |
| दीर्घ, चौड़ा | दीर्घम्, आयतम्. | साफ़ | स्पष्टम्, स्फुटम्, प्रव्यक्तम्, स्वच्छम्, निर्मलम्. |
| गोल | वर्तुलम्, निस्तलम्, वृत्तम्. | | |
| ऊंचा | उच्चः, प्रांशुः, उन्नतः, तुङ्गः. | उलटा | प्रसव्यम्, प्रतिकूलम्, अपसव्यम्. |
| छोटा | वामनः, खर्वः, ह्रस्वः. | | |
| टेढ़ा | अरालम्, वृजिनम्, जिह्मम्, कुटिलम्, वक्रम्. | सस्ता | अल्पार्घः, अल्पमूल्यः, सुलभः |
| | | मंहगा | महर्घः, दुर्लभः. |
| नित्य | शाश्वतः, ध्रुवः, सनातनः. | मारना पीटना | प्रहरति. |
| स्थिर | स्थास्नुः, स्थिरतरः. | | |
| कड़ा, कठिन | कठिनम्, क्रूरम्, निष्ठुरम्, दृढम्, कर्कशः. | मांगना | प्रार्थयते, अभ्यर्थयते, याचते |
| | | छलकाना-गिराना | अधः क्षिपति, अवपातयति. |
| पुराना | पुराणम्, प्रतनम्, प्रत्नम्, पुरातनम्, चिरन्तनम्. | ढूंढना | अन्विष्यति, मृगयते, निरूपयति, विचिनोति. |

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| सम्पूर्ण शास्त्रों में प्रवीण महर्षि वशिष्ठ अतिदानी परम पुन्यात्मा, उदार, साफ़ दिल, भक्तवत्सल श्री रामजी को दुश्मन की विजय रूप आशीर्वाद देतेहुए. | अखिलशास्त्रप्रवीणो महर्षिर्वशिष्ठः वदान्याय परमसुकृतिने, महेच्छाय, भक्तवत्सलाय श्रीरामाय शत्रुविजयात्मिकामाशिषं ददौ. |
| मैंने गोविन्द को हमेशा खुशदिल और सब कामों में समर्थ देखा. | मया गोविन्दः सदैव हृष्टमानसः सर्वकार्येषु क्षमश्च दृष्टः. |

## विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन–विशेषणशब्दाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| यह आदमी भूखा और प्यासा है इसी से घबड़ाया हुआ दिखाई पड़ता है. | बुभुक्षितः पिपासितश्चायं जनः अत एव विमना इव लक्ष्यते. |
| आजकल के बहुत से पिटभरू लोभी ख़ैरात को फ़िज़ूल मानते हैं. | आधुनिका बहव उदरम्भरयो लोलुपाः पुण्यं व्यर्थं मन्यन्ते. |
| यह तो पापियों की बात है. | एषातु पापघस्मराणां वार्ता. |
| मेरे काम की सिद्धि होगी या नहीं यों फ़िक्रमन्द हूं. | मत्कार्यसिद्धिर्भविष्यति नवेति सांशयिको ऽहम्. |
| मैं आपके दर्शन के लिये बड़ा उत्कण्ठित था अब ईश्वर ने मेरी उम्मेद पूरी की. | अहमतीवोन्मना आसं श्रीमतां दर्शनायाधुनेश्वरेण ममाशा पूरिता. |
| यह मशहूर धनवान् बड़ा लोभी सुना जाता है. | विश्रुतो धनवानयं महद्गृध्नु श्रूयते. |
| रहीम मालिक लोग ग़रीबों पर भी दया करते हैं. | दयालवः प्रभवो निर्धनेष्वपि दयां कुर्वन्ति |
| मैं तो खुद मुख्तार हूं और तुम पराधीन हो इतनाही तुम्हारे मेरे में फ़र्क है. | अहन्तु स्वतन्त्रस्त्वञ्च परायत्त एतावानेव हि त्वयि मयि च भेदः. |
| वहराधा और आलसी मत बनो. | दीर्घसूत्र्यलसश्च मा भव. |
| गूंगे भी कलकत्ता राजधानी में पढ़ाये जाते हैं. | मूका अपि कालिकातायां राजधान्यां पाठ्यन्ते (मूकान् पाठयन्ति वा). |
| यह बड़ा भला आदमी है इसको मत ठगो | अतीव सज्जनोऽयञ्जनो मैनं प्रतारय. |
| वातहजीव तालियइल्म ही विद्या सीखते हैं नाकि बदतहज़ीब. | प्रश्रिता विद्यार्थिन एव विद्यां शिक्षन्ते न धृष्टाः. |
| श्रद्धालुही ज्ञान प्राप्त करता है दूसरा नहीं. | श्रद्धालुरेव ज्ञानं लभते नेतरः. |
| शराबी और कामी यह आदमी रण्डी के पास बैठा है. | मत्तो कामुकश्चायजनो वेश्यासमीपे तिष्ठति. |

## विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन–विशेषणशब्दाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| यह स्त्री भलेमानस और घबड़ाई हुई है इसको तसल्ली दो. | अधृष्टा धीरा चेयं स्त्री एनां विश्वासय. |
| डरपोकही संग्राम से भागते हैं नकि बहादुर. | भीरुका एव संग्रामात्पलायन्ते न शूराः. |
| देवदत्त का बेटा शरमीला और सतोगुणी है. | देवदत्तस्य पुत्रो ह्रीणो ऽक्रोधनश्च. |
| तुम्हारे घरमें कौन जागने वाला और कौन ज्यादह सोनेवाला है. | तव गृहे को जागरूकः कश्चाऽतीव निद्रालुः. |
| लज्जाराम अपने मा बाप से बरखिलाफ निन्द्य वचन बोलनेवाला और कठोर है इसकी सङ्गति न करो. | लज्जारामः पितृभ्यां पराङ्मुखो वाचालो नृशंसश्चास्ति मास्य सङ्गतिं कुरु. |
| मर्द या औरत कोई भी जल में नंगा न नहाय. | पुरुषो ऽथवा स्त्री न कोपि नग्नो जले स्नायात्. |
| ठग ठगे हुओं को भी फिर ठगते हैं. | धूर्ता विप्रलब्धानपि पुनर्वञ्चयन्ति. |
| यह आदमी चुगल और बंड बंड बकने वाला है इसका यकीन न करो. | पिशुनो ऽवद्यमुखश्चायञ्जनः मैनं विश्वसिहि. |
| गोविन्दरामशर्मा ज्यादह बोलनेवाला और होशियार होनेके कारण सभा के योग्य है. | सभायोग्यो गोविन्दरामशर्मा वावदूकत्वाद्विष्णात्वाच्च. |
| घमंडी और मँगता सत्कार नहीं किये जाते. | अहंयवो मार्गणाश्च न सत्क्रियन्ते. |
| यह बौना चपटी नाकवाला है इस पर न हँसो. | अवटीटोऽयं वामनो मैनमुपहस. |
| नकटे, बहरे, कुबड़े, लूले, काणे, गंजे और अन्धों को देखकर कभी न हँसे. | विघ्रान्, बधिरान्, कुब्जान्, खञ्जान्, काणान् खल्वाटानन्धांश्च दृष्ट्वा न कदाप्युपहसेत्. |

## विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| यह खुशनुमा ज़ेवर है इसे अपनी औरत को पहिराओ. | रम्यमाभूषणमिदमेतत्स्वस्त्रियं परिधापय. |
| चुगल का कोई भी यकीन नहीं करता. | पिशुनाय कोऽपि प्रत्येति. |
| लुटेरों ने अलीगढ़ से लौटते वक्त मेरा रास्ता रोकलिया. | लुण्टाका अलीगढात्परिवर्तनकाले मम मार्गमवारुन्धन्. |
| रामके दूत हनुमान् रामके आने का अभीष्ट वृत्तान्त भरत के पास आकर सुनाते हुए. | रामदूतो हनुमान् रामागमनस्याभीप्सितं वृत्तं भरतान्तिक आगत्य श्रावयामास. |
| तू सूना घर छोड़ कहां गया था? | त्वं शून्यं गृहं मुक्त्वा कुत्र गतः? |
| कहीं भी नहीं सिर्फ पानी लाने को. | न कुत्रापि केवलं जलमानेतुम्. |
| यह आदमी नीच है इसकी आदत बड़ी खराब है और दिल भी बहुत मैला है. | अधमोऽयञ्जनोऽस्य प्रकृतिरतीव निकृष्टा मानसमप्यतीव मलीमसमस्ति. |
| देखकर पाँव रक्खे, छानकर जलपीये सत्य वचन बोले और मन साफ़ रक्खे. | दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतम्पिबेज्जलम्। सत्यपूतम्वदेद्वाक्यं मनःपूतं समाचरेत्. |
| सब व्याकरणों में सिद्धान्तकौमुदी नाम व्याकरण मुख्य है. | अखिलेषु व्याकरणेषु प्रधानमिदं व्याकरणं सिद्धान्तकौमुदीनाम. |
| आज गाढ़े बादल बहुत जल बर्षावेंगे. | अद्य सान्द्रा मेघा प्रभूतं वारि मोक्ष्यन्ति. |
| दर्वाज़े पर एक भिखारी है उसको थोड़ा खानादो, उसके पास एक लक्ष्मी की सुन्दर मूर्ति है उसे लेलो. | द्वार्य्येको भिक्षुको वर्तते तं स्तोकम्भोजनं प्रयच्छ, तत्समीपे चैका मनोरमा लक्ष्म्याः मूर्तिर्वर्तते तां गृहाण. |
| इस राजा की बड़ी कीर्ति, मोटा शरीर गोल मुँह चौड़े नेत्र ऊँचे कन्धे हैं. | अस्य राज्ञो विपुलं यशः पीनं शरीरं वर्तुलं वक्रं, आयते नेत्रे उन्नतावंसौ स्तः. |
| इसका थोड़ा हाल भी कहो. | अस्य सूक्ष्मं वृत्तमपि वर्णय. |

## विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन--विशेषणशब्दाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| इसकी जगह से मेरी जगह दूर है गोविन्द की ज्यादह दूर है और रामसिंह की बहुतही ज्यादह दूर है. | अस्य स्थानान्मम स्थानं दूरं, गोविन्दस्य दवीयो, रामसिंहस्य दविष्टमस्ति. |
| जीव दो तरह के हैं स्थावर और जङ्गम. | जीवा द्विप्रकारा स्थास्नवश्चरिष्णवश्च. |
| इस सवाल की तरकीब सहल है और उसकी टेढ़ी है. | अस्य प्रश्नस्य प्रक्रिया ऋज्वी तस्य च वक्रा वर्तते. |
| महर्बानी कर अपना पुराना और, नया हाल साफ कहिये. | कृपया स्वपुराणमभिनवञ्च वृत्तं स्पष्टं कथयन्तु भवन्तः. |
| पहिले तो ब्राह्मणों की वाणी सफल थी आजकल तो उलटी होती है. | पूर्वदा तु विप्राणां वाचोऽमोघा आसन्निदानीन्तु प्रतिकूला भवन्ति. |
| तप का प्रभाव नष्ट होगया यही कारण है. | तपःप्रभावो नष्ट इत्येव हेतुः. |
| बैंगन मुलायम पथ्य होते हैं और काशी फल मुलायम जहर होता है. | वृन्ताकं कोमलं पथ्यं कूष्माण्ड कोमलं विषम्. |
| क्या यह भैंस खसर ( बांझ ) है. | किमेषा महिषी वशा. |
| इसका थन बड़ा है इसको खूँटे में बाँधो. | अस्या ऊधस्तु विपुलमेनां शिवके बधान. |
| गुरुओं की पूजा, साँझ और दिन में सोना और स्त्री प्रसंग, खाने के आदि और अखीर में आचमन और एकादशी को अन्नत्याग यह सदा का कायदा है. | गुरूणां सपर्या, सायंकालेह्नि च स्वापो ग्राम्यधर्मनिषेधश्च भोजनादावन्ते चोपस्पर्श एकादश्यामन्नत्याग एष नियमः सनातनः. |
| सिपाही (अहलाद) लोग उस ठग को बेतों से पीटते हैं. | राजपुरुषा तं धूर्तं वेत्रैः प्रहरन्ति. |
| गरीब लोग धनवानों से नाज मांगते हैं. | दरिद्रा धनिकानन्नं याचन्ते. |

## विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| इस घोषी की लड़की ने दूध गिरादिया. | एषा ऽऽभीरकन्या दुग्धमध्यक्षिपत्. |
| देवदत्त उदासीन है न उसका किसी के साथ विरोध है न मित्रता. | उदासीनो देवदत्तः न तस्य केनापि सह विरोधो न मैत्री. |
| जो हुआ सो हुआ इसमें पछतावा क्या. | यज्जातं तज्जातं कोऽत्र पश्चात्तापः. |
| दुनियाँ के पाखण्ड और तमाशों को छोड़ कर ईश्वर की शरण में जाऊं नहीं तो नरक में गिरना होगा. | सांसारिकान्दम्भान्कौतूहलाँश्च हित्वा ईश्वरशरणे यायां नो चेन्निरयपातो भविष्यति. |
| इस अफुआ पहेली और अकाल की खबर को सुनकर मेरे देह में शरीर-कम्पा होती है. | इमां किम्वदन्तीं प्रहेलिकां दुर्भिक्षवृत्तान्तञ्च श्रुत्वा मम शरीरे वेपथुर्जायते. |
| तू कहां से आया है तेरे कपड़े पसीनों से बहुत तर दिखाई देते हैं. | कुत आगतोऽसि तव वस्त्राणि स्वेदैरतीवार्द्रीभूतानि दृश्यन्ते. |
| आज यहां ढोल बजते हैं यह क्या उत्सव है न मालूम. | अत्राद्य पटहा वाद्यन्ते कोऽयमुत्सवः न जाने. |

## इकीसवां अध्याय—एकविंशतितमोऽध्यायः।

### व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः।

| अंग्रेजी। | संस्कृत। | अंग्रेजी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| Vowel | = स्वरः, अच् | Lengthened | = त्रिमात्रिकः. |
| Consonant | = व्यञ्जनम्, हल्. | Orthography | = वर्णविचारः. |
| Short Vowel | = लघुः, ह्रस्वः, एकमात्रिकः. | Letter | = वर्णः, अक्षरम्. |
| | | Alphabet | = वर्णमाला. |
| Long Vowel | = दीर्घः, गुरु, द्विमात्रिकः. | Word | = शब्दः. |
| | | Noun | = संज्ञा, नाम. |

## व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

| अंग्रेजी । | संस्कृत । | अंग्रेजी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| Proper noun | = व्यक्तिवाचकः. | 8 Interjection | = विस्मापनादिद्योधकमव्ययम्: |
| Common Do | = जातिवाचकः. | Gender | = लिङ्गम्. |
| Abstract | = भाववाचकः. | M. Do. | = पुंलिङ्गम्. |
| Collective | = समूहवाचकः. | F. Do. | = स्त्रीलिङ्गम्. |
| Material | = पदार्थवाचकः. | N. Do. | = क्लीबम्, नपुंसकम्, |
| Adjective | = गुणवाचकः. | Com. Do. | = संयुक्तलिङ्गम् उभयलिङ्गम् |
| Primitive word | रूढिसंज्ञा. | Number | = वचनम्. |
| Derivative | = यौगिकः. | Singular | = एकवचनम्. |
| Compound word | = योगरूढिः. | Dual | = द्विवचनम्. |
| Conjunction of letters | = सन्धिः, संहिता. | Plural | = बहुवचनम्. |
| Do. vowels | = स्वर(अच्)सन्धिः. | Case | = कारकम्, विभक्तिः. |
| Do. consonant | = हल्(व्यञ्जन)सन्धि. | Nominative | = कर्ता. |
| Do. visarga | = विसर्गसन्धिः. | Accusative | = कर्म. |
| Etymology | = शब्दविचारः शब्दसाधनम्. | Instrumental | = करणम्. |
| Inflection or declension | = शब्दरूपम्. | Dative | = सम्प्रदानम्. |
| Derivative | = व्युत्पत्तिः. | Ablative | = अपादानम्. |
| Part of speech | = शब्दभेदः. | Genetive | = सम्बन्धः. |
| 1 Noun | = संज्ञा, विशेष्यः. | Locative | = अधिकरणम्. |
| 2 Adjective | = विशेषणः, गुणवाचकः. | Vocative | = सम्बोधनम्. |
| 3 Pronoun | = सर्वनाम. | Parsing | = पदसाधनम्, पदच्छेदः. |
| 4 Verb | = क्रिया. | Person | = पुरुषः. |
| 5 Adverb | = क्रियाविशेषणः. | 1 st ,, | = उत्तमः (अहम्, आवाम्, वयम्). |
| 6 Preposition | = उपसर्गः, अव्ययम्. | 2 nd ,, | = मध्यमः (त्वम्, युवाम्, यूयम्). |
| 7 Conjunction | = समुच्चायकम् अव्ययम्. | | |

## व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन--व्याकरणपरिभाषाः ।

| अंग्रेजी । | संस्कृत । | अंग्रेजी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| 3rd Person | = अन्यपुरुषः (सः, तौ, ते इत्यादयः). | 3rd Preterite | = लुङ्(सामान्यभूतः) |
| Transative | = सकर्मका क्रिया. | Potential | = विधिलिङ् |
| Intransative | = अकर्मका क्रिया. | Benedictive | = आशीर्लिङ् |
| Verb having two objects | = द्विकर्मकाःक्रियाः. | 1st Future | = लुट् (आसन्न भविष्यत्) |
| Causative | = प्रेरणार्थकाक्रिया, णिजन्ताः. | 2nd Do. | = लृट् (सामान्य भविष्यत्) |
| Desederative | = इच्छार्थकाः, सन्नन्ताः. | Conditional | = लृङ् (हेतुहेतुमद्भविष्यत्) |
| Frequentative verbs | = यङन्ताः, पौनःपुन्यद्योतकाःक्रियाः. | Imperative | = लोट् ( आज्ञा ). |
| Nominal verbs | = नामधातवः. | Direct | = स्पष्टोक्तिः. |
| Verbal affixes | = कृदन्तःकृत्प्रत्ययाः. | Indirect | = वक्रोक्तिः. |
| Nominal affixes | = तद्धितप्रत्ययाः. | Explanation | = व्याख्या, विवृतिः, विवरणम् |
| Root | = धातुः. | Abbreviation | = संक्षिप्तरूपम्. |
| Conjugation | = धातुरूपाणि. | Example | = दृष्टान्तः उदाहरणः. |
| Voice | = वाच्यः. | Pronounciation | उच्चारणः. |
| Active | = कर्तृवाच्यः. | Synonyms | = पर्य्यायः समानार्थवाची. |
| Passive | = कर्म " | Autonyms | = विपरीतार्थवाची. |
| Intransative Passive | = भाव " | Homonyms | = द्व्यर्थकः. |
| Tense | = कालः. | Compound | = समासः. |
| Present tense | = वर्तमानः, लट्. | Indeclinable *compound* | = अव्ययीभावः. |
| Past " | = भूतः. | Subordinate compound | = तत्पुरुषः २ |
| Future " | = भविष्यत्. | Relative compound | = बहुव्रीहिः ३ |
| 1st Preterite | = लङ् (आसन्नभूतः) | | |
| 2nd Do. | = लिट् ( पूर्णभूतः ) | | |

## व्याकरण के संज्ञी शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

| अंग्रेजी । | संस्कृत । | अंग्रेजी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| Appositional compound | = कर्मधारयः ४ | Prosody | = छन्दोनिरूपणम्. |
| Numeral compound | = द्विगुः ५, | Prose | = गद्यम्. |
| Copulative compound | = द्वन्द्वः ६ | Verse, poetry | = पद्यम्, |
| Syntax | = वाक्यविचारः. | Metre, stanza | = वृत्त.,छन्दोजातिः |
| Prose order | = अन्वयः. | Feet | = चरणाः, पादः. |
| Analysis | = वाक्यविभागः. | Poem | = काव्यम् |
| Sentence | = वाक्यः, पदः. | Short syllable | = लघुः. |
| Figures of speech | = अलङ्कारः. | Long Do | = गुरुः. |
| Do. words | = शब्दालङ्कारः. | SSS | = मगणः |
| Do. thought | = अर्थालङ्कारः. | III | = नगणः |
| Simile | = दृष्टान्तः, उपमालङ्कारः. | SII | = भगणः |
| Metaphor | = रूपकालङ्कारः. | ISS | = यगणः |
| Synechdochee | = उपलक्षणः. | ISI | = जगणः |
| Hyperbole | = अत्युक्त्यलङ्कारः. | SIS | = रगणः |
| Analogy | = सादृश्यालङ्कारः. | IIS | = सगणः |
| Anicthesis | = विरोधाभासः. | SSI | = तगणः |
| Allegory | = उद्देशः ! | , | = विरामः |
| Irony | = व्यङ्गोक्तिः. | ; | = द्विविरामः |
| Personification | पुरुषभावारोपणम्. | : | = त्रिविरामः |
| | | . | = पूर्णविरामः |
| | | ? | = प्रश्नचिह्नम् |
| | | ! | = सम्बोधनचिह्नम् |
| | | ( ) | = कोष्ठः |
| | | ' ' | = परोक्तिचिन्हम् |



## व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| इस अध्याय में संस्कृत के व्याकरण सारको अंग्रेजी भाषाके पढ़नेवाले विद्यार्थियों के उपकारार्थ प्रायः कुछ लिखता हूं. | अस्मिन्नध्याये व्याकरणसारमाङ्गलभाषाध्येतॄणां छात्राणामुपकारार्थम्प्रायोऽनुसरामि. |
| संस्कृत वैयाकरणतो अच्छी तरह जानतेही हैं. | संस्कृतवैयाकरणास्तु समीचीनतया जानन्त्येव. |
| वर्णमाला में कितने अक्षर हैं ? | वर्णमालायांकत्यक्षराणि सन्ति. |
| अकार से लेकर चौदहस्वर, ककार से ले तेतीस व्यञ्जन इस प्रकार मिलाकर ४७ अक्षर हैं. | अकारादयः चतुर्दशस्वराः ककारादयस्त्रयस्त्रिंशद्व्यञ्जनानीत्येवं पिण्डीकृत्य सप्तचत्वारिंशद्वर्णाः. |
| स्वर, ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेद से तीन प्रकारके और व्यञ्जन भी स्पर्श, अन्तस्थ और ऊष्म भेद से तीन प्रकार के हैं. | स्वरा ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदेन त्रिधाः, व्यञ्जनान्यपि स्पर्शान्तस्थोष्मभेदेन त्रिविधानि. |
| शब्द दो प्रकार का है सार्थक और निरर्थक. | शब्दो द्विविधः सार्थको निरर्थकश्च. |
| सार्थक शब्द संज्ञा, क्रिया, अव्यय, भेद से तीन प्रकार का है. | सार्थकाः शब्दाः संज्ञाक्रियाऽव्ययभेदेन त्रिधाः. |
| चीज़का नाम मात्र बतानेवाला शब्द संज्ञा कहलाता है. | वस्तुनो नाममात्रप्रवक्ता शब्दः संज्ञेत्यभिधीयते. |
| वह छः प्रकार की है जाति वाचक जैसे आदमी; व्यक्तिवाचक जैसे कृष्ण भाव वाचक जैसे लघुता; समूह वाचक जैसे सेना; पदार्थ वाचिका जैसे जल; गुणवाचिका जैसे सुन्दर. | सा षड्विधा, जातिवाचिका [यथा मनुष्यः], व्यक्तिवाचिका [यथा कृष्णः] भाववाचिका [यथा लघुत्वम्], समूहवाचिका [यथा सेना] पदार्थवाचिका [यथा जलम्], गुणवाचिका [यथासुन्दरः.] |

## व्याकरण के संज्ञी शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

| अंग्रेजी । | संस्कृत । | अंग्रेजी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| Appositional compound | = कर्मधारयः ४ | Prosody | = छन्दोनिरूपणम्. |
| Numeral compound | = द्विगुः ५ | Prose | = गद्यम्. |
| Copulative compound | = द्वन्द्वः ६ | Verse, poetry | = पद्यम्. |
| | | Metre, stanza | = वृत्तः,छन्दोजातिः |
| | | Feet | = चरणः, पादः. |
| Syntax | = वाक्यविचारः. | Poem | = काव्यम् |
| Prose order | = अन्वयः. | Short syllable | = लघुः. |
| Analysis | = वाक्यविभागः. | Long Do | = गुरुः. |
| Sentence | = वाक्यः, पदः. | SSS | = मगणः |
| Figures of speech | = अलङ्कारः. | III | = नगणः |
| | | SII | = भगणः |
| Do. words | = शब्दालङ्कारः. | ISS | = यगणः |
| Do. thought | = अर्थालङ्कारः. | ISI | = जगणः |
| Simile | = दृष्टान्तः, उपमालङ्कारः. | SIS | = रगणः |
| | | IIS | = सगणः |
| Metaphor | = रूपकालङ्कारः. | SSI | = तगणः |
| Synecdoche | = उपलक्षणः. | , | = विरामः |
| Hyperbole | = अत्युक्त्यलङ्कारः. | ; | = द्विविरामः |
| Analogy | = सादृश्यालङ्कारः. | : | = त्रिविरामः |
| Antithesis | = विरोधाभासः. | . | = पूर्णविरामः |
| Allegory | = उद्देशः ? | ? | = प्रश्नचिह्नम् |
| Irony | = व्यङ्गोक्तिः. | ! | = सम्बोधनचिह्नम् |
| Personification | पुरुषभावारोपणम्. | ( ) | = कोष्ठः |
| | | ' ' | = परोक्तिचिन्हम् |



## व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| इस अध्याय में संस्कृत के व्याकरण सारको अंग्रेजी भाषाके पढ़नेवाले विद्यार्थियों के उपकारार्थ प्रायः कुछ लिखता हूं. | अस्मिन्नध्याये व्याकरणसारमाङ्गलभाषाध्येतॄणां छात्राणामुपकारार्थम्प्रायोऽनुसरामि. |
| संस्कृत वैयाकरणतो अच्छी तरह जानतेही हैं. | संस्कृतवैयाकरणास्तु समीचीनतया जानन्त्येव. |
| वर्णमाला में कितने अक्षर हैं ? | वर्णमालायांकत्यक्षराणि सन्ति. |
| अकार से लेकर चौदहस्वर, ककार से ले तेतीस व्यञ्जन इस प्रकार मिलाकर ४७ अक्षर हैं. | अकारादयः चतुर्दशस्वराः ककारादयस्त्रयस्त्रिंशद्व्यञ्जनानीत्येवं पिण्डीकृत्य सप्तचत्वारिंशद्वर्णाः. |
| स्वर, ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेद से तीन प्रकारके और व्यञ्जन भी स्पर्श, अन्तस्थ और ऊष्म भेद से तीन प्रकार के हैं. | स्वरा ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदेन त्रिधाः, व्यञ्जनान्यपि स्पर्शान्तस्थोष्मभेदेन त्रिविधानि. |
| शब्द दो प्रकार का है सार्थक और निरर्थक. | शब्दो द्विविधः सार्थको निरर्थकश्च. |
| सार्थक शब्द संज्ञा, क्रिया, अव्यय, भेद से तीन प्रकार का है. | सार्थकाः शब्दाः संज्ञाक्रियाऽव्ययभेदेन त्रिधाः. |
| चीज़का नाम मात्र बतानेवाला शब्द संज्ञा कहलाता है. | वस्तुनो नाममात्रप्रवक्ता शब्दः संज्ञेत्यभिधीयते. |
| यह छः प्रकार की है जाति वाचक जैसे आदमी; व्यक्तिवाचक जैसे कृष्ण भाव वाचक जैसे लघुता; समूह वाचक जैसे सेना; पदार्थ वाचिका जैसे जल; गुणवाचिका जैसे सुन्दर. | सा षड्विधा, जातिवाचिका [ यथा मनुष्यः],व्यक्तिवाचिका[यथा कृष्णः] भाववाचिका [यथालघुत्वम्], समूहवाचिका [यथा सेना] पदार्थवाचिका [यथा जलम्], गुणवाचिका [यथासुन्दरः.] |

## व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| फिर वह रूढि, यौगिक, योगरूढि भेद से तीन प्रकारकी है. | पुनः सा रूढियौगिकयोगरूढिभेदेन त्रिधा. |
| रूढि जैसे (घड़ा); यौगिक जैसे (पाचक) योगरूढि जैसे (पङ्कज). | रूढिर्यथा [ घटः ] यौगिको यथा [पाचक.] योगरूढिर्यथा (पङ्कजः). |
| स्वर, व्यञ्जन और विसर्ग भेद से सन्धि तीन प्रकार की है. * | अज्हल्विसर्गभेदेन संहिता*स्त्रिधा. |
| स्वर संहिता जैसे सुधी+उपास्य=सुध्युपास्यः. | अच्संहिता यथा सुधी+उपास्यः=सुध्युपास्यः. |
| व्यञ्जन सन्धि जैसे काइयां मरणात्+मुक्तिः=काइयां मरणान्मुक्तिः. | हल्संहिता यथा काश्यांमरणात्+मुक्तिः=मरणान्मुक्तिः. |
| विसर्ग सन्धि जैसे देवः+याति=देवोयाति. | विसर्गसंहिता यथा देवः+याति=देवोयाति. |
| जहां सन्धि का निमित्त होने परभी संहिता न हो वह प्रकृति भाव सन्धि कहलाती है जैसे माले + आनय= माले आनय वगैरह. | यत्र सन्धिनिमित्तेऽपि संहिता न स्यात् सा प्रकृतिभावसंहितेत्युच्यते यथा माले+आनय इत्यादि. |
| शब्दों के भेद भी अंग्रेजी में आठ हैं. | शब्दभेदा अपि आङ्गभाषायामष्ट. |
| पहिला भेद संज्ञा है जैसे पेड़, दूसरा विशेषण या गुणवाचक संज्ञा जैसे मनोहर; तीसरा सर्वनाम संज्ञा जैसे आप; चौथा क्रिया जैसे जाता है, पाचवाँ क्रियाविशेषण जैसे भली प्रकार; छठा उपसर्ग वा अव्यय जैसे पास, भी, नहीं वगैरह, सातवाँ | प्रथमो भेदः संज्ञा यथा वृक्षः; द्वितीयो विशेषणः गुणवाचिका संज्ञा वा यथा—मनोहरः; तृतीयःसर्वनामसंज्ञा—यथा—भवान्; चतुर्थः क्रिया—यथा गच्छति, पञ्चमः क्रियाविशेषणः यथा—सुष्ठु प्रकाशते; षष्ठः उपसर्गःअव्ययं वा यथा—उप, |
| * नोट-इनका विशेषवर्णन दूसरे भाग के पहिले तरंग में देखो. | * एषां विशेषवर्णनं द्वितीयभागस्य प्रथमे तरङ्गे पश्यत. |

## व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| जोड़नेवाला या अलग करनेवाला अव्यय जैसे और, या वगैरह; आठवां आश्चर्यादि द्योतक अव्यय जैसे—आः, हा, हहो. | अपि, न इत्यादि; सप्तमः समुच्चायकं पृथक्त्वबोधकश्चाव्ययं यथा च, वा इत्यादि; अष्टमः विस्मापनादिबोधकमव्ययं यथा—आः, हा, हंहो. |
| लिङ्ग तीन प्रकारके हैं पुल्लिंग जैसे मनुष्य स्त्रीलिंग जैसे स्त्री; नपुंसक जैसे मित्र. | लिङ्गं त्रिविधम् पुं० ( यथा नरः ); स्त्री (यथा-नारी) नपुंसकं (यथा मित्रम्). |
| संस्कृत में लिंग व्यवहार प्रत्यय और डिक्सनरी द्वारा जैसा होता है अंग्रेजी में वैसा नहीं. | संस्कृते तु लिङ्गव्यवहारः प्रत्ययकोषादिद्वारा यथा भवति न तु तथाऽङ्ग्ल भाषायाम्. |
| वचन भी तीन तरह का है अंग्रेज़ी में तो दोही तरह का है. | वचनं चापि त्रिविधमाङ्ग्लभाषायान्तु द्विविधमेव. |
| एक वचन जैसे रामः, द्विवचन जैसे रामौ बहुवचन जैसे रामाः. | एकवचनं यथा रामः; द्विवचनं यथा रामौ; बहुवचनं यथा रामाः. |
| कारक (केस) भी अंग्रेजी जबान के माफिक आठ हैं पहिला कर्ता (नामिनेटिव) जैसे राम दूसरा कर्म (अक्जक्टिव) जैसे रामको, तीसरा करण (इस्ट्रूमेन्टल) जैसे रामने; चौथा सम्प्रदान(डटिव) जैसे रामके लिये; पांचवां अपादान (एब्लेटिव) जैसे रामसे, छठा सम्बन्ध (जैनिटिव) जैसे रामका; सातवां अधिकरण [लौकेटिव] जैसे राम में आठवां सम्बोधन [वाकेटिव] जैसे हे राम. | कारकाण्यप्याङ्ग्लभाषानुसारेण अष्ट, प्रथमं कर्ता-यथा रामः; द्वितीयं कर्म यथा रामं; तृतीयं करणम् यथा रामेण; चतुर्थं सम्प्रदानम् यथा रामाय; पञ्चमं अपादानम् यथा रामात्; षष्ठं सम्बन्धकारकम् यथा रामस्य; सप्तममधिकरणम् यथा रामे; अष्टमं सम्बोधनम् यथा हे राम. |

## व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| इस फ़िकरे में रक्खे हुए पदोंका पद साधन [पार्सिंग] करो. | अस्मिन् वाक्ये स्थितानां पदानां पदसाधनं कुरुत. |
| तीन पुरुष [पर्सन] हैं तृतीय या अन्य, दूसरा या मध्यम, पहिला या उत्तम इस प्रकार. | पुरुषास्त्रयः तृतीयोऽन्यो वा, द्वितीयो मध्यमो वा, प्रथम उत्तमो वेति. |
| अकर्मक धातुगण को खुलासा रीति से सुनो. | अकर्मकं धातुगणं संक्षिप्तरीत्या शृणुत. |
| लजाना, रहना या होना, ठहरना, जागना बढ़ना, नष्टहोना, डरना, जीना, मरना, सोना, क्रीड़ा करना, प्रीति करना, दीप्तहोना [जलना शोभित होना] इत्यादिधातुगण अकर्मक कहा है. | लज्जासत्तास्थितिजागरणं वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम्। शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्थं धातुगणं तमकर्मकमाहुः. |
| क्रियाएं तीन प्रकारकी हैं अकर्मक जैसे सोता है, सकर्मक जैसे खाता है द्विकर्मक जैसे मांगता है. | क्रियास्त्रिविधा, अकर्मका यथा स्वपिति, सकर्मका यथा भुङ्क्ते। द्विकर्मका यथा याचते. |
| देवदत्त बेटेको सुलाता है यहां प्रेरणार्थक क्रिया है. | देवदत्तः पुत्रं शाययतीत्यत्र प्रेरणार्थका क्रिया. |
| कृष्णदत्त व्याकरण पढ़ना चाहता है इस वाक्य में इच्छार्थक. | कृष्णदत्तो व्याकरणं पिपठिषतीत्यत्र सन्नन्ता क्रिया. |
| आज जाड़ा बहुतही है और हवा बहुतही चलती है. | अद्य शीतं वरीवर्ति सरीसर्ति समीरणः. |
| यहां दोनों क्रियाही अतिशयार्थ द्योतक हैं. | अत्र क्रिया द्वयमेव पौनःपुन्यद्योतकं. |
| क्यों गधेकी तरह करता है यह नाम धातु है. | किमर्थं "रासभायसे" इति नामधातुः. |

## व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| क्रियाओं में जो प्रत्यय लगाई जाती है वे कृत्प्रत्यय हैं जैसे द्रष्टुम्। शब्दों में जो प्रत्यय लगाई जाती हैं वे तद्धित प्रत्यय होती हैं जैसे राघव. | तिङ्व्यतिरिक्ता, धातुभ्यः कर्त्राद्यर्थे ये प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते ते कृत्प्रत्ययाः* कथ्यन्ते यथा द्रष्टा, द्रष्टुम् शब्देषु ये प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते ते तद्धिताः* प्रत्ययाः यथा राघवः. |
| तिङ् प्रत्ययान्त धातु क्रियापद और सुप् प्रत्ययान्त शब्द संज्ञा पद ये कहलाते हैं. | तिङ्प्रत्ययान्तो धातुः क्रियापदमिति, सुप्प्रत्ययान्तः शब्दः संज्ञा पदमित्यभिधीयते. |
| वाच्य (वपस) भी तीन हैं, कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य. | वाच्या अपि त्रयः कर्तृवाच्यः, कर्मवाच्यः भाववाच्यः. |
| मैं पुस्तक पढ़ता हुं यह कर्तृवाच्य है. | अहं पुस्तकं पठामीति कर्तृवाच्यः. |
| पुस्तक मुझ से पढ़ी जाती है यह कर्म वाच्य हैं. | पुस्तकं मया पठ्यते इति कर्मवाच्यः. |
| मुझ से बैठा जाता है यह भाववाच्य है. | मया स्थीयते एप भाववाच्यः. |
| भाववाच्य तो अकर्मकही क्रिया से बनता है. | भाववाच्यस्तु अकर्मिकयैव क्रियया भवति. |
| काल वा लकार दस हैं— | काला लकारा वा दश. |
| पहिला वर्तमान वा लट्—जैसे भवति (होता है) | प्रथमः वर्तमानो लट् वा यथा भवति. |
| दूसरा अनद्यतनभूत वा लङ् जैसे अभवत्. | द्वितीयः अनद्यतभूतः लङ् वा यथा अभवत्. |
| तीसरा परोक्षभूत वा लिट्—जैसे बभूव. | तृतीयः परोक्षभूतो लिट्वा—बभूव. |
| चौथा विधि वा लिङ्—जैसे भवेत्. | चतुर्थः विधिः लिङ्वा—भवेत्. |
| पांचवां आशीः—लिङ्—जैसे भूयात्. | पञ्चमः आशीः लिङ्वा—भूयात्. |
| छठा अनद्यतनभविष्य वा लुट्—जैसे भविता. | षष्ठः अनद्यतनभविष्यः लुट्वा-भविता. |

## व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| सातवां सामान्यभविष्य या लृट् जैसे भविष्यति. | सप्तमः सामान्यभविष्यः लृट् वा–यथा भविष्यति. |
| आठवां क्रियातिपत्ति या लृङ् जैसे अभविष्यत्. | अष्टमः क्रियातिपत्तिः–लृङ् यथा अभविष्यत्. |
| नवां सामान्यभूत या लुङ् जैसे अभूत्. | नवमः सामान्यभूतः—लुङ्—अभूत्. |
| दशवां आज्ञा या लोट्—जैसे भवतु. | दशमः आज्ञा—लोट्—यथा भवतु. |
| इस श्लोक की व्याख्या करो. | अस्य श्लोकस्य व्याख्यां कुरु. |
| अंग्रेजी ज़बान में बहुत से शब्दों के मुख्तसिर (संक्षिप्त) रूपहोते हैं. | आङ्ग्लभाषायां बहूनां शब्दानां संक्षिप्तरूपाणि भवन्ति. |
| यह शर्मकी बात है कि तुम इस शब्द का उच्चारण भी नहीं करसके. | अस्य शब्दस्योच्चारणमपि कर्तुं न शक्नोषीति वार्तेयं महत्याः लज्जायाः. |
| गूढ़ शब्द का हम मानी और विरुद्धार्थवाची शब्द लिखो. | गूढशब्दस्य पर्यायार्थविपरीतार्थवाचकौ शब्दौ लिखत. |
| समास छः हैं. * | समासाः षट्. * |
| पहिला अव्ययीभाव जैसे उपकूलम्. | प्रथम अव्ययीभावः यथा कूलस्य समीपे उपकूलम्. |
| दूसरा तत्पुरुष ,, राजपुत्रः. | द्वितीयः तत्पुरुषः–राज्ञःपुत्रः राजपुत्रः. |
| तीसरा बहुव्रीहि ,, लम्बकर्ण. | तृतीयः बहुव्रीहिः यथा लम्बौ कर्णौ यस्य स लम्बकर्णः. |
| चौथा कर्मधारय ,, रक्तलता. | चतुर्थः कर्मधारयः यथा रक्ताचासौ लता रक्तलता. |
| पांचवाँ द्विगु [संख्या वाची शब्द पूर्व] जैसे त्रिलोकी. | पञ्चमः द्विगुः [ संख्यापूर्वः ] यथाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी. |
| * इनका स्पष्ट विवरण दूसरे भाग में क्रमशः मिलेगा. | * अस्य विवरणो द्वितीये भागे क्रमशः स्पष्टतया मिलिष्यति. |

## व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| छठा द्वन्द्व [चार्थक] जैसे हरिहरौ. | षष्ठः द्वन्द्वः [चार्थकः] यथा हरिश्चहरश्च हरिहरौ. |
| नीचे लिखेहुए श्लोक का अन्वय वर्णन करो. | निम्नश्लोकस्यान्वयो वर्णनीयः. |
| यत्कृपा मूकं वाचालंकरोति पङ्गुं गिरिं लङ्घयते तम् परमानन्दमाधवम अहंवन्दे | मूकं करोति वाचालं पङ्गुंलङ्घयते गिरिम्। यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्. |
| अन्वय दो प्रकार का है खण्डान्वय और दण्डान्वय. | अन्वयो द्विविधः खण्डान्वयो दण्डान्वयश्च. |
| जहां श्लोक का टुकड़े २ व्याख्यान है वह खण्डान्वय है. | यत्र श्लोकस्य खण्डशः व्याख्यानं स खण्डान्वयः. |
| जहां श्लोक की एक साथही व्याख्या हो वह दण्डान्वय है. | यत्र श्लोकस्य युगपदेव व्याख्या स दण्डान्वयः. |
| तो कहो किसरीति से अन्वय करूं. | तर्हि कथय कतरया रीत्याऽन्वयं करोमि. |
| दण्डान्वय से। अच्छा. | दण्डान्वयेन। वरम्. |
| अन्वय—जिसकी कृपा गूंगे को बोलने वाला बनाती है और पंगे को पहाड़ लँघाती है उस परमानन्द माधवको मैं वन्दना करता हूँ. | अन्वयः—यत्कृपा मूकं वाचालं करोति पङ्गुं गिरिं लङ्घयते तं परमानन्द माधवं अहं वन्दे. |
| तुम पर्नोलिसिस भी जानते हो या नहीं। जानताहूं. | वाक्यविभागमपि त्वं वेत्सि न वा। वेद्मि. |
| काव्य अलङ्कारों के विना ऐसे नहीं अच्छा लगता जैसे विना नमक शाक. | काव्योऽलङ्कारान्विना तथा न शोभते यथा लवणं विना व्यञ्जनम्. |
| तीन गुरुका मगण, और तीन लघु का नगण, आदिगुरु भगण और फिर | मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः जो गुरुमध्यगतो र |

## व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| आदि लघु यगण, गुरुमध्य जगण और लघु मध्य रगण, अन्तगुरु सगण और अन्त लघु तगण होता है. | लमध्यः सोन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्त.। १। |
| उपसर्ग से धातुका अर्थ जबर्दस्ती दूसरी जगह ले जायाजाता है जैसे प्रहार (चोट) आहार [खाना] संहार, [नाश] विहार[क्रीड़ा]और परिहार [त्याग.] | उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्. |
| अगला अध्याय देखो। | अग्रिमं अध्यायं पश्य। |

## बाईसवां अध्याय—द्वाविंशोऽध्यायः।

### बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| दूरकरना हटाना " | स्थानान्तरंनयति, अपसारयति विचालयति, दूरीकृ, निर्वासयति निष्कासयति. | फिसलना | च्यवते, स्खलति, भ्रंशते, भ्रदयति. |
| मरोड़ना निचोड़ना छानना | सं निष्पीडयति, (बलयत्) आकुञ्चयति शोधयति, स्रावयति [पटात्] निर्गलयति. | मुलम्मा करना | स्वर्णेन रञ्जयति, हेमरसेन हेमद्रवेण लिम्पति. |
| | | लपेटना बांधना | परि-अधि वेष्टयति, परि-आ बध्नाति, परिधत्ते, नि-सं-यच्छति. |
| छिपाना | प्रच्छादयति, गोपायति अन्तः-तिरः—धा, अपवारयति. | उधार देना | अविहितकालात्-दा, ऋणं दा; निक्षिपति, न्यस्यति, समर्पयति. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। | हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|---|---|
| खोना | त्यजति, जहाति, हापयति. | लटकाना फांसीदेना | निदधाति, उद्बध्नाति, आ† अव-लम्बयति, व्यापादयति. |
| ढीला होना | श्लथते, स्रंसते. | लटकना | प्र- अव-लम्बते, दोलायते. |
| " करना | शिथिलयति, श्लथयति. | झूलना | आन्दोलयति, प्रेङ्खति, प्रे॰ङ्खोलयति, दोलायते. |
| भेजना | प्रहिणोति, प्रेरयति प्रेषयति. | खिलाना चराना | भोजयति, आशयति, परिपोषयति-पुष्णाति. |
| निश्चय करना | सं-व्यव-स्थापयति, व्यवस्यति निर्-अव-धारयति. | मिलना | समेति, सङ्गच्छते, सम्मिलति, समागच्छति. |
| पोंछना | प्रमार्ष्टि, परिमार्जयति, प्रक्षालयति. | जल्दी चलना | शीघ्रं—सवेगं— गच्छति; |
| ख्वाब देखना | स्वप्नंपश्यति. | ,, करना | त्वरयति, त्वरते. |
| सलूककर्ना | आचरति, वर्तते, व्यवहरति. | चक्कर देनाघुमाना | जिह्मं—कुटिलं—गच्छति-सर्पति, परि-आवर्तयति. |
| मालूम करना | अनुभवति, विभावयति, उपलभते | बसना | वसति, तिष्ठति, वर्तते, प्रतीक्षते. |
| चूमना | चुम्बति. | लज्जित होना | लज्जते, जिह्रेति. |
| महरूम करना | वियोजयति, विना—कृ॰; | ,, करना | ह्रेपयति, लज्जयति त्रपयति. |
| इलतजा कर्ना | अनुनयति, प्रार्थयते. | कमहोना | ह्रसति, न्यूनीभवति. |
| नुकसान पहुंचाना | क्षिणोति, तुदति, अर्दति. बाधते, व्यथयति. | ,,करना | ह्रसयति, लघयति, न्यूनीकरोति. |
| उखाड़ना | उन्मूलयति. | बाज रहना | विरमति, निवर्तते परिहरति, सहते, क्षमते. |
| नाद कर्ना | उन्नादयति. | | |
| काम कर्ना | कार्यं करोति. | | |
| खयाल करना, | चिन्तयति, ध्यायति, विमृशति, आ-पर्या-लोचयति | | |
| ज़ोर से फेंकना | सहासा बलेन क्षिपति, पातयति, अस्यति. | | |

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । | हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|---|---|
| हिम्मत करना | धृष्णोति, उत्सहते साहस करोति. | याद करना | स्मरति. |
| | | भूलना | विस्मरति. |
| फैलना | प्र वि सर्पति, विस्तारयति, प्रसारयति. | कृत्यकर्मा अनुष्ठा न करना | प्रतिष्ठते, अनुतिष्ठति. |
| पसीने निकलना | प्रस्विद्यति, परिश्राम्यति, स्वेदयति. | देना | वितरति. |
| नफ़रत करना | द्वेष्टि, असूयति, स्पर्धते. | ठहरना | विरमति. |
| | | ढूंढना | अभिमृग्यति [इष दिवादि] |
| होना, | भवति. | धारण करना | दधाति, धत्ते |
| अनुभव करना | अनुभवति. | करना | विदधाति. |
| हारना | परिभवति. | कहना | अभिधत्ते. |
| उत्पन्न होना | उद्भवति. | पहिरना | परिधत्ते. |
| | | लेना | आदत्ते. |
| समर्थ होना | प्रभवति. | खाना [जु-हात्यादिषु] | खादयति. |
| जीतना | जयति. | जाना | गच्छति. |
| हराना | पराजयति. | जानना | अवगच्छति. |

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| यह चीज यहां अच्छी नहीं लगती इसलिये इसको दूसरी जगह लेजाओ | वस्त्वेतदत्र न शोभते एतदतः स्थानान्तरं नय. |
| देवदत्त ने मेरी बाँह मरोड़दी तो भी मैंने कुछ न कहा. | देवदत्तो मद्बाहू बलवत्समपीडयत्तदापि मया किञ्चिन्नोक्तम्. |
| अच्छे लोग दूसरों के दोषों और अपने गुणों को छिपाया करते हैं. | सज्जनाः परेषां दोषान्स्वगुणांश्च प्रच्छादयन्ति. |

## बाकी किया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| महल की चोटी पर मत जाओ वहां से ज़रूरही फिसल जाओगे. | प्रासादशिखरस्योपरि मागच्छ ततोऽवश्यं च्यविष्यसे. |
| आजकल बहुत से मुलम्मेसाज़ ऐसे गहने सोने चाँदी से मुलम्मा कर बनाते हैं कि बहुत से अक्लमन्द भी ठगों से धोखा खाजाते हैं. | अद्यत्वे बहवः स्वर्णरञ्जका ईदृशाभूषणानि स्वर्णेन रजतेन वा रञ्जयन्ति यद्बहवो बुद्धिमन्तोऽपि धूर्तैः प्रतार्यन्ते. |
| आज शीत बहुतही ज्यादह है और हवा भी तेज चलती है इसलिये तुम गुलूबन्द सिरपर लपेटलो. | अद्य शीतं वरीवर्ति सरीसर्ति समीरणोऽतस्त्वं गलबन्धनं शिरस्यधिवेष्टय. |
| किसी आदमी को कर्ज न दो क्योंकि कर्ज़दार देते वक्त दुश्मन होजाता है यह निश्चय है. | कस्मैचित्पुरुषाय धनं मानिक्षिप यतोऽधमर्णः प्रतिसमर्पणसमये शत्रुर्भवतीति निश्चयः. |
| इस काच केही बर्तन में मेरे पास शहद भेजो मैं उसको अपने बर्तन में धरके और साफकर तुम्हारे बर्तन को फिर लौटा दूंगा. | अस्मिन् काचपात्रे हि मत्सन्निधौ मधु प्रेषय अहं तत्स्वपात्रे कृत्वा प्रमार्ज्य च तव पात्रं पुनरावर्तयिष्यामि. |
| मा बेटेका मुंह चूमती और लड़ाती है. | माता पुत्रस्य मुखं चुम्बति लालयति च. |
| मुझे आप इनाम से क्यों महरूम करते हैं. | कथं मां पारितोषिकेण वियोजयन्ति भवन्तः. |
| यह भिखारी रोटी केलिये प्रार्थना [इलतजा] करता है. | एष भिक्षुकः करपट्टिकार्थमनुनयति. |
| किसी जीव को कभीमत सताओ. | कमपि जीवं कदापि मा व्यथय. |
| आनेवाले चेत के महीने में भूकम्पहोगा. | आगामिनि चैत्रे मासि भूकम्पो भविष्यति. |
| तेज हवा बड़े दरख्तों को भी उखाड़ देती है. | प्रकम्पनो महतो वृक्षानपि उन्मूलयति. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| इस चीज़ को ज़ोर से न फेंको क्योंकि शायद बिखर जायगी. | एतद्वस्तु सहसा माक्षिप यतः प्र-किरेत्. |
| अक्सर स्त्रियां सावन के महीने में झूला झूलती हैं. | प्रायः स्त्रियः श्रावणे मासि दोलायां प्रेङ्खन्ति. |
| कभी ऐसा मत सोचो मैं कभी तुम्हारे खिलाफ़ न करूंगा. | कदापीदृग्मा विमृशाहं तव विरुद्धं माचरिष्यामि. |
| जल्लाद ने जज साहब के हुक्म से उस बालक के मारने वाले को फांसी दी. | घातको न्यायाधीशाज्ञया तं बाल-घातिनमबालम्बयत्. |
| मैं आज सौ ब्राह्मणों को खिलाऊंगा. | अहमद्य शतं ब्राह्मणान्भोजयिष्यामि. |
| यह पुस्तक कहां से मिलती है । ब-म्बई से. | तत्पुस्तकं कुतस्तल्लभ्यते । मुम्बापुरीतः |
| महर्बानी कर जल्दी कीजिये यह बह-साने का वक्त नहीं है. | कृपया त्वरय नास्त्ययं समयो ईर्षस्-प्रतायाः. |
| चाँद अँधेर पाख में रोज़ाना घटता है और उजाल.पाख में बढ़ता है. | चन्द्रमा कृष्णपक्षे प्रतिदिनं ह्रसति शुक्ले पक्षे वर्धते. |
| इन अशुभ आचरण से तू मुझको क्यों लज्जित करता है. | कथं मां ह्रेपयसि एतेनाशुभाचरणेन. |
| यह बालक बड़ी हिम्मत करता है जो अकेला बियाबान में रात को फि-रता है. | अतीवोत्सहतेऽयं बालो यदेकाकी निर्ज-ने नक्तं परिभ्रमति. |
| जैसे बुराई जल्दीही आदमियों में फैल जाती है तैसे भलाई नहीं. | यथाऽपयशस्तूर्णमेव जनेषु प्रसरति न तथा यशः. |
| आज बड़ी धूप है इसी से मेरे देह में पसीने आते हैं. | अद्याधिको घर्मोऽत एव मम गात्राणि प्रस्विद्यन्ति. |
| बहुत से मुसल्मान आर्यों से नफ़रत करते हैं. | बहवो यवना आर्येभ्यो द्विषन्ति. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| अर्जुन ने कहा कि गाण्डीव हाथ से निकला जाता है और खाल जली जाती है. | अर्जुनेनोक्तं गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक् चैव परिदह्यते. |
| यह कौन आदमी है जो बाहर दर्वाजे पर है | कोऽयं जनो योबहिर्द्वारि वर्तते ? |
| है कोई फकीर। नहीं यह फकीर नहीं है. | अस्ति कश्चित् फकीरः। नो नायं फकीरः. |
| फकीर का लक्षण तो सुनो. | फकीरलक्षणं तु शृणु. |
| शिवजी के चरणों में दिया है चित्त जिसने और कीडे आदि में ब्रह्मबुद्धि देखनेवाला, रक्षा के लिये और भिक्षा केलिये अट्ले मट्ले हैं वस्त्र जिसके वह कवियों ने फकीर कहा है. | फणीशभूषांघ्रिनिविष्टचेताः कीटादिषु ब्रह्ममतिप्रकाशी । रक्षार्थभिक्षार्थविवर्णवासा निगद्यतेऽसौ कविभिः फकीरः. |
| अनेक प्रकार के, व अनोखे वाक्य और ४८ मशहूर सांसारिक कहावतें. | विविधवाक्यानि, विशिष्टस्वरूपाणि वाक्यानि, अष्टचत्वारिंशत्प्रसिद्धलौकिकन्यायानि च. |
| आपका दौलतखाना कहां है और इस्मुबारिक क्या है और किसलिये आप यहां आये हैं ? | कुत्रत्या भवन्तः किमभिधानं किमर्थमिहायाताश्च. |
| मैं बंगाल देश में रहनेवाला कृष्णदत्त नाम अतिथी हूँ रात को ठहरने की जगह ढूँढता हुआ आपको कुछ परिश्रम देने के लिये यहां आया हूं. | वङ्गदेशवास्तव्योऽतिथिः कृष्णदत्तनामाहं रात्रिवासगृहमन्विष्यमाणो भवते परिश्रमं दातुमत्रागतः. |
| बहुत अच्छा इस आसन पर तशरीफ रखिये और अपने घर से ज्यादह सुखपूर्वक रहिये. | वरम्, इदमासनमलङ्करोतु भवान् (अत्रास्यतामास्वां) स्वगृहनिर्विशेषं यथा सुखमुष्यताम्. |
| मुझे अपने वापकी कसम है कि मैं कभी तुम्हारे खिलाफ न करूंगा. | कदापि तव विरुद्धं नाचरिष्यामीत्ययं शपथस्तातपादानाम्. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| हाथ धोने केलिये मिट्टी तो लाओ. | हस्तप्रक्षालनार्थं मृत्तिकां त्वानय. |
| ऊसर धरती की मिट्टी नाज के लिये अच्छी नहीं होती. | ऊषरभूमेर्मृत्स्नाऽन्नादिभ्यो न वरा. |
| लेकिन चमर्ई की मिट्टी लिपाई के लिये पक्की होती है. | परश्च चामल्लूरस्य मृत्तिका लेपार्थपक्का. |
| यह रास्ता तो बड़ा रेतीला है सो और रास्ते से जायँगे. | शर्करासनाथोऽयम्मार्गस्तदन्येन पथा गमिष्यामः. |
| पटना नामक शहर यहां से दो कोश है. | पाटलिपुत्रं नाम नगरमतः क्रोशयुगं वर्तते. |
| इस गाँव में सिर्फ पांच दुकान हैं बाजार नहीं. | अस्मिन्ग्रामे केवलं पञ्चापणा विद्यन्ते नच पण्यवीथिका. |
| इस गली में एक घरकी दीवार गिरने वाली है इसलिये होशियारी से जाना क्षत्री लोगों के और मुसल्मानों के राज्य में शहरों के परकोटे थे. | विपतिपत्सेका गृहभित्तिरस्यां प्रतोल्यामतस्सावधानतया गच्छ क्षत्रियराज्ये यवनराज्ये च नगराणाम्प्राकारा आसन्. |
| यह किसका झोंपड़ा है ? महानन्द नाम सन्यासी का. | कस्य एष उटजः ? महानन्दनाम्नः सन्यासिनः. |
| यह पत्थर की प्याऊ तुम्हारी घुड़साल के नजदीक किसकी बनवाई हुई है. गोविन्द की. | पाषाणप्रपेयं तव मन्दुरासमीपे केन निर्मापिता वर्तते। गोविन्देन. |
| पत्थर यहां कहां से आते हैं ? | प्रस्तरा अत्र कुत आगच्छन्ति ? |
| पहाड़ों से. | महीध्रेभ्यः. |
| पहाड़ के पास की भूमि उपत्यका और नीचे की अधित्यका होती है. | उपत्यकाद्रेरासन्ना, अधोभूमिरधित्यका. |
| पहाड़ों में मस्नुई जगह कन्दरा और गैर मस्नुई गुफा कहलाती है. | पर्वतेषु कृत्रिमं स्थानं कन्दराऽकृत्रिमं गुहेति कथ्यते. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| बेलों से ढंका हुआ स्थान कुञ्ज पेड़ों की पंक्ति आराम [बगीचा] कहलाता है. | लतादिपिहितं स्थानं कुञ्जः महीरुहावलिः आराम इति भण्यते. |
| इस घर की छतपर बड़ा कूड़ा है इसलिये यहां नसेनी लाकर इसको साफ करो. | अस्य गृहस्य पटले महानवकरः अतोऽधिरोहिणीमानीय एनं शोधय. |
| इस पेड़ की खोड़र में बहुत साँप हैं. | अस्य द्रुमस्य निष्कुहे बहवस्सर्पास्सन्ति. |
| वन में तो ईंधन थोड़े से मोल से मिल जाता है. | अरण्ये त्विन्धनमल्पीयसा मूल्येन लभ्यते. |
| इस पेड़ की कलियाँ, गुच्छे और फूल कैसे अच्छे लगते हैं. | अस्य वृक्षस्य कलिकाः स्तबकाः पुष्पाणि च कथं शोभन्ते. |
| जो तुम मेरा वचन ठीक मानते हो तो यह छः महीने के भीतर राजा होगा. | यदि मद्वचः श्रद्धेयं मन्यसे तर्ह्ययं षण्मासाभ्यन्तरे राजा भविष्यति. |
| फेंटा बाँधकर राम त्रिलोकी केभी मुकावला करने को समर्थ हैं. | बद्धपरिकरो रामस्त्रैलोक्यमपि प्रत्यवस्थातुं क्षमः. |
| श्री कृष्ण महाराज के दर्शन के अनन्तर उसको कुछ भी अभीप्सित न था. | श्रीकृष्णदर्शनानन्तरं न किमपि तस्य स्पृहणीयमासीत्. |
| बहुत से मनुष्य बहुत जगहों पर शारदापीठाधीश्वर शंकर स्वामी ने लाजवाब करदिये परन्तु वे ऐसे निर्लज्ज हैं कि हारे हुए भी नहीं शरमाते. | निरुत्तरीकृता बहवो जना बहुषु स्थलेषु शारदापीठाधीश्वरेण शङ्करस्वामिना परन्त्वेतादृशा निर्लज्जास्ते यत् पराजिता अपि न लज्जन्ते. |
| मैंने एक हाथी वनके बीच में देखा. | दृष्टो मयैको गजः कान्तारमध्यवर्ती. |
| ईश्वर इच्छा बलवान होती है. | ईश्वरेच्छा बलीयसी वा प्रभवति भगवान् विधिः. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| दोस्त। तुम्हारे मुकद्मे में कितने गवाह हैं और कौन तारीख है? किस हाकिम की कचहरी में तुम्हारा मुकद्दमा है? मेरी रायमें तो मुद्दई मुद्दाइलह मिलकर राजीनामा करलें नहीं तो दोनों का बड़ा खर्च पड़ेगा. | मित्र तवाभियोगे कति साक्षिणः कतमाङ्ग्लतिथिः कस्य न्यायाधीशस्य न्यायालये तवाभियोगोऽस्तीति मां पूर्वमेव सूचय मम सम्मतीत्यर्थिप्रत्यर्थिनौ मिलित्वा सन्धिं कुरुतम् नोचेद्द्वयोरपि महान्व्ययो भविष्यति |
| चाहे जिस पुरुष के लिये यह अन्न देदो. | यस्मै कस्मैचित्पुरुषायेदमन्नं देहि. |
| उस वचन के समाप्त होनेपर बलराम जी बोले. | वचस्यावसिते तस्मिन् बलरामोऽब्रवीदिदम्. |
| क्रोधमें भरकर तू क्यों बुरे मार्ग में पैर अड़ाता है. | क्रोधेद्धो भूत्वा त्वं किमर्थमपथे पदमर्पयसि. |
| तैंने उस मुसीबत ज़दह को समझा दिया यह बड़ा उपकार किया. | अत्यासन्नापदं तं त्वं प्राबोधय इति महानुपकारः कृतः. |
| कुछ देर इन्तजार करिये. | कालः कश्चित्प्रतीक्ष्यताम्. |
| तुम्हारा दुश्मन दुश्मनी निकालना चाहता है उससे होशियार रहो. | वैरनिर्यातनोत्सुकस्ते शत्रुस्तस्मात्समयहितो भव. |
| उपकार प्रत्युपकार से पलटा देना चाहिये. | उपकारः प्रत्युपकारेण निर्यातयितव्यः. |
| ईश्वर की व्याहृतियाँ कभी लोक में विपरीत अर्थ नहीं बनातीं. | ईश्वरव्याहृतयः कदाचिल्लोके विपरीतमर्थं न पुष्णन्ति. |
| उनमें से एक पैरों से कुचल कर मर गया. | तेषामेकतमः पादाक्रान्तो ऽम्रियत. |
| पकड़ने वालों से चोर, माल और खोज से पकड़ा गया है. | ग्राहकैर्गृहीतो चौरो लोप्त्रेणार्थपदेनवा. |

* लोप्त्रं स्तेयधनम्.

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| तू तो सब तरह से घरवाली के कहने में है इसलिये यन्त्र की तरह चलायाजाता है. | त्वन्तु सर्वथा गेहिन्याज्ञानुवर्ती तेन यन्त्रवद्वाल्यसे. |
| दाँत निकलने और डाढ़ी मूँछ निकलने पर बालक अच्छीतरह रक्षा करनी चाहिये. | दन्तोद्भेदे श्मश्रूद्गमे च बालस्सुतराम् रक्षणीयः. |
| वह जल्दीही आरोग्य होगया इससे मैं खुश हुआ. | सोऽचिरात्सुस्थोऽभवद्येनाहं प्रमुदितोऽभवम्. |
| उठो, यह वक्त न्हाने और खाने का है. | उत्तिष्ठत, समयोऽयं स्नानभोजनं सेवितुम्. |
| जैसे २ जवानी ढलती गई तैसे २ ही सन्तान न होने का दुःख बढ़ता गया. | यथा यथा यौवनमतिचक्राम तथा तथाऽनपत्यताजन्मा अवर्धतास्य सन्तापः |
| गरीब ने रक्षाकरने वाले से कहाकि आपसे मैं अनुग्रहीत हुआ. | भवतानुगृहीतोस्मीति रक्षितारमुवाच दीनः. |
| जिनके चित्त आपत्तियों में भी नहीं बिगड़ते वेही धीर हैं. | आपत्स्वपि येषां चेतांसि न विक्रियन्ते त एव धीराः. |
| मारने में यह भी मददगार था इसीसे सजावार है. | विशेसनेऽयमेव सहायो बभूवात एव दण्ड्यः. |
| बहुत से हमारे वैभव में सुखी होते हैं. | बह्वोऽस्मदभ्युदये सुखभाजो भवन्ति [ मोदन्ते प्रीयन्ते ] |
| वह बड़ी धार्मिका है उस दुःख पाती हुई का स्वर्गवास निश्चयही है. | सातीव धार्मिका सीदंत्याः तस्याः स्वर्गवासोऽवस्थित एव. |
| बहुत काल सोचते हुए मेरे यह उपाय मन में पैदा हुआ. | चिराच्छोचतो मेऽयमुपायो मनसि प्रादुर्बभूव. |
| दुर्वृत्ति करेतो दुष्ट और फल भोगे सज्जन. | खलः करोति दुर्वृत्तिं नूनं फलति साधुषु. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
| --- | --- |
| मुझ भूखे की तृप्ति के लिये यह अन्न बहुत है. | मम क्षुधितस्य तृप्त्यै इदमन्नमलं [ पर्याप्तं ] |
| मैं अब क्या करूं मेरी सब कोशिश फिजूल हुई. | किं करोम्यद्य मम सर्वे प्रयत्ना अफला [ अनिष्पन्ना ] अभवन्. |
| मृग सिंह की गर्जना सुनतेही बेहोश हो जाते हैं. | मृगाः सिंहनादश्रवणेनैव मूर्च्छन्ति. |
| यह अजीब मामला सुन मेरे दिल में अचम्भा होगया. | एतदद्भुतं वृत्तमाकर्ण्य विस्मयो मे हृदयमस्पृशत्. |
| महल की शिखर की शोभा को देख मैं अचम्भे में आगया. | प्रासादशिखरशोभां दृष्ट्वाऽहं विस्मयमापन्नः. |
| वामनजी ने कहा कि जितनी धरती मैं तीन पैंड से नापलूं उतनी मुझेदो. | यावतीं भूमिं त्रिपदेनाहं व्याप्नुयाम् [ आक्रमेयं ] तावतीं मे देहीत्युवाच वामनः. |
| पहले की हुई थोड़ीसी भी कोशिश पीछे की आनेवाली बड़ी कोशिश को दूर देती. | स्वल्पोऽपि कालकृतो यत्नो महान्तमुत्तरकरणीयं यत्नं व्यावर्तयति. |
| यह युक्ति भी बहुत देर न ठहरेगी. | इयमपि युक्तिर्न चिरं स्थास्यति (अचिरात्खंडयिष्यते ). |
| यह सबके ऊपर है इसी लिये उसका वचन सयुक्तिक और सोपपत्तिक भान होता है. | स सर्वेषां मूर्ध्नि तिष्ठति अत एव तस्य वचः सयुक्तिकं सोपपत्तिकञ्च भाति. |
| यह बड़ा बुद्धिमान है मेरे आशय को ही लेकर उसने मेरी आज्ञा करदी. | महानयं बुद्धिमान् मद्भावार्थमेव गृहीत्वा ममाज्ञामनुष्ठितवान्. |
| इस दुःखको आप से कहना मुझे बहुत दुःख देता है. | अस्य दुःखस्य भवते निवेदनं मे महद्दुःखमावहति. |
| यह कहना सहल है करना सहल नहीं. | वक्तुं सुकरमिदं न तु कर्तुम्. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| यह पराभव (हार) मेरे दिल में लगे हुए बाणकी नाई हुई. | पराभवोऽयं मम हृदि प्रत्युप्तं शल्यमिवाभवत्. |
| मुझसे भी इस मामले में चुप चाप नहीं रहा जाता. | मयाप्यस्मिन्विषये न शयानेन स्थीयते. |
| रामसिंह को तप तपते हुए कितने वर्ष हुए. | रामसिंहस्य कतिपये वत्सरास्तपस्तपतोऽभवन्. |
| गोविन्द ने अपने पुत्रको आँखों के इशारे से बलाया. | गोविन्दः स्वपुत्रं नेत्रसंज्ञयाऽऽह्वयत्. |
| यह विषय तो दूर रहे. | आस्तां [तिष्ठतु] तावद्दूरे स विषयः. |
| विनाश धर्म वाले विषयों में मन मत दो. | विनाशधर्मेषु विषयेषु मनो मा संनिवेशय. |
| आप चाहे जैसे इस दास को काम में लगाइये. | भवद्भिर्यथेच्छं नियुज्यतामयं दासः. |
| देवदत्त ने अपने मालिक का नमक हलाल किया जो अपने मालिक के दुश्मनों से लड़कर मारागया. | सफलीकृतभर्तृपिण्डो देवदत्तो यत् स्वस्वामिशत्रुभिस्सह युद्धान्निधनं गतः. |
| वह औरत बाँए हाथ पर मुँह रक्खे हुए बैठी है. | सा स्त्री वामहस्तोपहितवदना तिष्ठति. |
| सज्जन लोग दूसरों के दोषों को भी गुण पक्ष में लगाते हैं. | सज्जनाः परदोषमपि गुणपक्षे समारोपयन्ति. |
| मित्र मेरी गर्ज तुमको टालना न चाहिये. | मित्र नार्हसि त्वं मे प्रणयं विहन्तुम्. |
| यह उसके गुण और दोषों को छिपाता है. | तस्यायं गुणान्दोषांश्च प्रमार्ष्टि (लोपयति). |
| हाथों से गिराई हुई गेंद भी ऊपर को उछलतीही है. | पातितोऽपि कराघातैरुत्पतत्येव कन्दुकः. |
| मरना भला अपमान नहीं. | वरं मृत्युर्न पुनरपमानः. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| बाँई आँख फड़कने से मेरा मन कुछ अनिष्ट की शङ्का करता है. | वामाक्षिस्फुरणात्किमप्यनिष्टमाशङ्कते मे मनः. |
| यह चोर लानत देकर शहर से निकाला जाता है. | एष चौरः सनिकारं नगरान्निर्वास्यते. |
| उपाय सफल हो यह अनुमान तो किया जाता है. | उपायस्सफलो भवेदित्यनुमीयते तु. |
| श्रीमान् विद्वद्वर्य्य बालशास्त्री सब शास्त्रों में परम प्रतिष्ठा को प्राप्त हुए. | श्रीमद्विद्वद्वर्य्या बालशास्त्रिणः सर्वेषु शास्त्रेषु परां प्रतिष्ठां गताः. |
| तेरे दुःख का क्या कारण है यह मुझ से कह. | किं निमित्तं ते सन्ताप इति मां कथय. |
| क्यों कीच में ईंट डाली और छींटखाई कीच को धोने से न छूनाहीं अच्छा है. | प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरमस्पर्शनं वरम्. |
| यहां आप तशरीफ रखिये आप की क्या जीविका है. | अत्रोपविशत्वार्य्यः कां वृत्तिमुपजीवति भवान्. |
| इस काम के करने में उसने पुण्य को बीच रक्खा. | एतत्कार्यकरणे तेन सुकृतमन्तरे धृतम्. |
| मेरी भेटोंको उसने बड़े प्रसन्न मन से स्वीकार किया. | ममोपायनानि स सुप्रीतमनसा (सुप्रसन्नं) स्वीचकार. |
| यह धूर्त अपने को पण्डित मानता है. | पण्डितम्मन्योऽसौ धूर्तः. |
| यह क्या, अक्सर सबही समाजी ऐसे ही होते हैं. | स किम्, प्रायोऽखिल एव सामाजिकाः तादृशाः भवन्ति. |
| बाँझ, बच्चे होने की बड़ी भारी तक्लीफ को क्या जाने. | नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम्. |
| यह दुःख समाचार तो हो लिया अब अपने बेटों की राजी खुशी कहो. | आस्तां तावदयं दुःखवृत्तान्तः, अधुना स्वशिशूनां कुशलं कथय. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| यह बिना तमगा लिये क्यों फ़ौज से निकलता है. | किमर्थमगृहीतमुद्रः कटकान्निष्क्रामति. |
| अपने आदमी के आगे दुःख खुले हुए दर्वाजे की तरह हो जाता है. | स्वजनस्य हि दुःखमग्रतो विवृतद्वारमिवोपजायते. |
| आपकी जो मर्ज़ी हो सो कीजिये. | स्वरुच्या वर्ततां भवान्. |
| इस जगह से भागजाओ नहीं तो तू मार दिया जायगा. | अपसरास्मात्स्थानान्नोचेत्त्वं जीवितेन वियोक्ष्यसे. |
| पहिले उसकी अक़्ल में यह बात नहीं आई थी. | इति तस्य बुद्धौ पूर्वं न सञ्जातम्. |
| दुष्ट सरसों सरीखे दूसरों के ऐबों को देखता है और अपने बेल सरीखे ऐबों को देखता हुआ भी नहीं देखता है. | खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति, आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति. |
| अच्छा मौका तूने खोदिया. | शोभनावसरस्त्वयाक्षिप्तः (त्यक्तः). |
| राजा लोग तो सेवापर दूर रहो खुशामदी प्रजाभी तो पीछेही लगी चली जाती है. | तिष्ठन्तु तावत्सेवापरा राजानः, प्रजा अपि तु चाटुपरा पृष्ठतो लगति. |
| तुम्हारी कृपा से मैं कृतार्थ होऊं. | कृतार्थो भूयासं तवानुकम्पया. |
| उसने जल्दीही सब का सार लेलिया. | अचिरादेव तेन सर्वस्य सारो गृहीतः. |
| संसार में बड़प्पन या नीचपन मनुष्य को अपनेही कर्तव्य प्राप्त कराते हैं. | लोके गुरुत्वं विपरीततां वा स्वचेष्टितान्येव नरं नयन्ति. |
| ऋषि लोग और वनवासी वन के फलों से अपनी शरीर वृत्ति करते हैं. | ऋषयो वनवासिनश्च वन्यफलैः शरीरवृत्तिं निर्वर्तयन्ति. |
| तू बहुतही झूठ बोलता है सब तरह से तेराही कसूर है. | त्वं नितान्तमनृतं वदसि सर्वथा तवैवायं दोषः. |
| विषय के सुखों में लगे हुए राजा ने अपना जीवन बिताया. | विषयसुखनिरतो राजा जीवितमत्यवाहयत्. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| मूर्खों के लिये उपदेश करना गुस्से का कारण होता है शान्ति के लिये नहीं. | उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये. |
| देवदत्त मारेज्वर के उठ नहीं सका. | देवदत्तो ज्वरेणोत्थातुमक्षमः. |
| चित्रकूट को जानेवाले रास्ते में मैंने अपना मित्र देखा. | चित्रकूटयायिनि वर्त्मनि स्वमित्रमहमपश्यम्. |
| अपने घर की तरह यहां रहिये. | स्वगृहनिर्विशेषमत्र वस. |
| मेरे आगे उनकी क्या असल है. | कियती (का) मात्रा तेषां मत्पुरतः. |
| भाग्य अपने आप नहीं देता पुरुषार्थ की अपेक्षा करता है. | न स्वयं दैवमादत्ते पुरुषार्थमपेक्षते. |
| वह दिलोजान से उस काम में लगा हुआ है. | स सर्वात्मना तस्मिन्कर्मणि व्यापृतः. |
| उसने गंगा में बहुत पुल पैदा किया. | स गङ्गायां बहून्पुलानुदपादयत्. |
| अनुकूल अवसर पर इष्टसिद्धि करो. | अनुकूलेऽवसरे इष्टसिद्धिं कुरु. |
| यह ही मेरा बड़ा भाग्य है कि मेरा पुत्र इस छकड़े से बच गया. | इदमेव तावन्मम परमभाग्यं यन्मत्पुत्रोऽस्माच्छकटान्मुक्तः. |
| जो धन जाता जानिये आधा दीजे बाँट. | सर्वनाशे समुत्पन्नेऽर्धं त्यजति पण्डितः. |
| उस की तो मेरे दर्शन सेही आँखों से आसुओं की धार बहने लगी. | तस्यास्तु मद्दर्शनादेव आयद्धारमश्रु प्रावर्तत. |
| इस हालत में मैं तुझ को देख कर दुखी हूँ. | एतदवस्थं त्वां वीक्ष्य दुःखितोऽस्मि. |
| वह कीताब तो मेरे पास है. | तत्पुस्तकन्तु मत्सकाशे वर्तते. |
| पीछे आकर वह इस हाल को सुनाता हुआ. | पश्चादेत्य स एतद्वृत्तं श्रावयामास. |
| उसको मैंने अपनी युक्तियों से निस्सन्देह कर दिया. | तं निर्मुक्तसंदेहमकरवम् स्वयुक्तिभिः. |
| इस किताब का मोल सवा रुपया है. | सपादरूपकं मूल्यमस्य पुस्तकस्य. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| राम के वर्ष वनमें रहे। चौदह वर्ष. | कियन्ति वर्षाणि वनेऽवसद्रामः। चतुर्दशसमाः. |
| मैं तुम्हारे लिये दुःखी हूं तू अपने आचरण को क्यों नहीं बदलते. | अहं तव कृते दुःखाकुलोस्मि त्वं स्ववृत्तं कथं न परिवर्तयसि. |
| मैं तुम्हारेही पक्ष को पुष्ट करता हूं. | अहं त्वत्पक्षं समर्थये. |
| ऐसे कष्टों को भी कुछ न समझ कर हरिश्चन्द्र सत्यही में रहा. | एवंविधान्यपि कृच्छ्राण्यविगणय्य हरिश्चन्द्रः सत्य एव स्थितः. |
| इस काम को सिद्ध करने को वह समर्थ है. | तत्कार्यं साधयितुं सोऽलम्. |
| बहादुरी में कोई भी मेरे समान नहीं है. | न कोऽपि शौर्येण मम समानः. |
| आप मेरी प्रार्थना मंजूर कीजिये. | मम प्रार्थनामनुमन्तुं प्रसीदतु भवान्. |
| औरों के अभ्युदय से हमेशा खुश हो न कि जलो. | अन्येषामभ्युदयेन सर्वदा मोदस्व न तु स्पर्धस्व. |
| तुम्हारे दर्शन के लिये मेरा दिल चाहता है. | उत्ताम्यति मे हृदयं तव दर्शनाय. |
| मनुष्यों में पक्षियों से ज्ञानही विशेष है. | नरेषु तिर्यग्भ्यः प्रबोध एव विशेषः. |
| बहुत से धन से यह दोष दूर हो सक्ता है. | भूरिद्रव्येणायं दोषः प्रमार्ष्टुं शक्यः. |
| घर के जलने पर कूँआ खोदना यह कैसा उद्यम. | प्रदीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः. |
| यह अर्थ विचार के योग्य है. | अयमर्थोऽपेक्षामर्हति. |
| मेरे पिता अब घड़ी हो रहे हैं. | मम पिता जीवितसंशये वर्तते. |
| राम ज्वर के दूर होने से नीरोग हो गया. | रामो ज्वरोपशमनान्नीरोगः (प्रकृतिस्थः) सञ्जातः. |
| इसकी सब कोशिश कामयाब हुई. | सर्वेऽस्य प्रयत्नाः सफलतां ययुः (फलिताः). |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| हज़ार रुपये में यह घर मैंने ख़रीदा है. | सहस्ररूपकेणेदं गृहं मया क्रीतम्. |
| बहुत से धन से विवाह की विधि की. | बहुधनव्ययेन निष्पादितो विवाहविधिः. |
| इसका मुख सीता के मुख की बराबरी करता है. | अस्य मुखं सीताया मुखेन सम्पद्यति. |
| अपनाही भला मत चाहो मनुष्यों का हित भी तो तुमको अपने मन में धारण करना चाहिये. | स्वहितपरायणो माभूः जनहितमपि तावत्त्वया मनसि धार्य-( अवेक्षणीयं ) मेव. |
| यह पद इस तरह नहीं बनता है. | इदं पदमेवं न सम्बध्नाति. |
| ज्योतिषी जन्मपत्री में शुभ, अशुभ विचारता है. | ज्योतिर्विज्जन्मपत्रिकायां शुभाशुभं पर्यालोचयति. |
| जज साहब ने हुक्म दिया कि यह चोर शूली पर चढ़ाना चाहिये. | शूलमारोप्यतामसौ चौर इतिदण्डः समादिष्टो न्यायकारिणा. |
| च्यवनजी के लिये मेरी नमस्कार कहना. | च्यवनाय मदीयो नमस्कारो वाच्यः मां प्रणिपत्तय. |
| कृष्णदत्त ने भाई के अविनय आचरण को पिता से निवेदन किया. | कृष्णदत्तो भ्रातुरविनयाचरणं पित्रे न्यवेदयत्. |
| रामदत्त जबर्दस्ती मुझ नचाहते हुए को भी पूछने के काम में लगाता है. | बलादनिच्छन्तमपि मां प्रश्नकर्मणि नियोजयति रामदत्तः. |
| इसी युक्ति से तूला अबाब किया. | अनया युक्त्यैव निगृहीत ( निरुत्तरीकृतः ) स्त्वम्. |
| जो करना है वह विचार कर करो. | यत्कर्तव्यं तद्विमृश्य (समीक्ष्य) कुरुत. |
| अज (राजा का नाम) के मार्ग को रोक कर खड़ा हो गया. | आवृत्य पन्थानमजस्य तस्थौ. |
| मैं इन तरीकों से पाबन्द नहीं हूं. | नाहमेभिर्विधिभिर्नियन्त्रितोस्मि. |
| तुमको कुटुम्ब पालन जरूरही करना चाहिये. | त्वया कुटुम्बपोषणमवश्यमेव कर्तव्यम्. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| कौए की तरह पेटभरू न होना चाहिये. | काकवदुदरम्भरिणा भवितव्यम्. |
| वह फिर भी अपने काम में मन लगाता हुआ. | स पुनरपि स्वकार्ये मनो न्यदधात् (न्यवेशयत्). |
| भक्त गोविन्दराम कृष्ण की कथाओं से दिन को बिताता है. | गोविन्दरामो भक्तः कृष्णकथाभिर्दिवसमतिवाहयति. |
| जब परशुराम की बहुत इलाज करने पर भी रोग शान्ति न हुई तब जो होनहार है सो होउ ऐसा कह कर वह भाग्य पर छोड़ दिया. | यदा परशुरामस्य बहुचिकित्सानन्तरमपि रोगशान्तिर्नाभूत्तदा यद्भावि तद्भवतु इत्युक्त्वा स परित्यक्तः (दैवाधीनःकृत०). |
| सब गुणों को छोड़ कर स्वभाव सिर पर रहता है. | गुणान्दूरस्तात्परित्यज्य स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते. |
| शिवकी सती की परित्याग रूप दारुण प्रतिज्ञा संसार में प्रसिद्ध हुई. | शिवस्य सतीपरित्यागरूपा दारुणा प्रतिज्ञा लोके प्रसिद्धाऽभूत् (लोके प्रकाशतां गता). |
| सम्पत्तियाँ आपत्तियों का स्थान हैं. | सम्पदः पदमापदाम्. |
| प्रमाण का भोजन ही सुख का हेतु है. | मितभोजनं हि सुखहेतुः. |
| तेजस्वियों की अवस्था नहीं देखी जाती है. | तेजस्विनां न वयः समीक्ष्यते. |
| वे अपने काम को भली प्रकार करते हुए. | ते स्वकर्म साधु निरवाहयन्. |
| यह दूसरा गंडस्थल पर फोडा हुआ, ( फोड़में खाज का होना ) | अयमपरो गण्डस्योपरि विस्फोटः. |
| तुम्हारा वचन विलाश कय सुबेके हे. | तव वचनं न सन्देहास्पदम्. |
| भाई से बैर रखने वाले उसकी मदद करो. | भ्रातरि बद्धवैरस्य तस्य साहाय्यं कुरु. |
| बम्बई में मेरा रहना तन्दुरुस्तीदह नहीं है. | मुम्बापुरनिवासो ममारोग्याय न कल्पते. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| ख़याली पुलाव मत पकाओ. | गगनपुष्पाणि मा चिनुहि, आकाशे मन्दिरं न निर्मापय. |
| यस इतनी ही खातिर मुझसे आपकी होसकी है, यस मेरी तो इतनी ही सामर्थ्य है. | एतावान्मे विभवो भवन्तं सेवितुम्. |
| एक रुपया घी का पांच पुस्तकों के और चौदह तनख्वाह के पैसे मिलाकर मुझे २०) रुपये दो। | एको रूपको घृतस्य पञ्च पुस्तकानां चतुर्दशवेतनस्येत्थं पिण्डीकृत्य मह्यं विंशतिं रूपकान्देहि. |
| दर्या के वेग से लाई हुई मिट्टी पुलिन कहलाती है. | नदीरयसमाहृता मृत्तिका पुलिनमित्यभिधीयते. |
| तुम्हारा उद्योग मेरे उद्योग का सौवाँ हिस्सा भी नहीं है. | तव व्यवसायो ममोद्योगस्य शततमीमपि कलां न स्पृशति. |
| मेरे लिखे का जवाब भेजो. | मम लेखस्योत्तरं प्रहिणु (प्रेषय.) |
| यह मेरी इष्ट सिद्धि के लिये हो. | इदं म इष्टसिद्धये कल्पेत. |
| इस मामले में आप को मुन्सिफ़ बनाता हूं. | अत्र विषये भवन्तं प्रमाणीकरोमि. |
| रामदत्त अपने मुक़द्दमे में अपील चाहता है मगर कोई गवाह नहीं है. | रामदत्तः स्वविषये पुनर्विचारं प्रार्थयते परञ्च न कोऽपि साक्ष्युपतिष्ठति. |
| श्रोतागणों की प्रशंसा की वाणी कहने पर भाई के कन्धे पर हाथ रख कर कहने को उठ खड़ा हुआ. | उच्चैः प्रशंसावाच उदीरयत्सु श्रोतृषु सभ्रातुरंसे हस्तंनिवेश्य स वक्तुमुदतिष्ठत्. |
| यह उद्योग ठीक नहीं कोई दूसरी तदबीर करनी चाहिये. | अनेनोद्योगेनालं कोऽपरो नियोगोऽनुष्ठीयताम्. |
| इन दोनों का झगड़ाही मुझे अच्छा नहीं लगता और न तेरे वचन की ताईद करता हूं. | एतयोर्विवाद एव मे न रोचते, न चापि ते वचोऽभिनन्दामि. |
| आलसी बालक अक्सर दुराचारी होतेहैं. | अलसा बालकाः प्रायो दुर्वृत्ता भवन्ति. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| उसका ऋण कैसे अदा करना चाहिये यह भी तो सोच. | तस्य ऋणं कथं प्रतिदेयमित्यपितु विचिन्तय. |
| सब बाक़ी ऋण को निपटा दूंगा. | सर्वं मयावशिष्टर्णं परिशोधयिष्यामि. |
| जीवधारियों को विपत्ति मौजूद है. | विपदुत्पत्तिमतामुपस्थिता. |
| अब "लौकिकन्यायसंग्रह" से निकाले हुए लौकिकन्याय वर्णन किये जाते हैं | अथ लौकिकन्यायसङ्ग्रहादुद्भूतानि लौकिकन्यायानि वर्ण्यन्ते. |
| पहिलो–अन्धे और हाथी की कहावत. | १ प्रथम. अन्धगजन्यायः. |
| असलियत से नहीं जाना है शास्त्र का अभिप्राय जिन्होंने ऐसे वादी लोग अपनी २ अक्ल से कल्पना की हुई बातों को ही सिद्धान्त मानते हुए आपस में झगड़ा करते हैं वहां अन्धगजन्याय प्रवृत्त होता है। जैसे कितने एक जन्मांध किसी सूझते हुए पुरुष से बोले कि हमको हाथी दिखाओ। सूझता आदमी उनको हाथीखाने में ले जाकर हरेक हाथी के अंग को हरेक से पकड़वा कर बोला कि यह हाथी है तब वे लोग उसी २ गज के अङ्ग को ही हाथी निश्चय कर अपनी २ जगह आकर सूप के बराबर गज होता है ऐसा कान का छूने वाला, मूसल सा हाथी होता है ऐसा सूंड का छूनेवाला, खम्भे सा हाथी होता है ऐसा जांघ पकड़ने वाला और विटौरे सा हाथी | याथार्थ्येनाविदितशास्त्राभिप्राया वादिनः, स्वस्वबुद्धिकल्पितानर्थानेव सिद्धान्त मन्यमानाः परस्परं विवदन्ते तत्रान्धगजन्यायः प्रवर्तते यथा केचिज्जन्मान्धाः कञ्चिदनन्धं पुरुषमूचुरस्मान्गजं प्रदर्शयेति। अनन्धस्तान् गजशालायां नीत्वा प्रत्येकं गजावयवं तेन तेन ग्राहयित्वोवाचायं गज इति। ततस्ते तं तं गजावयवमेव गजं निश्चित्य स्वस्थानमागत्य शूर्पसदृशो गज इति कर्णस्पर्शी, मुशलसदृशो गज इति शुण्डास्पर्शी, स्तम्भतुल्यो गज इति जङ्घाग्राही करीषराशिसमो गज इति पृष्ठस्पर्शी स्थूलरज्जुतुल्यो गज इति पुच्छग्राहीति मिथः कलहं चक्रुः |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन–अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| होता है ऐसा पीठ छूने वाला, मोटी रस्सी सा हाथी होता है ऐसा पूंछ पकड़ने वाला, आपस में झगड़ा करते हुए. | |
| दूसरी–"कूप के मेंडक की कहावत" | द्वितीयः कूपमण्डूकन्यायः. |
| दूसरे के मजहब के न जानने वाले और उस में दोष निकालने वाले कूप के मेंडक के नाईं हंसी के पात्र होते हैं. | अन्यमतानभिज्ञास्तद्दूषणपराः कूपमण्डूकवदुपहासास्पदा भवन्ति. |
| जैसे कोई समुद्र का मेंडक किसी प्रकार उस के किनारे के कूप में घुस आया, तहां उसको अजनबी मान कर कूप के मेंडक ने पूछा कि आप कहां से आये हैं। 'समुद्र से' यह वचन सुनकर उसने पूछा कि वह कितना होता है उस (समुद्रमण्डूक) ने जवाब दिया कि 'बड़ा होता है' तो कूप के मेंडक ने अपनी जाँघ फैलाकर कहा कि क्या वह इतना है, 'नहीं बहुत ही बड़ा' यह सुन कर दूसरी जांघ भी फैलाकर बोला कि तो इतना होगा फिर भी उसने मनाकिया तब तीसरा और चौथा जांघ फैलाकर और डेढ़ हाथ उछल कर पूछता हुआ क्या इतना होता है, तोभी उसने मनाकिया तो फिर बोला कि इतने कूप सा होगा | यथा कश्चित्समुद्रमण्डूकः कथञ्चित् तत्तीरस्थकूपे प्रविष्टस्तमपूर्वं मत्वा कूपमण्डूकोऽपृच्छत् कुत आगतो भवान् इति. समुद्रादिति वचनं श्रुत्वा कियान् स इति पृष्टवान् महानिति तेन प्रत्युक्तः तर्हि कूपमण्डूकः स्वजङ्घां प्रसार्योवाच किमेतावान्सः, नहि महत्तमः, तच्छ्रुत्वा द्वितीयामपि जङ्घां प्रसार्य तर्ह्येतावान् भविष्यतीत्युवाच पुनरपि तेन निराकृतः, ततस्तृतीयां तुरीयां जङ्घां च प्रसार्योत्प्लुत्य प्रादेशाधिकत्रिहस्तपरिमितं देशं किमेतावानिति पृच्छंस्तेन निरस्तः तर्हि कूपसदृशो भविष्यतीत्युवाच, न हि भ्रातः स हि सरितांपतिरनवगाह्यगाम्भीर्योऽलक्ष्यपारावारोऽतीवमहत्तमः इतितेन प्रत्युक्तः, तर्हि नास्त्येव स यः कूपा- |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| तो उसने फिर जवाब दिया " कि नहीं भाई यह नदियों का स्वामी गहराई की थाह न देनेवाला वार पार न दिखाई देनेवाला बहुत ही बड़ा है, तो वह कुछ नहीं है जो कूप से भी बड़ा है तू तो झूठही बोलता है इस प्रकार उसको झूठा बनाता हुआ इसे सुनकर समुद्र का मेंडक अपने मन में उसपर हंसा. | दपि महत्तमस्त्वं तु मिथ्यैव प्रलपसीति तं निराचक्रे तच्छ्रुत्वा समुद्रमण्डूकः स्वमनसि तं हसितवानिति. |
| ३ " राजा और नाई के बेटे की कहावत. अन्धा बांटे रेवड़ी फिर २ घरको कोही देय. वा कूकरी को कूकर प्यारा शूकरी को शूकर. | ३ तृतीयः नृपनापितपुत्रन्यायः. |
| पूर्व जन्म के संस्कार जन्य प्रेम के अधिक होने से अति तुच्छ भी देवता में हरिहर आदिकों को छोड़ कर सर्वोत्तमत्व बुद्धि होती है जैसे कोई नाई 'प्रातःकाल सब नगर में ढूंढकर बहुतही सुन्दर बालक मेरे दर्शन के लिये लाओ' राजा से यह आज्ञा दिया गया। वह नाई सवेरे उठकर सब नगर में तलाश कर और वहां २ बड़े २ सुन्दर बालकों को देखकर भी अपने बेटे के बराबर न मान कर उसी को राजा के घर ले जाकर | जन्मान्तरीयसंस्कारजन्यरागातिशयवशात् अतिक्षुद्रेऽपि देवे, हरिहरादीन्परित्यज्य सर्वोत्तमत्वधीर्भवति यथा कश्चिन्नापितः प्रातः सर्वं पुरमन्विष्यातीवरम्यो बालो मे दर्शनाय त्वयाऽऽनेयः इति नृपेणाज्ञप्तः। स नापित प्रातरुत्थायाखिल पुरमन्विष्य दृष्ट्वापि च तत्र तत्रातिरम्यान्बालान्स्वसुतसमानानमत्वा तमेव राजवेश्मनि नीत्वा राज्ञे निवेदयामास स्वामिन्नानीतोऽयं रम्यतमो बाल इति। |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| राजा से निवेदन करने लगा कि स्वामी सब से सुन्दर ये बालक ले आया. | |
| राजा उस लड़के को बुझे हुए अंगारे के समान, काणा, गञ्जा, लटी हुई बांह और जंघा वाला और बड़े और लम्बे पेटवाला देख कर 'यह दुष्ट मेरी हंसी करता हुआ' ऐसा मान कर गुस्सा होगया और कहने लगा कि अरे पाजी यह क्या है । नाई राजा को क्रुद्ध देख कर हाथ जोड़ कर बोला । हे राजाधिराज ! मैं आपका चरण पकड़ता हूं यह हंसी नहीं है बल्कि मेरे दिल में यही निश्चय है कि ऐसा [ सुन्दर बालक ] त्रिलोकी में नहीं है आपकी नगरी की तो क्या बात है । राजा, मोह रूपी ग्रह से पकड़े हुए चित्तवालों की यही हालत होती है यह मान कर कोप त्यागता हुआ यह दुनिया की कहावत है . | राजा च तमुपशान्तानलाङ्गाराभं काणं खल्वाटं कृशहस्तबाहुजङ्घं स्थूललम्बोदरं दृष्ट्वोपहासमयं खलः कृतवान्मयीति मत्वा चुकोप, उवाच च रे जाल्म किमिदमिति। नापितश्च कुपितं नृपं ज्ञात्वा कृताञ्जलिर्भूत्वोवाच राजेन्द्रमौले ! तव चरणमुपालभे नायमुपहासः किन्तु मे मनसीदृशोयमेव निश्चयो यन्नास्तीदृक्त्रिलोक्यां तव पुर्य्यास्तु का कथा। राजा च सत्यमीदृशोयं रागमहगृहीतचित्तदशेति मत्वा कोपं तत्याजेति लौकिकी गाथा. |
| चौथी—'अंधे के हाथ बटेर' कहावत है. | ४ चतुर्थः अन्धचटकन्यायः. |
| जैसे अचानक अंधे के हाथ आई हुई चिडिया अंधे ने पकड़ली यह लोक में मशहूर होगई तैसेही भाग्य ने प्राप्त किया जो अभीष्ट है उसे अपने | यथाऽकस्मादन्धस्य हस्ते पतितश्चटकोऽन्धेन गृहीत इति लोके प्रसिद्धिमगात् तथा दैवाल्लब्धमभीष्टं स्वेष्टदेवादिदत्तं मन्यन्तेऽबुधाः. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| दृष्ट देवादि से दिया हुआ अज्ञानी मानते हैं. | |
| पाँचवां 'घुणाक्षरन्याय' है. | ५ पञ्चमो घुणाक्षरन्यायः. |
| जैसे घुन [कीड़े] से खाये हुए काष्ठादि में अचानकही ककारादितुल्य छिद्र हो जाने पर घुनने अक्षर बनाये हैं ऐसा अज्ञानी लोगों से मान लिया जाता है. | यथा घुणेन भक्षिते काष्ठादावकस्मात्ककारादिसदृशच्छिद्रेषु सत्सु घुणेनाक्षराणि निर्मितानीति कल्प्यतेऽबुधैः. |
| छठा-'मेंडक के तोलने की कहावत' साफ है. | षष्ठः मण्डूकतोलनन्यायः (स्पष्टः) |
| सातवां-'छेदवाले घड़े में जल की कहावत' साफ है. | सप्तमः सच्छिद्रघटाम्बुन्यायः (स्पष्टः) |
| जहां फ़िजूलही परिश्रम हो और कुछ मतलब न सिद्ध हो वहां ये दोनों न्याय प्रवृत्त होते हैं. | यत्र वृथैवपरिश्रमः स्यात् नकाचिदभीष्टसिद्धिस्तत्रोपरोक्तौ द्वौ न्यायौ प्रवर्तेते. |
| जैसे कुछ तोलने के लिये कुछ मेंडकों को तराजू में रक्खा तो दूसरे उछल कर चलें गये, तैसेही और २ जगह भी जानना. | यथा केपुचिद्दुरेष्वभीष्टमानपूर्त्यर्थं तुलायामारोपितेष्वन्ये उत्प्लुत्य गच्छन्ति तथा प्रकृतेऽपि. |
| ८ "बूढी क्वारी के वाक्य की कहावत,, | अष्टमः वृद्धकुमारीवाक्यन्यायः. |
| जहां एकही बात या काम से सब मनोरथों की सिद्धि होजाय,वहां ऊपर कही हुई कहावत काम में आती है। जैसे किसी बूढ़ी अनव्याही स्त्री से इन्द्र ने कहा कि वर मांग।उसनेवर | यत्रैकयैव क्रिययाखिलाभीष्टसिद्धिः स्यात् तत्रोपरोक्तो न्यायः प्रयुज्यते। यथा काचिद्वृद्धकुमारी इन्द्रेणोक्ता वरं वृणीष्व सा च वरमवृणीत "पुत्रा मे बहुक्षीरघृतमोदनं कांस्य- |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| राजा से निवेदन करने लगा कि स्वामी सब से सुन्दर ये बालक ले आया. | |
| राजा उस लड़के को बुझे हुए अंगारे के समान, काणा, गंजा, छोटी हुई बांह और जंघा वाला और बड़े और लम्बे पेटवाला देख कर 'यह दुष्ट मेरी हंसी करता हुआ' ऐसा मान कर गुस्सा होगया और कहने लगा कि अरे पाजी यह क्या है । नाई राजा को क्रुद्ध देख कर हाथ जोड़ कर बोला । हे राजाधिराज ! मैं आपका चरण पकड़ता हूं यह हंसी नहीं है बल्कि मेरे दिल में यही निश्चय है कि ऐसा [ सुन्दर बालक ] त्रिलोकी में नहीं है आपकी नगरी की तो क्या बात है । राजा, मोह रूपी ग्रह से पकड़े हुए चित्तवालों की यही हालत होती है यह मान कर कोप त्यागता हुआ यह दुनिया की कहावत है . | राजा च तमुपशान्तानलाङ्गाराभं काणं खल्वाटं ह्रस्वबाहुजङ्घं स्थूललम्बोदरं दृष्ट्वोपहासमयं खलः कृतवान्मयीति मत्वा चुकोप, उवाच च रे जाल्म किमिदमिति । नापितश्च कुपितं नृपं ज्ञात्वा कृताञ्जलिर्भूत्वोवाच राजेन्द्रमौले ! तव चरणमुपालभे नायमुपहासः किन्तु मे मनसीत्थमेव निश्चयो यदास्मादृक् त्रिलोक्यां तव पुर्य्यास्तु का कथा । राजा च सत्यमीदृश्येव रागमहगृहीतचित्तदशेति मत्वा कोपं तत्याजेति लौकिकी गाथा. |
| चौथी-'अंधे के हाथ बटेर' कहावत है. | ४ चतुर्थः अन्धचटकन्यायः. |
| जैसे अचानक अंधे के हाथ आई हुई चिड़िया अंधे ने पकड़ली यह लोक में मशहूर होगई वैसेही भाग्य ने प्राप्त किया जो अभीष्ट है उसे अपने | यथाऽकस्मादन्धस्य हस्ते पतितश्चटकोऽन्धेन गृहीत इति लोके प्रसिद्धिमगात् तथा दैवाल्लब्धमभीष्टं स्वेष्टदेवादिदत्तं मन्यन्तेऽबुधाः. |

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| इष्ट देवादि से दिया हुआ अज्ञानी मानते हैं. | |
| पाँचवां 'घुणाक्षरन्याय' है. | ५ पञ्चमो घुणाक्षरन्यायः. |
| जैसे घुन [कीड़े] से खाये हुए काष्ठादि में अचानकही ककारादितुल्य छिद्र हो जाने पर घुनने अक्षर बनाये हैं ऐसा अज्ञानी लोगों से मान लिया जाता है. | यथा घुणेन भक्षिते काष्ठादावकस्मात्ककारादिसदृशच्छिद्रेषु सत्सु घुणेनाक्षराणि निर्मितानीति कल्प्यतेऽबुधैः. |
| छठा-'मेंडक के तोलने की कहावत' साफ है. | षष्ठः मण्डूकतोलनन्यायः (स्पष्टः) |
| सातवां-'छेदवाले घड़े में जल की कहावत' साफ है. | सप्तमः सच्छिद्रघटाम्बुन्यायः (स्पष्टः) |
| जहां फ़िजूलही परिश्रम हो और कुछ मतलब न सिद्ध हो वहां ये दोनों न्याय प्रवृत्त होते हैं. | यत्र वृथैवपरिश्रमः स्यात् नकाचिदभीष्टसिद्धिस्तत्रोपरोक्तौ द्वौ न्यायौ प्रवर्तेते. |
| जैसे कुछ तोलने के लिये कुछ मेंडकों को तराजू में रक्खा तो दूसरे उछल कर चलें गये, तैसेही और २ जगह भी जानना. | यथा केषुचिद्दर्दुरेष्वभीष्टमानपूर्त्यर्थं तुलायामारोपितेष्वन्ये उत्प्लुत्य गच्छन्ति तथा प्रकृतेऽपि. |
| ८ "बूढी क्वारी के वाक्य की कहावत,, | अष्टमः वृद्धकुमारीवाक्यन्यायः. |
| जहां एकही बात या काम से सब मनोरथों की सिद्धि होजाय,वहां ऊपर कही हुई कहावत काम में आती है। जैसे किसी बूढ़ी अनब्याही स्त्री से इन्द्र ने कहा कि वर मांग। उसनेवर | यत्रैकयैव क्रिययाखिलाभीष्टसिद्धिः स्यात् तत्रोपरोक्तो न्यायः प्रयुज्यते। यथा काचिद्वृद्धकुमारी इन्द्रेणोक्ता वरं वृणीष्व सा च वरमवृणीत "पुत्रा मे बहुक्षीरघृतमोदनं कांस्य- |

## वार्ता क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| मांगाकि "मेरे पुत्र बहुतसा दूध घी भात कांसे के बर्तनों में खाया करें" इसने एकही वाक्य से पति, पुत्र, गौ, धन और धान्य सबही मांगलिये ऐसेही और जगह भी. | पात्र्यां भुञ्जीरन्निति" अनया एकेनैव वाक्येन पतिः पुत्राः गावो धनं धान्यं सर्वमेव संगृहीतम्भवति इत्थ प्रकृतेऽपि. |
| ९ "कीड़े और घिरोरी की कहावत" | नवमः कीटभृङ्गन्यायः |
| जैसे कीड़ा घिरोरी से पकड़ा हुआ उसी को हरवक्त ध्यान करता हुआ उस कीही शकल बन जाता है वैसेही हरि भक्त प्रेम से वा द्वेष से उस ईश्वर को ध्यान करते हुए उसी के रूप में लीन हुए और आगे होंगे. | यथा कीटो भृङ्गेण गृहीतस्तमेव प्रतिक्षणमभिध्यायन् तत्स्वरूपतामेति तथाहरिभक्ताः प्रेम्णा द्वेषेण वा लक्ष्मीश्वरं ध्यायन्तस्तत्स्वरूपतां गता यास्यन्तिचेति. |
| १० "बेल और गञ्जे की कहावत". | दशमः बिल्वखल्वाटन्यायः. |
| कमबख्त सब जगह ही दुःख पाते हैं यह जहां जाहिर किया जाता है वहां यह कहावत होती है भर्तृहरि राजा की नीचे लिखी कहन इस कहावत को स्पष्ट करती है. | हतभाग्यास्सर्वत्रैव दुःखमनुभवन्तीति यत्र सूच्यते तत्रायं न्यायः प्रवर्तते भर्तृहरेरुक्तिरेनं न्यायं निम्नपद्येन स्पष्टीकरोति. |
| "सूर्य की किरणों से सिर में सन्तापित हुआ कोई गंजा छायाकी जगह चाहता हुआ भाग्यवश ताड़ के नीचे गया वहां भी शीघ्रही एक गिरे हुए बड़े फल से आवाज के साथ खोपड़ी गिरगई, अक्सर जहां मन्दभागी जाता है वहीं आपत्ति जाती है. | खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः सन्तापितो मस्तके, वाञ्छन्देशमनातपं विधिवशात्तालस्य मूलं गतः; तत्राप्यानुमहाफलेन पतता भग्नं सशब्दं शिरः, प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः. |
| ११ "हाथ कंगन को आरसी क्या ? | एकादशः नहि करकङ्कणदर्शनायादर्शापेक्षा न्याय. |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
| --- | --- |
| प्रत्यक्ष प्रमाण में यह कहावत इस्तेमाल होती है. | प्रत्यक्षप्रमाणे उपरोक्तो न्यायः प्रयुज्यते. |
| १२ मरे को मारना. | द्वादशः मृतमारणन्यायः. |
| १३ पानी को मथना. | त्रयोदशः जलमन्थनन्यायः. |
| १४ कौए के दान्त जाँचना. | चतुर्दशः काकदन्तपरीक्षान्यायः. |
| १५ गधे के रोम गिनना (यह चारों कहावत फ़िजूलपन ज़ाहिर करती हैं) | पञ्चदशः गर्दभरोमगणनन्यायः. (वैयर्थ्यद्योतकमिदं न्यायचतुष्टयम्.) |
| १६ रस्सी और साँप की कहावत. | षोडशः रज्जुसर्पन्यायः. |
| भ्रम से जहां उलटा दिखलाई देता है वहां यह कहावत होती है । जैसे सांप में रस्सी का भ्रम और रस्सी में सांप का भ्रम । ऐसेही और जगह भी. | यत्र विपरीताभासो भवति तत्रायं न्यायः प्रवर्तते । यथा सर्पे रज्जुभ्रान्तिः रज्जौ सर्पभ्रान्तिस्तथा-प्रकृतेऽपि. |
| १७ "कौए की आंख की कहावत" | सप्तदशः काकाक्षिन्यायः. |
| जैसे कौए की एकही आँख दोनों आँखों से सम्बन्ध रखती है तैसे और जगह भी जानना. | काकस्यैकमेव चक्षुरिन्द्रियं गोलकद्वये यथा सम्बध्यते तथा प्रकृतेऽपि. |
| १८ जो आखिर में रण्डा का विवाह हो तो पहिलेही क्यों नहो । जो करना वह पहिलेही करना चाहिये इस मतलब में यह कहावत होती है. | अष्टादशः अन्त्ये रण्डाविवाहश्चेदादावेव कुतो न सः यत्कर्तव्यं तत्पूर्वमेव करणीयमित्यभिप्रायेऽयं न्यायः प्रवर्तते. |
| १९ जितनी सम्पत्ति उतनी विपत्ति. या जितना सिर उतनी तक़्लीफ़ (इसका अर्थ स्पष्ट है) | एकोनविंशः यावच्छिरस्तावती शिरोवेदनान्यायः स्पष्टः. |
| २० "सुई और कड़ाह की कहावत" | विंशः सूचीकटाहन्यायः. |
| अनेक व्याख्येय वाक्य और पदों में पहिले पढ़ा हुआ वाक्य या पद जिस- | अनेकेषु वाक्येषु पदेषु वा व्याख्येयेषु प्रथमपठितमपि वाक्यं पदम्वा बहु- |

## बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| में बहुत देर लगै उस छोड़कर बीच में या अखीर में पड़ा हुआ थोड़ी देर में व्याख्या किये जानेवाला वाक्य या पदही पहिले कहाजाता है वहां यह कहावत है. | वक्तव्य परित्यज्य मध्येऽन्ते वा पठितं स्वल्पवक्तव्यं पूर्वमेवाख्यायतेऽत्रायं न्यायः प्रयुज्यते. |
| जैसे लुहार के पास पहिले कोई कड़ाह बनवाने वाला आया पीछे सुई बनवाने वाला आ मौजूद हुआ, तहां जैसे लुहार पहिले बनाने योग्य कड़ाह को। बहुत देर में बनने के कारण, छोड़ कर पीछे बनाने को आई हुई थोड़े काल में बनाने योग्य सुई को पहिले बनाता है तैसेही और २ बातों में समझना. | यथा लोहकारम्प्रति पूर्वं कश्चित् कटाहोत्पादनार्थी आगतः पश्चात्सूच्युत्पादनार्थी प्राप्तः, तत्र यथा लोहकारः प्रथमं कर्तव्यत्वेन प्राप्तमपि कटाहं बहुकालसाध्यत्वात्परित्यज्य पश्चात्कर्तव्यतया प्राप्तामपि स्वल्पकालसाध्यां सूचीं पूर्वमुत्पादयति तथा प्रकृतेऽपि. |
| इक्कीसवाँ ऊँट और लठिया की कहावत है | एकविंशः उष्ट्रलगुडन्यायः. |
| अपने मत में दूसरे से आरोपण किये हुए दूषण उसीके मत में डाल दिये जांय वहां यह कहावत होती है. | स्वमते परेणोद्भाव्यमानानां दूषणानां तन्मत एव पातनेऽयं न्यायः प्रवर्तते. |
| जैसे ऊंट से लेजाई हुई लठियों से ऊंटही स्वयं पिटता है। तैसे नैयायिकों के उठाये हुए दोषों से उनका मतही वेदान्तियों से काट दिया जाता है. | यथोष्ट्रेणोह्यमानेनैव लगुडेन तत्प्रहारः क्रियते तथा तार्किकोत्थापितदूषणैस्तन्मतमेव वेदान्तिभिर्निराक्रियते. |
| बाईसवाँ मुर्दे के उबटने की कहावत. | द्वाविंशः शवोद्वर्तनन्यायः. |
| तेईसवाँ अन्धे को दर्पण की ,, | त्रयोविंशः अन्धदर्पणन्यायः. |
| चौबीसवाँ कुत्ते की पूंछ को सीधा करना. | चतुर्विंशः श्वपुच्छोन्नामनन्यायः. |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| पचीसवीं वन में रोने की कहावत. | पञ्चविंशः अरण्यरोदनन्यायः. |
| छब्बीसवीं बहिरे के कान में जप की कहावत. | षड्विंशः बधिरकर्णजापन्यायः. |
| यह पाचों न्याय कहावत फिजूलपन ज़ाहिर करता है. | एतन्न्यायपञ्चकं वैयर्थ्यद्योतकं. |
| सत्ताईसवीं मक्खी और जोंक की कहावत. | सप्तविंशः मक्षिकाजलौकान्यायः. |
| स्वभाव से सब आदमी अपनी इष्ट वस्तुही को लेता है जैसे मक्खी सब देह को छोड़ कर घाव परही बैठती है और स्त्री के कुची पर लगाई हुई जोंक दुध छोड़ खून को पीती है तैसेही और२ जगह भी. | प्रकृत्याखिलो जनः स्वेष्टं वस्त्वेव गृह्णाति यथा मक्षिका सर्वं देहं परित्यज्य व्रणमेवावलम्बते, जलौकाऽपि स्त्रीस्तनाग्रे लग्ना क्षीरं त्यक्त्वा रुधिरं पिबति तथा अन्यत्रेऽपि. |
| २८ हंस दूध की कहावत और सूप की कहावत है जहां सार मात्रही ग्रहण किया जाता है वहां यें दोनों कहावत होती है. | अष्टाविंशः हंसक्षीरन्यायः, शूर्पन्यायश्च यत्र सारमात्रमेव गृह्यते तत्रैतौ न्यायौ प्रवर्तेते. |
| जैसे हंस जल को छोड़ कर दूध को ही लेता है जैसे छाज भुस वगैरह कुड़े को छोड़ कर शुद्ध अन्न को ही रख लेता है तैसेही जो पुरुष इन दोनों न्यायों से सज्जनों के गुणों को ही ग्रहण करता है वही शिष्य भाव से अङ्गीकार करना चाहिये. | यथा हंसः जलं त्यक्त्वा क्षीरमेव गृह्णाति यथा शूर्पः तुषाद्यवकरं त्यक्त्वा शुद्धमन्नमवशेषयति तथा यः एताभ्यां न्यायाभ्यां सतां गुणानेव गृह्णाति स एव शिष्यत्वेन स्वीकार्यः. |
| २९. गाये पीछे जात पूछना, या व्याह पीछे वर की जांच करने की कहावत है | एकोनत्रिंशः विवाहानन्तरं वरपरीक्षान्यायः. |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| शिष्य और वैराग्य वगैरह की परीक्षा अवश्य ही करना चाहिये क्योंकि विवाह के पीछे दुलह की जांच नहीं होती. | शिष्यवैराग्यादिपरीक्षा ध्रुवमेव कर्तव्या यतः नहि विवाहानन्तरं वरपरीक्षा भवतीति. |
| ३० कल करे सो आज कर यह कहावत साफ़ है. | त्रिंशः श्वः कर्तव्यमद्य कुरु न्यायः स्पष्टः. |
| ३१ जूओं के डर से कथरी छोड़ना साफ़ है. | एकत्रिंशः यूकाभिया कन्थात्यागन्यायः स्पष्टः. |
| ३२ कैमुतिकन्यायः | द्वात्रिंशः कैमुतिकन्यायः. |
| जब सदाशिव सम्पूर्ण पापयुक्त शरणागतों को भी बन्धन से छुड़ाते हैं तो शरणागत थोड़े पापियों या साधुओं को छुड़ा दें इस में तो कहनाही क्या है. | यदि सदाशिवोऽखिलपापयुतानपि शरणागतान् बन्धनात् मोचयति तदाल्पपापान्वितान्साधून्वा शरणागतान् मोचयतीतिकिमुवक्तव्यं. |
| शिष्य जरूर जांचलेना चाहिये क्योंकि कुत्ते की खाल में रक्खा हुआ गौ का दूध इस कहावत से असत्पात्र में अच्छा उपदेश भी अपवित्र हो जाता है. | अवश्यं परीक्ष्यश्च शिष्यः यतो नहि पवित्रं स्याद्दोश्शिरं श्वदृतौ धृतमिति न्यायेन असत्पात्रे सदुपदेशोप्यपवित्रतां याति. |
| इसी प्रकार शिष्य से भी शास्त्र जांच करकेही परम शील सम्पन्न दयालु, शास्त्र वेत्ता, अद्वैत निष्ठ गुरु करना चाहिये. | एवं शिष्येणापि यथाशास्त्रं परीक्ष्यैव परमशीलसम्पन्नोऽनृशंसः श्रोत्रियोऽद्वैतनिष्ठो गुरुराश्रयणीयः. |
| ३३ टटीरी की कहावत. | ३३ त्रयस्त्रिंशः टिट्टिभन्यायः. |
| दृढ़ निश्चय वाले की ईश्वर की कृपा से कार्य सिद्धि होती है. | दृढाध्यवसायिन ईशानुग्रहात् कार्यसिद्धि र्भवतीति. |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| जैसे किसी टिट्टिभ नाम के पक्षी के किनारे पर रक्खे हुए अण्डों को समुद्र अपने लहरों से बहा लेगया। वह पक्षी इस को सुखा दूंगा इस प्रकार प्रवृत्त हुआ उसको स्त्री आदि से बहुत प्रकार से रोका हुआ भी न माना बरन उनको भी सहायक होने के लिये बुलाया। उनको उड़ने और फिर नीचे आने से बहुधा क्लेश पाते हुए सब को देख कर दयालु नारद उस के पास गरुड़ को भेजते हुए, तब उनके पंखों की हवा से सूखता हुआ समुद्र डरा हुआ अण्डे लाकर पक्षी को देता हुआ. | यथा कस्यचिट्टिट्टिभाख्यस्य पक्षिणः तीरस्थान्यण्डानि समुद्र उत्सेकेनापजहार स च पक्षी एनं शोषयामीति प्रवृत्तः भार्यादिभिर्बहुधा वार्यमाणोपि नोपरराम। प्रत्युत तानपि सहकारिणो वव्रे। तांश्च पतनोत्पतनाभ्यां बहुधा क्लिश्यतः सर्वानवलोक्य कृपालुर्नारदः तत्समीपे गरुडं प्रेषयामास ततस्तत्पक्षवातेन शुष्यन् समुद्रो भीतोऽण्डान्यानीय पक्षिणे ददौ. |
| ३४ अहल्कार (राज पुरुष) सेवन करने चाहिये और राजा भी सेवन करना चाहिये सिर्फ़ राजाही नहीं यह कहावत साफ़ है. | ३४ वर्गः सेव्यं नृपः सेव्यो न सेव्यः केवलो नृपः न्यायः स्पष्टः. |
| तत्त्व जानने की इच्छा वाले पुरुष से केवल श्रवणही नहीं सेवन करना चाहिये बल्कि उसके अङ्ग रूप शम दमादि और मननादि सेवन करने चाहिये इसी प्रकार राजा को सेवन करने की इच्छा वाला पुरुष उसके मंत्री वग़ैरह की भी सेवा करे. | तत्वबुभुत्सुना केवलं श्रवणमेव न सेव्यं किन्तु तदङ्गभूताः शमादयो मननादयश्च सेव्याः इत्थमेव राजानं सिषेविषुस्तन्मन्त्र्यादीनपि सेवेत. |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| शिष्य और वैराग्य वग़ैरह की परीक्षा अव्वल ही करना चाहिये क्योंकि विवाह के पीछे दुलह की जांच नहीं होती. | शिष्यवैराग्यादिपरीक्षा प्रागेव कर्तव्या यतः नहि विवाहानन्तर वरपरीक्षा भवतीति. |
| ३० कल करे सो आज कर यह कहावत साफ़ है. | त्रिंशः श्वः कर्तव्यमद्य कुरु न्यायः स्पष्टः. |
| ३१ जूओं के डर से कथरी छोड़ना साफ है. | एकत्रिंशः यूकाभिया कन्थात्यागन्यायः स्पष्टः. |
| ३२ कैमुतिकन्यायः | द्वात्रिंशः कैमुतिकन्यायः. |
| जब सदाशिव सम्पूर्ण पापयुक्त शरणागतों को भी बन्धन से छुड़ाते हैं तो शरणागत थोड़े पापियों वा साधुओं को छुड़ा दें इस में तो कहनाही क्या है. | यदि सदाशिवोऽखिलपापयुतानपि शरणागतान् बन्धनात् मोचयति तदाल्पपापान्वितान्साधून्वा शरणागतान् मोचयतीति किमुवक्तव्यं. |
| शिष्य जरूर जांचलेना चाहिये क्योंकि कुत्ते की खाल में रक्खा हुआ गौ का दूध इस कहावत से असत्पात्र में अच्छा उपदेश भी अपवित्र हो जाता है. | अवश्यं परीक्ष्यश्च शिष्यः यतो नहि पवित्रं स्याद्गोक्षीरं श्वदृतौ धृतमिति न्यायेन असत्पात्रे सदुपदेशोऽप्यपवित्रतां याति. |
| इसी प्रकार शिष्य से भी शास्त्र जांच करकेही परम शील सम्पन्न दयालु, शास्त्र वेत्ता, अद्वैत निष्ठ गुरु करना चाहिये. | एवं शिष्येणापि यथाशास्त्रं परीक्ष्यैव परमशीलसम्पन्नोऽनृशंसः श्रोत्रियोऽद्वैतनिष्ठो गुरुराश्रयणीयः. |
| ३३ टटीरी की कहावत. | ३३ त्रयस्त्रिंशः टिट्टिभन्यायः. |
| दृढ़ निश्चय वाले को ईश्वर की कृपा से कार्य सिद्धि होती है. | दृढाध्यवसायिन ईशानुग्रहात् कार्यसिद्धिर्भवतीति. |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| जैसे किसी टिट्टिभ नाम के पक्षी के किनारे पर रक्खे हुए अण्डों को समुद्र अपने लहरों से बहा लेगया। वह पक्षी इस को सुखा दूंगा इस प्रकार प्रवृत्त हुआ उसकी स्त्री आदि से बहुत प्रकार से रोका हुआ भी न माना वरन उनको भी सहायक होने के लिये बुलाया। उनको उड़ने और फिर नीचे आने से बहुधा क्लेश पाते हुए सब को देख कर दयालु नारद उस के पास गरुड़ को भेजते हुए, तब उनके पंखों की हवा से सूखता हुआ समुद्र डरा हुआ अण्डे लाकर पक्षी को देता हुआ. | यथा कस्यचिट्टिट्टिभाख्यस्य पक्षिणः तीरस्थान्यण्डानि समुद्र उत्सेकेनापजहार स च पक्षी एनं शोषयामीति प्रवृत्तः भार्यादिभिर्बहुधा यार्यमाणोपि नोपरराम। प्रत्युत तानपि सहकारिणो चक्रे। तांश्च पतनोत्पतनाभ्यां बहुधा क्लिश्यतः सर्वानवलोक्य कृपालुर्नारदः तत्समीपे गरुडं प्रेषयामास ततस्तत्पक्षवातेन शुष्यन् समुद्रो भीतोऽण्डान्यानीय पक्षिणे ददौ. |
| ३४ अहल्कार (राज पुरुष) सेवन करने चाहिये और राजा भी सेवन करना चाहिये सिर्फ़ राजाही नहीं यह कहावत साफ़ है. | ३४ चक्रे सेव्यं नृपः सेव्यो न सेव्यः केवलो नृपः न्यायः स्पष्टः. |
| तत्व जानने की इच्छा वाले पुरुष से केवल श्रवणही नहीं सेवन करना चाहिये वल्कि उसके अङ्ग रूप शम दमादि और मननादि सेवन करने चाहिये इसी प्रकार राजा को सेवन करने की इच्छा वाला पुरुष उसके मंत्री वग़ैरह की भी सेवा करे. | तत्वबुभुत्सुना केवलं श्रवणमेव न सेव्यं किन्तु तदङ्गभूताः शमादयो मननादयश्च सेव्याः इत्थमेव राजानं सिषेवयिषुस्तन्मन्त्र्यादीनपि सेवेत. |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| ३५ सांप छछून्दर की कहावत. | ३५ पञ्चत्रिंशः सर्पछुछुन्दरीन्यायः. |
| ३६ छुरी खर्बूजे की कहावत. | ३६ षट्त्रिंशः क्षुरिकाचिर्भटिकान्यायः. |
| जहां सब तरह से एकही चीज़ का नुक्सान हो वहां यह दोनों कहावतें इस्तेमाल होती हैं. | यत्र सर्वथा एकस्य वस्तुन एव हानिः सम्भाव्यते तत्र इमौ न्यायौ प्रवर्तेते । |
| जैसे किसी साँपने मूस के धोखे छछून्दर पकड़ली अब उसकी बू से जान कर उसको उगलना चाहता हुआ भी कोढ़ के डर से नहीं उगलता और अन्धे पनके डर से न निगलताही है इसी से बड़े संकट में पड़ा हुआ है (अर्थात् दोनों तरह से सांपही की हानि है) छुरी जब खर्बूजे पर गिरे तो भी खर्बूजे काही नुक्सान और जो खर्बूजा छुरी पर गिरे तो भी खर्बूजे काही नुक्सान होता है. | यथा केनचित्सर्पेण मूषकभ्रमाद्दीर्घतुण्डिका कवलिता अधुना तद्गन्धात्तामुज्जिगीर्षुरपि कुष्ठभयान्नोद्गिरति अन्धत्वभयान्न गिलत्येवातः महत्सङ्कटे पतितः क्षुरिका यदि चिर्भटिकामुपरिपतेत्तदापि चिर्भटिकाया एव हानिः यदि चिर्भटिका क्षुरिकामुपरिपतेत् तदापि चिर्भटिकाया एव हानिः. |
| ३७ घड़े के भीतर दीपक की कहावत. | ३७ घटप्रदीपन्यायः. |
| जहां कहन मात्रही किया जाय अपनी अक्ल से कुछ कम ज़्यादह नहीं वहां, अथवा तालिबइल्म को केवल किताब में ही बोध हो और जगह नहीं वहां यह न्याय प्रवृत्त होता है. | यत्र कथनमात्रमेव क्रियते नतु न्यूनाधिक्यं स्वबुद्ध्या, तथाथवा विद्यार्थिनः पुस्तकमात्रे एव बोधः नत्वन्यत्र तत्रायं न्यायः प्रवर्तते. |
| जैसे घड़े में रक्खा हुआ दीपक घड़े के उदर मात्र को ही प्रकाशित करता है तैसेही और भी जानो. | यथा घटनिष्ठो दीपो घटस्योदरमात्रमेव भासयति तथा प्रकृतेऽपि. |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| ३८ पोस्ती और मल्लाह की कहावत | ३८ अहिभुक्कैवर्तन्यायः. |
| इस कहावत से तादात्म्य ( अपने आपेका ) अध्यास ( भ्रम ) जानना । जैसे कोई पोस्ती नाव पर चढ़ा वह वहां बहुत से आदमियों को देखकर किसी से मैं बदल न जाऊं इस अक़ल से अपने पांव में रस्सी बांध कर पीनक में आगया मल्लाह ने हंसी के लिये उसके पाँव से उस रस्सी को खोल कर अपने पाँव में बाँध लिया. | एतेन न्यायेन तादात्म्याध्यासएव ज्ञेयः यथा कश्चिदहि (पोस्ती) भुग्नावमारुरोह सच तत्र बहुजनसमुदायं दृष्ट्वा केनचिन्मे विनिमयो न स्यादिति धिया स्वपादे रज्जुं बद्ध्वा तन्द्रां प्राप कैवर्तश्चापहासार्थं तत्पादात्तां मोचयित्वा स्वपादेबबन्ध. |
| नाव के पार जाने पर उतरते वक्त वह पोस्ती अपने पाँव में रस्सी न देख कर और मल्लाह के पांव में उसे देख कर यह मैं हूं और मैं यह हूं यह अपने दिल में निश्चय कर वह झगड़ा करने लगा कि अरे मल्लाह तू मैं हूं और मैं तू हूं. | नावि पारंगतायामवरोहणसमयेऽहिभुक् स्वपादे रज्जुमदृष्ट्वा कैवर्तपादे च तांदृष्ट्वाऽहमयमयमहमिति स्वहृदि निश्चित्यारे कैवर्त त्वमहं महञ्च त्वमिति तेन विवादं कृतवान् इति. |
| ३९ रीता घड़ा बोले घना. | ३९ रिक्तो घट एवाधिकं शब्दायते न्यायः |
| मूर्ख लोगही अक्सर इधर उधर बका करते हैं पण्डित नहीं. | अपण्डिता एव बहुधा इतस्ततो विकत्थन्ते नतु पण्डिताः. |
| ४० बाँझ क्या जाने प्रसूता की पीर जिस के लगे सोई जाने. | ४० प्रसूतैव हि जानाति पुत्रप्रसववेदनामितिन्यायः स्पष्टः. |
| ४१ अन्धों में काणा सरदार जहां पेड़ नहीं वहां अण्डही रूख. | ४१ निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपिद्रुमायते. |
| ४२ जितने मुंह उतनी बात. | ४२ यावन्ति मुखानि तावतीः वार्ताः. |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| ४३ जैसा देव वैसी पूजा. | ४३ यादृशो यक्षस्तादृशो बलिः. |
| ४४ गये चौबे होने छब्बे दुबे ही रह गये. | ४४ वृद्धिं मिच्छतो मूलं विनष्टम्. |
| ४५ नई नाइन बांस का नहन्ना. | ४५ नूतना नापिती काचित् तस्या नखच्छिद्वैणुकः. |
| ४६ नये बाबाजी गाजर को संख, बज्यौ तो बज्यौ नहीं कुतर खायौ. | ४६ विरागी नूतनो गृञ्जनस्य शङ्खः यदि ध्मातस्तर्हि ध्मातोनोचेच्चर्वितः |
| ४७ नाच न जाने आंगन टेढ़ा. | ४७ अङ्गणं शंसते वक्रं नर्तनाकुशलो जनः. |
| ४८ किसी का घर जले कोई तापे. | ४८ कस्यचित्तुददेद्वेश्म कश्चिद्धस्तौ प्रतापयेत्. |
| जमाई, उदर, स्त्री, अग्नि, और तालाब ये पाँच जकार मुश्किल से भरे जाते हैं. | जामाता जठरं जाया जातवेदा जलाशयः पूरिता नैव पूर्यन्ते जकाराः पञ्च दुर्भराः। १ |
| माता पैदाइश की जगह, गंगाजी, भगवान और पिता ये पांच जकार मुश्किल से मिलते हैं. | जननी जन्मभूमिश्च जाह्नवी च जनार्दनः जनकः पञ्चमश्चैव जकाराः पञ्च दुर्लभाः। २ |
| —अब हंसी के श्लोक हैं— | —अथ हास्यरस श्लोकाः— |
| १ दो स्त्रियोंवाला मनुष्य बिलके बाहर और बिल के भीतर बैठे हुए बिल्ली और साँप के बीच में मूसे के नाईं भान हुआ करता है. | बिलाद्बहिः बिलस्यान्तः स्थितमार्जारसर्पयोः मध्ये चाखुरिवाभाति पत्नीद्वययुतो नरः। १ |
| २ विष्णु का आगमन सुन जल्दी से सर्पकी रस्सी बना हाथी के चर्म का कौपीन पहन शिव जी आगे दौड़े, अब सांप गरुड़ जी को देख कर कम्पित चित्त हुआ पृथ्वी पर गिर | विष्णोश्चागमनं निशम्य सहसा कृत्वा फणीन्द्रं गुणं, कौपीनं परिधाय च भैकरिणः शंभुः पुरो धावति, दृष्ट्वा विष्णुरथं सकम्पहृदयः सर्पोऽपतद्भूतले, कृत्तिर्विस्खलिता ह्रिया न- |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| पड़ा और गज चर्म फिसल पड़ा अथ लज्जा से नीचे को हुआ है मुख जिनका ऐसे नग्नहर हमारी रक्षा करो. | तमुखो नग्नो हरः पातु वः। २॥ |
| ३ दूसरों का अन्न पाकर हे मूर्ख अपने प्राणों पर दया मत कर, दूसरों का अन्न इस लोक में दुर्लभ है और प्राण तो हर जन्म में मिलते हैं. | परान्नं प्राप्य दुर्बुद्धे मा प्राणेषु दयां कुरु परान्नं दुर्लभं लोके प्राणा जन्मनि जन्मनि। ३। |
| ४ हे असंख्य मनुष्यों की सफ़ाई करने वाले हकीम जी तुम्हारे लिये नमस्कार है यमराज तुम पर अपना भार रख आप मौज करता है. | वैद्यराज नमस्तुभ्यं क्षपिताशेषमानव त्वयि विन्यस्तभारोऽयं कृतान्तः सुखमेधते। ४। |
| ५ गणेशजी के वाहन मूषक को भूखा सर्प खाना चाहता है उस सर्प को स्वामकार्तिक का मोर खाना चाहता है और पार्वती का सिंह गणेशजी को खाना चाहता है पार्वती गंगाजी से द्वेष करती हैं और शिवके मस्तक की अग्नि चन्द्रमा से ईर्षा करता है इस लिये कुटुम्ब के कलह से दुखी हुए महादेव जी भी ज़हर पीगए. | अत्तुं वाञ्छति वाहनं गणपते राखुं क्षुधार्तः फणी, तञ्च क्रौञ्चपतेः शिखी च गिरिजासिंहो ऽपि नागाननम्, गौरी जह्नुसुतामसूयति कलानाथं कपालानलो, निर्विण्णः स पपौ कुटुम्बकलहादीशोऽपि हालाहलम्। ५॥ |
| अथ विवाहों में निमन्त्रणी के श्लोक छ. | अथोद्वाहामन्त्रणश्लोकाः षट्. |
| १ आप सज्जनों के सम्बन्ध से मुझ को क्या २ न लाभ हुआ। बरन सब ही लाभ हुआ, प्रथम जन्म सफल | जातं जन्म कृतार्थतां विकसितं पुण्याम्बुजानां वनं छिन्ना संप्रति सर्वपापपटलिर्दुःखान्धकारो गतः, आ- |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| हुआ, पुण्य रूपी कमलों के बन खिले, सम्पूर्ण पाप रूपी वृक्ष अब कटा, दुःख रूपी अन्धकार गया आनन्द रूपी अङ्कुर कोटि प्रगट हुई, और विघ्न रूपी बन दूर हुआ इत्यादि । १ । | नन्दाङ्कुरकोटयः प्रकटिता विघ्नाटव्यः पाटिता, सम्बन्धे भवतां कृते सुकृतिनां किं किं न लब्धं मया ।१। |
| हे द्विजेन्द्र शिरोमणे ! तीनों जगत के बीच में आप के दूध के समुद्र तुल्य निर्मल यश को सुन कर कौन से पुरुष शिर नहीं कँपाते हैं ! वरन सबही शिर कपाते हैं। इसी लिये भगवान् ब्रह्माजी ने पृथ्वी के नाश होने की शंका से शेषजी के कान नहीं बनाये।२ | न कम्पयन्ति तावकं यशो निशम्य के शिरः पयः पयोधिनिर्मलं द्विजेन्द्र त्रिजगत्त्रये । अतः पितामहो विभुर्भुजङ्गमेश्वरस्य नो चकार शब्दधारकान्धराविघातशङ्कया । २ । |
| आपकी कीर्ति रूपी लता ने, दया के आश्रय को लेकर तीनों लोक रूपी मांचे को पाकर नक्षत्र रूपी कलियां धारण की तिन में से एक चन्द्रमा रूपी कली खिली जिसने त्रिलोकी को दीप्त किया। अब मैं नहीं जानता कि उन सब कलियों के खिलने पर कैसा फल होगा । ३ । | त्वत्कीर्तिव्रततिस्समीरपदवीमासाद्य-लोकत्रयं, मञ्चं व्याप्य चिरन्बभार कलिकाः नक्षत्ररूपेण याः तासां प्रस्फुटमेकमिन्दुकुसुमं त्रैलोक्यमादीपयन्, नो जाने विकचासु तासु भविता सर्वासु कीदृक् फलम् । ३ । |
| —घर की ओर का— | घर पक्षे । |
| हमने आप के यहां, घरों में जो अलभ्य सुख भोगा है सो उसको कैसे प्रशंसा करें, दूसरे संसार में प्राणों सेभी प्यारा अलङ्कृत यह कन्या रूपी | अस्माभिर्यदभोजि गेहविरलं शातं स्तुयामः कथम् । कन्यारत्नमदाश्चलङ्कृतमिदं प्राणादपीष्टं स्तनो । यावच्चित्तमकारि मित्र भवतासेतत्प्रा- |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| रत्न दिया । और हे मित्र ! चित्तानुसार आपने अन्न जलादि से सेवाभी की। अब उन श्री कृष्ण महाराज की जय हो जिनकी कृपा से हम और आप सम्बन्धी हुए. | नादिभिः।श्रीकृष्णो जयताद्धि यस्य कृपया सम्बन्धिनः स्मो वयम् । १ । |
| —दोनों ओर की— | उभय पक्षे । |
| हे प्रभो ! जो अभिलाषा हमारी आपके दर्शनों की बहुत दिनोंसे थी वह आज जिसने पूर्ण की वह श्रीकृष्ण महाराज आपका (हमारा) कल्याण करे ।२। | यदौत्कण्ठ्यं चिरादासीद्दर्शने भवता प्रभो । तदद्य पूरितं येन स कृष्णः शन्तनोतु वः । २ । |
| —कन्या पक्षवालों की— | कन्या पक्षे । |
| हे प्रियवर। जिस समय से आपका दर्शन इस जगह हुआ तभी से हमारे दुःख समूह आप की कृपा से नष्ट हुए और हर्षका पार नहीं है । और दासी तुल्य कन्या, भोजनविधि में शाक और द्रव्यविधि में सुपारी जो२ भक्ति से आपको समर्पण किया वही२ हर्ष पूर्वक आपने स्वीकार किया यह एक हमारा बड़ाही भाग्य है । ३ । | कालादारभ्य यस्मात्प्रियवर भवतां दर्शनं नोऽद्य जातम्। दुःखौघा नो विनष्टः प्रभुवर कृपया नास्ति हर्षस्य पारः दासीकल्पा च कन्या ह्यशनवसुविधौ शाकपूगीफलादि यद्यद्भक्त्यार्पितं यो नियतिरियमहो स्वीकृतं तत्सहर्षम् । ३ । |
| पक्षियों का राजा गरुड़ उनका राजा विष्णु उनका पुत्र मदन तिनके शत्रु शिव उनके चार अक्षर का नाम मृत्युञ्जय सो इसका पहला आधा आप के शत्रुओं के यहां और पिछला आधा आप के यहां रहे । १ । मृत्युञ्जयः | अथाशीर्वादात्मकाः श्लोकाः<br>विराजराजपुत्रारेर्यन्नामचतुरक्षरम् ।अर्धं वसतु शत्रूणामुत्तरं तव मन्दिरे१ |

## कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
| --- | --- |
| १ आकाश में कौन शोभित होते हैं—(भेहशः) २ राक्षसपति किसने मारा-(रामेण) ३ समुद्र में कौन डूबता है-(मैनाकः) ४ तरुणियों का विलास कैसा है (मंथरं) ५ सज्जनों से क्या किया जाता है (सच्चिरं) ६ राजा का पत्र क्या है (सारङ्गः) ७ अर्जुन का धनुष कौन है (गांडीव) ८ राम की स्त्री का हरने वाला कौन (रावणः) मेरे प्रश्न के उत्तर का जो मध्यमाक्षर पद है वह तुम्हारे लिये आशीर्वाद है । २ । | कः खे भाति हतो निशाचरपतिः केनाम्बुधौ मज्जति । कः कीदृक् तरुणी विलासगमनं किं कार्यते सज्जनैः । पत्रं किं नृपतेः किमर्जुनधनुः को रामरामाहरः प्रश्नोत्तरमध्यमाक्षरपदं यत्तत्तवाशीर्वचः । २ । |
| स्त्रियों की लावण्यता कहां है-(वपुषि) आकाश में कौन विचरते हैं-(अण्डजाः) सब से ऊंची आवाज़ किनकी होती है-(भेरीणां) स्त्री पुरुष कहां विहार करते हैं-(एकान्ते) भगवान् सीतापति ने किन में अपना पौरुष दिखाया-(रक्षःसु) इन प्रश्नों के उत्तर का जो बीच के अक्षर घटित देव है वह तुम्हारे कल्याण के लिये हो । ३ | लावण्यं क नु योषितां नभसि के सञ्चारमातन्वते । केषामुच्चतरा भवन्ति निनदाः क क्रीडतो दम्पती । केषु स्वं प्रकटीचकार भगवान् सीतापतिः पौरुषम् तत्प्रश्नोत्तरमध्यवर्णघटितो देवोऽस्तु वः श्रेयसे । ३ । |

## तेईसवां अध्याय—त्रयोविंशोऽध्यायः ।

### अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

श्रीमच्छारदापीठाधीश्वरश्रीजगद्गुरुशङ्कराश्रमाचार्येभ्यो निवेदितं प्रशंसापत्रम्मयपुरवासिभिः ।

## प्रशंसापत्रम् ।

श्रीशः पायात् ।

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यवर्यपदवाक्यप्रमाणपारावारपारीण, यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाध्यष्टाङ्गयोगानुष्ठाननिष्ठ, तपश्चर्याचरणचक्रवर्त्यनाद्यविच्छिन्नगुरुपरम्पराप्राप्तपञ्चमतस्थापनाचार्य, साङ्ख्यत्रयप्रतिपादकवैदिकमार्गप्रवर्तक, निखिलनिगमागमसारहृदयश्रीमत्सुधन्वनः साम्राज्यप्रतिष्ठापनाचार्यश्रीमद्राजाधिराजगुरुभूमण्डलाचार्यचातुर्वर्ण्यशिक्षकगोन्तीतीरवासश्रीमद्द्वारकापुरवराधीश्वरपश्चिमाम्नायश्रीमच्छारदापीठाधीश्वरश्रीमत्केशवाश्रमस्वामिदेशिकवरकरकमलसञ्जातश्रीशारदापीठाधीश्वरश्रीमद्राजराजेश्वरशङ्कराश्रमस्वामिनांपदारविन्देषु मयराष्ट्रनगरीनिवासिनां [illegible]दीनां प्रणतिपुरस्सरा विज्ञप्तयस्समुल्लसन्तुतराम् ।

भगवतामेतद्देशे श्रीमच्छारदापीठपूर्वाचार्यपार[illegible] मधुपुरीप्रमुखेभ्यः प्रस्थानेभ्यः एतच्चातुर्मास्यप्र[illegible] (मेरठ)पत्तने समासीनत्वात्प्राप्तपथाः यथैवद्रा[illegible] [illegible] अहमदाबादसूरतसिद्धपुरोज्जैन्यागराप्र[illegible] वैदिकसिद्धान्तान्तर्हृदयप्रधानपदार्थाः सन्तु [illegible] आदिकाः स्वस्वनियतधर्मानुवर्तिन्यः [illegible] द्यावधि मेयपत्तने (मयराष्ट्रे) श्रुतिस्मृति[illegible] प्रमाणगणैर्वेदानां परमेश्वरैकनिर्मातृत्वस्वतः [illegible] यत्वप्रतिमाराधनस्योपासनान्तर्गततया यथो[illegible] दिप्रक्रियायाः पुनः श्रुतिमतनर्कविरोध[illegible]

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च।

धर्मतीर्थादिसेवनप्रमाणमात्रसञ्चारितत्यादयो धर्माः तत ऊर्ध्वं योगज्ञानयोस्तद्वदेव सपरिकरनिरूपणं चात्युच्चैरादरभरादध्यध्यायि। एतावता सर्वं चात्र सदसद्विचारचातुरीधुरीणात्यपगतशङ्काकलङ्कसामान्याश्चाक्षितः प्रसन्नात्मानोऽजायन्त यथावत् येच तत्र विप्रतिपद्यमानमनसः प्रमादिजनाः तेऽपि चात्यर्थं निजमतिकर्दमेभ्यो यथोत्साहतप्रबोधवारिधाराभिः प्रविमुक्ततराः भवन्त्येव तत्वतः इत्थमत्र सर्वं वयं महाश्चर्यवैश्यादयो जगद्गुरुभिरपितितरां कृतार्थीकृताश्चानन्दिता भवामः शिष्यगणाः। इत्थञ्च जगद्गुरुचरणेष्वस्मत्कर्तव्यतानुरूपञ्च श्रद्धाभक्तिभ्यां यथोचितः सत्कारः प्रयुक्तः प्रेम्णा परं स्वीकृतोऽयं गुरुभिरितिमङ्गलमेव सर्वशो नः सर्वेषाम्। सदैव वयमेवमेव विजययाभया कृतार्थी कर्तव्याः शिष्यजनाः श्रीमद्भिर्जगद्गुरुभिरिति महतीहायमस्माकमभ्यर्थना।

भवदीयकृपाभिलाषिणो
नवराष्ट्रनिवासिनो शिष्यजनाः।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| **गुरु के लिये चिट्ठी।** | **गुरून्प्रतिपत्रमिदम्।** |
| श्रीमान् कृष्णमहाराज के लिये नमस्कार है<br>श्रीमान् विद्वानों में अति श्रेष्ठ, सम्पूर्ण गुणी लोगों के गुण समूहों से सुशोभित, अविद्या और जड़तारूपी अंधेरे के दूर करने वाले, अमित प्रभाव वाले, सम्पूर्ण विद्या रूपी समुद्र के पारगत, अत्यन्त सज्जनता की मेड़ दया उदारता और चतुराई की खान, विनय सौधापन और ज्ञानके स्थान श्रीमान् लक्ष्मीनारायण जी को ब्राह्मण वंश के चरण पंकज सेवक सुखानन्द त्रिपाठी की अनेक नमस्कार वचना. | श्रीमते रामानुजाय नमः।<br>श्रीमत्परमविद्वद्वर्याखिलगुणिगुणगणालङ्कृताविद्याजाड्यान्धकारापहामितप्रभावाखिलविद्यापारावारपारीणातिसौजन्यावधिदयौदार्यचातुर्यविनयनिधिविनयार्जवविवेकनिलयेषु श्रीमल्लक्ष्मीनारायणशर्मसु विप्रान्वयाब्जपद्मसेविसुखानन्दत्रिपाठिकृता अनेकशो नतयः समुल्लसन्तुतराम्. |

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पद्याणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| ईश्वर कृपा से दोनों जगह कल्याण हो आगे हाल यह है कि कार के महीने से लेकर अबतक कोई पत्र आपने मेरे पास नहीं भेजा इस लिये मैं आपकी राजी खुशी जानने को बहुत फ़िकर मन्द हूँ अब आशा है कि आप चिट्ठी भेजने में जल्दी करेंगे. | भव्यं स्तादुभयत्र श्रीशानुकम्पया उदन्तोऽयमग्रे वाच्यः यत् आश्विनमासादारभ्याद्यावधि भवद्भिर्न किमपि दलम्प्रेषितं मम सन्निधावतोऽतीवोत्कण्ठितोऽस्मि श्रीमतां श्रेयो ज्ञातुमधुना त्वरिष्यन्ति भवन्तः पत्रप्रेषण इत्याशासे. |
| यहां प्लेग रोग भादों से बहुत ज्यादह है हजारों मनुष्य और स्त्री इसके ग्रास होगये जीते हुए भी और मनुष्यों के होश फ़ाख्ता है ईश्वर अब तो कल्याणही करे। और कोई नया हाल नहीं है जिस को लिखूं. | अत्र महामारीरोगो वरीवर्ति नभ्याभाद्रपदात् सहस्रशो नराश्चास्य कवलत्वङ्गताः जीवन्तश्चाप्यन्येऽस्वस्थचित्तास्सन्ति ईश्वरोऽधुनातु शमेव विदध्यात्। नचान्यन्नूतनं वृत्तं यल्लिखेयम्. |
| सँव्वत १९६१ वैक्रमीयः आश्विनकृष्ण पक्षे द्वितीयारविवार<br>आपका कृपापात्र<br>सुखानन्दत्रिपाठी | सम्वत् १९६१ वैक्रमीयेब्दे आश्विनेऽसिते पक्षे द्वितीया रवियुता<br>भवदीयः कृपापात्र<br>सुखानन्दस्त्रिपाठी |
| २ शिष्य के लिये चिट्ठी। | शिष्यम्प्रतिपत्रमिदम्।<br>श्रीशः पायात्। |
| स्वस्ति श्री विनयार्जव आदि सम्पूर्ण गुण सम्पन्न, विद्यारूपी कमल के भ्रमर, अपने कुलके गुण रूपी भूषणों से भूषित परम श्रद्धालु गुरु शुश्रूषा में तत्पर द्वारकाप्रसाद गुप्त को हमेशा अपने अच्छे शिष्यों की कुशल चाहने वाले सुखानन्द त्रिपाठी की अनेकों आशीर्वाद पहुंचना. | स्वस्तिश्रीमद्विनयार्जवाद्यखिलगुणसम्पन्नविद्याकुशेशयचञ्चरीकस्वकुलगुणभूषणभूषित परमश्रद्धालुगुरुशुश्रूषणतत्परद्वारकाप्रसादाख्ये गुप्ते सदैव सच्छिष्यकुशलाभिलाषिणस्सुखानन्दत्रिपाठिनोऽनेका आशिषो वाच्याः. |

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, पत्रोल्लिखाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| यहां कुशल है तुम्हारे यहां भी कुशल रहे । प्रिय ? बहुत दिन बीते तुमने कोई भी चिट्ठी नहीं भेजी यह बड़ा अचम्भा है क्योंकि पहिले हर महीने राजी खुशी की चिट्ठी भेजने का तुम्हारा एक मामूली कायदा था अब न मालूम क्या हुआ. | अत्र शं तत्रास्तु । भद्र ? बहून्यहानि व्यतीतानि त्वया न किमपि पत्रं प्रेषितमितिमहदाश्चर्यम् यतस्तव पूर्वं प्रतिमासं कुशलपत्रप्रेषणे साधारणो नियम आसीदधुना किंजातमिति न जाने. |
| फिर तुम्हारा सब ओर से कल्याण हो और विद्या में ज्यौंकी त्यौं महनत करके हम गुरुजन लोगों के आनन्द देने वाले हो यह मेरा आशीर्वाद है. | परं कुशलमस्तु सर्वतस्ते विद्यायाञ्च यथाविधि परिश्रमं कृत्वाऽस्मदादीनां गुरुजनानामानन्दप्रदो भवतादितीयम्मदीयाशीः. |
| तुम्हारे संस्कृत पढ़ाने वाले वहां कौन हैं यह भी ख़बर देना और कोई नया हाल हो यह भी । मिती पौष कृष्णापड़वा शुक्रवार सम्वत् १९६४ विक्रमी. | तव संस्कृताध्यापकास्तत्र के इत्यपि सूचनीयमन्यच्चापि नव्यं वृत्तमिति । एकषष्ट्युत्तरैकोनविंशतिशमे विक्रमेऽब्दे पौषकृष्णप्रतिपच्छुक्रयुतापत्रलेखतिथिः. |
| तुम्हारा कुशलेच्छुक,<br>सुखानन्द त्रिपाठी । | युष्मत्कुशलाभिलाषी,<br>सुखानन्दस्त्रिपाठी । |
| वृन्दावन निवासी पौराणिक पं० प्यारे लालजी मिश्र कॊलिये छन्दो बद्ध चिट्ठी. | वृन्दावननिवासिने पुराणाचार्यं प्यारेलालशर्माणम् सुहृदम्प्रतिपत्रमिदम् पद्यैः |
| सो० चिट्ठी पाई काल, तुम्हरे कर कमलन लिखी । जिनज्वर दशा सँभाल, मोहि स्वस्थता देदई । | पत्रिका ह्यो मया प्राप्ता युष्मद्धस्ताब्जलिखिता । यया ज्वरदशा मेऽपि कृता वै विगतज्वरा । १ ॥ |
| सो० छमहु मोर अपराध, पत्र न भेजन कए जो । कारण देह कुसाध, अनृत नहीं कछु या विषे । | क्षम्यतामपराधो मे, पत्राप्रेषणहेतुकः कारणं देहवैकल्यं, नास्त्यनृतं वचोऽत्र मे । २ । |

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| दो० स्मरण योग्य है आप के, सुखानन्द सेवक सदा। ते अनुशासन योग्य है, योग्य कार्य होवहि यदा. | सर्वदा स्मरणीयोऽयं, सुखानन्दाख्य सेवकः। सदैवाज्ञापनीयश्च, मद्योग्यैः कार्यग्रामकैः । ३ । |
| दो० ग्रामहिं जबहीं जाइहीं, पत्र तुम्हार सुनाँउ। घर जैसो कोई काढ़, पुनि प्रिय तुमहिं जनाउँ. | ग्रामं यदा गमिष्यामि, श्रावयिष्यामि ते छदः। पुनस्ते सूचयिष्यामि, अनु शास्ति यथा प्रभोः । ४ । |
| दो० जो कछु उत्तम जीविका, मम भ्राता को जोय। तोतिहिको भेजौं तभी, जब अनुशासन होय । | यदि स्यादुत्तमावृत्तिर्भ्रात्रे मे मृगयन्तु ताम्। तदैव प्रेषयिष्यामि यदानुज्ञाऽत्र लप्स्यते । ५ । |
| सात पांच नव एक युत, वर्ष मास आसोज। शुक्ल पक्ष दुतिया लिखी, सुखानन्द निज ओज । एतम शुद | नगयाणाङ्कभूवर्षे आश्विनस्य परे दले। लिखितेयं द्वितीयायां सुखानन्दत्रिपाठिना । ६ । इत्यलम् |
| और भी मित्र केलिये— | अन्यच्च मित्रंप्रति— |
| श्री शङ्करजी कल्याण करें २८।११।०४ कानपुर | श्रीशङ्करः शङ्करोतु २८।११।०४ कर्णपुरम् |
| मित्रवर्य सुखानन्द त्रिपाठीजी नमस्कार | मित्रवर्य सुखानन्दत्रिपाठिन्। नमोनमः |
| ईश्वर की कृपा से अभी तक हम लोग कुशल हैं और आप की कुशल चाहते हैं। बहुत दिन से आप की चिट्ठी न मिलने से मैं फिकर मन्द हूँ इसलिये जल्दी अपने राजी खुशी के समाचार से यह मित्र खुश करना चाहिये। तीन महीने से यहां प्लेग की बीमारी भी रोज बरोज बेशुमार मनुष्यों को ग्रास करती जाती है। अब मैं कुटुम्ब सहित गङ्गा किनारे | विश्वेशकृपयाद्य यावत्कुशलिनो वयं भवतां कुशलं चाशंसामहे । चिराऽश्रवताम् कृपापत्रमलब्ध्वा चिन्ताक्रान्तोस्मीति शीघ्रं स्वकुशलप्रवृत्त्यानन्दयितव्योऽयं मित्रजनः। मासत्रयादत्र महामारीरोगोऽपि प्रत्यहमसंख्यजनान् कवलयति । सम्प्रत्यहं सपरिवारो गङ्गातटे गङ्गामन्दिरे निवसामि । गृहे पुत्रादयः सर्वे ज्वरपीडिता आसन्नतः स्वकुशलवृत्तान्ते- |

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
| --- | --- |
| गङ्गा मन्दिर में रहता हूं घर में लड़के वगैरह सबज्वर से पीड़ित थे इसलिये अपनी राजी खुशी के समाचार से आप को खुश न कर सका ऐसा जान कर यह मित्र क्षमा योग्य है। सब उस्तादों से मेरी यथा योग्य प्रणाम आशीर्वाद कहना। वहां भी प्लेग रोग अब है यह सुना जाता है इसलिये वहां का सब हाल लिखना. | न श्रीमन्तं मोदयितुं नाशक्नवमित्यवगम्य क्षन्तव्योऽयं वयस्यः। सर्वेभ्योऽध्यापकेभ्यो मदीया यथोचितं प्रणामा आशिषो वा वक्तव्याः। तत्रापि महामारीरोगो वर्तते इदानीमिति श्रूयतेऽतः कृपया तत्रत्यं सर्वं वृत्तं लेख्यमितिशम्. |
| पुराने विद्यार्थियों को मेरी आशीर्वाद कहना. | प्राचीनच्छात्रेषु मदीया आशिषो वाच्याः |
| अगहन } आपका मित्र<br>बदि ६ } रामचन्द्र शास्त्री | मार्गशीर्ष } भवदीयो वयस्यः<br>कृष्णषष्ठी } रामचन्द्रशास्त्री |
| और दूसरी मित्र के लिये चिट्ठी— | अन्यच्च मित्रप्रतिपत्रम्. |
| श्री राधा माधव की जय हो. | श्रीराधामाधवौ विजयेतेतराम् अलीगढ़तः |
| श्रीमान् सम्पूर्ण गुणसमूहयुक्त, विद्या समुद्रपारगामी, भ्रमरूपी अन्धकार को दूर करने वाले सूर्यरूप, अपनी वाणी समूह से तिरस्कृत किया है कालिदासादि पण्डितों को जिन्होंने, नवीन केशर से शोभित हैं पूज्य चरणकमल जिनके, मित्र शिरोमणि, हरकृष्ण शास्त्री जी को यहां से विद्या रूपी भूषणों से भूषित औ मधुरमति | श्रीमदखिलगुणौघाढ्यविद्यापारावार–पारीणभ्रमतिमिरोच्छेदकमार्तण्डन्यक्कृतवाग्जालकालिदासादिप्रष्ठ,नूतनकिञ्जल्कभूषितपूज्यपादपङ्कजेषु सुहृच्छेखरेषु विद्यालङ्कारालङ्कृतप्रचरमतिभृत्यभृत्यविद्यार्थ्यं चरणसरोजषट्पदसंसारसरित्प्लवलगदेह—यमानगृहमेधीयभारभराक्रांतसुखानन्दत्रिपाठिनः कृता अनेकशो नतयः |

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| ( पंडित ) उनके सेवकों का सेवक, परम विद्वानों के चरण कमलों का भ्रमररूप, संसाररूपी नद में तृष्णारूपी जल के सर्प से डसा हुआ गृहस्थ के भार से थके हुए सुखानन्द त्रिपाठी की अनेक नमस्कार प्रणाम पहुंचे । आगे हाल यह है कि मेरे अधैर्य रूपी वृक्ष को काटनेवाले, अनोखी और रसीली काव्य के से पदों की लावण्यता को जाहिर करते हुए, आपके करकमल से लिखे हुए पत्र से जो अपूर्व आनन्द प्रकट हुआ सो कहने तथा लिखने से बाहर है । वसन्त भगवान् वृक्षों के पत्तों की नाईं हमारी और आप की अभिलाषा को सफल करेगा इस प्रकार आप के वाक्य में आपही प्रमाण हैं जो यह होभी जाय तोभी आपकाही भाग्य है मुझ सरीखों का नहीं । शरीर के अस्वास्थ्य से मैंने यह चिट्ठी देर से भेजी है सो आप क्षमा करना. | समुल्लसन्तुतराम् वृत्तमिदमग्रे वाच्यम् ममाधैर्यद्रुमलोलूयमानेनाद्भुतरसिककाव्यपदच्छटासोल्लस्यमानेन श्रीमत्करकुड्मलाङ्कितदलेन यो लिखतिशयानन्दः सूचितः सोऽगोचरः । भगवान्पुष्पसमयः तरुपत्राणि इव मावभिलाषां सफलां विधास्यतीति श्रीमद्वाक्ये श्रीमन्त एव प्रमाणम् यदि स्यात्तर्ह्यपि श्रीमतामेव दिष्टं नच मादृशानां । शरीरास्वास्थ्यान्मया चिरादिदम्पत्रं प्रेषितमितिक्षन्तव्यं भवद्भिः श्रीमद्भिरिति. |
| मिति पोष सुदी ५ शुक्रवार सं. १९५९ वि० — आपका दर्शनाभिलाषी सुखानन्द त्रिपाठी | पौषशुक्ला पञ्चमी भृगुसुता सं. १९५९ — भवतां दर्शनेच्छुः सुखानन्द-त्रिपाठी |

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| यह अर्ज़ी है अलीगढ़ | निवेदनपत्रमिदम् अलीगढ़तः |
| श्री मन्महोदय हेडमास्टर साहब (या ग़रीबपरवर सलामत) सलामत | श्रीमन्महामहिममहोदयानां मुख्याध्यापक (हेडमास्टर) महाशयानाम्पुरतः सविनयं निवेदनमिदम्. |
| महाशय ! | महाशयाः ! |
| पिछले शुक्रवार से मेरी माता जाड़े बुखार से पीड़ित है और उसका यहां कोई निरीक्षक नहीं है इसलिये मेरी हाजिरी यहां ज़रूरी है इसीलिये आपसे प्रार्थना की जाती है कि मुझे एक हफ्ते की छुट्टी मन्ज़ूर करें। आप ऐसी हालत में अवश्यही मन्ज़ूर करेंगे यह मेरी पूरी उमेद है. | गतशुक्रवासरान्मदीया माता शीतज्वरातास्ति नकोऽप्यत्र तस्या निरीक्षकः अतो ममोपस्थितिरत्रात्यावश्यिका ऽत एव मां सप्ताहस्यैकस्यावकाशमनुमन्तुं प्रार्थ्यन्ते भवन्तो ऽस्यां दशायां भवद्भिरवश्यमेव स्वीकरिष्यन्तीत्याशापि मदीया पूर्णा. |
| ईश्वर आप सरीखे अनुग्रह शील स्वामियों को सकुटुम्ब कुशल करे और वैभव बढ़ावे यह हमारी प्रार्थना है. | ईश्वरः कुशलं विदध्याद्वैभवञ्च वर्धयेत सपरिवारेषु युष्मादृशेष्वनुग्रहशीलिषु स्वामिष्वितीयमस्माकमभ्यर्थना. |
| अंग्रेज़ी तारीख़ १८।१२।०४ — आपका आज्ञाकारी सेवक श्रीकृष्णदास गुप्त दर्जा ७ | आङ्ग्लतिथ्यादि १८।१२।०४ — श्रीमतामतिवश्येऽनुचरः सप्तमकक्षाध्येता श्रीकृष्णदासो गुप्तः |
| लड़के का यह बयान ठीक है (कैफ़ियत लड़के के उस्ताद की) मणिराम उस्ताद. | सत्योऽयंबालकच्छात्रस्येति (व्यवस्थाछात्राध्यापकस्य) मणिरामोऽध्यापकः. |

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| लाहौर<br>१९।५।०४ | लवपुरम्<br>१९।५।०४ |
| | श्रीरामः सर्वमङ्गलम्. |
| पादप्रणामानन्तर निवेदन. | पादप्रणामोत्तरं निवेदनम्. |
| आप की चिट्ठी के माफ़िक ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का सूक्तसंग्रह इम्तहान के उपयोगी डाँक महसूल न देकर भेजा है डाँक महसूल आपही देदेना. | भवतां पत्रानुसारेण ऋग्वेदप्रथममण्डलीयसूक्तसंग्रहः परीक्षोपयोगी प्रेषितो डाकव्ययमदत्त्वेति डाकव्ययो भवद्भिरेव देयः. |
| आप कौन जाति हैं और मुझ को अपना आज्ञा पालक बना कैसे कृतकृत्य किया? | किं जातीया भवन्तो मां कथं स्वाज्ञापालकं कृत्वा कृतकृत्यं कृतवन्तः. |
| अबकी परीक्षा के समय में अपने देश को गया थी इसी से मेरे पास प्रश्न पत्र नहीं आये, कोशिश करने पर जो आजायंगे तो भिजवादूंगा. | अत्रत्यपरीक्षाकालेऽहं स्वजनपदे गतवानतो मत्समीपे प्रश्नपत्राणि नागतानि यत्ने कृते आगमिष्यन्ति चेत्प्रेषयिष्ये. |
| आपका आज्ञापालक<br>पण्डित शिवदत्त दाधीच हेडपण्डित (प्रोफेसर) लाहौर कालेज. | भवदाज्ञापालकः पण्डितशिवदत्तो दधीचः लवपुरीयचिश्वविद्यालयस्य प्रधानसंस्कृताध्यापकः. |
| ईश्वररक्षा करे अलीगढ़<br>२२।५।०४ | श्रीशः पायात् अलीगढ़तः<br>२२।५।०४ |
| श्रीमान् पं. शिवदत्त दाधीचजी के—<br>चरणकमलों में नमस्कार. | नमोनमः श्रीमच्छिवदत्तदाधीच—<br>चरणपङ्कजेभ्यः |
| सेवक की प्रार्थनानुसार आपने जो ऋग्वेद सूक्तसंग्रह भेजा सो मिला। आप से महात्माओं की परोपकार | सेवकाभ्यर्थनानुसारेण श्रीमद्भिः ऋग्वेदसूक्तसंग्रहः प्रेषितः स लब्धः धन्येयं परोपकारशीलता भवादृशां महा- |

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
| --- | --- |
| शौलता धन्य है जो मुझ न जानते हुए पर भी कृपा कर के मुझे कृतकृत्य करते हुए। बहुत कहने से क्या है विद्वान् महात्माओं का परोपकार करना स्वभाव सिद्ध होता है। आप की कृपा के देखे सैकड़ों हजारों धन्यवाद भी थोड़े हैं. | त्मनाम् यन्मामपरिचितमप्यपर्य्याप्त्यनुकम्पां विधाय कृतकृत्यं कृतवन्तो भवन्तः। किम्बहुना प्रकृतिसिद्धास्ति परोपकृतिर्विदुषां महात्मनाम्। शतशः सहस्रशो धन्यवादा अपि न्यूनतराः श्रीमदनुकम्पापेक्षया. |
| यह सेवक वशिष्ठ गोत्री गौड़ वंशीय है दिल्ली में अमृतसर निवासी पण्डित चुन्नीलाल शर्मा से आप का गुणानुवाद सहित नाम सुना था. | वशिष्ठगोत्रजो गौड़वंशीयोऽयं सेवकः इन्द्रप्रस्थेऽमृतसरनिवासी पण्डितचुन्नीलालशर्म्मणः सकाशाच्छ्रुताख्या सगुणानुवादा श्रीमतां भवताम्. |
| गुरुजी! मेरे एक भजनलाल शर्मा विद्यार्थी ने पिछली संस्कृत परीक्षा में विशारद इम्तहान दिया था और इम्तहान देनेवालों में उसका रोलनम्बर ३७ था। इम्तहान का नतीजा अबतक उसको नहीं मिला इसी से उसका नतीजा जानने के लिये बहुतही उत्कण्ठित है। दो चिट्ठी भी उसने रजिष्ट्रार के पास भेजीं मगर किसी का उत्तर न मिला। इसी से सेवक की यह प्रार्थना है कि जब मेरी चिट्ठी आप के कर कमल में पहुंचे तभी अखबार (गज़ट) से निश्चय कर इम्तहान का नतीजा लिखना चाहिये। फ़ेल होने की हालत में किस मज़मून में गिरा | गुरवः! ममैकेन भजनलालशर्म्मणा विद्यार्थिना गतसंस्कृतपरीक्षायां विशारदपरीक्षा दत्ता तत्र परीक्षकेषु तस्य गणना (रोलनम्बर) सप्तत्रिंशत्तमाऽऽसीत्। परीक्षाफलं तु तेनाद्यावधि नलब्धमत एवातीवोत्कण्ठितोऽस्ति तत्फलपरिज्ञानाय। द्वे पत्रेऽपितेन रजिस्ट्रारसन्निधौ प्रेषिते परञ्च न कस्याप्युत्तरं लब्धं। अतएवास्त्यभ्यर्थनैषा सेवकस्य यदा मम दलं श्रीमत्करकमलगतं भवेत् तत्क्षणमेव समाचारपत्रान्निश्चित्य परीक्षाफलं लेखनीयम् अनुत्तीर्णदशायां कस्मिन्विषये पतित इत्यपि सूचनीयं श्रीमद्भिः परोपकारिभिर्गुरुजनैः यावच्छक्यं शीघ्र- |

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| यह भी श्रीमान् परोपकारी गुरुजन सूचित करें। जहां तक हो सकेगा शीघ्रही उत्तर इस सेवक को मिलेगा यह मानाजाता है.<br>आप का सेवक<br>सुखानन्द त्रिपाठी | मेऽवोत्तरं लप्स्यते ऽयमनुचरइतिमन्यते.<br>भवतामनुचरः<br>सुखानन्दत्रिपाठी. |
| दिल्ली<br>६।१२।०३<br>आप को प्रणाम करके.<br>अमृतसर निवासी चुन्नीलाल शर्मा अपनी राय प्रकाश करता है कि हे श्रीमान् अब संस्कृत भाषा निस्सार है इससे अङ्गरेज़ी भाषाही फेंटा बांध कर आप को पढ़नी चाहिये उसी से आप के सब मनोरथ सिद्ध होंगे वरन विशारद परीक्षा पास करके भी मुनासिब जगह का मिलना नामुम्किन है, मुम्किन भी हुआ तो २५) से अधिक जन्म भर मुम्किन नहीं । जो संस्कृत में आप का बहुतही आग्रह है तो शास्त्रीपरीक्षा में यत्न करना चाहिये। वह परीक्षा दृढ़ उद्योग से आप से पांच छः महीने में ही पास करली जायगी और मैं भी इस में मदद दूंगा। छुट्टी के दिनों में मैं कहां जाऊंगा यह निश्चय नहीं.<br>आपका मित्र चुन्नीलाल शास्त्री<br>(मिशनस्कूल देहली) | इन्द्रप्रस्थ<br>६।१२।०३<br>तत्रभवत्सु प्रणम्य.<br>प्रकटयति स्वसम्मतिममृतसरनिवासी चुन्नीलालशर्म्मा, तथाहि, श्रीमन्तः! निःसारा साम्प्रतं संस्कृतभाषाऽतइङ्गलिशभाषैव बद्धपरिकरैस्तत्रभवद्भिः संवर्द्धनीया तयैव सेत्स्यन्ति सर्वे वो मनोरथाः किञ्च विशारदपरीक्षामुत्तीर्य्यापि नानुकूलस्थानप्राप्तिसम्भवः, सम्भवेऽपि पञ्चविंशतेरधिकस्याजन्मासम्भवः । यदि संस्कृतेऽतीवाग्रहो भवतां तदा शास्त्रिपरीक्षायां यतितव्यं सा च दृढोद्योगैः श्रीमद्भिः पञ्चषैरेव मासैरुत्तीर्णाभविष्यति दास्यामिच तत्राहमपिसाहाय्यमिति । अथकाशदिनेषु क्वयास्यामीति न निश्चयः.<br>भवदीयो वयस्यः चुन्नीलालशास्त्री<br>(मिशनस्कूल देहली) |

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, मल्लिकाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| दूसरी अर्ज़ी हेडमास्टर साहब के लिये । | अन्यन्निवेदनपत्रमिदं पाठशालाध्यक्षम्प्रति. |
| श्रीमन् परमदयालु हमारे हेडमास्टर महाशय चिरञ्जीव रहो. | श्रीमत्परमदयालूनामस्मत्पाठशालाध्यक्षमहाशयानामग्रेऽभ्यर्थनेयम्. |
| प्रभो ! | प्रभो ! |
| गुज़ारिश यह है कि मैं पिछली आधीरात से पेट में शूल के दर्द और शिर के दर्द में मुब्तिला हूं इसलिये मदर्से में जाने और वहां बैठने के लिये समर्थ नहीं हूं । मह्रबानी कर आज कीही छुट्टी मन्ज़ूर फ़र्माइये यह मेरी आप के सामने प्रार्थना है. | अस्ति सविनयनिवेदनमेतद्यदहं गतार्धरात्रित उदरशूलमस्तः शिरोवेदनया च पीडितोऽस्म्यतः पाठशालां गन्तुं तत्र स्थातुञ्च न शक्नोमि । कृपयाऽद्यैव दिवसस्यावकाशं स्वीकर्तुमर्हन्ति भवन्त इतीयमस्माकमभ्यर्थना श्रीमतामग्रे. |
| मेरे बेटे का यह लिखना ठीक है (यह लड़के के पिता की कैफ़ियत है) दस्तख़त राम प्रसाद शर्मा. | सत्येयमुक्तिर्मम पुत्रस्येति छात्रपितुर्व्यवस्था हस्ताक्षराणि रामचन्द्रशर्मणः. |
| आपका सेवक गोपाल प्रसाद शर्मा<br>१५।१।०५ एन्ट्रेन्स क्लास. | श्रीमतामनुचरः दशमकक्षास्थः<br>१५।१।०५ गोपालप्रसादशर्मा. |
| ——*—— | ——*—— |
| इक़रार नामा । | प्रतिज्ञापत्रमिदम् । |
| मैं मुसम्मी हरदत्त शर्मा वल्द पण्डित दुर्गादत्त क़ौम ब्राह्मण साकिन अलीगढ़ का हूं अपने बेटे की शादी के लिये १५० रुपये जिन के आधे ७५ रुपये होते हैं लाला रामचन्द्र वल्द गोपाल दास क़ौम बनिया साकिन मेरठ से क़र्ज़ लेता हूं और वाइदा | श्रीमद्विप्रवंशावतंस अलीगढ़वास्तव्यदुर्गादत्तसूनुर्हरदत्तशर्म्माहं स्वपुत्रविवाहार्थं मुद्राणां सार्धशतं यदर्धं पञ्चसप्ततिर्मुद्रा भवन्ति मयराष्ट्रनगरनिवासिवैश्यवंशोत्पन्नगोपालदाससूनवे रामचन्द्रायोपरोक्तं द्रव्यं धारयामि प्रतिमासे चैकस्य वत्सरस्यान्ते शतस्य- |

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| करता हूं कि एक साल के अखीर में ढाईरुपये सैकड़े के सूद के साथ कुल धन दे दूंगा न देने की हालत में मैं अपना घरही आड़ किये देता हूं। लिहाज़ा यह इक़रार नामा लिख दिया ताकि सनद रहे. | ति सार्धद्वयरूपकेण कुसीदेन सहाखिलं रिक्थं प्रतिदास्यामि अनर्पणदशायां मम गेहमेव पणत्वेन धृतमिति प्रतिज्ञापत्रीलिखितं प्रमाणत्वेनेदम्. |
| गवाह श्रीकृष्णदत्त — दस्तखत हरिदत्त शर्मा बकलम खुद | श्रीकृष्णदत्तः (साक्षी) — हस्ताक्षराणि- हरिदत्त शर्मणः(स्वयं) |
| अब मशहूर छन्दों का लक्षण कहता हूं. | अथ प्रसिद्धवृत्तानां लक्षणं ब्रवीमि. |
| मात्रावाला—आर्या छन्द है. | मात्रात्मकं—आर्या छन्दः. |
| जिसके पहिले चरण में तैसेही तीसरे में१२मात्रा हों और दूसरे में अठारह और चौथे चरण में १५ हों वह आर्या छन्द होता है. | यस्याः पादे प्रथमे, द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या. |
| अब अक्षरात्मक छन्द बयान किये जाते हैं | अक्षरात्मकानि छन्दांसि वर्ण्यन्तेऽधुना. |
| ८ अक्षर का अनुष्टुप् छन्द है उसका लक्षण, श्लोक में छठा गुरु, पाँचवा सब जगह लघु, दूसरे और चौथे चरणों में सातवां ह्रस्व और पहिले तीसरे में सातवां दीर्घ जानना. | ८ अष्टाक्षराणामनुष्टुप्छन्दः तल्लक्षणम् श्लोके षष्ठं गुरुज्ञेयं सर्वत्र लघुपञ्चमम् द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः. |
| ११ अक्षरों के इन्द्रवज्रा वगैरह पांच छन्द हैं. | ११ एकादशाक्षराणां पञ्चछन्दांसि इन्द्रवज्रादीनि. |
| ,, इन्द्रवज्रा–दो तगण, एक जगण, दो गुरु, जिसके एक चरण में हों. | ,, इन्द्रवज्रा—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः. |

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, महलिकाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| ,, उपेन्द्रवज्रा—ज, त, ज, ग, ग जहां हों. | ,, उपेन्द्रवज्रा—उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ. |
| ,, उपजाति—जिसमें इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के क्रम से लक्षण हों. | ,, उपजातिः-अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः. |
| ,, रथोद्धता-र, न, र, ल, ग जिसके १ पाद में हों. | ,, रथोद्धता—रान्नराविह रथोद्धता लगौ. |
| ,, स्वागता—र, न, भ, ग, ग जिसके १ पाद में हों. | ,, स्वागता—स्वागतेति रनभाद्गुरुयुग्मम्. |
| १२ अक्षरों के पादवाला एक छन्द वंशस्थ नाम है. | १२ द्वादशाक्षराणामेकं छन्दः वंशस्थनाम. |
| ,, वंशस्थ—ज, त, ज, र जिसके एक पाद में हों. | वंशस्थम् जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ. |
| बारह तेरह अक्षरों का मिला हुआ पुष्पिताग्रा छन्द है. | द्वादशत्रयोदशाक्षराणां मिश्रीभूतं पुष्पिताग्रावृत्तम्. |
| १२ } पुष्पिताग्रा छन्द { जिसके पहिले तीसरे पाद में न, न, र, य हों और दूसरे चौथे में न, ज, ज, र, ग हों.<br>१३ } | १२ } पुष्पिताग्रा वृत्तम् { अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा.<br>१३ } |
| तेरह अक्षर के पादवाले दो छन्द रुचिरा और प्रहर्षिणी हैं. | त्रयोदशाक्षराणां द्वे वृत्ते—रुचिरा प्रहर्षिणीति. |
| १३ रुचिरा—जिसमें ज, भ, स, ज, ग हों और चार और नौ अक्षरों पर विराम हो. | १३ रुचिरा—चतुर्ग्रहैरिह रुचिरा जभौ सजौ गः. |
| १३ प्रहर्षिणी—जिसमें म, न, ज, र, ग हों और ३ और १० पर विराम हो. | ,, प्रहर्षिणी—म्नौ ज्रौ गस्त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयम्. |
| चौदह अक्षरों का वसन्ततिलक नाम एक छन्द है. | चतुर्दशाक्षराणामेकं वृत्तं—वसन्ततिलकाख्यं. |

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| १४ वसन्ततिलक—त, भ, ज, ज, ग, ग जिसमें हों. | १४ वसन्ततिलका—उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः. |
| पन्द्रह अक्षरों का एक छन्द मालिनी. | पञ्चदशवर्णाना मेकं वृत्त—मालिनी. |
| १५ मालिनी—न, न, म, य, य जिसमें हो और ८ और ७ पर विराम हो. | १५ मालिनी—ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः. |
| सोलह अक्षरों का है तो लेकिन अप्रसिद्ध है. | षोडशाक्षराणामस्ति तु परञ्चाप्रसिद्धम्. |
| सत्रह अक्षरों के तीन है हरिणी, शिखरिणी और मन्दाक्रान्ता. | सप्तदशाक्षराणां त्रीणि-हरिणी, शिखरिणीमन्दाक्रान्तेति. |
| १७ हरिणी—जिसमें न, स, म, र, स, ल, ग हो और छः चार और दस अक्षर पर विराम हो. | १७ हरिणी—रसयुगहयैर्न्सौ म्रौ स्लौ गो यदा हरिणी तदा. |
| १७ शिखरिणी—जिसमें ६ और ११ पर विराम और य, म, न, स, भ, ल, ग हों. | ,, शिखरिणी—रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी. |
| ,, मन्दाक्रान्ता-जिसमें ४ ६ और ७ पर विराम हो और म,भ,न,त,त,ग,ग हों. | ,, मन्दाक्रान्ता—मन्दाक्रान्तजलधिषडगैर्म्भौ नतौ ताद्गुरूचेत्. |
| अठारह अक्षरों का अक्सर अप्रसिद्ध है. | अष्टादशाक्षराणां प्रायोऽप्रसिद्धम्. |
| उन्नीस अक्षर का एक शार्दूल विक्रीडित होता है. | एकोनविंशत्यक्षराणामेकं शार्दूलविक्रीडितम्. |
| १९ शार्दूलविक्रीडित—जहां १२ और सात पर विराम हो औरम, स, ज, स, त, त, ग जिसमें हों. | १९ सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्. |
| बीस अक्षर का एक छन्द है सुवदना. | विंशत्यक्षराणामेकं वृत्तंसुवदना. |
| २० सुवदना—म, र, भ, न, य, भ, ल, ग जिसमें हों और ७,७ और ६ पर विराम हो | २० सुवदना—ज्ञेया सप्ताश्वषड्भिर्मरभनययुता म्लौगः सुवदना. |
| इक्कीस अक्षर का स्रग्धरा छन्द है. | एकविंशत्यक्षरात्मकं स्रग्धरावृत्तम्. |

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पद्याणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| २१ स्रग्धरा—जिसमें ७, ७, ७ पर विराम हो और म, र, भ, न य, य, य ये हों. | २१ म्रभ्नैर्यानांत्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धराकीर्तितेयम. |
| अपरवक्त्र— | अपरवक्त्रम् |
| जिसके विषम अर्थात् पहिले तीसरे पाद में न, न, र, ल, ग हों और सम अर्थात् दूसरे चौथे में न, ज, ज, र हों. | अयुजि ननरलागुरुः समेन्जमपरवक्त्रमिदं जन्तेजरौ. |
| ( अथ समस्या का पूरण करना ) | ( अथ समस्यापूरणम् ) |
| श्रीरामचन्द्र महाराज के अभिषेक में मद से विह्वल हुई (किसी) तरुणी के हाथ से गिरा हुआ स्वर्ण घट सोपान (ज़ीना) मार्ग में ठठ इत्यादि शब्द करता है. | रामाभिषेके मदविह्वलाया हस्ताच्च्युतो हेमघटस्तरुण्याः। सोपानमार्गे प्रकरोति शब्दं ठंठंठंठंठठठंठठंठः। |
| यह चौथे पाद की समस्यापूर्ति है. | अत्र चतुर्थपादसमस्यापूर्तिः |
| * (सबके दो) सुमति और कुमति सम्पत्ति और आपत्ति का कारण होती हैं | * सर्वस्य द्वे सुमतिकुमती सम्पदापत्तिहेतू. |
| * (एकही गोत्र में) समर्थ पुरुष होता है जो कुटुम्ब को पालता है. | * एको गोत्रे प्रभवति पुमान् यः कुटुम्बं बिभर्ति. |
| * (बूढ़ा, जवान के) साथ परिचय से स्त्रियों से त्याग दिया जाता है. | * वृद्धो यूना सह परिचयात् त्यज्यते कामिनीभिः. |
| * स्त्री, पुरुष की तुल्य जब प्रभु हो जाय तभी वह घर नष्ट जानो. | * स्त्री पुंवच्च प्रभवति यदा तद्धि गेहं विनष्टम्। १ |
| ( पहेलियां ) | ( प्रहेलिकाश्च ) |
| दूर जाय पर पग नहीं, साक्षर पण्डित नाहिं। बेमुख स्फुट बोले सदा जान सो पण्डित माहिं ॥ (चिट्ठी). | अपदो दूरगामी च साऽक्षरो न च पण्डितः अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः। २ (पत्रम्) |
| * ये चार पाणिनि महाराज के सूत्र हैं इन सूत्रों को ही अवलम्बन कर किसी कवि ने समस्या पूरण की है. | * इमानि चत्वारि पाणिनेः सूत्राणि, एतान्येवावलम्ब्य केनचित्कविना समस्यापूर्तिः कृता. |

## अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| एक आँख पर काक नहिं, बिल चाहे नहिं सर्प । घटे बढ़े जलधी न शशी कहो जो राखी दर्प ॥ (सुई) | एकचक्षुर्न काकोऽयं बिलमिच्छन्न पन्नगः क्षीयते वर्धते चैव न समुद्रो न चन्द्रमाः । ३ ( सूचिका ) |
| वृक्ष अग्रवासी न खग, तीन नेत्र नाहिं शर्व। वल्कल धारी सिद्ध नहिं, जल धारी नहिं अभ्र ॥ (नारियल.) | वृक्षाग्रवासी नच पक्षिराजस्त्रिनेत्रधारी नच शूलपाणिः त्वग्वस्त्रधारी नच सिद्धयोगी जलं च बिभ्रन्न घटो नमेघः ।४। (नारिकेलफल) |
| अस्थि नहीं और सिर नहीं, वे अङ्गुलि की बाँह । नहिं पदयुग पर आपही दृढ़ चिपटे वपुमांहि ॥ (अंगरखा.) | अस्थि नास्ति शिरो नास्ति बाहुरस्ति निरङ्गुलिः नास्ति पादद्वयं गाढमङ्गमालिङ्गति स्वयम् (५) (कञ्चुकः) |
| आदि नहीं जेहि अन्त नहिं, बीच में ठहरे जोय। है तेरे मेरे भी वह, कह सुनाय जो होय ॥ (आंख.) | न तस्यादिर्न तस्यान्तो मध्ये यस्तस्य तिष्ठति तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद ६ (नयनम्.) |
| पैदा हुई नरनारि से, देह रहित वह नारि। वेमुख पर बोले अधिक, जात मात्र विनशाहि । (चुटकी.) | नरनारी समुत्पन्ना सा स्त्री देहविवर्जिता । अमुखी कुरुते शब्दं जातमात्रा विनश्यति छोटिका (चुटकी.), |
| काली क्या है (कौओं की पंक्ति); मीठी या प्रियक्या है ( स्त्री); शीतल वहनेवाली गङ्गा कौन सी है ( काशी के नीचे वहनेवाली );किसको कृष्ण ने मारा ( कंसको ); किसको शीत नहीं सताता ( कम्बल वालेको ) । | काकाली, का मधुरा काशीतलवाहिनी गङ्गा । कंसंजघान कृष्णः कंबलवन्तं न बाधते शीतः ।१। |
| इसी श्लोक में सवाल जवाब हैं किम् शब्दको अलग करके पढ़ने में प्रश्न हैं और उसे मिलाकर पढ़ने में उत्तर है. | अस्मिन् श्लोक एव प्रश्नोत्तरे स्तः किम् शब्दस्य-पृथक्पठने प्रश्नः तत्संयोज्यपठने उत्तरम् . |

## चौवीसवां अध्याय—चतुर्विंशोऽध्यायः ।

### गृहचर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्या च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| अथ प्रातःकाल सेही दिन का कृत्य कहते हैं. | अथ प्रातःकालादेव दिनकृत्यमाह. |
| सम्पूर्ण पापों की शांति चाहने वाला और आयु की रक्षा चाहने वाला मनुष्य चार घड़ी के तड़के उठकर अपने इष्टदेव का स्मरण करे सब महाभारत में श्रीमद्वेदव्यासकृत प्रातःस्मरणीय स्तोत्र को पढ़े कि आप "महर्षि भगवान् वेदव्यास धर्मात्मा चार श्लोकों से इस संहिता को पहिले बनाकर अपने पुत्र शुकदेव को पढ़ाते हुए ।१। हजारों माता पिता और सैकड़ों पुत्र और स्त्री संसार में देखेगये देखेजाते हैं और देखे जायंगे ।२। हजारों शोक की जगह सैकड़ो भय की जगह हर रोज मूढ़ को मालूम होती हैं पण्डित को नहीं ।३। भुजा उठाकर मैं चिल्लाता हूं और कोई मेरी नहीं सुनता धर्म से अर्थ और काम होते हैं यह किसलिये सेवन नहीं कियाजाता ।४। मनुष्य न कभी कामना से न भय से न लोभ से जीवन के लिये भी धर्म | सर्वाघशान्त्यर्थी, आयुषोरक्षार्थी च मनुष्यो ब्राह्मे मुहूर्त उत्थाय स्वेष्टदेवं स्मरेत् तत्र श्रीमद्वेदव्यासकृतं महाभारतान्तर्गतं प्रातःस्मरणीय "महर्षिर्भगवान्व्यासः कृत्वेमां संहितां पुरा श्लोकैश्चतुर्भिर्धर्मात्मा पुत्रमध्यापयच्छुकम् ।१। माता पितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि च संसारेष्वनुभूतानि यान्ति यास्यन्ति चापरे ।२। शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च । दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम् ।३। ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष नच कश्चिच्छृणोति मे धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते ।४। न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतो धर्मो नित्यः सुखदुःखेत्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः ।५। इमां भारतसावित्रीं प्रातः प्रातः पठेत्तु यः स भारतफलं प्राप्य परं ब्रह्माधिगच्छति" ।६। पठेत् । तदनन्तरं |

## गृहचर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्या च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| को न छोड़े क्योंकि धर्म नित्य है और सुख दुःख अनित्य हैं तैसेही जीव नित्य है और इस का हेतु अनित्य है।५। हररोज़ सवेरे जो मनुष्य भारतसावित्री को पढ़ेगा वह महाभारत का फल प्राप्त करके परब्रह्म को प्राप्त होगा। इस के अनन्तर "पवित्रकीर्ति राजानल, पवित्र कीर्ति राजा युधिष्ठिर और पवित्र कीर्ति श्रीजानकीजी और पवित्र कीर्ति श्रीभगवान" स्मरण करे फिर "अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनूमान् और विभीषण कृपाचार्य और परशुराम ये सात चिरंजीवी हैं इन सातों को तथा आठवें मार्कण्डेय ऋषि को जो स्मरण करता है वह सम्पूर्ण व्याधियों से रहित हुआ सौ वर्ष जीता है"। फिर "अहल्या द्रौपदी, सीता, कुन्ती तथा मन्दोदरी इन पांचों को जो नित्य स्मरण करना है महापातक का नाश करने वाला है." | "पुण्यश्लोको नलोराजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः" अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविन॥ सप्तैतान्संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥ पुनः, अहल्याद्रौपदी सीता, कुन्ती मन्दोदरी तथा। पञ्चकन्या स्मरेन्नित्यं, महापातकनाशनम्. |
| फिर खोटे स्वप्न के फल को दूर करने वाला यह श्लोक पढ़े— | पुनः दुःस्वप्ननाशनमिमं श्लोकं पठेत्. |
| काशी की उत्तर दिशा में कुक्कुट नाम का एक द्विज है उसके स्मरण सेही दुःस्वप्न सुस्वप्न होजाता है. | काशीत उत्तरे भागे, कुक्कुटो नाम वै द्विजः। तस्य स्मरणमात्रेण, दुःस्वप्नः सुस्वप्नो भवेत्. |

## गृहचर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच।

### हिन्दी।

तब मनुष्य सवेरे उठ कर दही, घी दर्पण, सफ़ेद सरसों, बेल, सोना, माला घोड़ा हाथी, गौ ब्राह्मण हलदी, दूब इनको या इन में से किसी को देखे। न कि अधर्मी, कुत्ता, बिल्ली इत्यादि को, यदि ये चीज पास में नहीं तो अपनेही हाथ देख ले.

इसके बाद गाँव से या नगर से बाहर नैर्ऋत दिशा में शूरवीर के बाण जाने की दूरतक (कम-सेकम २००-कदम) शुद्ध मिट्टी और जल पात्र लेकर कीड़े मकोड़े से रहित जगह में जाकर मिट्टी और जल का बर्तन रख कर यज्ञ में काम न आनेवाले सूखे तिनकों से ज़मीन को ढककर कर्ण या कंठ में यज्ञोपवीत लटका चुप चाप नाक और मुंह मूंद कर दिन में उत्तर को मुंह कर रात में दक्षिण की ओर मुंह कर पाखाना पेशाब फिर, ढेले इत्यादि से गुदा साफ कर और वहां से उठकर पहिले लाये हुए मिट्टी और जल पात्र लेकर गीले आमले के बराबर मिट्टी ले जल से दोबार इन्द्रिय को साफ कर फिर मिट्टी और जल से तीन

### संस्कृत।

ततो जनः प्रातरुत्थाय दधि, आज्यं, मुकुरं सिद्धार्थं (श्वेतसर्षपं) बिल्वं, स्वर्णम् स्रजं, अश्वं गजं, गां, विप्रं, हरिद्रां, दूर्वामेतेष्वन्यतमं वा पश्येत् नत्वधर्मिणं श्वानं मार्जारादिकं यद्येतानि वस्तून्यभ्याशस्थानि नस्युस्तदावास्वहस्तावेवावलोकयेत्.

तदनन्तरं ग्रामान्नगराद्वा बहिर्नैर्ऋत्यां वीरेषुक्षेपणात्परं शुद्धमृदं वारिपात्रमादाय कीटादिशून्यस्थलं गत्वा मृत्तिकां जलपात्रं च निधायायज्ञियैः शुष्कैस्तृणैर्धरामाच्छाद्यप्रावृतशिराः कण्ठलम्बितयज्ञोपवीतः तूष्णीं घ्राणास्येपिधाय दिवोदङ्मुखो नक्तं दक्षिणामुखो मूत्रपुरीषे उत्सृज्य लोष्टादिना गुदं परिमृज्योत्थाय पूर्वगृहीतमृज्जलपात्रे गृहीत्वार्द्रामलकमात्रमृज्जलैर्द्विवारं शिश्नशौचं कृत्वा पुनर्मृज्जलैस्त्रिवारमपानं संशोध्य पुनर्जलेनैव लिङ्गगुदे प्रक्षाल्य शुद्धमृत्तिकयैकवारं हस्तं प्रक्षाल्य शुद्धभूमिभागस्थान्यमृज्जलेन दशवारं वामकरं प्रक्षाल्य ततः करद्वयं सप्तवारं मृज्जलैः प्रक्षाल्य पादावपि अनयैव रीत्या त्रिः प्रक्षाल्यान्यजलेन द्वाद-

## बृहच्चर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्या च।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| बार गुदा को शुद्ध कर फिर जल सेही लिंग और गुदा धोकर शुद्ध मिट्टी से एक बार हाथ धो और शुद्ध जगह पर आ दूसरी मिट्टी और जल से दस बार बाम हाथ को धो और फिर दोनों हाथों को सात बार मिट्टी और जल से धो, पावों को भी इसी रीति से तीन बार धो, दूसरे पानी से बारह कुल्ले बाँई तरफ़ कर जल के पात्र को तीन बार माँज जनेऊ ठीक कर दोबार आचमन करे. | शगडूपान्वामभागे कृत्वा जलपात्रं वि-पर्युक्ष्य उपवीती द्विराचामेत्. |
| अब दाँतन करना—दाँतन, बारह अंगुल चौड़ी और कनी उंगली के नोंक की बराबर मोटी, सीधी, बिना गांठ या खखोड़र की करनी चाहिये। एक २ दांत को मुलायम कूंची से या दांतों को शुद्ध करने वाले मञ्जन से मसूड़ों पर जोर न देता हुआ, घिसे. | अथ दन्तधावनं—भक्षयेद्दन्तपवनं द्वादशाङ्गुलमायतं कनिष्ठिकाग्रवत् स्थूलमृज्वग्रन्थितव्रणं एकैकं घर्षयेद्दन्तं मृदुना कूर्चकेन च, दन्तशोधनचूर्णेन दन्तमांसान्यबाधयन्. |
| त्रिकुटा में शहद मिला कर या तेल और सेंधा नमक मिलाकर या तेजोवती चूर्ण से दांत नित्य साफ़ करे. | क्षौद्रत्रिकटुकाक्तेन तैलसिन्धुभवेन वा चूर्णेन तेजोवत्याश्च दन्तान्नित्य विशोधयेत्. |
| अब दांतन के योग्य लकड़ी वर्णन करते हैं. | अथ दन्तधावनार्हाणि काष्ठान्याह. |
| आक की लकड़ी में वीर्य, वड़ में दीप्ति, कञ्जा में विजय, पिलखन में धन | अर्के वीर्यं वटे दीप्तिः करञ्जे विजयो भवेत् प्लक्षे चैवार्थसम्पत्तिर्वदर्यां म- |

## बृहच्चर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| दौलत, बेर में मीठी आवाज़, खैर में कुल की सुगन्ध, बेल में बहुतसा धन, गूलर में वाणी की सिद्धि, आम में आरोग्यता, कदम में धैर्य और बुद्धि और चम्पा में दृढ मति, सिरस में कीर्ति, सौभाग्य, उम्र, और आरोग्यता, ओंगा में धैर्य, बुद्धि, प्रज्ञा शक्ति तैसेही आवाज़, अनार में सुन्दर आकार, ककुभ (अर्जुन) कुड़ा में तैसेही, जाती, तगर और मन्दार इन से खोटा स्वप्न नाश होता है. | बदरे ध्वनिः खदिरे मुखसौगन्ध्यं बिल्वे तु विपुलं धनं उदुम्बरे तु वाक्सिद्धिराम्रे त्वारोग्यमेव च कदम्बे तु धृतिर्मेधा, चम्पके तु दृढा मतिः शिरीषे कीर्तिसौभाग्यमायुरारोग्यमेव च अपामार्गेधृतिर्मेधा प्रज्ञा शक्तिस्तथा ध्वनिः दाडिम्यां सुन्दराकारः ककुभे कुटजे तथा, जातीतगरमन्दारैर्दुःस्वप्नञ्च विनश्यति. |
| और लकड़ी निषिद्ध हैं । अब अन्दाज सुनो. | निषिद्धान्यन्यानि काष्ठानि । अथ प्रमाणं शृणु. |
| ब्राह्मणों की दांतन १२ अंगुल की, और क्षत्रियों की १० अंगुल की, वैश्यों की १८ अंगुल की और शूद्रों की ६ अंगुल की होती है. | द्वादशाङ्गुलं विप्राणां क्षत्रियाणां दशाङ्गुलं अष्टाङ्गुलञ्च वैश्यानां शूद्राणान्तुषडङ्गुलम्. |
| स्त्रियों की दांतन उससे चौथाई अंगुल लेनी चाहिये. | दन्तकाष्ठन्तु गृह्णीयात् स्त्रीणां तच्चतुरङ्गुलं. |
| अब कुल्ला करने की तरकीब लिखी जाती है. | अथ गण्डूषविधिर्लिख्यते. |
| बारह शौचानन्तर, और पेशाब जाने पीछे चार और भोजन के पीछे १६ कुल्ले करे. | कुर्याद्द्वादशगण्डूषान् पुरीषोत्सर्जने ततः मूत्रोत्सर्गे च चतुरो भोजनान्ते तु षोडशः. |

## बृहच्चर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्या च ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| तब मनुष्य स्नान, स्नान के पीछे सन्ध्यावन्दन और अपने इष्ट देव का पूजन उसके पीछे यथा शक्ति गायत्री का जाप और * पांच महा यज्ञ करे. | ततो जनः स्नानं, स्नानानन्तरं सन्ध्यवन्दनं स्वेष्टदेवार्चनं तत्पश्चाद्गायत्री जपं * पञ्चमहा यज्ञांश्च समाचरेत्. |
| तब भोजन के आदि में मंगलीक वस्तुओं का जैसे अग्नि, गौ, जल, ब्राह्मण सोना, घी, सूर्य, और राजा इन का दर्शन और परिक्रमा करे। तब बलिवैश्वदेव और भोजन का ईश्वरार्पण "ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितं भक्ष्यभोज्यंत्वया नित्यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यतां पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः" "विश्वात्मा प्रीयतां" इत्यादि वाक्यों से करना। इसके अनन्तर भोजन पहिले मीठी चीज़ोंका उसके बाद औरों का, खाकर सौ पैंड चल ले फिर खाट पर सीधा लेटा हुआ आठ उसास ले और उसके दुगुने दाहिनी करवट में और उनके दुगुने बाईं करवट में | ततो भोजनादौ माङ्गल्यवस्तूनां यथा अग्निगोजलब्राह्मणस्वर्णघृतादित्यराज्ञां दर्शनं प्रदक्षिणञ्च कुर्यात् ततो बलिवैश्वदेवं भोजनस्येश्वरार्पणञ्च "ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितं भक्ष्यभोज्यंत्वया नित्यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यतां, पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति, तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः "विश्वात्मा प्रीयतामित्यादि वाक्यैः" कुर्यात् ततो भोजनं मिष्टवस्तूनां प्रथमं तदनन्तरमन्येषाम्, भुक्त्वा शतपदं गच्छेत् पुनः शय्यायां श्वासानष्टौ समुत्तानस्तान् द्विः पार्श्वे तु दक्षिणे ततस्तद्द्विगुणान्वामे पश्चात्सुप्याद्यथा सुखं ग्रीष्मर्तौ तु दिवाशयनं सुखप्रदं प्रायशः पित्त- |
| * पहिले अध्याय में स्पष्टरीति से देखो. | * नोट प्रथमे ऽध्याये स्फुट पश्यत . |

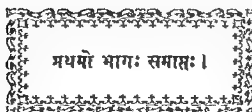
## बृहच्चर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

| हिन्दी । | संस्कृत । |
|---|---|
| पीछे चाहे जैसे सोवे । ग्रीष्म ऋतु में दिन को सोना सुख देने वाला है और अक्सर पित्त मिज़ाज वालों को बहुत ज़रूरी है और दूसरी ऋतु ओं में दिनका सोना मना है. | प्रकृतीनाश्चात्यावश्यकमन्यर्तुषु च दिवास्वापो निषिद्धः. |
| तिस के बाद घर के काम और उनके अभाव में भक्ति रस में पगेहुए पारमार्थिक ग्रन्थों को शाम तक पढ़े या सुना करे. | तदनन्तरं गृहकृत्यान् तदभावे भक्तिरसाक्तान्पारमार्थिकान्ग्रन्थान् यावत्सन्ध्यासमय पठेच्छृणुयाद्वा. |
| फिर पहिलीही तरकीब से शौचादि काम करके सायकाल को सन्ध्या करे सन्ध्या समय भोजन, स्त्री प्रसंग, सोना पढ़ना, लिखना, रास्ता चलना ये काम छोड़ दे । दीये जलने के पीछे कोई धर्म पुस्तक वगैरह पढ़ कर और ईश्वर के गुणानुवाद गाकर या सुन कर सूक्ष्म भोजन करे. | ततः पूर्वेणैव विधिना शौचादिकं कृत्वा सायं सन्ध्यामुपासीत । सायं काले आहारं मैथुनं निद्रां सम्पाठं मार्गगमनमेतानि कर्माणि वर्जयेत् । दीपप्रज्वलनानन्तरं कानिचिद्धर्मपुस्तकानि पठित्वेश्वरगुणानुवादांश्च गात्वा श्रुत्वा वा लघु भोजनं कुर्वीत. |
| तब दूसरे पहर के आने पर कामशास्त्र में कहे हुए दिनों में ही क्रीड़ा घर में जाय वहां पहिले पाँव धोकर खाट को वैदिक गारुड़ी मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर लठिया, जल का पात्र | ततः द्वितीये प्रहरागमे कामशास्त्रप्रोक्तेष्वेव दिवसेषु रतिमन्दिरं प्रजेत् । तत्र पूर्वं पादौ प्रक्षाल्य शय्यां वैदिकै र्गारुड़ै र्मन्त्रैरभिमन्त्र्य वेणुदण्डमधुपात्रभाण्डानि पुष्पादीनि रम्या- |
| १ नोट अमावस पून्यौ को छोड़ ऋतु से समतिथि ४, ६ इत्यादि में रवि, मंगल, गुरुवार को और पुरुष नक्षत्रों में ग्राम्यधर्म श्रेष्ठ है. | १ नोट पक्षद्वयपूर्णिमां हित्वा ऋतुतः समासु तिथिषुरवि कुजगुरुवारेषु, पुंनक्षत्रेषु च ग्राम्यधर्मः प्रशस्तः. |

## बृहच्चर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच।

| हिन्दी। | संस्कृत। |
|---|---|
| और भी पुष्प वगैरह रमणीय चीजें सिरहाने रख कर सोवे इस प्रकार दिन के काम और रात के काम खतम हुए. | णि वस्तूनि शिरःस्थाने निधाय स्वपेदिति दिनचर्या रात्रिचर्य्या च समाप्ता. |
| गौड़ वंश उत्पन्न कृष्ण पादपङ्कज भ्रमर श्रीदुर्गाप्रसाद पुत्र सुखानन्दनामक भयो ॥ १ ॥ | गौडान्ववायजातः गोविन्दांघ्रिसरोजषट्पदोऽयम् दुर्गाप्रसादसूनुः सुखानन्दाख्यत्रिपाठीति ॥ १ ॥ |
| उन्निस सो इकसठ बरस पुरुषोत्तम तह मास शुक्ल चतुर्थी शुक्र को शिवहि समर्प्यो दास ॥ २ ॥ | रसारसाङ्कभूमिते, हायने मासि तु सहस्यनामके उशनसि शुक्लचतुर्थ्यां कृत्वा पूर्णमथार्पयच्छिवाय ॥ २ ॥ |

इति श्रीसुखानन्दत्रिपाठिविरचिते व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोधे प्रथमो भागः।



श्रीगणेशायनमः।

# अथ व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोधे।



## द्वितीयो भागः।

यशोदानन्दनं नत्वा बालबोधाय भूरिशः

सारमुद्धृत्य कौमुद्या वर्ण्यते नरभाषया ॥ १ ॥

### अथ सन्धिप्रक्रियाप्रदर्शकः

### प्रथमोऽध्यायः।

जब दो अक्षर निकट होकर परस्पर मिलजाते हैं और उनके मिलने से जो विकार होता है वह सन्धि कहाता है। सन्धि मुख्य तीन प्रकारकी हैं १ स्वरसन्धि २ व्यञ्जनसन्धि ३ विसर्गसन्धि। जहां सन्धि होसकती हो और वहां न हो वह एक चौथी प्रकृतिभाव सन्धि कहलाती है, क्रमसे प्रत्येक का विवरण देखो।

जब स्वरके साथ स्वरका संयोग होता है उसे स्वरसन्धि कहते हैं और वह ५ प्रकार की है, १ यण्, २ दीर्घ, ३ गुण, ४ वृद्धि और ५ अयादि चतुष्टय।

१ यण्—यदि ह्रस्व वा दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ इनसे परे अपने सवर्ण स्वरको छोड़ कोई स्वर परे हो तो क्रमसे उपरोक्त वर्णों के स्थान में य्, व्, र्, ल् होजाते हैं (इकोयणचि) जैसे सुधी+उपास्यः सुध्युपास्यः, मधु+अत्र मध्वत्र, पितृ+आज्ञा पित्राज्ञा, ऌ+अनुबन्धः लनुबन्धः।

२ दीर्घ—ह्रस्व वा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, ऌ से परे इनके सवर्णी अक्षर परे हों तो दोनों मिलकर एक दीर्घ स्वर होजाता है। (अकः सवर्णेदीर्घः) जैसे तव+आदरः तवादरः, दधि+इह दधीह, साधु+उक्तिः साधूक्तिः, पितृ+ऋणम् पितॄणम्।

३ गुण—यदि अ, आ से परे ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ हो तो क्रम से ए, ओ, अर् होजाता है (आद्गुणः) जैसे देव + इन्द्रः देवेन्द्रः, नील + उत्पलं नीलोत्पलं, देव + ऋषिः देवर्षिः ।

४ वृद्धि—यदि अ या आ से परे ए, ऐ, ओ, औ या ऋवर्ण होतो दोनों मिलकर क्रम से ऐ, औ और आर् होजाते हैं (वृद्धिरेचि) जैसे एक + एकम् एकैकम्, जल + ओघः जलौघः, शीत + ऋतः शीतार्तः ।

५ अयादिचतुष्टय—यदि ए, ऐ, ओ, औ से परे अपने सवर्णी स्वरवर्ण को छोड़ ओर कोई स्वर होतो क्रम से अय्, आय्, अव्, आव्, हो जाते हैं (एचो- ऽयवायावः) जैसे शे + अनम् शयनम्, विनै + अकः विनायकः, भो + अनं भवनम्, पौ + अकः पावकः ।

६ यदि पदान्त के ए या ओ से परे अ आवे तो उस अकार का लोप करके उसकी जगह (ऽ) यह चिन्ह कर देते हैं (एङः पदान्तादति) जैसे कवे + अवेहि कवेऽवेहि, पटो + अत्र पटोऽत्र ।

७ यदि पदान्त के ए या ओ से परे अकार को छोड़ कोई स्वर वर्ण रहे तो विकल्प से अय्, अव् के य् और व् का लोप हो जाता है दूसरे पक्ष में अय् और अव् ही बने रहते हैं (लोपः शाकल्यस्य) सखे + आगच्छ सख आगच्छ, सखयागच्छ, प्रभो + एहि प्रभएहि, प्रभवेहि ।

८ यदि किसी उपसर्ग के अ या आ से परे एध् और इण् धातुओं के 'ए' को छोड़ और कोई ए या ओ होतो दोनों मिल कर ए और ओ ही रहता है ऐ और औ नहीं (एङिपररूपम्) जैसे प्र + एषयति प्रेषयति, उप + ओषति उपोषति, परा + एधते परेधते ।

९ यदि अ या आ से परे ओष्ठ और ओतु हो और समास किये जाँयतो विकल्प से औ होजाता है यदि समास न हो तो ओ ही होता है (ओत्वोष्ठयोः समासे वा) जैसे बिम्ब + ओष्ठः बिम्बोष्ठः, बिम्बौष्ठः, स्थूल + ओतुः स्थूलोतुः स्थूलौतुः, तव + ओष्ठः तवौष्ठः ।

अथप्रकृतिभावसन्धिः ।

१ ऐसे अव्यय जो एक स्वरवाले हों या जिनके अन्त में ओ हो तो वहां सन्धि, योग होने पर भी नहीं होती (निपात एकाजनाङ्, ओत्) जैसे अ + एवम् अहो + अपेहि ।

२ यदि द्विवचन के ई, ऊ, या ए हों तो ये भी सन्धि योग होने पर सन्धि को प्राप्त नहीं होते (ईदूदेद्द्विवचनम्प्रगृह्यम्) जैसे कवी+इमो, साधू+आगता, एते एते।

३ अदस् शब्द के भी ईकार ऊकार सन्धि को प्राप्त नहीं होते (अदसोमात्) जैसे अमी+अश्वाः, अमू+अर्भको।

## अथ व्यञ्जन सन्धिः।

जब व्यञ्जन के साथ व्यञ्जन का या स्वर का संयोग होता है तो उसे व्यञ्जन (हल्) सन्धि कहते हैं।

१ सकार या तवर्ग को शकार या चवर्ग का योग हो तो क्रमसे शकार चवर्ग होजाते हैं (स्तोः श्चुना श्चुः) जैसे हरि+शेते हरिश्शेते, सत्+चित् सच्चित्।

२ सकार या तवर्ग को षकार या टवर्ग का योग होतो क्रमसे षकार या टवर्ग होजाते हैं (ष्टुनाष्टुः) जैसे राम+षष्ठ रामष्षष्ठ, तत्+टीका तट्टीका

३ पदान्त के जो ष् ट् त् क् प् सो क्रमसे ज्, ड्, द्, ग्, ब् होजाँय यदि कोई स्वर या ह य व र ल या किसी वर्गका तृतीय चतुर्थ अक्षर परे हो परन्तु पञ्चम अक्षर परे होने विकल्प से अनुनासिक अक्षर भी होजायँगे (झलां जशोऽन्ते, यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा) जैसे वाक्+ईश वागीश, चित्+रूपम् चिद्रूपम्, एतत्+मुरारिः एतद्मुरारिः एतन्मुरारिः।

४ तवर्ग से परे लकार हो तो तवर्ग के स्थान में भी लकार होजाता है परन्तु न् के स्थान में अनुनासिक ही लँ होता है (तोर्लि) तत्+लुनाति तल्लुनाति, भवान्+लिखति भवाँल्लिखति।

५ ष् ड् द् ग् ब् के उत्तर हकार हो तो उनके स्थान में क्रम से ढ्, ढ्, ध् घ् भ् अर्थात् जिसवर्गके ये अक्षर हों उसी का चौथा अक्षर जैसे "ह्"के स्थान में विकल्प से होजाता है और पहिले ष् आदि अक्षरों को उसी वर्गका तीसरा अक्षर होजाता है (झयोहोऽन्यतरस्याम्) जैसे, दिक्+हस्ती दिग्घस्ती दिग्हस्ती।

६ ष् ड् त् क् प् के उत्तर जो शकार उसको विकल्प से "छ" हो यदि कोई स्वर या ह् य् व् र् वर्ण परे होवे (शश्छोऽटि) जैसे तत्+शिवः तच्छिवः, तच्शिवः।

७ ह्रस्व से परे जो पदान्त के न् ङ् ण् वे स्वर परे होने पर द्वित्व हो जाँय (ङमो ह्रस्वादचिङमुण् नित्यम्) जैसे राजन्+इह राजन्निह, प्रत्यङ्+आत्मा प्रत्यङ्ङात्मा, सुगण्+इह सुगण्णिह।

८ यदि नकारान्त पद से परे छ् ठ् थ्, च् ट्, त् होतो सकार का आगम और नकार को अनुस्वार होजाता है (नश्छव्यप्रशान्) जैसे नृत्यन्+चकोरः नृत्यँश्चकोरः।

९. अनुस्वार से ऊष्मवर्ण छोड़ कोई व्यञ्जन परे होतो उस व्यञ्जन का सवर्णी पञ्चमाक्षर होजायगा। परञ्च यदि अनुस्वार पदान्त का होतो विकल्प से उत्तर वर्ण का पञ्चमाक्षर होगा (अनुस्वारस्ययि परसवर्णः। वापदान्तस्य) जैसे अं+कित. अङ्कित, चं+चित, चञ्चित, त्वं+करोषि त्वङ् करोषि, त्वंकरोषि।

१० यदि ह्रस्व स्वर से 'छ' परे होतो 'च्छ' होजाता है, और कहीं दीर्घ स्वर के अनन्तर भी होता है (छेच, दीर्घात्) परन्तु पदान्त दीर्घ के अनन्तर विकल्प से 'च्छ' होता है (पदान्ताद्वा) जैसे तव+छत्र, तवच्छत्र, म्ले+छ म्लेच्छ, लक्ष्मी+छाया लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया।

## अथ विसर्गसन्धिः।

१ जब विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन का संयोग होता है तो उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। विसर्ग से परे सकार या तवर्ग होतो सकार और शकार या चवर्ग होतो शकार और षकार या टवर्ग हो तो षकार हो जाता है (विसर्जनीयस्यसः) विष्णुः+त्राता विष्णुस्त्राता, पूर्णः+चन्द्रः पूर्णश्चन्द्रः, धनुः+टङ्कारः धनुष्टङ्कारः।

२ यदि विसर्ग से परे "अ" हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है और 'अ' का लोप हो जाता है और यदि किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम या य् र् ल् व् ह् परे हो तो भी विसर्ग का 'ओ' हो जाता है (अतोरोर-प्लुतादप्लुते) (हशिच) जैसे शिवः+अर्च्यः शिवोऽर्च्यः, शिवः+वन्द्यः शिवोवन्द्यः।

३ यदि भो, भगो, अघोः और अकार से परे विसर्ग हो और उनसे परे अ को छोड़ और कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। और यदि

आकार से परे विसर्ग हो और उसके परे किसी वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण या य र ल व ह परे हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और फिर सन्धि नहीं होती (भोभगो अघो अपूर्वस्ययोऽशि) जैसे चन्द्रः+उदेति चन्द्रउदेति, अश्वाः+अमी अश्वाअमी।

४ अ आ को छोड़ किसी स्वर से परे विसर्ग हो और उससे परे कोई स्वर या किसी वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चम अक्षर या य र ल व परे हो तो विसर्ग का रकार हो जाता है (नामिनोरः चं० पू०) जैसे कविः+अय कविरयम्, शिशुः+हसति शिशुर्हसति।

५ यदि अकार के अनन्तर रकार का विसर्ग हो और उससे परे कोई स्वर, किसी वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चम अक्षर या ह य व र ल परे हों तो विसर्ग का फिर रकार हो जाता है (रः च० पू०) जैसे पुनः+अपि पुनरपि, मातः+देहि मातर्देहि।

६ यदि रकार से परे रकार हो तो पहिला र लोप हो जाता है और उसका पूर्व ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है (रोरि। ढ्रलोपेपूर्वस्यदीर्घोऽणः) जैसे पुनः+रमते पुनारमते, विधुः+राजते विधूराजते।

७ सः और एषः शब्द की विसर्ग 'अ' को छोड़ और कोई वर्ण परे रहते लोप हो जाता है (एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासेहलि) जैसे सः+हसति सहसति, एषः+आगतः एषआगतः।

न् का ण् होना।

८ ऋ ॠ र ष् से परे न् हो तो वह ण् में बदल जाता है और यदि इनके बीच में कोई स्वर, कवर्ग, पवर्ग और य् व् ह्, और अनुस्वार, एक या अनेक आपड़ें तोभी कुछ ण् के बदलने में बाधा नहीं होती। (रषाभ्यांनोणः समानपदे, अट्कुप्वाङ्नुम् व्यवायेऽपि) जैसे चतुर्णाम्, मूर्खेण, बृंहणम्।

स् का ष् होना।

९ कवर्ग, और अ आ को छोड़ शेष स्वर, और ह य व र ल इनसे परे किसी सूत्र का किया स् या किसी प्रत्यय का अवयव स् हो तो ष में बदल जाता है (आदेशप्रत्यययोः) जैसे सुषाव, नदीषु, सर्वेषाम्।

## षड्लिङ्गरूपप्रदर्शको द्वितीयोऽध्यायः ।

(पुं) अकारान्त राम (ईश्वर) रमन्ते योगिनो भूतानि वा यस्मिन्, रम् + घञ् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | रामः | रामौ | रामाः |
| द्वि. | रामम् | रामौ | रामान् |
| तृ. | रामेण | रामाभ्याम् | रामैः |
| च. | रामाय | रामाभ्याम् | रामेभ्यः |
| पं. | रामात् | रामाभ्याम् | रामेभ्यः |
| ष. | रामस्य | रामयोः | रामाणाम् |
| स. | रामे | रामयोः | रामेषु |
| सं. | हे राम | रामौ | रामाः |

आ० विश्वपा (विश्व का रक्षक) विश्वं पातीति, विश्व + पा + क्विप् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | विश्वपाः | विश्वपौ | विश्वपाः |
| द्वि. | विश्वपाम् | विश्वपौ | विश्वपः |
| तृ. | विश्वपा | विश्वपाभ्यां | विश्वपाभिः |
| च. | विश्वपे | ,, | विश्वपाभ्यः |
| पं. | विश्वपः | ,, | ,, |
| ष. | विश्वपः | विश्वपोः | विश्वपाम् |
| स. | विश्वपि | ,, | विश्वपासु |
| सं. | हे विश्वपाः | विश्वपौ | विश्वपाः |

इ—हरिः (ईश्वर) हरति पापानिति, हृ + इन् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | हरिः | हरी | हरयः |
| द्वि. | हरिम् | हरी | हरीन् |
| तृ. | हरिणा | हरिभ्यां | हरिभिः |
| च. | हरये | हरिभ्यां | हरिभ्यः |
| पं. | हरेः | हरिभ्यां | हरिभ्यः |
| ष. | हरेः | हर्योः | हरीणाम् |
| स. | हरौ | हर्योः | हरिषु |
| सं. | हे हरे | हरी | हरयः |

इ—सखि (मित्र) सहसमानं ख्यायत इति, सह + ख्या + इन् ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | सखा | सखायौ | सखायः |
| द्वि. | सखायम् | सखायौ | सखीन् |
| तृ. | सख्या | सखिभ्याम् | सखिभिः |
| च. | सख्ये | सखिभ्याम् | सखिभ्यः |
| पं. | सख्युः | सखिभ्याम् | सखिभ्यः |
| ष. | सख्युः | सख्योः | सखीनाम् |
| स. | सख्यौ | सख्योः | सखिषु |
| सं. | हे सखे | सखायौ | सखायः |

ई—पपी (सूर्य) पाति लोकमिति पा + ई

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | पपीः | पप्यौ | पप्यः |
| द्वि. | पपीम् | पप्यौ | पप्यः |
| तृ. | पप्या | पपीभ्याम् | पपीभिः |
| च. | पप्ये | पपीभ्याम् | पपीभ्यः |
| पं. | पप्यः | पपीभ्याम् | पपीभ्यः |
| ष. | पप्यः | पप्योः | पप्याम् |
| स. | पपी | पप्योः | पपीषु |
| सं. | हे पपीः | पप्यौ | पप्यः |

ई—सुधी (अच्छी बुद्धिवाला) सुष्ठु शोभनाधीर्यस्य सः, सु + ध्या + ई

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | सुधीः | सुधियौ | सुधियः |
| द्वि. | सुधियम् | सुधियौ | सुधियः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| तृ. | सुधिया | सुधीभ्याम् | सुधीभिः |
| च. | सुधिये | सुधीभ्याम् | सुधीभ्यः |
| पं. | सुधियः | सुधीभ्याम् | सुधीभ्यः |
| ष. | सुधियः | सुधियोः | सुधियाम् |
| स. | सुधियि | सुधियोः | सुधीषु |
| सं. | हे सुधीः | सुधियौ | सुधियः |

उ + भानु (सूर्य) भातीति भा + नुक्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | भानुः | भानू | भानवः |
| द्वि. | भानुम् | भानू | भानून् |
| तृ. | भानुना | भानुभ्याम् | भानुभिः |
| च. | भानवे | भानुभ्याम् | भानुभ्यः |
| पं. | भानोः | भानुभ्याम् | भानुभ्यः |
| ष. | भानोः | भान्वोः | भानूनाम् |
| स. | भानौ | भान्वोः | भानुषु |
| सं. | हे भानो | भानू | भानवः |

ऊ—वर्षाभू (मेंडक) वर्षास्वाभव-तीति भू + क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | वर्षाभूः | वर्षाभ्वौ | वर्षाभ्वः |
| द्वि. | वर्षाभ्वम् | वर्षाभ्वौ | वर्षाभ्वः |
| तृ. | वर्षाभ्वा | वर्षाभूभ्याम् | वर्षाभूभिः |
| च. | वर्षाभ्वे | " | वर्षाभूभ्यः |
| पं. | वर्षाभ्वः | " | वर्षाभूभ्यः |
| ष. | वर्षाभ्वः | वर्षाभ्वोः | वर्षाभ्वाम् |
| स. | वर्षाभ्वि | वर्षाभ्वोः | वर्षाभूषु |
| सं. | हे वर्षाभूः | वर्षाभ्वौ | वर्षाभ्वः |

ऊ—स्वयम्भू (ब्रह्मा) स्वयंभवतीति भू + क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | स्वयम्भूः | स्वयम्भुवौ | स्वयम्भुवः |
| द्वि. | स्वयम्भुवम् | स्वयम्भुवौ | स्वयम्भुवः |
| तृ. | स्वयम्भुवा | स्वयंभूभ्यां | स्वयम्भूभिः |
| च. | स्वयम्भुवे | " | स्वयम्भूभ्यः |
| पं. | स्वयम्भुवः | " | " |
| ष. | स्वयम्भुवः | स्वयम्भुवोः | स्वयंभुवाम् |
| स. | स्वयम्भुवि | " | स्वयम्भूषु |
| सं. | हे स्वयम्भूः | स्वयम्भुवौ | स्वयम्भुवः |

ऋ—पितृ (पिता) पातिरक्षतीति पा + तृच्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | पिता | पितरौ | पितरः |
| द्वि. | पितरम् | पितरौ | पितॄन् |
| तृ. | पित्रा | पितृभ्याम् | पितृभिः |
| च. | पित्रे | पितृभ्याम् | पितृभ्यः |
| पं. | पितुः | पितृभ्याम् | पितृभ्यः |
| ष. | पितुः | पित्रोः | पितॄणाम् |
| स. | पितरि | " | पितृषु |
| सं. | हे पितः | पितरौ | पितरः |

ऐ—रै (धन) ददातीति जनेभ्यस्तु-ष्यनेन रा + डै

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | राः | रायौ | रायः |
| द्वि. | रायम् | रायौ | रायः |
| तृ. | राया | राभ्याम् | राभिः |
| च. | राये | राभ्याम् | राभ्यः |
| पं. | रायः | राभ्याम् | राभ्यः |
| ष. | रायः | रायोः | रायाम् |
| स. | रायि | रायोः | रासु |
| सं. | हे राः | रायौ | रायः |

ओ—गो (गाय) गच्छतीति गम् + डो

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | गौः | गावौ | गावः |
| द्वि. | गाम् | गावौ | गाः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| तृ. | गवा | गोभ्याम् | गोभिः |
| च. | गवे | गोभ्याम् | गोभ्यः |
| पं. | गोः | गोभ्याम् | गोभ्यः |
| ष. | गोः | गवोः | गवाम् |
| स. | गवि | गवोः | गोषु |
| सं. | हे गौः | गावौ | गावः |

औ—ग्लौ (चन्द्रमा) ग्लायतीति
ग्लै + डौ

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | ग्लौः | ग्लावौ | ग्लावः |
| द्वि. | ग्लावम् | ग्लावौ | ग्लावः |
| तृ. | ग्लावा | ग्लौभ्याम् | ग्लौभिः |
| च. | ग्लावे | ग्लौभ्याम् | ग्लौभ्यः |
| पं. | ग्लावः | ग्लौभ्याम् | ग्लौभ्यः |
| ष. | ग्लावः | ग्लावोः | ग्लावाम् |
| स. | ग्लावि | ग्लावोः | ग्लौषु |
| सं. | हे ग्लौः | ग्लावौ | ग्लावः |

अजन्त स्त्रीलिङ्ग आ—रमा (लक्ष्मी)
रमयति लोकान्, रम् + अच् + आ

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | रमा | रमे | रमाः |
| द्वि. | रमाम् | रमे | रमाः |
| तृ. | रमया | रमाभ्याम् | रमाभिः |
| च. | रमायै | रमाभ्याम् | रमाभ्यः |
| पं. | रमायाः | रमाभ्याम् | रमाभ्यः |
| ष. | रमायाः | रमयोः | रमाणाम् |
| स. | रमायाम् | रमयोः | रमासु |
| सं. | हे रमे | रमे | रमाः |

इ—मति (बुद्धि) मन्यते ज्ञायतेऽनया,
मन् + क्तिन्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | मतिः | मती | मतयः |
| द्वि. | मतिम् | मती | मतीः |
| तृ. | मत्या | मतिभ्याम् | मतिभिः |
| च. | मत्यै, मतये | मतिभ्याम् | मतिभ्यः |
| पं. | मत्याः, मतेः | मतिभ्याम् | मतिभ्यः |
| ष. | मत्याः, मतेः | मत्योः | मतीनाम् |
| स. | मत्याम्, मतौ | ,, | मतिषु |
| सं. | हे मते | मती | मतयः |

ई—नदी (दरिया) नदन्ति जलजन्त-
घोषस्यां, नद् + अच् + ई

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | नदी | नद्यौ | नद्यः |
| द्वि. | नदीम् | नद्यौ | नदीः |
| तृ. | नद्या | नदीभ्याम् | नदीभिः |
| च. | नद्यै | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| पं. | नद्याः | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| ष. | नद्याः | नद्योः | नदीनाम् |
| स. | नद्याम् | नद्योः | नदीषु |
| सं. | हे नदि | नद्यौ | नद्यः |

उ—धेनु (गौ) धयति सुतानिति
धे + नुः

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | धेनुः | धेनू | धेनवः |
| द्वि. | धेनुम् | धेनू | धेनूः |
| तृ. | धेन्वा | धेनुभ्याम् | धेनुभिः |
| च. | धेन्वै, धेनवे | धेनुभ्याम् | धेनुभ्यः |
| पं. | धेन्वाः धेनोः | ,, | धेनुभ्यः |
| ष. | ,, | धेन्वोः | धेनूनां |
| स. | धेन्वाम् धेनौ | ,, | धेनुषु |
| सं. | हे धेनो | धेनू | धेनवः |

ऊ—भ्रू (भौं) भ्राम्यतीति, भ्रम् + डू

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | भ्रूः | भ्रुवौ | भ्रुवः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वि. | भुवम् | ” | ” |
| तृ. | भुवा | भूभ्याम् | भूभिः |
| च. | भुवै, भुवे | ” | भूभ्यः |
| पं. | भुवाः, भुवः | ” | ” |
| ष. | ” ” | भुवोः | भुवाम् भूणाम् |
| स. | भुवाम्, भुवि | ” | भूषु |
| सं. | हे भूः | भुवौ | भुवः |

ऋ—मातृ (माता) मीयते आद्रियते या, मा + तृच्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | माता | मातरौ | मातरः |
| द्वि. | मातरम् | मातरौ | मातृः |
| तृ. | मात्रा | मातृभ्याम् | मातृभिः |
| च. | मात्रे | मातृभ्याम् | मातृभ्यः |
| पं. | मातुः | मातृभ्याम् | मातृभ्यः |
| ष. | मातुः | मात्रोः | मातृणाम् |
| स. | मातरि | मात्रोः | मातृषु |
| सं. | हे मातः | मातरौ | मातरः |

ऐ—सुरै (अच्छे धनवाली) सुष्ठु शोभनो रायस्यः सा

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | सुराः | सुरायौ | सुरायः |
| द्वि. | सुरायम् | सुरायौ | सुरायः |
| तृ. | सुराया | सुराभ्याम् | सुराभिः |
| च. | सुराये | सुराभ्याम् | सुराभ्यः |
| पं. | सुरायाः | सुराभ्याम् | सुराभ्यः |
| ष. | सुरायाः | सुरायोः | सुरायाम् |
| स. | सुरायि | सुरायोः | सुरासु |
| सं. | हे सुराः | सुरायौ | सुरायः |

औ—नौ (नाव) नोद्यते या सा, नुद् + डौ

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | नौः | नावौ | नावः |
| द्वि. | नावम् | नावौ | नावः |
| तृ. | नावा | नौभ्याम् | नौभिः |
| च. | नावे | नौभ्याम् | नौभ्यः |
| पं. | नावः | नौभ्याम् | नौभ्यः |
| ष. | नावः | नावोः | नावाम् |
| स. | नावि | नावोः | नौषु |
| सं. | हे नौः | नावौ | नावः |

(अ. नपुं.) अ—ज्ञान (समझ) ज्ञायतेऽनेनेति, ज्ञा + ल्युट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | ज्ञानम् | ज्ञाने | ज्ञानानि |
| द्वि. | ज्ञानम् | ज्ञाने | ज्ञानानि |
| तृ. | ज्ञानेन | ज्ञानाभ्यां | ज्ञानैः |
| च. | ज्ञानाय | ज्ञानाभ्यां | ज्ञानेभ्यः |
| पं. | ज्ञानात् | ज्ञानाभ्यां | ज्ञानेभ्यः |
| ष. | ज्ञानस्य | ज्ञानयोः | ज्ञानानाम् |
| स. | ज्ञाने | ज्ञानयोः | ज्ञानेषु |
| सं. | हे ज्ञान | ज्ञाने | ज्ञानानि |

इ—वारि (जल) वार्यतेऽनेनेति, वृ + इञ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | वारि | वारिणी | वारीणि |
| द्वि. | वारि | वारिणी | वारीणि |
| तृ. | वारिणा | वारिभ्यां | वारिभिः |
| च. | वारिणे | वारिभ्यां | वारिभ्यः |
| पं. | वारिणः | वारिभ्यां | वारिभ्यः |
| ष. | वारिणः | वारिणोः | वारीणां |
| स. | वारिणि | वारिणोः | वारिषु |
| सं. | हे वारि, वारे | वारिणी | वारीणि |

इ—अक्षि (नेत्र) अश्यन्ते व्याप्यन्ते रूपादिपदार्था येन, अश्+क्+सि

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | अक्षि | अक्षिणी | अक्षीणि |
| द्वि. | अक्षि | अक्षिणी | अक्षीणि |
| तृ. | अक्ष्णा | अक्षिभ्यां | अक्षिभिः |
| च. | अक्ष्णे | अक्षिभ्यां | अक्षिभ्यः |
| पं. | अक्ष्णः | अक्षिभ्यां | अक्षिभ्यः |
| ष. | अक्ष्णः | अक्ष्णोः | अक्ष्णाम् |
| स. | अक्ष्णि अक्षणि | अक्ष्णोः | अक्षिषु |
| सं. | हे अक्षे अक्षि इत्यादि | | |

उ—मधु (शहद) मन्+उ नस्य धः

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | मधु | मधुनी | मधूनि |
| द्वि. | ” | ” | ” |
| तृ. | मधुना | मधुभ्यां | मधुभिः |
| च. | मधुने | ” | मधुभ्यः |
| पं. | मधुनः | ” | ” |
| ष. | ” | मधुनोः | मधूनां |
| स. | मधुनि | ” | मधुषु |
| सं. | हे मधो मधु | | इत्यादि |

ऋ—धातृ (धाय) दधातीति, धा+तृच्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | धातृ | धातृणी | धातृणि |
| द्वि. | ” | ” | ” |
| तृ. | धात्रा | धातृभ्यां | धातृभिः |
| च. | धात्रे | धातृभ्यां | धातृभ्यः |
| पं. | धातुः | धातृभ्यां | धातृभ्यः |
| ष. | धातुः | धात्रोः | धातृणाम् |
| स. | धातरि | धात्रोः | धातृषु |
| सं. | हे धातः धातृ | | इत्यादि |

ऐ—प्रै (कुमती) सुष्ठु रायस्य तत्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | प्ररि | प्ररिणी | प्ररीणि |
| द्वि. | ” | ” | ” |

शेषं पुम्वत्

ओ—प्रद्यो (आकाश) प्रकर्षेण दीव्यतीति तत्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | प्रद्यु | प्रद्युनी | प्रद्यूनि |
| द्वि. | ” | ” | ” |

शेषं पुम्वत्

औ—सुनौ (अच्छी नाववाला) सुष्ठु शोभना नौर्यस्य तत्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | सुनु | सुनुनी | सुनूनि |
| द्वि. | ” | ” | ” |
| तृ. | सुनुना | सुनुभ्यां | सुनुभिः |
| च. | सुनुने | सुनुभ्यां | सुनुभ्यः |
| पं. | सुनुनः | सुनुभ्यां | सुनुभ्यः |
| ष. | सुनुनः | सुनुनोः | सुनुनाम् |
| स. | सुनुनि | सुनुनोः | सुनुषु |
| सं. | हे सुनु | | इत्यादि |

हलन्त पुलिङ्ग च—जलमुच् (बादल) जलं मुञ्चतीति, मुच्+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | जलमुक् ग् | जलमुचौ | जलमुचः |
| द्वि. | जलमुचं | ” | ” |
| तृ. | जलमुचा | जलमुग्भ्यां | जलमुग्भिः |
| च. | जलमुचे | जलमुग्भ्यां | जलमुग्भ्यः |
| पं. | जलमुचः | जलमुग्भ्यां | ” |
| ष. | जलमुचः | जलमुचोः | जलमुचां |
| स. | जलमुचि | ” | जलमुक्षु |
| सं. | हे जलमुक् | | इत्यादि |

ज्—वणिज् (बनिया) पणायते व्यवहरतीति पण् + इज् पस्य वत्वम्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | वणिक् | वणिजौ | वणिजः |
| द्वि. | वणिजं | वणिजौ | वणिजः |
| तृ. | वणिजा | वणिग्भ्यां | वणिग्भिः |
| च. | वणिजे | वणिग्भ्यां | वणिग्भ्यः |
| पं. | वणिजः | वणिग्भ्यां | वणिग्भ्यः |
| ष. | वणिजः | वणिजोः | वणिजाम् |
| स. | वणिजि | वणिजोः | वणिक्षु |
| सं. | हे वणिक् | | इत्यादि |

ज्—(सम्राज्) मण्डलेश्वरराजा सम्यक्राजते, राज+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | सम्राट् | सम्राजौ | सम्राजः |
| द्वि. | सम्राजम् | सम्राजौ | सम्राजः |
| तृ. | सम्राजा | सम्राड्भ्याम् | सम्राड्भिः |
| च. | सम्राजे | ,, | सम्राड्भ्यः |
| पं. | सम्राजः | ,, | सम्राड्भ्यः |
| ष. | सम्राजः | सम्राजोः | सम्राजाम् |
| स. | सम्राजि | सम्राजोः | सम्राट्सु |
| सं. | हे सम्राट् | | |

त्—भूभृत् (पहाड़ या राजा) भुवं बिभर्तीति, भू + भृ + क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | भूभृत् | भूभृतौ | भूभृतः |
| द्वि. | भूभृतम् | भूभृतौ | भूभृतः |
| तृ. | भूभृता | भूभृद्भ्यां | भूभृद्भिः |
| च. | भूभृते | भूभृद्भ्यां | भूभृद्भ्यः |
| पं. | भूभृतः | भूभृद्भ्यां | भूभृद्भ्यः |
| ष. | भूभृतः | भूभृतोः | भूभृताम् |
| स. | भूभृति | भूभृतोः | भूभृत्सु |
| सं. | हे भूभृत् | | इत्यादि |

त्—धावत् (दौड़ता हुआ) धावतीति, धाव + शतृ

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | धावन् | धावन्तौ | धावन्तः |
| द्वि. | धावन्तम् | धावन्तौ | धावतः |
| तृ. | धावता | धावद्भ्याम् | धावद्भिः |
| च. | धावते | ,, | धावद्भ्यः |
| पं. | धावतः | ,, | धावद्भ्यः |
| ष. | धावतः | धावतोः | धावताम् |
| स. | धावति | धावतोः | धावत्सु |
| सं. | हे धावन् | | इत्यादि |

त्—श्रीमत् (लक्ष्मीवान्) श्रीर्विद्यतेऽस्य, श्री + मतुप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | श्रीमान् | श्रीमन्तौ | श्रीमन्तः |
| द्वि. | श्रीमन्तम् | श्रीमन्तौ | श्रीमतः |
| तृ. | श्रीमता | श्रीमद्भ्यां | श्रीमद्भिः |
| च. | श्रीमते | श्रीमद्भ्यां | श्रीमद्भ्यः |
| पं. | श्रीमतः | श्रीमद्भ्यां | श्रीमद्भ्यः |
| ष. | श्रीमतः | श्रीमतोः | श्रीमताम् |
| स. | श्रीमति | श्रीमतोः | श्रीमत्सु |
| सं. | हे श्रीमन् | | |

त्—महत् (बड़ा) महते पूज्यते यः सः, मह् + अति

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | महान् | महान्तौ | महान्तः |
| द्वि. | महान्तम् | महान्तौ | महतः |
| तृ. | महता | महद्भ्याम् | महद्भिः |
| च. | महते | महद्भ्याम् | महद्भ्यः |
| पं. | महतः | महद्भ्याम् | महद्भ्यः |
| ष. | महतः | महतोः | महताम् |
| स. | महति | महतोः | महत्सु |
| सं. | हे महन् | इत्यादि | |

द्—सुहृद् (मित्र) सुष्ठुशोभनंहृदयस्य स', सु+हृ+क्विप् तुक्च

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | सुहृद् | सुहृदौ | सुहृदः |
| द्वि. | सुहृदम् | सुहृदौ | सुहृदः |
| तृ. | सुहृदा | सुहृद्भ्यां | सुहृद्भिः |
| च. | सुहृदे | सुहृद्भ्यां | सुहृद्भ्यः |
| पं. | सुहृदः | सुहृद्भ्यां | सुहृद्भ्यः |
| ष. | सुहृदः | सुहृदोः | सुहृदाम् |
| स. | सुहृदि | सुहृदोः | सुहृत्सु |
| सं. | हे सुहृत् | | |

ध्—युध् (लड़ाई) युध्यन्त्यसिमिति, युध्+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | युत् | युधौ | युधः |
| द्वि. | युधम् | युधौ | युधः |
| तृ. | युधा | युद्भ्याम् | युद्भिः |
| च. | युधे | युद्भ्याम् | युद्भ्यः |
| प. | युधः | युद्भ्याम् | " |
| ष. | युधः | युधोः | युधाम् |
| स. | युधि | युधोः | युत्सु |
| सं. | हे युत् | | |

न्—आत्मन् (चित्त) अतति सततं गच्छति, अत्+मनिण्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | आत्मा | आत्मानौ | आत्मानः |
| द्वि. | आत्मानं | आत्मानौ | आत्मनः |
| तृ. | आत्मना | आत्मभ्यां | आत्मभिः |
| च. | आत्मने | आत्मभ्यां | आत्मभ्यः |
| पं. | आत्मनः | आत्मभ्यां | " |
| ष. | आत्मनः | आत्मनोः | आत्मनाम् |
| स. | आत्मनि | आत्मनोः | आत्मसु |
| सं. | हे आत्मन् | | |

न्—श्वन् (कुत्ता) श्वि+कनिन् धा डिन्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | श्वा | श्वानौ | श्वानः |
| द्वि. | श्वानम् | श्वानौ | शुनः |
| तृ. | शुना | श्वभ्याम् | श्वभिः |
| च. | शुने | श्वभ्याम् | श्वभ्यः |
| पं. | शुनः | श्वभ्याम् | श्वभ्यः |
| ष. | शुनः | शुनोः | शुनाम् |
| स. | शुनि | शुनोः | श्वसु |

न्—युवन् (जवान) यु+कनिन्, युमिश्रणामिश्रणयोः

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | युवा | युवानौ | युवानः |
| द्वि. | युवानम् | युवानौ | यूनः |
| तृ. | यूना | युवभ्यां | युवभिः |
| च. | यूने | युवभ्यां | युवभ्यः |
| पं. | यूनः | युवभ्यां | युवभ्यः |
| ष. | यूनः | यूनोः | यूनाम् |
| स. | यूनि | यूनोः | युवसु |
| सं. | हे युवन् | | |

न्—गुणिन् (गुणवान्) गुणाः सन्त्यस्य, गुण+इनि

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | गुणी | गुणिनौ | गुणिनः |
| द्वि. | गुणिनं | गुणिनौ | गुणिनः |
| तृ. | गुणिना | गुणिभ्यां | गुणिभिः |
| च. | गुणिने | गुणिभ्यां | गुणिभ्यः |
| पं. | गुणिनः | गुणिभ्यां | गुणिभ्यः |
| ष. | गुणिनः | गुणिनोः | गुणिनां |
| स. | गुणिनि | गुणिनोः | गुणिषु |
| सं. | हे गुणिन् | | |

न्—पथिन् (रास्ता) पथगतौ+इनि

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | पन्थाः | पन्थानौ | पन्थानः |
| द्वि. | पन्थानं | पन्थानौ | पथः |
| तृ. | पथा | पथिभ्यां | पथिभिः |
| च. | पथे | पथिभ्यां | पथिभ्यः |
| पं. | पथः | पथिभ्यां | पथिभ्यः |
| ष. | पथः | पथोः | पथाम् |
| स. | पथि | पथोः | पथिसु |
| सं. | हे पन्थाः | | |

श्—विश् (वैश्य) विशति विश्+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | विट् | विशौ | विशः |
| द्वि. | विशम् | विशौ | विशः |
| तृ. | विशा | विड्भ्यां | विड्भिः |
| च. | विशे | विड्भ्यां | विड्भ्यः |
| पं. | विशः | विड्भ्यां | विड्भ्यः |
| ष. | विशः | विशोः | विशाम् |
| स. | विशि | विशोः | विट्सु |
| सं. | हे विट् | | |

श्-तादृश् (तैसा) तमिवादृश्यते+क्विप

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | तादृक् | तादृशौ | तादृशः |
| द्वि. | तादृशम् | तादृशौ | तादृशः |
| तृ | तादृशा | तादृग्भ्यां | तादृग्भिः |
| च. | तादृशे | तादृग्भ्यां | तादृग्भ्यः |
| पं. | तादृशः | तादृग्भ्यां | तादृग्भ्यः |
| ष. | तादृशः | तादृशोः | तादृशाम् |
| स. | तादृशि | तादृशोः | तादृक्षु |
| सं. | हे तादृक् | | |

ष्—द्विष् (वैरी) द्वेष्टीति द्विष्+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | द्विट् | द्विषौ | द्विषः |
| द्वि. | द्विषम् | ,, | द्विषः |
| तृ. | द्विषा | द्विड्भ्यां | द्विड्भिः |
| च. | द्विषे | ,, | द्विड्भ्यः |
| पं. | द्विषः | ,, | ,, |
| ष. | ,, | द्विषोः | द्विषाम् |
| स. | द्विषि | ,, | द्विट्सु द्विड्त्सु |
| सं. | हे द्विट् | | |

स्—चन्द्रमस् (चन्द्रमा) चन्द्रमाह्लादं मिमीते, मा+असु

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | चन्द्रमाः | चन्द्रमसौ | चन्द्रमसः |
| द्वि. | चन्द्रमसं | चन्द्रमसौ | चन्द्रमसः |
| तृ. | चन्द्रमसा | चन्द्रमोभ्यां | चन्द्रमोभिः |
| च. | चन्द्रमसे | ,, | चन्द्रमोभ्यः |
| पं. | चन्द्रमसः | ,, | ,, |
| ष. | चन्द्रमसः | चन्द्रमसोः | चन्द्रमसाम् |
| स. | चन्द्रमसि | चन्द्रमसोः | चन्द्रमस्सु |
| सं. | हे चन्द्रमः | | |

स्—विद्वस् (विद्वान्) वेत्तीति, विद्+क्वसु

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | विद्वान् | विद्वांसौ | विद्वांसः |
| द्वि. | विद्वांसम् | ,, | विदुषः |
| तृ. | विदुषा | विद्वद्भ्यां | विद्वद्भिः |
| च. | विदुषे | ,, | विद्वद्भ्यः |
| पं. | विदुषः | ,, | ,, |
| ष. | विदुषः | विदुषोः | विदुषाम् |
| स. | विदुषि | ,, | विद्वत्सु |
| सं. | हे विद्वन् | | |

स्—पुम्स् (मनुष्य) पातीति
पा+डुम्सुन्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | पुमान् | पुमांसौ | पुमांसः |
| द्वि. | पुमांसम् | पुमांसौ | पुंसः |
| तृ. | पुंसा | पुम्भ्यां | पुम्भिः |
| च. | पुंसे | पुम्भ्यां | पुम्भ्यः |
| पं. | पुंसः | पुम्भ्यां | पुम्भ्यः |
| ष. | पुंसः | पुंसोः | पुंसाम् |
| स. | पुंसि | पुंसोः | पुंस्सु |
| सं. | हे पुमन् | | |

ह्—मधुलिह् (भौंरा) मधुलेढीति,
लिह्+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | मधुलिट् | मधुलिहौ | मधुलिहः |
| द्वि. | मधुलिहम् | ,, | ,, |
| तृ. | मधुलिहा | मधुलिड्भ्यां | मधुलिड्भिः |
| च. | मधुलिहे | ,, | मधुलिड्भ्यः |
| पं. | मधुलिहः | ,, | ,, |
| ष. | मधुलिहः | मधुलिहोः | मधुलिहाम् |
| स. | मधुलिहि | ,, | मधुलिट्सु-ट्त्सु |
| सं. | हे मधुलिट् | | |

ह्—अनडुह् (बैल) अनः शकटं
वहतीति, वह्+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | अनड्वान् | अनड्वाहौ | अनड्वाहः |
| द्वि. | अनड्वाहम् | ,, | ,, |
| तृ. | अनडुहा | अनडुद्भ्यां | अनडुद्भिः |
| च. | अनडुहे | ,, | अनडुद्भ्यः |
| पं. | अनडुहः | ,, | अनडुद्भ्यः |
| ष. | अनडुहः | अनडुहोः | अनडुहाम् |
| स. | अनडुहि | अनडुहोः | अनडुत्सु |
| सं. | हे अनड्वन् | | |

हलन्त स्त्रीलिङ्ग।

च्—वाच् (वाणी) उच्यतेऽनयासा,
वच्+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | वाक् | वाचौ | वाचः |
| द्वि. | वाचम् | वाचौ | वाचः |
| तृ. | वाचा | वाग्भ्याम् | वाग्भिः |
| च. | वाचे | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः |
| पं. | वाचः | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः |
| ष. | वाचः | वाचोः | वाचाम् |
| स. | वाचि | वाचोः | वाक्षु |
| सं. | हे वाक् | | |

ध्—वीरुध् (वृक्ष) विशेषेण रुणद्धि
स्थानं या सा वि+रुध्+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | वीरुत् | वीरुधौ | वीरुधः |
| द्वि. | वीरुधम् | वीरुधौ | वीरुधः |
| तृ. | वीरुधा | वीरुद्भ्याम् | वीरुद्भिः |
| च. | वीरुधे | ,, | वीरुद्भ्यः |
| पं. | वीरुधः | ,, | ,, |
| ष. | वीरुधः | वीरुधोः | वीरुधाम् |
| स. | वीरुधि | वीरुधोः | वीरुत्सु |
| सं. | हे वीरुत् | | |

प्—अप् (जल) आप्यन्ते यास्ताः,
आप्+क्विप्

बहुवचनान्त:

आपः
अपः
अद्भिः
अद्भ्यः
,,
अपाम्
अप्सु
हे आपः

र्—गिर् (वाणी) गृणाति तत्व मनया, गृ+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | गीः | गिरौ | गिरः |
| द्वि. | गिरम् | गिरौ | गिरः |
| तृ. | गिरा | गीर्भ्याम् | गीर्भिः |
| च. | गिरे | गीर्भ्याम् | गीर्भ्यः |
| पं. | गिरः | गीर्भ्याम् | गीर्भ्यः |
| ष. | गिरः | गिरोः | गिराम् |
| स. | गिरि | गिरोः | गीर्षु |
| सं. | हे गीः | | |

व्—दिव् (स्वर्ग) दीव्यन्ति देवा यत्र, दिव्+डिवि

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | द्यौः | दिवौ | दिवः |
| द्वि. | दिवम् | दिवौ | दिवः |
| तृ. | दिवा | द्युभ्याम् | द्युभिः |
| च. | दिवे | ,, | द्युभ्यः |
| पं. | दिवः | ,, | ,, |
| ष. | दिवः | दिवोः | दिवाम् |
| स. | दिवि | दिवोः | द्युषु |
| सं. | हे द्यौः | | |

ष्—आशिष् (आशीर्वाद) आ+शास्+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | आशीः | आशिषौ | आशिषः |
| द्वि. | आशिषम् | आशिषौ | आशिषः |
| तृ. | आशिषा | आशीर्भ्याम् | आशीर्भिः |
| च. | आशिषे | ,, | आशीर्भ्यः |
| पं. | आशिषः | ,, | आशीर्भ्यः |
| ष. | आशिषः | आशिषोः | आशिषाम् |
| स. | आशिषि | आशिषोः | आशीःषु आशीष्षु |
| सं. | हे आशीः | | |

ह्—उपानह् (जूता) उपानह्यते या सा, उप+आनह् क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | उपानत् | उपानहौ | उपानहः |
| द्वि. | उपानहम् | उपानहौ | उपानहः |
| तृ. | उपानहा | उपानद्भ्यां | उपानद्भिः |
| च. | उपानहे | ,, | उपानद्भ्यः |
| पं. | उपानहः | ,, | उपानद्भ्यः |
| ष. | उपानहः | उपानहोः | उपानहाम् |
| स. | उपानहि | उपानहोः | उपानत्सु |
| सं. | हे उपानत् | | |

हलन्त नपुंसक ।

ज्—असृज् (लोहू) न सृज्यते इति न+सृज्+क्विप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | असृक् | असृजी | असृञ्जि |
| द्वि. | असृक् | असृजी | असृञ्जि |
| तृ. | असृजा | असृग्भ्याम् | असृग्भिः |
| च. | असृजे | ,, | असृग्भ्यः |
| पं. | असृजः | ,, | असृग्भ्यः |
| ष. | असृजः | असृजोः | असृजाम् |
| स. | असृजि | असृजोः | असृक्षु |
| सं. | हे असृक् | | |

अस्यतेरौणादिके ऋच् वा ।

त्—श्रीमत् (शोभावान्) श्रीः शोभास्त्यस्य तत्, श्री+मतुप्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | श्रीमत् | श्रीमती | श्रीमन्ति |
| द्वि. | श्रीमत् | श्रीमती | श्रीमन्ति |

शेषम्पुम्वत् ।

त्—महत् (बड़ा) महान्, यत्तत्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | महत् | महती | महान्ति |

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वि. | महत् | महती | महान्ति |

शेषपुम्वत्।

न्—नामन् (नाम) नाम्यतेऽभिधीयतेऽर्थोऽनेन, नम्+मनण्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | नाम | नाम्नी नामनी | नामानि |
| द्वि. | नाम | " | नामानि |
| तृ. | नाम्ना | नामभ्याम् | नामभिः |
| च. | नाम्ने | नामभ्याम् | नामभ्यः |
| पं. | नाम्नः | नामभ्याम् | नामभ्यः |
| ष. | नाम्नः | नाम्नोः | नाम्नाम् |
| स. | नाम्नि नामनि | " | नामसु |
| सं. | हे नाम, नामन् इत्यादि | | |

न्—अहन् (दिन) न जहातीति, न+हा+कनिन्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | अहः | अह्नी, अही | अहानि |
| द्वि. | अहः | " | अहानि |
| तृ. | अह्ना | अहोभ्याम् | अहोभिः |
| च. | अह्ने | अहोभ्याम् | अहोभ्यः |
| पं. | अह्नः | अहोभ्याम् | अहोभ्यः |
| ष. | अह्नः | अह्नोः | अह्नाम् |
| स. | अह्नि, अहनि | " | अहःसु |
| सं. | हे अहः | | |

श्—तादृश् (तैसा) तमेव दृश्यत इति तत्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | तादृक् | तादृशी | तादृंशि |
| द्वि. | तादृक् | तादृशी | तादृंशि |

शेषपुम्वत्

स्—पयस् (जल व दूध) पीयते यत्तत्, पा+असुन्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | पयः | पयसी | पयांसि |
| द्वि. | पयः | पयसी | पयांसि |
| तृ. | पयसा | पयोभ्याम् | पयोभिः |
| च. | पयसे | पयोभ्याम् | पयोभ्यः |
| पं. | पयसः | पयोभ्याम् | पयोभ्यः |
| ष. | पयसः | पयसोः | पयसाम् |
| स. | पयसि | पयसोः | पयस्सु |
| सं. | हे पयः | | |

ष्—हविष् (हवन पदार्थ) हूयते यत्तत्, हु+इसुन्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | हविः | हविषी | हवींषि |
| द्वि. | हविः | हविषी | हवींषि |
| तृ. | हविषा | हविर्भ्याम् | हविर्भिः |
| च. | हविषे | हविर्भ्याम् | हविर्भ्यः |
| पं. | हविषः | हविर्भ्याम् | हविर्भ्यः |
| ष. | हविषः | हविषोः | हविषाम् |
| स. | हविषि | हविषोः | हविष्षु |
| सं. | हे हविः | | |

ष्—धनुष् (कमान) धन+उसि

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | धनुः | धनुषी | धनूंषि |
| द्वि. | धनुः | धनुषी | धनूंषि |
| तृ. | धनुषा | धनुर्भ्याम् | धनुर्भिः |
| च. | धनुषे | धनुर्भ्याम् | धनुर्भ्यः |
| पं. | धनुषः | धनुर्भ्याम् | धनुर्भ्यः |
| ष. | धनुषः | धनुषोः | धनुषाम् |
| स. | धनुषि | धनुषोः | धनुष्षु |
| सं. | हे धनुः | | |

सर्वादिस्त्रिलिङ्गीशब्द।

अ—सर्व (सब) सर्वसर्पणे+अच्

पुल्लिङ्ग

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | सर्वः | सर्वौ | सर्वे |
| द्वि. | सर्वम् | सर्वौ | सर्वान् |
| तृ. | सर्वेण | सर्वाभ्याम् | सर्वैः |
| च. | सर्वस्मै | सर्वाभ्याम् | सर्वेभ्यः |
| पं. | सर्वस्मात् | सर्वाभ्याम् | सर्वेभ्यः |
| ष. | सर्वस्य | सर्वयोः | सर्वेषाम् |
| स. | सर्वस्मिन् | सर्वयोः | सर्वेषु |
| सं. | हे सर्व | | |

नपुंसक।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | सर्वम् | सर्वे | सर्वाणि |
| द्वि. | सर्वम् | सर्वे | सर्वाणि |

शेषम्पुम्वत्

स्त्रीलिङ्ग।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | सर्वा | सर्वे | सर्वाः |
| द्वि. | सर्वाम् | सर्वे | सर्वाः |
| तृ. | सर्वया | सर्वाभ्याम् | सर्वाभिः |
| च. | सर्वस्यै | सर्वाभ्याम् | सर्वाभ्यः |
| पं. | सर्वस्याः | सर्वाभ्याम् | सर्वाभ्यः |
| ष. | सर्वस्याः | सर्वयोः | सर्वासाम् |
| स. | सर्वस्याम् | सर्वयोः | सर्वासु |
| सं. | हे सर्वे | | |

म्—किम् (कौन) कै शब्दे+डिमु

पुल्लिङ्ग।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | कः | कौ | के |
| द्वि. | कम् | कौ | कान् |
| तृ. | केन | काभ्याम् | कैः |
| च. | कस्मै | काभ्याम् | केभ्यः |
| प. | कस्मात् | काभ्याम् | केभ्य |
| ष. | कस्य | कयोः | केषाम् |
| स. | कस्मिन् | कयोः | केषु |

(त्यदादिकों में सम्बोधन नहीं होता)

(नपुंसक) किम्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | किम् | के | कानि |
| द्वि. | किम् | के | कानि |

शेषम्पुम्वत्

(स्त्रीलिङ्ग) किम्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | का | के | काः |
| द्वि. | काम् | के | काः |
| तृ. | कया | काभ्याम् | काभिः |
| च. | कस्यै | काभ्याम् | काभ्यः |
| पं. | कस्याः | काभ्याम् | काभ्यः |
| ष. | कस्याः | कयोः | कासाम् |
| स. | कस्याम् | कयोः | कासु |

पुल्लिङ्ग—द् यद् या+अदि डिच्च

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | यः | यौ | ये |
| द्वि. | यम् | यौ | यान् |
| तृ. | येन | याभ्याम् | यैः |
| च. | यस्मै | याभ्याम् | येभ्यः |
| पं. | यस्मात् | याभ्याम् | येभ्यः |
| ष. | यस्य | ययोः | येषाम् |
| स. | यस्मिन् | ययोः | येषु |

नपुंसक-यद्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | यत् | ये | यानि |
| द्वि. | यत् | ये | यानि |

शेषम्पुम्वत्

(स्त्रीलिङ्ग) यद् (जो)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | या | ये | याः |
| द्वि. | याम् | ये | याः |
| तृ. | यया | याभ्याम् | याभिः |
| च. | यस्यै | याभ्याम् | याभ्यः |
| पं. | यस्याः | याभ्याम् | याभ्यः |
| ष. | यस्याः | ययोः | यासाम् |
| स. | यस्याम् | ययोः | यासु |

द्—तद् (यह) तन्+अदि डिच

[पुंलिङ्ग]

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | सः | तौ | ते |
| द्वि. | तम् | तौ | तान् |
| तृ. | तेन | ताभ्याम् | तैः |
| च. | तस्मै | ताभ्याम् | तेभ्यः |
| पं. | तस्मात् | ताभ्याम् | तेभ्यः |
| ष. | तस्य | तयोः | तेषाम् |
| स. | तस्मिन् | तयोः | तेषु |

[नपुंसक]

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | तद् | ते | तानि |
| द्वि. | तद् | ते | तानि |

शेषपुम्वत्

[स्त्रीलिङ्ग]

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | सा | ते | ताः |
| द्वि. | ताम् | ते | ताः |
| तृ. | तया | ताभ्याम् | ताभिः |
| च. | तस्यै | ताभ्याम् | ताभ्यः |
| पं. | तस्याः | ताभ्याम् | ताभ्यः |
| ष. | तस्याः | तयोः | तासाम् |
| स. | तस्याम् | तयोः | तासु |

द्—एतद् [यह] इण्+आदितुर् च

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | एषः | एतौ | एते |
| द्वि. | एतम् एनम् | एतौ एनौ | एतान् एनान् |
| तृ. | एतेन एनेन | एताभ्याम् | एतैः |
| च. | एतस्मै | एताभ्याम् | एतेभ्यः |
| पं. | एतस्मात् | एताभ्याम् | एतेभ्यः |
| ष. | एतस्य | एतयोः एनयोः | एतेषाम् |
| स. | एतस्मिन् | एतयोः एनयोः | एतेषु |

(नपुंसक) द् एतद्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | एतत् | एते | एतानि |
| द्वि. | एतत् एनत् | एते एने | एतानि एनानि |

शेषपुम्वत्

(स्त्रीलिङ्ग) द् एतद्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | एषा | एते | एताः |
| द्वि. | एताम् एनाम् | एते एने | एताः एनाः |
| तृ. | एतया एनया | एताभ्यां | एताभिः |
| च. | एतस्यै | एताभ्यां | एताभ्यः |
| पं. | एतस्याः | एताभ्यां | एताभ्यः |
| ष. | ,, | एतयोः एनयोः | एतासाम् |
| स. | एतस्याम् | ,, | एतासु |

म्—इदम्, इदिपरमैश्वर्ये, कमिन्लोपश्च

पुंलिङ्ग—(यह)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | अयम् | इमौ | इमे |
| द्वि. | इमम् एनम् | इमौ एनौ | इमान् एनान् |
| तृ. | अनेन एनेन | आभ्याम् | एभिः |
| च. | अस्मै | आभ्याम् | एभ्यः |
| पं. | अस्मात् | आभ्याम् | एभ्यः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ष. | अस्य | अनयोः एनयोः | एषाम् |
| स. | अस्मिन् | ,, | एषु |

नपुंसक—इदम्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | इदम् | इमे | इमानि |
| द्वि. | इदम् | इमे | इमानि |

शेषम्पुम्वत्

स्त्रीलिङ्ग—इदम्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | इयम् | इमे | इमाः |
| द्वि. | इमाम् एनाम् | इमे एने | इमाः एनाः |
| तृ. | अनया एनया | आभ्याम् | आभिः |
| च. | अस्यै | ,, | आभ्यः |
| पं. | अस्याः | ,, | ,, |
| ष. | ,, | अनयोः एनयोः | आसाम् |
| स. | अस्याम् | ,, | आसु |

स्—अदस् [ यह ] न दस्यते उत्क्षिप्यतेऽङ्गुलिर्यत्र, न+दस+क्विप्

—पुल्लिङ्ग—

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | असौ | अमू | अमी |
| द्वि. | अमुम् | अमू | अमून् |
| तृ. | अमुना | अमूभ्याम् | अमीभिः |
| च. | अमुष्मै | ,, | अमीभ्यः |
| पं. | अमुष्मात् | ,, | ,, |
| ष. | अमुष्य | अमुयोः | अमीषाम् |
| स. | अमुष्मिन् | ,, | अमीषु |

— नपुंसकलिङ्ग —

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | अदः | अमू | अमूनि |
| द्वि. | ,, | ,, | ,, |

शेषम्पुम्वत्

[ स्त्रीलिङ्ग ]

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | असौ | अमू | अमूः |
| द्वि. | अमूम् | ,, | ,, |
| तृ. | अमुया | अमूभ्यां | अमूभिः |
| च. | अमुष्यै | ,, | अमूभ्यः |
| पं. | अमुष्याः | ,, | ,, |
| ष. | ,, | अमुयोः | अमूषाम् |
| स. | अमुष्याम् | ,, | अमूषु |

दृ—युष्मद् [ तू ] युष भजने+मदिक्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | त्वम् | युवाम् | यूयम् |
| द्वि. | त्वाम् त्वा | युवाम् वाम् | युष्मान् वः |
| तृ. | त्वया | युवाभ्याम् | युष्माभिः |
| च. | तुभ्यम् ते | ,, वाम् | युष्मभ्यम् वः |
| पं. | त्वत् | युवाभ्यां | युष्मत् |
| ष. | तव ते | युवयोः वाम् | युष्माकम् वः |
| स. | त्वयि | युवयोः | युष्मासु |

दृ—अस्मद् [ मैं ] असु क्षेपणे+मदिक्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | अहम् | आवाम् | वयम् |
| द्वि. | माम् मा | ,, नौ | अस्मान् नः |
| तृ. | मया | आवाभ्याम् | अस्माभिः |
| च. | मह्यम् मे | ,, नौ | अस्मभ्यम् नः |
| पं. | मत् | आवाभ्याम् | अस्मत् |
| ष. | मम मे | आवयोः नौ | अस्माकम् नः |
| स. | मयि | आवयोः | अस्मासु |

## सङ्ख्यावाचकशब्द

अ—एक इण् + कन् एकवचन

| | [पुं] | [स्त्री] | [नपुंसक] |
|---|---|---|---|
| प्र. | एकः | एका | एकम् |
| द्वि. | एकम् | एकाम् | " |
| तृ. | एकेन | एकया | शेषपुम्वत् |
| च. | एकस्मै | एकस्यै | |
| पं. | एकस्मात् | एकस्याः | |
| ष. | एकस्य | " | |
| स. | एकस्मिन् | एकस्याम् | |

इ—द्वि [दो] द्वि० व० दुवृ संवरणे + डि

| | पु० | स्त्री | नपुंसक |
|---|---|---|---|
| प्र. | द्वौ | द्वे | द्वे |
| द्वि. | " | " | " |
| तृ. | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | शेषपुंवत् |
| च. | " | " | |
| पं. | " | " | |
| ष. | द्वयोः | द्वयोः | |
| स. | " | " | |

इ—त्रि ( तीन ) बहु० व० तॄ + ड्रि

| | पुं० | स्त्री० | नपुंसक |
|---|---|---|---|
| प्र. | त्रयः | तिस्रः | त्रीणि |
| द्वि. | त्रीन् | " | " |
| तृ. | त्रिभिः | तिसृभिः | शेषपुम्वत् |
| च. | त्रिभ्यः | तिसृभ्यः | |
| पं. | " | " | |
| ष. | त्रयाणाम् | तिसृणाम् | |
| स. | त्रिषु | तिसृषु | |
| सं. | हेत्रयः | हेतिस्रः | |

र्—चतुर् ( चार ) ब० व०

चते याचने + उरन्

| | पु० | स्त्री० | नपुंसक |
|---|---|---|---|
| प्र. | चत्वारः | चतस्रः | चत्वारि |
| द्वि. | चतुरः | " | " |
| तृ. | चतुर्भिः | चतसृभिः | शेषपुम्वत् |
| च. | चतुर्भ्यः | चतसृभ्यः | |
| पं. | " | " | |
| ष. | चतुर्णाम् | चतसृणाम् | |
| स. | चतुर्षु | चतसृषु | |
| सं. | हेचत्वारः | हेचतस्रः | |

## तीनोंलिङ्गोंमेंतुल्यः ।

न्—पञ्चन् ( ५ )

पचि विस्तारे + कनिन्

| | |
|---|---|
| प्र० | पञ्च |
| द्वि० | " |
| तृ० | पञ्चभिः |
| च० | पञ्चभ्यः |
| ष० | पञ्चानाम् |
| स० | पञ्चसु |
| सं० | हेपञ्च |

ष्—षष् ( ६ )

षो + असुक् + क्विप्

| | |
|---|---|
| प्र० | षट् षड् |
| द्वि० | " " |
| तृ० | षड्भिः |
| च० | षड्भ्यः |
| पं० | " |
| ष० | षण्णाम् |
| स. | षट्सु षट्त्सु |
| सं. | हेषट् |

न्—सप्तन् ( ७ )

सप् + तनिन्

| | |
|---|---|
| प्र० | सप्त |
| द्वि० | " |
| तृ० | सप्तभिः |
| च० | सप्तभ्यः |
| पं० | " |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ष. सप्तानाम् | पं. " | च. नवभ्यः | तृ. दशभिः |
| स. सप्तसु | ष. अष्टानाम् | पं. " | च. दशभ्यः |
| सं. हेसप्त | स. अष्टसु अष्टासु | ष. नवानाम् | पं. " |
| न—अष्टन् ८ अश्व्या· | सं. अष्टौ अष्ट | स. नवसु | ष. दशानाम् |
| सौ+कनिन्+तुट् | न्—नवन् (९) नु+ | सं. हेनव | स. दशसु |
| प्र. अष्टौ, अष्ट | अनि . | न्—दशन् १० | सं. हेदश |
| द्वि. " " | प्र. नव | दंश+कनिन् | |
| तृ. अष्टभिः अष्टाभिः | द्वि. " | प्र. दश | |
| च. अष्टभ्यः अष्टाभ्यः | तृ. नवभिः | द्वि. " | |

## अव्ययार्थप्रदर्शकस्तृतीयोऽध्यायः ।

| अव्यय । | अर्थ । | अव्यय । | अर्थ । | अव्यय । | अर्थ । |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वर् | स्वर्गेपरलोकेच | दिवा | दिवसे | हेतौ | निमित्ते |
| अन्तर् | मध्ये | रात्रौ | निशि | इद्धा | प्राकाश्ये |
| प्रातर् | प्रत्यूषे | सायम् | निशामुखे | अद्धा | स्फुटावधारणयोः |
| पुनर् | अप्रथमेविशेषेच | चिरम् | बहुकाले | सामि | अर्धजुगुप्सितयोः |
| सनुतर् | अन्तर्धाने | मनाक्, | अल्पे | वत् | तुल्ये |
| उच्चैस् | महति | ईषत् | | सना, | |
| नीचैस् | अल्पे | जोषम् | सुखेमौनेच | सनत्, | नित्ये |
| शनैस् | क्रियामान्द्ये | तूष्णीम् | मौने | सनात् | |
| ऋधक् | सत्यवियोगशी· | बहिस्, | बाह्ये | उपधा | भेदे |
| | घ्रसामीप्यलाघवेषु | अवस् | | तिरस् | अन्तर्धौ,तिर्यगर्थे |
| ऋते | वर्जने | समया | समीपे मध्येच | | परिभवे च |
| युगपत् | एककाले | निकषा | अन्तिके | अन्तरा | मध्ये,विनार्थेच |
| आरात् | दूरसमीपयोः | स्वयम् | आत्मना | अन्तरेण | वर्जने |
| पृथक् | भिन्ने | वृथा | व्यर्थे | ज्योक् | कालभूयस्त्वे, |
| ह्यस् | अतीतेऽन्हि | नक्तम् | रात्रौ | | प्रश्नेशीघ्रार्थे |
| श्वस् | अनागतेऽन्हि | नञ् | निषेधे | | सम्प्रत्यर्थेच |

| अव्यय । | अर्थ । |
|---|---|
| कम् | वारिमूर्धनिन्दासुखेषु |
| शम् | सुखे |
| सहसा | आकस्मिकाविमर्शयोः |
| विना | वर्जने |
| नाना | अनेकविनार्थयोः |
| स्वस्ति | मङ्गले |
| स्वधा | पितृदाने |
| अलं | भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणनिषेधेषु |
| वषट्, श्रौषट्, वौषट् | हविर्दाने |
| अन्यत् | अन्यार्थे |
| अस्ति | प्रसिद्धौ सत्तायाम् च |
| उपांशु | अप्रकाशोच्चारपरहस्ययोः |
| क्षमा | क्षान्तौ |
| विहायसा | वियदर्थे |
| दोषा | रात्रौ |
| मृषा, मिथ्या | वितथे |
| मुधा | व्यर्थे |
| पुरा | अविरते, चिरातीतभविष्यदासन्नेच |

| अव्यय । | अर्थ । |
|---|---|
| मिथो, मिथस् | रहःसहार्थयोः |
| प्रायस् | बाहुल्ये |
| मुहुस् | पुनरर्थे |
| प्रवाहुकम् | समानकाले |
| प्रवाहिका | ऊर्ध्वार्थे च |
| आर्यहलम् | बलात्कारे |
| अभीक्ष्णम् | पौनःपुन्ये |
| साकंसार्द्ध | सहार्थे |
| नमस् | नतौ |
| हिरुक् | वर्जने |
| धिक् | निन्दाभर्त्सनयोः |
| शम् | शैघ्र्येऽल्पे च |
| आम् | अङ्गीकारे |
| प्रताम् | ग्लानौ |
| प्रशान् | समानार्थे |
| प्रतान् | विस्तारे |
| मा, माङ् | निषेधाशङ्कयोः |
| कामम् | स्वाच्छन्द्ये |
| प्रकामम् | अतिशये |
| भूयः | पुनरर्थे |
| साम्प्रत | न्याय्ये |
| परम् | किन्त्वर्थे |
| साक्षात् | प्रत्यक्षे |
| साचि | तिर्यगर्थे |
| मङ्क्षु, आशु, झटि(गि)ति, तरसा | शैघ्र्ये |

| अव्यय । | अर्थ । |
|---|---|
| संवत् | वर्षे |
| अवश्यं | निश्चये |
| उषा | रात्रौ |
| ओम् | अङ्गीकारे ब्रह्मणि च |
| भूः | पृथिव्याम् |
| भुवः | अन्तरिक्षे |
| सुष्ठु | प्रशंसायाम् |
| दुष्ठु | निकृष्टे |
| सुः | पूजायाम् |
| कु | कुत्सितपदर्थेच |
| अञ्जसा | तत्त्वशीघ्रार्थयोः |
| वरम् | ईषदुत्कर्षे |
| सुदि | शुक्लपक्षे |
| वदि | कृष्णपक्षे |
| अस्त | विनाशे |
| स्थाने | युक्ते |
| मिथु | द्वाविरर्थे |
| च. | समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोगसमाहारेषु |
| वा | विकल्पे |
| ह | प्रसिद्धौ |
| अह | पूजायाम् |
| एव | अवधारणे |
| एवम् | उक्तपरामर्शे |
| नूनम् | निश्चये तर्केच |
| शश्वत् | पौनःपुन्ये नित्यसहार्थेच |

| अव्यय | अर्थ | अव्यय | अर्थ | अव्यय | अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|
| कूपत् | प्रश्नेप्रशंसायांच | खलु | निषेधवाक्यालंकारनिश्चयेषु | यथा, कथाच | अनादरे |
| कुवित | भूयर्थेप्रशंसायांच | किल | वार्तायामलीकेच | पाट्प्याट् | |
| नेत् | शङ्कायां,प्रतिषेधविचार समुच्चयेषुच | अथो,अथ | मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्याधिकारप्रतिज्ञासमुच्चयेषु | अङ्ग हे है | सम्बोधने |
| चेत्,चण | यद्यर्थे | स्म | अतीते पादपूरणेच | भोः अये | |
| कच्चित् | इष्टप्रश्ने | अहं | अहंकारे | च | हिंसाप्रातिलोम्यपादपूरणेषु |
| नह | प्रत्यारम्भे | अ | संबोधनेऽधिक्षेपेनिषेधेच | विषु | नानार्थे |
| हन्त | हर्षे, विषादे, वाक्यारम्भेऽनुकम्पायाञ्च | आ | वाक्यस्मरणयोः | एकपदे | अकस्मात् |
| माकिः, माकीं, नकिम् | वर्जने | इ | सम्बोधनजुगुप्साविस्मयेषु | युत् | कुत्सायाम् |
| यावत् तावत् | साकल्यावधिमानावधारणेषु | इ उ ऊ ए ऐ ओ औ | सम्बोधने | आतः | इतोऽपि |
| त्वै | विशेषवितर्कयोः | पशु | सम्यगर्थे | यत्तद् | हेतौ |
| द्वै, न्वै | वितर्के | शुकं | शैघ्र्ये | आहोस्वित् | विकल्पे |
| रै | दाने अनादरेच | | | सीम | सर्वतोभावे |
| तुम् हुम् | तुंकारे, हुंकारे, भर्त्सनेच | | | शुकं | अतिशये |
| तथाहि | निदर्शने | | | अनुकं | वितर्के |
| | | | | व | पादपूरणेइवार्थेच |
| | | | | दिष्ट्या | आनन्दे |
| | | | | चटुचाटु | प्रियवाक्ये |
| | | | | इवेति | सादृश्ये |
| | | | | अद्यत्वे | इदानीमित्यर्थे |

इत्यव्ययप्रदर्शकश्चतुर्थोऽध्यायः ।

१ प्रायः विशेषण अकारान्त शब्दोंका स्त्रीलिङ्ग बनाने केलिये 'आ' लगा देते हैं जैसे कृशा, दीना, मलिना, चतुरा, चपला, प्रिया, पूर्वा, अनुकूला, मनोहरा इत्यादि ।

(१) अजाद्यतष्टाप् ।

२ प्रथम अवस्था वाले शब्दों से और गौर आदि शब्दों से "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे कुमारी, किशोरी, तरुणी इत्यादि। गौरी, नदी, तटी, कदली, बदली, इत्यादि।

३ जाति वाचक शब्दों से, अजादि शब्दों को छोड़ "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे सिंही, व्याघ्री, मृगी, हंसी, शूद्री, ब्राह्मणी, राक्षसी, अजादि शब्द जैसे अजा एडका, मक्षिका, वर्तिका, शूद्रा, अश्वा इत्यादि।

४ ऋकारान्त शब्दों से, स्वसृ, मातृ, दुहितृ, यातृ, ननान्दृ, तिसृ और चतसृ शब्दों को छोड़ "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे दात्री, धात्री, कर्त्री, हर्त्री, प्रसवित्री इत्यादि।

५ नकारान्त संख्यावाचक शब्दों को छोड़ इन् प्रत्ययान्त शब्दों से "ई" लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे कामिनी, भामिनी, मयशस्विनी, तपस्विनी इत्यादि।

६ अन् प्रत्ययान्त शब्दों से "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है और उपधाके अकालोप होजाताहै जैसे राजन्—राज्ञी, मघवन्—मघोनी इ०।

७ मत्, वत्, तयत्, वस् ईयस् प्रत्ययान्त शब्दोंका स्त्रीलिङ्ग "ई" प्रत्यय से बनता है जैसे बुद्धिमती, रूपवती, विदुषी, प्रेयसी इ०।

८ भव, शर्व, रुद्र, मृड, इन्द्र, वरुण, ब्रह्मन् मातुल, क्षत्रिय, अर्य, उपाध्याय, आचार्य शब्दों से "आनी" लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे भवानी इत्यादि। और कोष्ठान्तर्गत शब्दों का विकल्प से "आ" प्रत्यय लगाकर भी स्त्रीलिङ्ग होता है जैसे क्षत्रियाणी क्षत्रिया।

९ भ्वादि, दिवादि, चुरादि गणी धातुओं के अनन्तर अत् (शतृ) प्रत्यय लगे शब्दों का स्त्रीलिङ्ग "ई" लगाकर बनता है और त्, न्त, में बदल जाता है जैसे भू—भवन्ती दिव—दीव्यन्ती, चुर—चोरयन्ती। परन्तु तुदादि, क्र्यादि, और अदादि गणी धातुओं के अनन्तर त् विकल्प में

(२) "वयसि प्रथमे" "षिद्गौरादिभ्यश्च"। (३) जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्। (४) ऋन्नेभ्योङीप्। (५) ऋन्नेभ्योङीप्। (६) अनउपधालोपिनोऽन्यतरस्याम्। (७) उगितश्च। (८) इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्। (९) उगितश्च।

न्त् में बदल जाता है जैसे तुद्-तुदती, तुदन्ती; क्री-क्रीणती, क्रीणन्ती, भो—भाती, भान्ती, । स्यत् प्रत्ययान्त शब्दों में भी विकल्प से रूपहोते हैं जैसे करिष्यती, करिष्यन्ती ।

१० देहाङ्गवाची शब्दों के साथ जब बहुव्रीहि समास हो तो विकल्प से "ई" प्रत्यय लगता है जैसे चन्द्रमुखी—खा, कृशाङ्गी—ङ्गा, कोकिलकण्ठी—ण्ठा इत्यादि परन्तु नख, मुख शब्दको लगाकर जहां व्यक्ति वाचक संज्ञा बनती है या जहां अङ्गवाची शब्दकी उपधा में संयुक्तवर्ण होता है, अथवा जिन अङ्गवाची शब्दों में दोसे अधिक स्वर हों वहां "ई" नहीं लगता जैसे शूर्पणखा, गौरमुखा; मृगनेत्रा, चारुदशना ।

११ इकारान्त शब्द विकल्प से "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनते हैं जैसे श्रेणि, श्रेणी, रजनिः—नी, कपिः—पी, मुनिः—नी इत्यादि ।

१२ क्ति प्रत्ययान्त शब्द प्रायः भाववाचक संज्ञा व स्त्रीलिङ्ग होते हैं जैसे मतिः, गतिः स्थितिः ।

१३ उकारान्त संज्ञा विशेषण शब्द विकल्प से "ई" लगकर स्त्रीलिङ्ग बनते हैं जैसे मृदुः मृद्वी, बहुः बह्वी इत्यादि ।

१४ श्वशुर शब्द से श्वश्रू, युवन् से युवतिः, पति से पत्नी, सखि से सखी और समस्तपद में ऊरु शब्द को जहां किसी से तुलना दी जाती है या जहां वाम सह शफादि शब्द ऊरुसे पहिले होते हैं वहां स्त्रीलिङ्ग में दीर्घ ऊकार होजाता है जैसे रम्भोरूः, वामोरूः, शफोरूः ।

## अथ कारकप्रकरणप्रदर्शकः पञ्चमोऽध्यायः ।

---

१ प्रथमाविभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है क्रमानुसार उदारण देखो—
१ लिङ्ग में जैसे तटः, तटी, तटम्; २ वचन में जैसे एकः, द्वौ, बहवः; ३ परिमाण में जैसे द्रोणः आढकम्; ४ सम्बोधन में जैसे हे कृष्ण; ५ इति,

---

(१०) स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् । (११) कृदिकारादक्तिनः । (१३) वोतोगुणवचनात् " बह्वादिभ्यश्च । (१४) श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च " यूनस्तिः" सख्यशिश्वीति भाषायाम्" ऊरूत्तरपदादौपम्ये" संहितशफलक्षण वामादेश्च । १ प्रातिपदिकार्थ लिङ्गवचनपरिमाणमात्रेप्रथमा । (४) सम्बोधनेच ।

साम्प्रतम् इत्यादि अव्ययों के योग में जैसे मनुष्याश्चन्द्रं हिमांशुरिति वदन्ति, दुष्टात्मनां सङ्गः परित्यक्तुं साम्प्रतम्; ६ जहां कर्तातिङ् प्रत्यय से उक्त हो जैसे रामोवदति; ७ जहां कर्तृवाच्य का कर्म "क्त" प्रत्यय से उक्त होवे जैसे कृष्णेन कंसो हतः ॥

२ द्वितीया विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है:—

१ काल व मार्ग के अत्यन्त अर्थात् निरवच्छिन्न (लगातार) संयोग में जैसे मासं व्याकरणमधीतम् क्रोशं पर्वतः (मासं क्रोशं व्याप्य इत्यर्थः) २ धिक्, प्रति, अनु, अन्तरा, अन्तरेण, यावत्, अभितः, परितः, सर्वतः उभयतः, समया (पास या बीच,) निकषा (पास,) हा, ऋते, विनाके योगों में जैसे देवदत्तंधिक्, दीनं प्रति दयोचिता; स्वामिनमनुसरति भृत्यः, अन्तरा त्वां मां हरिः; अन्तरेणाक्षिणी किंजीवितेन; वनं यावत्प्रविशति; अभितः, उभयतः ग्रामंनदी वहति, समया, निकषा ग्रामम्; हा कृष्णाभक्तम्; ऋते, विना ज्ञानं न मुक्तिः । ३ स्मृ धातुके योग में जैसे मातरं स्मरति शिशुः ४ कर्मउक्त (जिसका असर क्रियापर पड़े, वह उक्त होता है) न होने से जैसे कृष्णोमजं भजति ५ उपरि जब दोबार आवे जैसे क्षेत्र मुपरि उपरि दालभाइयन्ते ।

३ तृतीया विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है:—

सह, साकम्, सार्द्धम्, समम्, (साथ) के योग में जैसे शिष्येण सहागतो गुरुः । २ सम, तुल्य, समान, सदृश (बराबर) के योग में जैसे शिष्यं पुत्रेण समं पश्यति । ३ अलं, किम्, अर्थ, प्रयोजन ऊन, हीन, शून्य, विना, पृथक् के योग में जैसे अलंविषादेन; विरोधेनकिम्, कोऽर्थः कलहेन धनेन प्रयोजनं नास्ति, एकेन ऊनोविंसः, विद्याहीनः, अहङ्कारेण शून्यः, रागेण विनापृथक् । ४ हेत्वर्थ में जैसे कार्यत्वेनशब्दो-

२ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे । उभसर्वतसोःकार्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषुततोऽन्यत्रापि दृश्यते अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि । अन्तराऽन्तरेणयुक्ते । अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते । पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्

३ १ सहयुक्तेऽप्रधाने २ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्यां, ४ हेतौ । ५. येनाङ्गविकारः । कर्तृकरणयोस्तृतीया ।

८ प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् ।

नित्यः ५ जिस अङ्गसे प्राणीके अङ्गका अङ्गविकार लखजाय उस अङ्ग में जैसे अक्ष्णाकाणः कर्णेनबधिरः ६ कर्ता और करण जब उक्त नहीं जैसे रामेणबाणेन रावणोहतः ७ तृप्त्यर्थक शब्दों के योग में जैसे भोजनेन तृप्तः ८ प्रकृति इत्यादि शब्दोंके योग में जैसे प्रकृत्या चारुः जात्याब्राह्मणः ९ तव्य' अनीय, यत् के योग में (षष्ठीभीहोतीहै) जैसे चन्द्रस्त्वया (तव) द्रष्टव्यः।

४ चतुर्थी विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती हैः—

१ दानपात्र में जैसे राजा विप्रायधनंददाति; २ तादर्थ्य (उसीके अर्थ) में जैसे गोविन्दलदा कथनाय प्रवृत्तोऽभूत् ३ नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट् के योग में जैसे गुरुभ्योनमः, राज्ञेस्वस्ति, रुद्राय स्वाहा, पितृभ्यःस्वधा, अलं मल्लोमल्लाय, इन्द्रायवषट्; ४ निमित्त अर्थ सूचन करने में जैसे अध्ययनं ज्ञानाय भवति; ५ हित, सुख प्रभवति और समर्थके योग में जैसे पुत्रायाहितम्, शिष्यायसुखम्, शूरःसमर्थः प्रभवति वा सग्रामाय ६ तुम् प्रत्यय के अर्थ में द्वितीयाकी जगह चतुर्थी होती है जैसे जलाय नदीं गच्छति जलमानेतुमित्यर्थः; ७ क्रुध् द्रुह् ईर्षा, असूयार्थक धातुओं के योग में जैसे क्रूराय कुप्यति, गुणवते असूयति; ८ रुच्यर्थक धातु के योग में जैसे हरयेरोचते भक्तिः ९ धारयतिके प्रयोग में उत्तमर्ण (साहूकार) में देवदत्तः रुद्रदत्ताय शतं धारयति।

५ पञ्चमी विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती हैः—

१ विश्लेष (विभाग) की अवधि में जैसे वृक्षात्पत्राणिपतन्ति; २ ल्यप् प्रत्ययका जहां लुप्त अर्थ हो जैसे आसनात्प्रेक्षते (आसने उपविश्येत्यर्थः) ३ तुलना में धनाद्विद्यागरीयसी ४ भय और त्राणार्थक धातुओं के भय

---

४ १ दानस्य कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानम्। २ तादर्थ्ये चतुर्थी ३ नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च। ४
५ हितयोगे च, ६ क्लृपिसम्पद्यमाने च ७
६ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः। ७ क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रतिकोपः
८ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ९ धारेरुत्तमर्णः

५ १ ध्रुवमपायेऽपादानम् २ ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणेच
४ भीत्रार्थानां भयहेतुः ५ धारणार्थानां प्रीयमाणः ६ स्पृहे रीप्सितः ७ अन्यारादितरर्तेदिक् शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते

हेतु में जैसे व्याघ्राद्बिभेति ५ वारणार्थक धातुओं के योग में जैसे क्षेत्राद्गां वारयति ६ स्पृह धातु के योग में जैसे पुष्पेभ्यः स्पृहयति; ७ अन्य, भिन्न, बहिः, आरात्, प्रभृति आरभ्य, इतर, पूर्वः, उत्तरः, प्राक्, अनन्तरम् ऋते, विना, पृथक् और हेतु में जैसे मित्रादन्यः भिन्नः; ग्रामाद्बहिः; आरादनात्; तद्दिनादारभ्य, प्रभृति वा; तस्मादितरो न कश्चित्; नगरात्पूर्वः उत्तरो वा, भोजनात्प्राक् शयनादनन्तरम्; ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः; श्रमाद्विना न किञ्चित्फलति; पुत्रात्पृथक्; भयात्कम्पते ।

६ षष्ठी निम्नलिखित योगों में होती है:—

१ सम्बन्ध में जैसे गोविन्दस्य पुस्तकम्; २ हेतु शब्द के प्रयोग में जैसे कस्य हेतोरिदं भोजनम्; ३ स्मृ धातु के भी योग में जैसे मातुः स्मरति; ४ सम, तुल्य, समान, सदृश इनके भी योग में जैसे किम् तव समो न कोऽस्ति; ५ तृप्त्यर्थक शब्दों के भी योग में जैसे अपां तृप्तः ६ निर्धारण अर्थात् बहुतसी वस्तुओं में से एक के अलग करने में षष्ठी सप्तमी दोनों होती हैं जैसे कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः; ७ स्वाम्यादि अर्थात् स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद साक्षी, प्रतिभू और प्रसूत इन के योग में जैसे नराणां स्वामी इत्यादि; ८ अनादर में षष्ठी सप्तमी दोनों होती है जैसे माता पित्रोः रुदतोः प्राव्राजीत्पुत्रः; ९ भद्रः, कुशल, आयुष्य सुख हित इत्यादि शब्दों के योग में जैसे तव भद्रं स्यात् ।

७ नीचे लिखे योगों में सप्तमी विभक्ति होती है:—

१ अधिकरण अर्थात् आधार में; यह आधार चार प्रकार का है औपश्लेषिक, सामीपिक, अभिव्यापक, वैषयिक जैसे कटे शेते कुमारोऽसौ, वटे गावः सुशेरते, तिलेषु विद्यते तैलं; हृदि ब्रह्मामृतं परम् । २ निमित्तार्थवाचक शब्द से जैसे चर्मणि द्वीपिनं हन्ति ( चर्मनिमित्तमित्यर्थः ), ३ सत्यर्थक अर्थात् जहां एक क्रिया के काल से दूसरी क्रिया का समय लक्षित होता हो जैसे रवावस्तङ्गते स आगतः ।

---

६ १ षष्ठी शेषे २ षष्ठी हेतुप्रयोगे ३ षष्ठी शेषे ४ तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयाऽन्यतरस्याम् ४ यतश्च निर्धारणम् ५ स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च ८ षष्ठी चानादरे ९ चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः
७ १ आधारोऽधिकरणम् २ निमित्तात्कर्मयोगे ३ यस्य च भावेन भावलक्षणम्

## अथ समासप्रकरणप्रदर्शकः षष्ठोऽध्यायः ।

समास छः प्रकार के हैं, १ तत्पुरुष, २ कर्मधारय, ३ बहुव्रीहि, ४ द्विगु, ५ द्वन्द्व, ६ अव्ययीभाव । अब प्रत्येक के लक्षण सोदाहरण और सविग्रह (समास के अर्थ का जतानेवाला वाक्य विग्रह कहलाता है) लिखते हैं:—

१ तत्पुरुष उत्तरपदार्थ प्रधान, और आठ प्रकार का होता है जैसे प्रथमातत्पुरुष जैसे अर्धं पिप्पल्याः अर्धपिप्पली; द्वितीया त० जैसे ग्रामंगतः ग्रामगतः; तृतीया त० जैसे शङ्कुलयाखण्डः शङ्कुलाखण्डः, चतुर्थी त० गुरवेदक्षिणा गुरुदक्षिणा; पञ्चमी त० जैसे सिंहात्भयं सिंहभयम्; षष्ठी त० जैसे कृष्णस्य भक्तः कृष्णभक्तः, सप्तमी त० जैसे कर्मणिकुशलः कर्मकुशलः; नञ् त० जैसे न ब्राह्मणः अब्राह्मणः; न अश्वः अनश्वः ।

२ कर्मधारय सात प्रकार का है जैसे १ विशेषण पूर्वपद जैसे कृष्णः चासौ सर्पः कृष्णसर्पः; २ विशेष्य पूर्वपद जैसे गोपालश्चासौबालः गोपालबालः; ३ विशेषणोभयपद जैसे शीतं च तदुष्णं च शीतोष्णम्; ४ उपमानपूर्वपद जैसे मेघ इवश्यामः मेघश्यामः; ५ उपमानोत्तरपद जैसे पुरुषः व्याघ्रइव पुरुषव्याघ्रः; सम्भावना पूर्वपद जैसे गुण इति बुद्धिः गुणबुद्धिः; ७ अवधारण पूर्वपद जैसे अविद्येव शृङ्खला अविद्याशृङ्खला; मध्यमपद लोपी जैसे शाकप्रियः पार्थिवः शाकपार्थिवः ।

३ बहुव्रीहि अन्य पदार्थ प्रधान होता है यह सात प्रकार का है १ द्विपद जैसे चित्राःगावो यस्यसः चित्रगुःगोपः भुक्त ओदनोयेनसः भुक्तौदनोभूपः, २ बहुपद जैसे अधिकः उन्नतः अंसोयस्य सः, अधिकोन्नतांसः; ३ सहपूर्वपद जैसे सह पुत्रेण वर्तते इति सपुत्रः, ४ संख्योत्तर पद जैसे दशानां समीपे ये सन्ति ते उपदशाः; ५ संख्योभय पद जैसे द्वौ वा त्रयो वा द्वित्राः;

(१) अर्द्धं नपुंसकम् । (२) द्वितीया श्रित तीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः । (३) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन । (४) चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः (५) पञ्चमी भये । (६) षष्ठी । (७) सप्तमी शौण्डैः । (८) नञ् । (९) विशेषणं विशेष्येण बहुलम् । (१०) उपमानानि सामान्यवचनैः । (११) उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे । (१२) शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम् । (१३) अनेकमन्यपदार्थे । (१४) तेनसहेतितुल्ययोगे । (१५) संख्ययाऽव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये ।

६ व्यतिहारलक्षण जैसे केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवर्तते इति केशाकेशि;

७ दिगन्तराललक्षण जैसे दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोयदन्तरालं सा दक्षिणपूर्वा ।

४ संख्यावाचक शब्द पूर्वक समास द्विगु कहलाता है वह दो प्रकार का है १ एकवद्भावी जैसे त्रयाणां शृङ्गाणां समाहारः त्रिशृङ्गम्; २ अनेकवद्भावी जैसे सप्त च ते ऋषयश्च सप्तर्षयः ।

५ चार्थक द्वन्द्व उभयपदार्थ प्रधान होता है और वह तीन प्रकार का है १ इतरेतर द्वन्द्व जैसे रामश्च कृष्णश्च रामकृष्णौ, २ समाहार द्वन्द्व जैसे हरिश्च हरश्च गुरुश्च हरिहरगुरु; पाणी च पादौ च पाणिपादम्; ३ एक शेष द्वन्द्व जैसे माता च पिता च पितरौ, श्वश्रूश्च श्वशुरश्च श्वशुरौ ।

६ अव्यय पूर्वपद और पूर्वपदार्थप्रधान अव्ययीभाव होता है जैसे तटं तटं प्रति अनुतटम्, क्रममनतिक्रम्य वर्तते इतियथाक्रमम्, कुम्भस्यसमीपे वर्तते इति उपकुम्भम् वस्तु ।

## अथतद्धितप्रकरणप्रदर्शकः सप्तमोऽध्यायः ।

१ अण्, यण्, आयनण्, इण्, इकण्, ईकण्, ईयण्, रायण्, कण्, कन् इत्यादि प्रत्यय "तस्यापत्यं", "तत्रभवः", "तस्येदम्", "अस्यदेवता", "तंवेत्तिअधीते वा", "तेन प्रोक्तम्", "तेनकृतम्", "तत्रसाधुः", "तत्रदेयम्", "ततआगतं", तमर्हति "अस्यपण्यम्", "अस्य प्रहरणम्", "प्रयोजनमस्य", "अस्य शीलं", "तं अधिकृत्यकृतं", "तेनजीवति", "तस्य भावः", "स्वार्थे में", "इत्यार्थे में" होते हैं क्रम से सविग्रह उदाहरण देखो जैसे रघणस्यापत्यंपुमान् रावणः; ग्रामेभवः ग्राम्यः; चन्द्रस्य इदं चान्द्रम्; विष्णु रस्यदेवता वैष्णवः; व्याकरणं वेत्ति अधीते वा वैयाकरणः; ऋषिणा प्रोक्तं आर्षम् मनसाकृतंमानसिकम्; सभायांसाधुः सभ्यः; मासेदेयंमासिकम्; पितुरागतं पैतृकम्; छेदमर्हतिछेद्यः; लवणमस्यपण्यं लावणिकः; धनुरस्य प्रहरणं धानुष्कः; यशः प्रयोजनमस्य यशस्यम्; तपोऽस्यशीलं तापसः;

(१) तत्र तेनेदमिति सरूपे । (२) दिङ्नामान्यन्तराले । (३) तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च । (४) चार्थे द्वन्द्वः । [५] पितामात्रा । [६] श्वशुरः श्वश्र्वा ।

राममधिकृत्यकृतं रामायणं; व्यवहारेणजीवति व्यावहारिकः; शिशोर्भावः शैशवम्; चोरएवचोरः; ह्रस्वोवृक्षः वृक्षकः।

२ भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये संज्ञा व विशेषण शब्दों से त और त्व प्रत्यय लगाई जाती है जिनमें तान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग और त्वान्त नपुंसक होते हैं जैसे अमरस्य भावः अमरता, अमरत्वम्, लघुता, लघुत्वम्।

३ तुल्यार्थद्योतन करने के लिये संज्ञा शब्दों से वत् प्रत्यय लगाते हैं और वे शब्द अव्ययों में गणना किये जाते हैं जैसे चन्द्रेण तुल्यं (इव) चन्द्रवत्।

४ अस्त्यर्थ में 'मत्' प्रत्यय होता है परन्तु जिन शब्दों के अन्त में, अन्तिम अ, आ या ङ, ञ, ण न को छोड़ कोई स्पर्श वर्ण हो या उपधाभूत अ, आ या म होवे तो मत् के स्थान में वत् हो जाता है जैसे मतिर्विद्यतेऽस्य सः मतिमान्, अंशुमान्; ज्ञानवत्, दयावत्, विद्युत्वत् आत्मवत्, भास्वत्, लक्ष्मीवत्।

५ कहीं २ ऐसी संज्ञा जिनके अन्त में अ या आ हो और जिनमें एक से अधिक स्वर हों तो वहां विकल्प से वत् और इन् भी होते हैं जैसे ज्ञान से ज्ञानवत्, ज्ञानिन्; मालावत्, मालिन्।

६ अस् प्रत्ययान्त शब्द और स्रज्, मेधा, माया शब्दों में उपरोक्त अर्थ में विन् और वत् दोनों प्रत्यय विकल्प से होते हैं जैसे तेजस्—तेजस्विन्, तेजस्वत्; स्रज्—स्रग्विन्, स्रग्वत्।

७ जातार्थ में संज्ञा शब्द से इतच् प्रत्यय होता है जैसे पिपासा जाता अस्य सः पिपासितः क्षुधितः फलितः पुष्पितः।

८ उत्कर्ष वा प्रकर्षार्थद्योतन करने के लिये विशेषण शब्दों से तर, तम, ईयस्, इष्ठ प्रत्यय लगाई जाती हैं जैसे गुरु—गुरुतरः, गुरुतमः; गुरु—गरीयान्, गरिष्ठः। इन प्रत्ययों के साथ बहुधा प्रकृति के रूप में बहुत भेद हो जाता है इस लिये दूसरे व्याकरणों से पूरा २ अभ्यास कर लेना चाहिये जैसे अतिशयेन प्रशस्यः श्रेयान्, श्रेष्ठः, वृद्धः, ज्यायान्, ज्येष्ठः इत्यादि।

९ भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये विशेषण शब्दों से इमन् प्रत्यय लगता है और इमन् प्रत्ययान्त शब्द प्रायः पुंलिङ्ग होते हैं जैसे गुरोर्भावः गरिमा, लघिमा, बहु—भूमा प्रिय से प्रेमा इत्यादि।

१० संख्यावाचक शब्दों से प्रकारार्थ में "धा" प्रत्यय और कुछ सर्व नाम

शब्दों से इसी अर्थ में "धा" प्रत्यय लगाते हैं और दोनों प्रकार के सिद्ध शब्द अव्यय होते हैं जैसे एकविधा एकधा, द्विधा, त्रिधा इत्यादि और अन्येन प्रकारेण अन्यथा, उभयथा, सर्वथा इत्यादि।

११ पञ्चमी अर्थ में तस् और सप्तमी अर्थ में "त्र" प्रत्यय लगाकर तदन्त शब्द अव्यय होते हैं जैसे ग्रामादिति ग्रामतः, सर्वस्मिन्निति सर्वत्र, कस्मिन्निति कुत्र इत्यादि।

१२ पूर्व, ऊर्द्ध, उपरि, अधस् और समय सूचक अव्ययों से भवार्थ में "तन" प्रत्यय होता है जैसे पूर्वे भवः पूर्वतनः अद्यभवः अद्यतनः इत्यादि।

१३ किम् शब्द के सिद्ध रूपों में अनिश्चयत्व दिखाने के लिये "चित्" और चन प्रत्यय लगाते हैं जैसे कश्चित् कौचित् केचित् कश्चन, कौचन केचन इत्यादि भी अव्ययही हैं।

१४ अधीन और कात्स्न्यं (सम्पूर्णता) अर्थ में "सात्" प्रत्यय होता है जैसे राज्ञः अधीनं राजसात्, सर्वं भस्म भस्मसात् इत्यादि।

१५ किम्, यत् और तत् शब्दों से दो में से एक के निर्धारण करने में डतर और बहुतों में से एक के निर्धारण करने में "डतम" प्रत्यय लगाते हैं जैसे कतरो भवतोः नैयायिकः, कतमो भवतां वैयाकरणः।

## अथ धातुरूपप्रदर्शकोऽष्टमोऽध्यायः।

(भ्वादिगणः) धातुसारः।

| (धातु) भू सत्तायाम् (होना) | खनु अवदारणे (खोदना) | ञित्वरा संभ्रमे (जल्दी क.) | जप जल्प व्यक्तायां वाचि (बोलना) |
|---|---|---|---|
| लट् (वर्तमान) भवति | खनति | त्वरते | जपति, जल्पति |
| लङ् (अनद्यतनभूत) अभवत् | अखनत् | अत्वरत | अजपत्, अजल्पत् |
| लिङ् (विधि) भवेत् | खनेत् | त्वरेत | जपेत्, जल्पेत् |
| लिङ् (आशी) भूयात् | खायात्, खन्यात् | त्वरिषीष्ट | जप्यात्, जल्प्यात् |
| लिट् (परोक्षभूत) बभूव | चखान | तत्वरे | जजाप, जजल्प |
| लुट् (अन. भविष्य) भविता | खनिता | त्वरिता | जपिता, जल्पिता |
| लुङ् (सामान्यभूत) अभूत् | अखानीत्, अखनीत् | अत्वरिष्ट | अजापीत्, अजल्पीत् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| लृङ् (क्रियातिपत्ति) अभविष्यत् | अखनिष्यत् | अत्वरिष्यत | अजपिष्यत्, अजल्पिष्यत् |
| लृट् (सामान्यभविष्य) भविष्यति | खनिष्यति | त्वरिष्यते | जपिष्यति, जल्पिष्यति |
| लोट् (आज्ञा) भवतु | खनतु | त्वरताम् | जपतु, जल्पतु |
| णिजन्त (प्रेरणार्थक) भावयति * | खानयति | त्वरयति-ते | जापयति, जल्पयति |
| सन्नन्त (इच्छार्थक) बुभूषति | चिखनिषति | तित्वरिषति | जिजपिषति, जिजल्पिषति |
| यङन्त (अतिशयार्थक) बोभूयते | चङ्खन्यते | तात्वर्यते | जंजप्यते, जाजल्प्यते |
| कर्मवाच्य † वा भाववाच्य भूयते | खायते, खन्यते | त्वर्यते | जप्यते, जल्प्यते |
| शतृ ‡ शानच् भवन् | खनन् | त्वरमाणः | जपन्, जल्पन् |
| क्त, क्तवतु भूतः भूतवान् | खातम्, खातवान् | तूर्णः तूर्णवान् त्वरितः त्वरितवान् | जपितः, जल्पितः जपितवान्, जल्पितवान् |
| क्त्वा (पूर्वकालिक) भूत्वा | खात्वा, खनित्वा | त्वरित्वा | जपित्वा, जल्पित्वा |
| संज्ञा भावः भवनम् भूतिः | खननम् | त्वरणम् | जपः, जपनम्, जल्पनम् |

| (धातु) जिजये (जीतना) | | क्षिक्षये (नाशहो) | चर (ल) गति भक्षणयोः | दंशदशने (काटना) | राजृदीप्तौ (शोभितहो) |
|---|---|---|---|---|---|
| लट् | जयति | क्षयति | चरति | दंशति | राजति, राजते |
| लङ् | अजयत् | अक्षयत् | अचरत् | अदशत् | अराजत्, अराजत |
| लिङ् | जयेत् | क्षयेत् | चरेत् | दशेत् | राजेत्, राजेत |
| लिङ् | जीयात् | क्षीयात् | चर्यात् | दश्यात् | राज्यात्, राजिषीष्ट |
| लिट् | जिगाय | चिक्षाय | चचार | ददंश | रराज, रेजे |

* प्रायः सब धातु प्रेरणार्थक में उभयपदी होती हैं। † परस्मैपदी धातुओं से शतृ और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् होता है। ‡ सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य अकर्मकों से भाववाच्य बनता है।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लुट् | जेता | क्षेता | चरिता | द्रष्टा | राजितासि, *राजितासे |
| लुङ् | अजैषीत् | अक्षैषीत् | अचारीत् | अद्राक्षीत् | अराजीत्, अराजिष्ट |
| लृङ् | अजेष्यत् | अक्षेष्यत् | अचरिष्यत् | अद्रक्ष्यत् | अराजिष्यत्, अराजिष्यत |
| लृट् | जेष्यति | क्षेष्यति | चरिष्यति | द्रक्ष्यति | राजिष्यति, राजिष्यते |
| लोट् | जयतु | क्षयतु | चरतु | दशतु | राजतु, राजताम् |
| णिजन्त | जापयति | क्षापयति | चारयति | दर्शयति | राजयति, राजयते |
| सन्नन्त | जिगीषति | चिक्षीषति | चिचरिषति | दिदृक्षति | रिराजिषति, रिराजिषते |
| यङन्त | जेजीयते | चेक्षीयते | चञ्चूर्यते | दरीदृश्यते | राराज्यते |
| कर्मवाच्य | जीयते | क्षीयते | चर्यते | दृश्यते | राज्यते |
| शतृ | जयन् | क्षयन् | चरन् | दशन् | राजमानः |
| क्त, क्तवतु | जितः जितवान् | क्षीणः क्षीणवान् | चरितः चरितवान् | दृष्टः दृष्टवान् | राजितः, राजितवान् |
| क्त्वा | जित्वा | क्षित्वा | चरित्वा | दृष्ट्वा | राजित्वा |
| संज्ञा | जयः | क्षयः | चरणम् चलनम् | दर्शनम् | राजनम् |

| दृशिर् प्रेक्षणे (देखना) | | पत्लृ पतने (गिरना) | भिक्ष याचने (मांगना) | याचृ याच्ञायां (मांगना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पश्यति | पतति | भिक्षते | याचति, याचते |
| लङ् | अपश्यत् | अपतत् | अभिक्षत | अयाचत् अयाचत |
| लिङ् | पश्येत् | पतेत् | भिक्षेत | याचेत्, याचेत |
| लिङ् | दृश्यात् | पत्यात् | भिक्षिषीष्ट | याच्यात्, याचिषीष्ट |
| लिट् | ददर्श | पपात | बिभिक्षे | ययाच, ययाचे |
| लुट् | द्रष्टा | पतिता | भिक्षिता | याचितासि, याचितासे |
| लुङ् | अद्राक्षीत् | अपतत् | अभिक्षिष्ट | अयाचीत्, अयाचिष्ट |
| लृङ् | अद्रक्ष्यत् | अपतिष्यत् | अभिक्षिष्यत | अयाचिष्यत् अयाचिष्यत |
| लृट् | द्रक्ष्यति | पतिष्यति | भिक्षिष्यते | याचिष्यति—ते |
| लोट् | पश्यतु | पततु | भिक्षताम् | याचतु, याचताम् |
| णिजन्त | दर्शयति | पातयति | भिक्षयति | याचयति—ते |
| सन्नन्त | दिदृक्षति | पित्सति | बिभिक्षिषते | यियाचिषति—ते |

* इस लकार में प्रायः सब उभय पदी धातुओं में रूप भेद दिखाने के लिये मध्यम पुरुष एक वचन प्रयोग किया है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| यङन्त दरीदृश्यते | पनीपत्यते | बेभिक्ष्यते | यायाच्यते |
| कर्मवाच्य दृश्यते | पत्यते | भिक्ष्यते | याच्यते |
| शतृ० पश्यन् | पतन् | भिक्षमाणः | याचन्, याचमानः |
| क्त, क्तवतु, दृष्टः, दृष्टवान् | पतितः—वान् | भिक्षितः-तवान् | याचितः, तवान् |
| क्त्वा दृष्ट्वा | पतित्वा | भिक्षित्वा | याचित्वा |
| संज्ञा दृष्टिः, दर्शनम् | पतनम् | भिक्षणं, भिक्षा | याचनम्, याच्ञा |

| पठ् व्यक्तायाम्वाचि पढ़ना | भासृ दीप्तौ (रोशन हो०) | यती प्रयत्ने (कोशिश करना) | रमुक्रीडायाम् (खेलना) |
|---|---|---|---|
| लट् पठति | भासते | यतते | रमते |
| लङ् अपठत् | अभासत | अयतत | अरमत |
| लिङ् पठेत् | भासेत | यतेत | रमेत |
| लिङ् पठ्यात् | भासिषीष्ट | यतिषीष्ट | रंसीष्ट |
| लिट् पपाठ | बभासे | येते | रेमे |
| लुट् पठिता | भासिता | यतिता | रन्ता |
| लुङ् अपाठीत् | अभासिष्ट | अयतिष्ट | अरंस्त |
| लृङ् अपठिष्यत् | अभासिष्यत् | अयतिष्यत | अरंस्यत |
| लृट् पठिष्यति | भासिष्यते | यतिष्यते | रंस्यते |
| लोट् पठतु | भासताम् | यतताम् | रमताम् |
| णिजन्त पाठयति | भासयति—ते | यातयति | रमयति |
| सन्नन्त पिपठिषति | बिभासते | यियतिषते | रिरंसति |
| यङन्त पापठ्यते | बाभास्यते | यायत्यते | रंरम्यते |
| कर्मवाच्य पठ्यते | भास्यते | यत्यते | रम्यते |
| शतृ पठन् | भासमानः | यतमानः | रममाणः |
| क्त, क्तवतु पठितः पठितवान् | भासितः, तवान् | यत्तः, यत्तवान् | रतः, रतवान् |
| क्त्वा पठित्वा | भासित्वा | यतित्वा | रन्त्वा |
| संज्ञा पठनम् | भासनम्, भासः | यतनम्, यत्नः | रमणम्, रतिः |

| | डुलभष् प्राप्तौ [पाना] | वद व्यक्तायां वाचि (बोलना) | टुवेपृ कम्पने [कांपना] | शंसु स्तुतौ [तारीफ करना] | ष्वाद आस्वादने [चखना] |
|---|---|---|---|---|---|
| लट् | लभते | वदति | वेपते | शंसति | स्वादते |
| लङ् | अलभत | अवदत् | अवेपत | अशंसत् | अस्वादत |
| लिङ् | लभेत | वदेत् | वेपेत | शंसेत् | स्वादेत |
| लिङ् | लप्सीष्ट | उद्यात् | वेपिषीष्ट | शस्यात् | स्वादिषीष्ट |
| लिट् | लेभे | उवाद | विवेपे | शशंस | सस्वादे |
| लुट् | लब्धा | वदिता | वेपिता | शंसिता | स्वादिता |
| लुङ् | अलब्ध | अव[वा]दीत् | अवेपिष्ट | अशंसीत् | अस्वादिष्ट |
| लृङ् | अलप्स्यत | अवदिष्यत् | अवेपिष्यत | अशंसिष्यत् | अस्वादिष्यत |
| लृट् | लप्स्यते | वदिष्यति | वेपिष्यते | शंसिष्यति | स्वादिष्यते |
| लोट् | लभताम् | वदतु | वेपताम् | शंसतु | स्वादताम् |
| णिजन्त | लाभयति | वादयति | वेपयति | शंसयति | स्वादयति |
| सन्नन्त | लिप्सते | विवदिषति | विवेपिषते | शिशंसिषति | सिस्वादिषते |
| यङन्त | लालभ्यते | वावद्यते | वेवेप्यते | शाशस्यते | सास्वाद्यते |
| कर्मवाच्य | लभ्यते | उद्यते | वेप्यते | शस्यते | स्वाद्यते |
| शतृ० | लभमानः | वदन् | वेपमानः | शंसन् | स्वादमानः |
| क्त,क्तवतु | लब्धः, वान् | उदितः-वान् | वेपितः-वान् | शस्तः, शस्तवान् | स्वादितः स्वादितवान् |
| क्त्वा | लब्ध्वा | उदित्वा, वादित्वा | वेपित्वा | शंसित्वा, शस्त्वा | स्वादित्वा |
| संज्ञा | लाभः लब्धिः लभनम् | वदनम्, वाद | वेपनम्, वेपथु | शंसनम्, शस्ता, शस्ति | स्वादनं, स्वादः |
| | वस निवासे [रहना] | णद अव्यक्ते [शब्दे] | शप आक्रोशे [श्राप कहना] | ष्ठा गतिनिवृत्तौ [ठहरना] | स्मृ स्मरणे [याद करना] |
| लट् | वसति | नदति | शपति | तिष्ठति | स्मरति |
| लङ् | अवसत् | अनदत् | अशपत् | अतिष्ठत् | अस्मरत् |
| लिङ् | वसेत् | नदेत् | शपेत् | तिष्ठेत् | स्मरेत् |
| लिङ् | उष्यात् | नद्यात् | शप्यात् | स्थेयात् | स्मर्यात् |
| लिट् | उवास | ननाद | शशाप | तस्थौ | सस्मार |
| लुट् | वस्ता | नदिता | शप्ता | स्थाता | स्मर्ता |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अवात्सीत् | अन [ना]दीत् | अशाप्सीत् | अस्थात् | अस्मार्षीत् |
| लृङ् | अवत्स्यत् | अनदिष्यत् | अशप्स्यत् | अस्थास्यत् | अस्मरिष्यत् |
| लृट् | वत्स्यति | नदिष्यति | शप्स्यति | स्थास्यति | स्मरिष्यति |
| लोट् | वसतु | नदतु | शपतु | तिष्ठतु | स्मरतु |
| णिजन्त | वासयति | नादयति | शापयति | स्थापयति | स्मरयति |
| सन्नन्त | विवत्सति | निनदिषति | शिशप्सति | तिष्ठासति | सुस्मूर्षते |
| यङन्त | वावस्यते | नानद्यते | शाशप्यते | तेष्ठीयते | सास्मर्यते |
| क० वा० | उष्यते | नद्यते | शप्यते | स्थीयते | स्मर्यते |
| शतृ० | वसन् | नदन् | शपन् | तिष्ठन् | स्मरन् |
| क्त क्तवतु | उषितः, वान् | नदितः -वान् | शप्तः शप्तवान् | स्थितः, वान् | स्मृतः, वान् |
| क्त्वाप् | उषित्वा | नदित्वा | शप्त्वा | स्थित्वा | स्मृत्वा |
| संज्ञा | उष्टिः, वासः वसनम् | नदनम्, नादः | शपनम्, शाप | स्थानम्, स्थितिः | स्मृतिः स्मरणम् |

| | षह मर्षणे (सहना) | गुपू रक्षणे [रक्षाक०] | घ्रा गन्धोपादने [सूघना] | गम्लृ गतौ [ जाना ] | डीङ् विहायसा गतौ |
|---|---|---|---|---|---|
| लट् | सहते | गोपायति | जिघ्रति | गच्छति | डयते |
| लङ् | असहत | अगोपायत् | अजिघ्रत् | अगच्छत् | अडयत |
| लिङ् | सहेत | गोपायेत् | जिघ्रेत् | गच्छेत् | डयेत |
| लिङ् | सहिषीष्ट | गुप्यात् गोपाय्यात् | घ्रायात्, घ्रेयात् | गम्यात् | डयिषीष्ट |
| लिट् | सेहे | गोपाया*ञ्चकार ई. | जघ्रौ | जगाम | डिड्ये |
| लुट् | सहिता, सोढा | गोपायिता, गोप्ता ई. | घ्राता | गन्ता | डयिता |
| लुङ् | असहिष्ट | अगौप्सीत्, अगोपीत् ई. | अघ्रासीत्-अघ्रात् | अगमत् | अडयिष्ट |
| लृङ् | असहिष्यत | अगोपायिष्यत् ई. | अघ्रास्यत् | अगमिष्यत | अडयिष्यत |
| लृट् | सहिष्यते | गोपायिष्यतिई | घ्रास्यति | गमिष्यति | डयिष्यते |
| लोट् | सहताम् | गोपायतु | जिघ्रतु | गच्छतु | डयताम् |
| णिजन्त | साहयते | गोपाययति | घ्रापयति | गमयति | डाययति |
| सन्नन्त | सिसहिषते | जुगोपायिषति | जिघ्रासति | जिगमिषति | डिडयिषते |
| यङन्त | सासह्यते | | जेघ्रीयते | जङ्गम्यते | डेडीयते |
| कर्मवाच्य | सह्यते | गोपाय्यते | | गम्यते | डीयते |

*"आस" और बभूव भी चकार के तुल्य लग सक्ता है परन्तु केवल पर-स्मैपद में।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शतृ० | सहमानः | गोपायन् | जिघ्रन् | गच्छन् | डयमानः |
| क्त,क्तवतु | सोढः, वान् | गुप्तः, गोपायितः इ. | घ्रातः,घ्रातवान् | गतः, वान् | डीनः, वान् |
| क्त्वाच् | सहित्वा | गोपायित्वा इ. | घ्रात्वा | गत्वा | डयित्वा |
| संज्ञा | सहनम् | गोपायनम्, गोपनम् | घ्राणम् | गमनम्, गतिः | डयनम् |

| | हसे हसने [हंसना] | ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः धौंकना | पा—पाने [पीना] | तॄ प्लवनसंतरणयोः | शिक्ष शिक्षायां |
|---|---|---|---|---|---|
| लट् | हसति | धमति | पिबति | तरति | शिक्षते |
| लङ् | अहसत् | अधमत् | अपिबत् | अतरत् | अशिक्षत |
| लिङ् | हसेत् | धमेत् | पिबेत् | तरेत् | शिक्षेत |
| लिङ् | हस्यात् | ध्मेयात्, ध्मायात् | पेयात् | तीर्यात् | शिक्षिषीष्ट |
| लिट् | जहास | दध्मौ | पपौ | ततार | शिशिक्षे |
| लुट् | हसिता | ध्माता | पाता | तरि [री] ता | शिक्षिता |
| लुङ् | अहसीत् | अध्मासीत् | अपात् | अतारीत् | अशिक्षिष्ट |
| लृङ् | अहसिष्यत् | अध्मास्यत् | अपास्यत् | अतरि [री] ष्यत् | अशिक्षिष्यत |
| लृट् | हसिष्यति | ध्मास्यति | पास्यति | तरि[री]ष्यति | शिक्षिष्यते |
| लोट् | हसतु | धमतु | पिबतु | तरतु | शिक्षताम् |
| णिजन्त | हासयति | ध्मापयति | पाययति | तारयति | शिक्षयति |
| सन्नन्त | जिहसिषति | दिध्मासति | पिपासति | तितीर्षति इ. | शिशिक्षिषते |
| यङन्त | जाहस्यते | देध्मीयते | पेपीयते | तेतीर्य्यते | शेशिक्ष्यते |
| क० वा० | हस्यते | ध्मायते | पीयते | तीर्यते | शिक्ष्यते |
| शतृ० | हसन् | धमन् | पिबन् | तरन् | शिक्षमाणः |
| क्त,क्तवतु | हसितः,वान् | ध्मातः, वान् | पीतः, वान् | तीर्णः—वान् | शिक्षितः,वान् |
| क्त्वाच् | हसित्वा | ध्मात्वा | पीत्वा | तीर्त्वा | शिक्षित्वा |
| संज्ञा | हसनम्, हासः | ध्मानम् | पानम् | तरणम् | शिक्षणम्, शिक्षा |

| | टुवमु उद्गिरणे [ओकना] | हृञ् हरणे (हरना) | धाव गतिशुद्ध्योः (दौड़ना) | ह्वे—आह्वाने (बुलाना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वमति | हरति-ते | धावति, धावते | ह्वयति, ह्वयते |
| लङ् | अवमत् | अहरत्-त | अधावत्,अधावत | अह्वयत्, अह्वयत |
| लिङ् | वमेत् | हरेत् त | धावेत्, धावेत | ह्वयेत्, ह्वयेत |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिङ् | घम्यात् | ह्रियात्-हृषीष्ट | धाव्यात्, धाविषीष्ट | ह्वेयात्, ह्वासीष्ट |
| लिट् | घघाम | जहार-जह्रे | दधाव, दधावे | जुहाव, जुहुवे |
| लुट् | घमिता | हर्तासि-से | धावितासि, से | ह्वातासि, ह्वातासे |
| लुङ् | अघमीत् | अहार्षीत्, अहृत | अधावीत्, विष्ट | अह्वत्, अह्वत, अह्वास्त |
| लृङ् | अघमिष्यत् | अहरिष्यत्, त | अधाविष्यत्, त | अह्वास्यत्, त |
| लृट् | घमिष्यति | हरिष्यति-ते | धाविष्यति, ते | ह्वास्यति, ते |
| लोट् | घमतु | हरतु-ताम | धावतु, ताम् | ह्वयतु, ह्वयताम् |
| णिजन्त | घा [घ]मयति | हारयति इ० | धावयति, ते | ह्वाययति, ते |
| सन्नन्त | घिघमिषति | जिहीर्षति | दिधाविषति, ते | जुहूषति |
| यङन्त | घंघम्यते | जेह्रीयते | दाधाव्यते | जोह्वायते |
| क० वा० | घम्यते | ह्रियते | धाव्यते | हूयते |
| शतृ० | घमन् | हरन्, माणः | धावन्, मानः | ह्वयन्—मानः |
| क्त, क्तवतु | घान्तः, घान् | हृतः, हृतवान् | धावितः धावितवान् | हूतः, तवान् |
| क्त्वाप् | घांत्वा, घमित्वा | हृत्वा | धावित्वा | हूत्वा |
| संज्ञा | घमनम् | हरणम् | धावनम् | आह्वानम् |
| | मिह् सेचने [पेशाबक.] | णीञ् प्रापणे (पाना) | डुवप् बीजतन्तु-सन्ताने (बोना) | पच् (पाके) पकाना |
| लट् | मेहति | नयति-ते | वपति—ते | पचति—ते |
| लङ् | अमेहत् | अनयत्-त | अवपत्—त | अपचत्—त |
| लिङ् | मेहेत् | नयेत्, त | वपेत्—त | पचेत्—त |
| लिङ् | मिह्यात् | नीयात्, नेषीष्ट | उप्यात्, वप्सीष्ट | पच्यात्, पक्षीष्ट |
| लिट् | मिमेह | निनाय, निन्ये | उवाप, ऊपे | पपाच, पेचे |
| लुट् | मेढा | नेतासि-से | वप्तासि—से | पक्तासि—से |
| लुङ् | अमिक्षत् | अनैषीत्, अनेष्ट | अवाप्सीत्, अवप्त | अपाक्षीत्, अपक्त |
| लृङ् | अमेक्ष्यत् | अनेष्यत्-त | अवप्स्यत्—त | अपक्ष्यत्—त |
| लृट् | मेक्ष्यति | नेष्यति-ते | वप्स्यति—ते | पक्ष्यति—ते |
| लोट् | मेहतु | नयतु, ताम् | वपतु-ताम् | पचतु—ताम् |
| णिजन्त | मेहयति | नाययति-ते | वापयति—ते | पाचयति—ते |
| सन्नन्त | मिमिक्षति | निनीषति ते | विवप्सति-ते | पिपक्षति—ते |
| यङन्त | मेमिह्यते | नेनीयते | वावप्यते | पापच्यते |
| क० वा० | मिह्यते | नीयते | उप्यते | पच्यते |
| शतृ० | मेहन् | नयन्-मानः | वपन्, वपमानः | पचन्, पचमानः |
| क्त, क्तवतु | मीढः, वान् | नीतः-वान् | उप्तः, वान् | पक्वः, पक्ववान् |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्त्वाच् | मीत्वा | नीत्वा | उप्त्वा | पक्त्वा |
| संज्ञा | मेहनम् | नयनं, नीतिः | वपनम् | पचनम्, पाकः |

| | यज देवपूजादौ | सेवृ सेवायाम् (सेवा करना) | लज्ज लज्जायां | वदि अभिवादन स्तुत्योः |
|---|---|---|---|---|
| लट् | यजति, ते | सेवते | लज्जते | वन्दते |
| लङ् | अयजत्—त | असेवत | अलज्जत | अवन्दत |
| लिङ् | यजेत्—त | सेवेत | लज्जेत | वन्देत |
| लिङ् | इज्यात्—यक्षीष्ट | सेविषीष्ट | लज्जिषीष्ट | वन्दिषीष्ट |
| लिट् | इयाज, ईजे | सिषेवे | ललज्जे | ववन्दे |
| लुट् | यष्टासि—से | सेविता | लज्जिता | वन्दिता |
| लुङ् | अयाक्षीत्, अयष्ट | असेविष्ट | अलज्जिष्ट | अवन्दिष्ट |
| लृङ् | अयक्ष्यत्—त | असेविष्यत | अलज्जिष्यत | अवन्दिष्यत |
| लृट् | यक्ष्यति—ते | सेविष्यते | लज्जिष्यते | वन्दिष्यते |
| लोट् | यजतु—ताम् | सेवताम् | लज्जताम् | वन्दताम् |
| णिजन्त | याजयति—ते | सेवयति—ते | लज्जयति | वन्दयति—ते |
| सन्नन्त | यियक्षति—ते | सिसेविषते | लिलज्जिषते | विवन्दिषते |
| यङन्त | यायज्यते | सेसेव्यते | लालज्यते | वावन्द्यते |
| क०वा० | इज्यते | सेव्यते | लज्ज्यते | वन्द्यते |
| शतृ० | यजन्, मानः | सेवमानः | लज्जमानः | वन्दमानः |
| क्त,क्तवत् | इष्ट, वान् | सेवितः-वान् | लज्जितः, वान् | वन्दितः, वान् |
| क्त्वाच् | इष्ट्वा | सेवित्वा | लज्जित्वा | वन्दित्वा |
| संज्ञा | यजनम्, यागः | सेवनम्, सेवा | लज्जा | वन्दनम् |

| | वृधुँ वर्धने (बढ़ना) | गै शब्दे (गाना) | शकि शङ्कायां (शङ्का करना) | मुद हर्षे (खुश होना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वर्धते | गायति | शङ्कते | मोदते |
| लङ् | अवर्धत | अगायत् | अशङ्कत | अमोदत |
| लिङ् | वर्धेत | गायेत् | शङ्केत | मोदेत |
| लिङ् | वर्धिषीष्ट | गेयात् | शङ्किषीष्ट | मोदिषीष्ट |
| लिट् | ववृधे | जगौ | शशङ्के | मुमुदे |
| लुट् | वर्धिता | गाता | शङ्किता | मोदिता |
| लुङ् | अवृधत्, अवर्धिष्ट | अगासीत् | अशङ्किष्ट | अमोदिष्ट |
| लृङ् | अवर्त्स्यत, अवर्धिष्यत | अगास्यत् | अशङ्किष्यत | अमोदिष्यत |
| लृट् | वर्त्स्यति, वर्धिष्यते | गास्यति | शङ्किष्यते | मोदिष्यते |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | वर्धताम् | गायतु | शङ्कताम् | मोदताम् |
| णिजन्त | वर्धयति—ते | गापयति-ते | शङ्कयति—ते | मोदयति |
| सन्नन्त | विवर्धिषते, विवृत्सते | जिगासति | शिशङ्किषते | मुमु (मो) दिषते |
| यङन्त | वरीवृध्यते | जेगीयते | शाशङ्क्यते | मोमुद्यते |
| क० वा० | वृध्यते | गीयते | शङ्क्यते | मुद्यते |
| शतृ० | वर्धमानः | गायन् | शङ्कमानः | मोदमानः |
| क्त, क्तवतु | वृद्धः, वान् | गीतम् | शङ्कितः, वान् | मु(मो)दितम् वान् |
| क्त्वाप् | वर्धित्वा, वृद्ध्वा | गात्वा | शङ्कित्वा | मु (मो) दित्वा |
| संज्ञा | वर्धनम्, वृद्धिः | गानम् | शङ्का | मोदनम्, मोदः |
| | णिदि कुत्सायाम् (निन्दाक०) | वृतु वर्तने (वर्तना) | अदादिगणः अद भक्षणे | मा माने (समाना) |
| लट् | निन्दति | वर्तते | अत्ति | माति |
| लङ् | अनिन्दत् | अवर्तत | आदत् | अमात् |
| लिङ् | निन्देत् | वर्तेत | अद्यात् | मायात् |
| लिंङ् | निन्द्यात् | वर्तिषीष्ट | अद्यात् | मेयात् |
| लिट् | निनिन्द | ववृते | आद, जघास | ममौ |
| लुट् | निन्दिता | वर्तिता | अत्ता | माता |
| लुङ् | अनिन्दीत् | अवर्तिष्ट अवृतत | अघसत् | अमासीत् |
| लृङ् | अनिन्दिष्यत | अवर्ति(त्स्यं)ष्यत | आत्स्यत् | अमास्यत् |
| लृट् | निन्दिष्यति | वर्ति(त्स्यं)ष्यते | अत्स्यति | मास्यति |
| लोट् | निन्दतु | वर्तताम् | अत्तु | मातु |
| णिजन्त | निन्दयति | वर्तयते—ति | आदयति | मापयति |
| सन्नन्त | निनिन्दिषति | विवर्तिषते वि-वृत्सते | जिघत्सति | मित्सति |
| यङन्त | नेनिन्द्यते | वरीवृत्यते | | मेमीयते |
| कर्म० | निन्द्यते | वृत्यते | अद्यते | मीयते |
| शतृ० | निन्दन् | वर्तमानः | अदन् | मान् |
| क्त, क्तवतु | निन्दितः, वान् | वृतः, वान् | जग्धः, वान् | मीतः, तवान् |
| क्त्वाप् | निन्दित्वा | वर्ति (वृ) त्वा | जग्ध्वा | मात्वा |
| संज्ञा | निन्दा | वर्तनम्, वृत्तिः | अदनम् | मानम् |
| | णमु अभिवादने (नमस्कारक०) | जीव प्राणधारणे (जीना) | जागृ निद्राक्षये (जागना) | मृजूष शुद्धौ (मांजना) |
| लट् | नमति | जीवति | जागर्ति | मार्ष्टि |
| लङ् | अनमत् | अजीवत् | अजागः | अमार्ट् |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्त्वाप् | मीढ्वा | नीत्वा | उप्त्वा | पक्त्वा |
| संज्ञा | मेहनम् | नयनं, नीतिः | वपनम् | पचनम्, पाकः |

| | यज देवपूजादौ | सेवृ सेवायाम् (सेवा करना) | लज्ज लज्जायां | वदि अभिवादन स्तुत्योः |
|---|---|---|---|---|
| लट् | यजति, ते | सेवते | लज्जते | वन्दते |
| लङ् | अयजत्—त | असेवत | अलज्जत | अवन्दत |
| लिङ् | यजेत्—त | सेवेत | लज्जेत | वन्देत |
| लिङ् | इज्यात्—यक्षीष्ट | सेविषीष्ट | लज्जिषीष्ट | वन्दिषीष्ट |
| लिट् | ईयाज, ईजे | सिषेवे | ललज्जे | ववन्दे |
| लुट् | यष्टासि—से | सेविता | लज्जिता | वन्दिता |
| लुङ् | अयाक्षीत्, अयष्ट | असेविष्ट | अलज्जिष्ट | अवन्दिष्ट |
| लृङ् | अयक्ष्यत्—त | असेविष्यत | अलज्जिष्यत | अवन्दिष्यत |
| लृट् | यक्ष्यति—ते | सेविष्यते | लज्जिष्यते | वन्दिष्यते |
| लोट् | यजतु—ताम् | सेवताम् | लज्जताम् | वन्दताम् |
| णिजन्त | याजयति—ते | सेवयति—ते | लज्जयति | वन्दयति—ते |
| सन्नन्त | यियक्षति—ते | सिसेविषते | लिलज्जिषते | विवन्दिषते |
| यङन्त | यायज्यते | सेसेव्यते | लालज्यते | वावन्द्यते |
| क०वा० | इज्यते | सेव्यते | लज्ज्यते | वन्द्यते |
| शतृ० | यजन्, मानः | सेवमानः | लज्जमानः | वन्दमानः |
| क्त,क्तवत् | इष्ट, वान् | सेवितः-वान् | लज्जितः, वान् | वन्दितः, वान् |
| क्त्वाप् | इष्ट्वा | सेवित्वा | लज्जित्वा | वन्दित्वा |
| संज्ञा | यजनम्, यागः | सेवनम्, सेवा | लज्जा | वन्दनम् |

| | वृधु वृद्धौ (बढ़ना) | गै शब्दे (गाना) | शकि शङ्कायां (शङ्का करना) | मुद हर्षे (खुश होना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वर्धते | गायति | शङ्कते | मोदते |
| लङ् | अवर्धत | अगायत् | अशङ्कत | अमोदत |
| लिङ् | वर्धेत | गायेत् | शङ्केत | मोदेत |
| लिङ् | वर्धिषीष्ट | गेयात् | शङ्किषीष्ट | मोदिषीष्ट |
| लिट् | ववृधे | जगौ | शशङ्के | मुमुदे |
| लुट् | वर्धिता | गाता | शङ्किता | मोदिता |
| लुङ् | अवृधत्, अवर्धिष्ट | अगासीत् | अशङ्किष्ट | अमोदिष्ट |
| लृङ् | अवर्त्स्यत, अवर्धिष्यत | अगास्यत् | अशङ्किष्यत | अमोदिष्यत |
| लृट् | वर्त्स्यति, वर्धिष्यते | गास्यति | शङ्किष्यते | मोदिष्यते |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | वर्धताम् | गायतु | शङ्कताम् | मोदताम् |
| णिजन्त | वर्धयति—ते | गापयति-ते | शङ्कयति—ते | मोदयति |
| सन्नन्त | विवर्धिषते, विवृत्सते | जिगासति | शिशङ्किषते | मुमु (मो) दिषते |
| यङन्त | वरीवृध्यते | जेगीयते | शाशङ्क्यते | मोमुद्यते |
| क० वा० | वृध्यते | गीयते | शङ्क्यते | मुद्यत |
| शतृ० | वर्धमानः | गायन् | शङ्कमानः | मोदमानः |
| क्त, क्तवतु | वृद्धः, वान् | गीतम् | शङ्कितः, वान् | मु(मो)दितम् वान् |
| क्त्वाच् | वर्धित्वा, वृद्ध्वा | गात्वा | शङ्कित्वा | मु (मो) दित्वा |
| संज्ञा | वर्धनम्, वृद्धिः | गानम् | शङ्का | मोदनम्, मोदः |
| | णिदि कुत्सायाम् (निन्दाक०) | वृतु वर्तने (वर्तना) | अदादिगणः अद भक्षणे | मा माने (समाना) |
| लट् | निन्दति | वर्तते | अत्ति | माति |
| लङ् | अनिन्दत् | अवर्तत | आदत् | अमात् |
| लिङ् | नन्देत् | वर्तेत | अद्यात् | मायात् |
| लिङ् | निन्द्यात् | वर्तिषीष्ट | अद्यात् | मेयात् |
| लिट् | निनिन्द | ववृते | आद, जघास | ममौ |
| लुट् | निन्दिता | वर्तिता | अत्ता | माता |
| लुङ् | अनिन्दीत् | अवर्तिष्ट अवृतत | अघसत् | अमासीत् |
| लृङ् | अनिन्दिष्यत | अवर्ति(र्त्स्य)ष्यत | आत्स्यत् | अमास्यत् |
| लृट् | निन्दिष्यति | वर्ति(र्त्स्य)ष्यते | अत्स्यति | मास्यति |
| लोट् | निन्दतु | वर्तताम् | अत्तु | मातु |
| णिजन्त | निन्दयति | वर्तयते—ति | आदयति | मापयति |
| सन्नन्त | निनिन्दिषति | विवर्तिषते वि-वृत्सते | जिघत्सति | मित्सति |
| यङन्त | नेनिन्द्यते | वरीवृत्यते | | मेमीयते |
| कर्म० | निन्द्यते | वृत्यते | अद्यते | मीयते |
| शतृ० | निन्दन् | वर्तमानः | अदन् | मान् |
| क्त, क्तवतु | निन्दितः, वान् | वृतः, वान् | जग्धः, वान् | मीतः, तवान् |
| क्त्वाच् | निन्दित्वा | वर्ति (वृ) त्वा | जग्ध्वा | मात्वा |
| संज्ञा | निन्दा | वर्तनम्, वृत्तिः | अदनम् | मानम् |
| | णमु अभिवादने (नमस्कारक०) | जीव प्राणधारणे (जीना) | जागृ निद्राक्षये (जागना) | मृजूष शुद्धौ (मांगना) |
| लट् | नमति | जीवति | जागर्ति | मार्ष्टि |
| लङ् | अनमत् | अजीवत् | अजागः | अमार्ट् |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| विधि० लिङ् | नमेत् | जीवेत् | जागृयात् | मृज्यात् |
| आ० लिङ् | नम्यात् | जीव्यात् | जागर्यात् | मृज्यात् |
| लिट् | ननाम | जिजीव | जजागार जागराञ्चकार | ममार्ज |
| लुट् | नन्ता | जीविता | जागरिता | मार्ष्टा, मार्जिता |
| लुङ् | अनंसीत् | अजीवीत् | अजागरीत् | अमार्क्षी (र्जी) त् |
| लृङ् | अनंस्यत् | अजीविष्यत् | अजागरिष्यत् | अमार्क्ष्य(र्जिष्य)त् |
| लृट् | नंस्यति | जीविष्यति | जागरिष्यति | मार्क्ष्य(र्जिष्य)ति |
| लोट् | नमतु | जीवतु | जागर्तु | मार्ष्टु |
| णिजन्त | न (ना) मयति | जीवयति | जागरयति | मार्जयति |
| सन्नन्त | निनंसति | जिजीविषति | जिजागरिषति | मिमार्क्ष(र्जिष)ति |
| यङन्त | नंनम्यते | जेजीव्यते | | मरीमृज्यते |
| क० वा० | नम्यते | जीव्यते | जागर्यते | मृज्यते |
| शतृ० | नमन् | जीवन् | जाग्रत् | मार्जन्, मृजन् |
| क्त, क्तवतु | नतः—वान् | जीवितः, वान् | जागरितः, वान् | मृष्टः, वान् |
| क्त्वा० | नत्वा | जीवित्वा | जागरित्वा | मृष्ट्वा, मार्जित्वा |
| संज्ञा | नमनम्, नतिः | जीवनम्<br>इति भ्वादिः | जागरणम् | मार्जनम् |

| | वच परिभाषणे ( बोलना ) | ष्टुञ् स्तुतौ (तारीफ करना) | पा रक्षणे | ञिष्वप् शये [ सोना ] |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वक्ति | स्तौति, स्तवीति स्तुते, स्तवीते | पाति | स्वपिति |
| लङ् | अवक् | अस्तौत्, अस्तवीत्; अस्तुत, अस्तवीत | अपात् | अस्वप[पी]त् |
| विधि० लिङ् | वच्यात् | स्तवीयात्, स्तुयात्, स्तुवीत | पायात् | स्वप्यात् |
| आ० लिङ् | उच्यात् | स्तूयात्, स्तोषीष्ट | पायात् | सुप्यात् |
| लिट् | उवाच | तुष्टाव; तुष्टुवे | पपौ | सुष्वाप |
| लुट् | वक्ता | स्तोतासि—से | पाता | स्वप्ता |
| लुङ् | अवोचत् | अस्तावीत् अस्तोष्ट | अपासीत् | अस्वाप्सीत् |
| लृङ् | अवक्ष्यत् | अस्तोष्यत्, अस्तोष्यत | अपास्यत् | अस्वप्स्यत् |
| लृट् | वक्ष्यति | स्तोष्यति, स्तोष्यते | पास्यति | स्वप्स्यति |
| लोट् | वक्तु | स्तौतु, स्तवीतु, स्तुतां, स्तुवीताम् | पातु | स्वपितु |
| णिजन्त | वाचयति | स्तावयति—ते | पालयति | स्वापयति |
| सन्नन्त | विवक्षति | तुष्टूषति | पिपासति | सुषुप्सति |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यङन्त | वावच्यते | तोष्टूयते | पेपीयते | सास्वप्यते |
| क० वा० | उच्यते | स्तूयते | पीयते | सुप्यते |
| शतृ० | वचन् | स्तुवन्, स्तवमानः | पान् | स्वपन् |
| क्त,क्तवतु | उक्तम्, वान् | स्तुतः, तवान् | पीतः, वान् | सुप्तः, वान् |
| क्त्वाच् | उक्त्वा | स्तुत्वा | पीत्वा | सुप्त्वा |
| संज्ञा | वचनम् | स्तुतिः, स्तवनम | पानम् | स्वपनं.सुप्तिः |

| | शासु अनुशिष्टौ (हुकम दे०) | णुस्तुतौ (तारीफकरना) | अस् भुवि [होना] | विद ज्ञाने [जानना] | ष्णा शौचे [न्हाना] |
|---|---|---|---|---|---|
| लट् | शास्ति | नौति | अस्ति | वेत्ति [वेद] | स्नाति |
| लङ् | अशात् | अनौत् | आसीत् | अवेत् | अस्नात् |
| लिङ् | शिष्यात् | नुयात् | स्यात् | विद्यात् | स्नायात् |
| लिङ् | शिष्यात् | नूयात् | भूयात् | विद्यात् | स्ना [स्ने]-यात् |
| लिट् | शशास | नुनाव | बभूव | विवेद,विदाञ्चकार | सस्नौ |
| लुट् | शासिता | नविता | भविता | वेदिता | स्नाता |
| लुङ् | अशिषत् | अनावीत् | अभूत् | अवेदीत् | अस्नासीत् |
| लृङ् | अशासिष्यत् | अनविष्यत् | अभविष्यत् | अवेदिष्यत् | अस्नास्यत् |
| लृट् | शासिष्यति | नविष्यति | भविष्यति | वेदिष्यति | स्नास्यति |
| लोट् | शास्तु | नौतु | अस्तु | वेत्तु, विदाङ्कुर्वन्तु | स्नातु |
| णिजन्त | शासयति | नावयति | भावयति | वेदयति | स्नापयति |
| सन्नन्त | शिशासिषति | नुनविषति | बुभूषति | विविदिषति | सिस्नासति |
| यङन्त | शेशिष्यते | नोनूयते | बोभूयते | वेविद्यते | सास्नायते |
| क० वा० | शिष्यते | नूयते | भूयते | विद्यते | स्नायते |
| शतृ० | शासन् | नवन् | सन् | विदन् | स्नान् |
| क्त,क्तवतु | शिष्टः, वान् | नुतः, वान् | भूतः, वान् | विदितःवान् | स्नातः,वान् |
| क्त्वाच् | शिष्ट्वा, शासित्वा | नुत्वा | भूत्वा | विदित्वा | स्नात्वा |
| संज्ञा | शासनम् | नवनम्, नुतिः | भवनम्भूतिः | वेदनम् | स्नानम् |

| | लिह आस्वादने (चाटना) | रुदिर् अश्रुविमोचने | द्विष अप्रीतौ (द्वेष करना) | इण् गतौ (जाना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | लेढि, लीढे | रोदिति | द्वेष्टि, द्विष्टे | एति |
| लङ् | अलेट्, अलीढ | अरोद (दी) त् | अद्वेट्, अद्विष्ट | ऐत् |
| लिङ् | लिह्यात्,लिहीत | रुद्यात् | द्विष्यात्,द्विषीत | इयात् |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिङ् | लिह्यात्, लिक्षीष्ट | रुद्यात् | क्षिप्यात्, क्षिक्षीष्ट | ईयात् |
| लिट् | लिलेह, लिलिहे | रुरोद | चिक्षेप, चिक्षिपे | इयाय |
| लुट् | लेढासि-से | रोदिता | क्षेप्तासि-से | एता |
| लुङ् | अलिक्षत्-त अलीढ | अरोदी (रुद) त् | अक्षिक्षत्-त | अगात् |
| लृङ् | अलेक्ष्यत् त | अरोदिष्यत् | अक्षेप्स्यत् त | ऐष्यत् |
| लृट् | लेक्ष्यति ते | रोदिष्यति | क्षेप्स्यति-ते | एष्यति |
| लोट् | लेढु, लीढाम् | रोदितु | क्षेप्तु, क्षिपताम् | एतु |
| णिजन्त | लेहयति ते | रोदयति | क्षेपयति-ते | गमयति |
| सन्नन्त | लिलिक्षति ते | रुरुदिषति | चिक्षिक्षति-ते | जिगमिषति |
| यङन्त | लेलिह्यते | रोरुद्यते | चेक्षिप्यते | |
| क०वा० | लिह्यते | रुद्यते | क्षिप्यते | ईयते |
| शतृ० | लिहन्, लिहान० | रुदन् | क्षिपन्-पाणः | यन् |
| क्त,क्तवतु | लीढः, लीढवान् | रु(रो)दितः वान् | क्षिप्तः, वान् | इतः, वान् |
| क्त्वा | लीढ्वा | रुदित्वा | क्षिप्त्वा | इत्वा |
| ल्युट् | लेहनम् | रोदनम् | क्षेपणम्, क्षेपः | अयनम् |

| | हन् हिंसागत्योः (मारना) | रु शब्दे (रोना) | शीङ् स्वप्ने (सोना) | दुह प्रपूरणे (दुहना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | हन्ति | रौति, रवीति | शेते | दोग्धि, दुग्धे |
| लङ् | अहन् | अरौत्, अरवीत् | अशेत | अधोक्, अदुग्ध |
| लिङ् | हन्यात् | रुयात्, रवीयात् | शयीत | दुह्यात्, दुहीत |
| लिङ् | वध्यात् | रूयात् | शयिषीष्ट | दुह्यात्, धुक्षीष्ट |
| लिट् | जघान | रुराव | शिश्ये | दुदोह, दुदुहे |
| लुट् | हन्ता | रविता | शयिता | दोग्धासि-से |
| लुङ् | अवधीत् | अरावीत् | अशयिष्ट | अधुक्षत् त अदुग्ध |
| लृङ् | अहनिष्यत् | अरविष्यत् | अशयिष्यत | अधोक्ष्यत् त |
| लृट् | हनिष्यति | रविष्यति | शयिष्यते | धोक्ष्यति-ते |
| लोट् | हन्तु | रौतु, रवीतु | शेताम् | दोग्धु, दुग्धाम् |
| णिजन्त | घातयति | रावयति | शाययति | दोहयति ते |
| सन्नन्त | जिघांसति | रुरूषति | शिशयिषते | दुधुक्षति ते |
| यङन्त | जङ्घन्यते जेघ्नीयते | रोरूयते | शाशय्यते | दोदुह्यते |
| क०वा० | हन्यते | रूयते | शय्यते | दुह्यते |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शतृ० | घ्नन् | रुवन् | शयानः | दुहन्-हानः |
| क्त,क्तवतु | हतः, वान् | रुतः, वान् | शयितः, वान् | दुग्धः, वान् |
| क्त्वाच् | हत्वा | रुत्वा | शयित्वा | दुग्ध्वा |
| संज्ञा | हननम् | रवणं, रावः | शयनम् | दोहनम् |
| | ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि | ञिभी भये (डरना) | डुभृञ् धारणपोषणयोः (पालना) | डुधाञ् धारणे |
| लट् | ब्रवीति, ब्रूते | बिभेति | बिभर्ति, बिभृते | दधाति धत्ते |
| लङ् | अब्रवीत्, अब्रूत | अबिभेत् | अबिभः,अबिभृत | अदधात् अधत्त |
| लिङ् | ब्रूयात्, ब्रुवीत | बिभीयात् | बिभृयात्,बिभ्रीत | दध्यात् दधीत |
| लिङ् | उच्यात्, वक्षीष्ट | भीयात् | भ्रियात्, भृषीष्ट | धेयात्-धासीष्ट |
| लिट् | उवाच, ऊचे | बिभाय, बिभयाञ्चकार इत्यादि | बभार, बिभराञ्चकार बभ्रे | दधौ दधे |
| लुट् | वक्तासि-से | भेता | भर्तासि-से | धातासि-से |
| लुङ् | अवोचत् – त | अभैषीत् | अभार्षीत्, अभृत | अधात् अधित |
| लृङ् | अवक्ष्यत्-त | अभेष्यत् | अभरिष्यत्-त | अधास्यत्-त |
| लृट् | वक्ष्यति-ते | भेष्यति | भरिष्यति ते | धास्यति-ते |
| लोट् | ब्रवीतु, ब्रूताम् | बिभेतु | बिभर्तु,बिभृताम् | दधातु-धत्ताम् |
| णिजन्त | वाचयति-ते | भापयते,भाययते | भारयति-ते | धापयति ते |
| सन्नन्त | विवक्षति ते | बिभीषति | बुभूर्षति–ते | धित्सति-ते |
| यङन्त | वावच्यते | बेभीयते | बेभ्रीयते | देधीयते |
| कर्म० | उच्यते | भीयते | भ्रियते | धीयते |
| शतृ० | ब्रुवन्, वाणः | बिभ्यत् | बिभ्रत् बिभ्राणः | दधत्-दधानः |
| क्त,क्तवतु | उक्तम्, वान् | भीतः, वान् | भृतः, वान् | हितः, वान् |
| क्त्वाच् | उक्त्वा | भीत्वा | भृत्वा | हित्वा |
| संज्ञा | वचनम् इत्यदादिः | भयम्, भीतिः | भरणम्, भृतिः | आधानम् |
| | अथ जुहोत्यादिः । हु दानादनयोः (देना खाना) | ओहाक् त्यागे | डुदाञ् दाने (देना) | अथ दिवादिः । दिवु क्रीडा विजिगीषादौ (खेलना) |
| लट् | जुहोति | जहाति | ददाति दत्ते | दीव्यति |
| लङ् | अजुहोत् | अजहात् | अददात् अदत्त | अदीव्यत् |
| लिङ् | जुहुयात् | जह्यात् | दद्यात्-ददीत | दीव्येत् |
| लिङ् | हूयात् | हेयात् | देयात्-दासीष्ट | दीव्यात् |
| लिट् | जुहाव | जहौ | ददौ–ददे | दिदेव |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | होता | हाता | दातासि-से | देविता |
| लुङ् | अहौषीत् | अहासीत् | अदात्-अदित | अदेवीत् |
| लृङ् | अहोष्यत् | अहास्यत् | अदास्यत्-त | अदेविष्यत् |
| लृट् | होष्यति | हास्यति | दास्यति-ते | देविष्यति |
| लोट् | जुहोतु | जहातु | ददातु-दत्ताम् | दीव्यतु |
| णिजन्त | हावयति | हापयति-ते | दापयति ते | देवयति-ते |
| सन्नन्त | जुहूषति | जिहासति | दित्सति-ते | दिदेवि (दुद्यू) षति |
| यङन्त | जोहूयते | जेहीयते | देदीयते | देदीव्यते |
| क०वा० | हूयते | हीयते | दीयते | दीव्यते |
| शतृ० | जुह्वत् | जहत् | ददत्-ददानः | दीव्यन् |
| क्त,क्तवतु | हुतः वान् | हीनः, वान् | दत्तः, वान् | द्यूतः, वान् |
| क्त्वाप् | हुत्वा | हित्वा | दत्त्वा | देवित्वा, द्यूत्वा |
| संज्ञा | हवनम् | हानिः | दानम् | द्यूतिः |

| | मन ज्ञाने [मानना] | नृती गात्रविक्षेपे [नाचना] | असु क्षेपणे [फेंकना] | णश अदर्शने [नाश हो०] |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मन्यते | नृत्यति | अस्यति | नश्यति |
| लङ् | अमन्यत | अनृत्यत् | आस्यत् | अनश्यत् |
| लिङ् | मन्येत | नृत्येत् | अस्येत् | नश्येत् |
| लिङ् | मंसीष्ट | नृत्यात् | अस्यात् | नश्यात् |
| लिट् | मेने | ननर्त | आस | ननाश |
| लुट् | मन्ता | नर्तिता | असिता | नशिता, नंष्टा |
| लुङ् | अमंस्त | अनर्तीत् | आस्थत् | अनशत् |
| लृङ् | अमंस्यत | अनर्ति [र्त्स्य] ष्यत् | आसिष्यत् | अनशिष्य [नंक्ष्य] त् |
| लृट् | मंस्यते | नर्त्स्य [र्तिष्य] ति | असिष्यति | नंक्ष्य [नशिष्य] ति |
| लोट् | मन्यताम् | नृत्यतु | अस्यतु | नश्यतु |
| णिजन्त | मानयति | नर्तयति | आसयति | नाशयति |
| सन्नन्त | मिमंसते | निनर्तिषति निनृत्सति | आसिसिषति | निनंक्ष [निनशिष] ति |
| यङन्त | मम्मन्यते | नरीनृत्यते | | नानश्यते |
| क०वा० | मन्यते | नृत्यते | अस्यते | नश्यते |
| शतृ० | मन्यमानः | नृत्यन् | अस्यन् | नश्यन् |
| क्त,क्तवतु | मतः, वान् | नर्तितः, वान् | अस्तः, वान् | नष्टः, वान् |
| क्त्वाप् | मत्वा | नर्तित्वा | असित्वा, अस्त्वा | नशित्वा, नंष्ट्वा |
| संज्ञा | मननम्, मतिः | नर्तनम् | असनम् | नाशनम्, नाशः |

| | युध संप्रहारे [लड़ना] | मुह वैचित्त्ये [घबड़ाना] | श्रमु तपसि खेदे च | रध हिंसासंराध्योः [रांधना] |
|---|---|---|---|---|
| लट् | युध्यते | मुह्यति | श्राम्यति | रध्यति |
| लङ् | अयुध्यत | अमुह्यत् | अश्राम्यत् | अरध्यत् |
| लिङ् | युध्येत | मुह्येत् | श्राम्येत् | रध्येत् |
| लिङ् | युत्सीष्ट | मुह्यात् | श्रम्यात् | रध्यात् |
| लिट् | युयुधे | मुमोह | शश्राम | ररन्ध |
| लुट् | योद्धा | मोग्धा, ढा, हिता | श्रमिता | रधिता [रद्धा] |
| लुङ् | अयुद्ध | अमुहत् | अश्रमत् | अरधत् |
| लृङ् | अयोत्स्यत | अमोक्ष्य (हिष्य)त् | अश्रमिष्यत् | अरत्स्य [धिष्य] त् |
| लृट् | योत्स्यते | मोक्ष्य [हिष्य] ति | श्रमिष्यति | रत्स्य [धिष्य] ति |
| लोट् | युध्यताम् | मुह्यतु | श्राम्यतु | रध्यतु |
| णिजन्त | योधयति | मोहयति | श्रमयति | रन्धयति |
| सन्नन्त | युयुत्सते | मुमुहिष [क्ष] ति | शिश्रमिषते | रिरत्स (धिष) ति |
| यङन्त | योयुध्यते | मोमुह्यते | शंश्रम्यते | रारध्यते |
| क० वा० | युध्यते | मुह्यते | श्रम्यते | रध्यते |
| शतृ० | युध्यमानः | मुह्यन् | श्राम्यन् | रध्यन् |
| क्त, क्तवतु | युद्धः, वान् | मूढः मुग्धः, वान् | श्रान्तः, वान् | रद्धः, वान् |
| क्त्वाप् | युद्ध्वा | मोहित्वा, मुग्ध्वा | श्रमित्वा, श्रान्त्वा | रधित्वा, रद्ध्वा |
| संज्ञा | योधनम् | मोहनम्, मोहः | श्रमः, श्रान्तिः | रंधनम् |

| | शुष शोषणे (सूखना) | विद सत्तायां [ होना ] | तुष प्रीतौ | पुष पुष्टौ (पुष्ट होना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शुष्यति | विद्यते | तुष्यति | पुष्यति |
| लङ् | अशुष्यत् | अविद्यत | अतुष्यत् | अपुष्यत् |
| लिङ् | शुष्येत् | विद्येत | तुष्येत् | पुष्येत् |
| लिङ् | शुष्यात् | वित्सीष्ट | तुष्यात् | पुष्यात् |
| लिट् | शुशोष | विविदे | तुतोष | पुपोष |
| लुट् | शोष्टा | वेत्ता | तोष्टा | पोष्टा |
| लुङ् | अशुषत् | अवित्त | अतुषत् | अपुषत् |
| लृङ् | अशोक्ष्यत् | अवेत्स्यत | अतोक्ष्यत् | अपोक्ष्यत् |
| लृट् | शोक्ष्यति | वेत्स्यते | तोक्ष्यति | पोक्ष्यति |
| लोट् | शुष्यतु | विद्यताम् | तुष्यतु | पुष्यतु |
| णिजन्त | शोषयति | वेदयति | तोषयति | पोषयति |
| सन्नन्त | शुशुक्षति | विवित्सते | तुतुक्षति | पुपुक्षति |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यङन्त | शोशुष्यते | वेविद्यते | तोतुष्यते | पोपुष्यते |
| क० वा० | शुष्यते | विद्यते | तुष्यते | पुष्यते |
| शतृ० | शुष्यन् | विद्यमानः | तुष्यन् | पुष्यन् |
| क्त,क्तवतु | शुष्कः, वान् | विन्नः, वान् | तुष्टः, वान् | पुष्टः, वान् |
| क्त्वाप् | शुष्ट्वा | विन्त्वा | तुष्ट्वा | पुष्ट्वा |
| संज्ञा | शोषणम् | वेदनम् | तोषणम् तुष्टिः | पोषणं, पुष्टिः |

| | शमु उपशमे (शान्तहो०) | जनी प्रादुर्भावे | कुप, क्रुध क्रोधे | श्लिष आलिङ्गने [ चिपटना ] |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शाम्यति | जायते | कुप्यति | श्लिष्यति |
| लङ् | अशाम्यत् | अजायत | अकुप्यत् | अश्लिष्यत् |
| लिङ् | शाम्येत् | जायेत | कुप्येत् | श्लिष्येत् |
| लिङ् | शम्यात् | जनिषीष्ट | कुप्यात् | श्लिष्यात् |
| लिट् | शशाम | जज्ञे | चुकोप | शिश्लेष |
| लुट् | शमिता | जनिता | कोपिता | श्लेष्टा |
| लुङ् | अशमत् | अजनि, ष्ट | अकुपत् | अश्लिक्ष [ष] त् |
| लृङ् | अशमिष्यत् | अजनिष्यत | अकोपिष्यत् | अश्लेक्ष्यत् |
| लृट् | शमिष्यति | जनिष्यते | कोपिष्यति | श्लेक्ष्यति |
| लोट् | शाम्यतु | जायताम् | कुप्यतु | श्लिष्यतु |
| णिजन्त | श [शा] मयति | जनयति | कोपयति | श्लेषयति |
| सन्नन्त | शिशमिषति | जिजनिषते | चुकु [को] पिषति | शिश्लिक्षति |
| यङन्त | शंशम्यते | जञ्जन्यते [जाजायते] | चोकुप्यते | शेश्लिष्यते |
| क०वा० | शम्यते | जन्यते | कुप्यते | श्लिष्यते |
| शतृ० | शाम्यन् | जायमानः | कुप्यन् | श्लिष्यन् |
| क्त,क्तवतु | शान्तः, वान् | जातः, वान् | कुपितः, वान् | श्लिष्टः, वान् |
| क्त्वाप् | शमित्वा, शान्त्वा | जनित्वा | कु [को] पित्वा | श्लिष्ट्वा |
| संज्ञा | शान्तिः, शमनम् | जननम्, जनुः | कोपनं, कोपः | श्लेषणं, श्लेषः |

| | भ्रमु अनवस्थाने (घूमना) | हृष तुष्टौ (खुश होना) | द्रुह जिघांसायाम् (बैर करना) | ष्ठिवु निरसने (थूकना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भ्राम्यति, भ्रमति | हृष्यति | द्रुह्यति | ष्ठी [ष्ठि] व (य) ति |
| लङ् | अभ्राम्यत्, अभ्रमत् | अहृष्यत् | अद्रुह्यत् | अष्ठीव्यत् |
| लिङ् | भ्राम्येत्, भ्रमेत् | हृष्येत् | द्रुह्येत् | ष्ठीव्येत् |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिङ् | भ्रम्यात् | हृष्यात् | द्रुह्यात् | ष्ठीव्यात् |
| लिट् | बभ्राम | जहर्ष | दुद्रोह | ति (टि) ष्ठेव |
| लुट् | भ्रमिता | हर्षिता | द्रोहिता, द्रोग्धा, द्रोढा | ष्ठेविता |
| लुङ् | अभ्रमत् | अहृषत् | अद्रुहत् | अष्ठेवीत् |
| लृङ् | अभ्रमिष्यत् | अहर्षिष्यत् | अद्रोहिष्य (अध्रो-क्ष्य) त् | अष्ठेविष्यत् |
| लृट् | भ्रमिष्यति | हर्षिष्यति | द्रोहिष्य (ध्रोक्ष्य) ति | ष्ठेविष्यति |
| लोट् | भ्राम्यतु, भ्रमतु | हृष्यतु | द्रुह्यतु | ष्ठीव्यतु |
| णिजन्त | भ्रमयति | हर्षयति | द्रोहयति | ष्ठेवयति |
| सन्नन्त | बिभ्रमिषति | जिहर्षिषति | दुद्रो (द्रु) हिष (दुध्रुक्ष) ति | ति (टि) ष्ठेविषति |
| यङन्त | बंभ्रम्यते | जरीहृष्यते | दोद्रुह्यते | ते (टे) ष्ठीव्यते |
| क० वा० | भ्रम्यते | हृष्यते | द्रुह्यते | ष्ठीव्यते |
| शतृ० | भ्राम्यन् | हृष्यन् | द्रुह्यन् | ष्ठीव्यन् |
| क्त, क्तवतु | भ्रान्तः, वान् | हृष्टः, वान् | दुग्धः, द्रूढः, वान् | ष्ठ्यूतः, वान् |
| क्त्वा ल्यप् | भ्रान्त्वा, भ्रमित्वा | हृष्ट्वा | दुग्ध्वा, द्रो (द्रु) हित्वा | ष्ठेवि (ष्ठ्यू) त्वा |
| संज्ञा | भ्रमणम्, भ्रान्तिः | हर्षणम्, हृष्टिः | द्रोहः | ष्ठेवनम्, ष्ठ्यूतिः |
| | षिवु तन्तु सन्तान (सीना) | अथ स्वादिः। षुञ् अभिषवे | धूञ् कम्पने (काँपना) | राध साध संसिद्धौ (सिद्ध करना) |
| लट् | सीव्यति | सुनोति, सुनुते | धू (धु) नोति, धूनुते | रा [सा] ध्नोति |
| लङ् | असीव्यत् | असुनोत्, असुनुत | अधूनोत्, अधूनुत | अरा [सा] ध्नोत् |
| लिङ् | सीव्येत् | सुनुयात्, सुन्वीत | धूनुयात्, धून्वीत | रा (सा) ध्नुयात् |
| लिङ् | सीव्यात् | सूयात्, सोषीष्ट | धूयात् धोषीष्ट-धविषीष्ट | रा [सा] ध्यात् |
| लिट् | सिषेव | सुषाव; सुषुवे | दुधाव, दुधुवे | रराध, ससाध |
| लुट् | सेविता | सोतासि—ते | धो (धवि) तासि, तासे | रा (सा) द्धा |
| लुङ् | असेवीत् | असावीत्-असोष्ट | अधावीत्, अधोष्ट अधविष्ट | अरा (असा) त्सीत् |
| लृङ् | असेविष्यत् | असोष्यत्—त | अधोष्यत्, अधोष्यत् | अरा (असा) त्स्यत् |
| लृट् | सेविष्यति | सोष्यति—ते | धोष्यति, धोष्यते | रा (सा) त्स्यति |
| लोट् | सीव्यतु | सुनोतु, सुनुताम् | धूनोतु, धूनुताम् | रा (सा) ध्नोतु |
| णिजन्त | सेवयति | सावयति—ते | धावयति,—ते | रा [सा] धयति |
| सन्नन्त | सिषेविषति | सुसूषति—ते | दुधूषति—ते | रित्स (सिसा) त्सति |
| यङन्त | सेषीव्यते | सोषूयते | दोधूयते | रारा [सासा] ध्यते |
| क० वा० | सीव्यते | सूयते | धूयते | रा [सा] ध्यते |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शतृ० | सीव्यन् | सुन्वन्-सुन्वानः | धून्वन्, धून्वानः | रा (सा)ध्नुवन् |
| क्त,क्तवतु | स्यूतः, वान् | सुतः—वान् | धूतः—वान् | रा[सा]द्धः,वान् |
| क्त्वाप् | सेवि(स्यू)त्वा | सुत्वा | धूत्वा | राद्ध्वा, साद्ध्वा |
| संज्ञा | सेवन, स्यूतिः | अभिषवः | धवनम् | आराधनं,साधनम् |

| | चिञ् चयने [चुनना] | [redacted] श्रवणे [सुनना] | शक्लृ शक्तौ (सकना) | भिदिर् विदारणे (फाड़ना तोड़ना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | चिनोति, चिनुते | शृणोति | शक्नोति | भिनत्ति, भिन्ते |
| लङ् | अचिनोत्, अचिनुत | अशृणोत् | अशक्नोत् | अभिनत्, अभिन्त |
| लिङ् | चिनुयात्, चिन्वीत | शृणुयात् | शक्नुयात् | भिन्द्यात्, भिन्दीत |
| लिङ् | चीयात्, चेषीष्ट | श्रूयात् | शक्यात् | भिद्यात्, भित्सीष्ट |
| लिट् | चिचाय चिच्ये<br>चिकाय चिक्ये | शुश्राव | शशाक | बिभेद, बिभिदे |
| लुट् | चेतासि—से | श्रोता | शक्ता | भेत्तासि—से |
| लुङ् | अचैषीत्, अचेष्ट | अश्रौषीत् | अशकत् | अभिदत्<br>अभैत्सीत् अभित्त |
| लृङ् | अचेष्यत्—त | अश्रोष्यत् | अशक्ष्यत् | अभेत्स्यत्—त |
| लृट् | चेष्यति—ते | श्रोष्यति | शक्ष्यति | भेत्स्यति—ते |
| लोट् | चिनोतु—नुताम् | शृणोतु | शक्नोतु | भिनत्तु-भिन्ताम् |
| णिजन्त | चाययति, ते | श्रावयति-ते | शाकयति | भेदयति—ते |
| सन्नन्त | चिची[की]षति, ते | शुश्रूषते | शिक्षति | बिभित्सति-ते |
| यङन्त | चेचीयते | शोश्रूयते | शाशक्यते | बेभिद्यते |
| क०वा० | चीयते | श्रूयते | शक्यते | भिद्यते |
| शतृ० | चिन्वन् | शृण्वन् | शक्नुवन् | भिन्दन् भिन्दानः |
| क्त,क्तवतु | चितः—वान् | श्रुतः,वान् | शक्तः, वान् | भिन्नः, भिन्नवान् |
| क्त्वाप् | चित्वा | श्रुत्वा | शक्त्वा | भित्वा |
| संज्ञा | चयनम्, चितिः | श्रवणम् | शक्तिः | भेदनं, भेदः |

| | वृञ् संवरणे [वरना) मांगना | आप्लृ व्याप्तौ | अथ रुधादिः रुधिर् आवरणे (टकना रोकना) | छिदिर् द्वैधीकरणे (काटना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वृणोति, वृणुते | आप्नोति | रुणद्धि, रुन्धे | छिनत्ति, छिन्ते |
| लङ् | अवृणोत्, अवृणुत | आप्नोत् | अरुणत्, अरुन्ध | अच्छिनत्, अच्छिन्त |
| लिङ् | वृणुयात्, वृण्वीत | आप्नुयात् | रुन्ध्यात्, रुन्धीत | छिन्द्यात्,छिन्दीत |
| लिङ् | वृयात्, वृ[वॅरि]षीष्ट | आप्यात् | रुध्यात्, रुत्सीष्ट | छिद्यात्, छित्सीष्ट |
| लिट् | ववार, वव्रे | आप | रुरोध, रुरुधे | चिच्छेद, चिच्छिदे |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | धरि[री]तासि—से | आप्ता | रोद्धासि—से | छेत्तासि—से |
| लुङ् | अधारीत्, अवृत अधरिष्ट | आपत् | अरुधत्, अरुद्ध अरौत्सीत | अच्छिदत् अच्छैत्सीत् अच्छित्त |
| लृङ् | अवरि (री) ष्यत्-त | आप्स्यत् | अरोत्स्यत्—त | अच्छेत्स्यत्-त |
| लृट् | वरी(रि)ष्यति—ते | आप्स्यति | रोत्स्यति, ते | छेत्स्यति—ते |
| लोट् | वृणोतु, वृणुताम् | आप्नोतु | रुणद्धु, रुन्धाम् | छिनत्तु, छिन्ताम् |
| णिजन्त | वारयति—ते | आपयति | रोधयति—ते | छेदयति—ते |
| सन्नन्त | विवरि [री] षति, वुवूर्षति, | ईप्सति | रुरुत्सति—ते | चिच्छित्सति-ते |
| यङन्त | वर्वीयते | आप्यते | रोरुध्यते | चेच्छिद्यते |
| क० वा० | व्रियते | आप्नुवन् | रुध्यते | छिद्यते |
| शतृ० | वृण्वन्, ण्वानः | आप्तः-वान् | रुन्धन्, रुन्धानः | छिन्दन्, छिन्दानः |
| क्त, क्तवतु | वृतः—वान् | आप्त्वा | रुद्धः, वान् | छिन्नः, छिन्नवान् |
| क्त्वाप् | वृत्वा | प्रापणम्, | रुद्ध्वा | छित्वा |
| संज्ञा | वरणम् | प्राप्तिः | रोधनम् | छेदनम् |

| | भञ्ज भङ्गे (तोड़ना) | युजिर योगे [शामिल करना] | कृती छेदने (कतरना) | क्षिप प्रेरणे [फेंकना] |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भनक्ति | युनक्ति, युङ्क्ते | कृन्तति | क्षिपति—ते |
| लङ् | अभनक् | अयुनक्, अयुङ्क्त | अकृन्तत् | अक्षिपत्—त |
| लिङ् | भञ्ज्यात् | युञ्ज्यात्, युञ्जीत | कृन्तेत् | क्षिपेत्—त |
| लिङ् | भज्यात् | युज्यात्, युक्षीष्ट | कृत्यात् | क्षिप्यात्, क्षिप्सीष्ट |
| लिट् | बभञ्ज | युयोज, युयुजे | चकर्त | चिक्षेप, चिक्षिपे |
| लुट् | भङ्क्ता | योक्तासि—से | कर्तिता | क्षेप्तासि—से |
| लुङ् | अभाङ्क्षीत् | अयुजत्, अयुक्त | अकर्तीत् | अक्षैप्सीत्, अक्षिप्त |
| लृङ् | अभङ्क्ष्यत् | अयोक्ष्यत्—त | अकर्तिष्यत् अकर्त्स्यत् | अक्षेप्स्यत्—त |
| लृट् | भङ्क्ष्यति | योक्ष्यति—ते | कर्त्स्यति, कर्तिष्यति | क्षेप्स्यति—ते |
| लोट् | भनक्तु | युनक्तु, युङ्क्ताम् | कृन्ततु | क्षिपतु |
| णिजन्त | भञ्जयति-ते | योजयति—ते | कर्तयति-ते | क्षेपयति—ते |
| सन्नन्त | बिभङ्क्षति, ते | युयुक्षति—ते | चिकर्तिषति | चिक्षिप्सति—ते |
| यङन्त | बम्भज्यते | योयुज्यते | चरीकृत्यते | चेक्षिप्यते |
| क० वा० | भज्यते | युज्यते | कृत्यते | क्षिप्यते |
| शतृ० | भञ्जन् | युञ्जन्, युञ्जानः | कृन्तन् | क्षिपन्, माणः |
| क्त, क्तवतु | भग्नः, वान् | युक्तः, वान् | कृत्तः, वान् | क्षिप्तः, क्षिप्तवान् |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्त्वाच्<br>संज्ञा | भक्त्वा,भङ्क्त्वा<br>भञ्जनम् | युक्त्वा<br>योजनम्, युक्तिः | कर्तित्वा<br>कर्तनम् | क्षिप्त्वा<br>क्षेपणम् |

| | पिष्लृ सञ्चूर्णने [पीसना] | अथ तुदादिः । तुद व्यथने [दुःख देना] | प्रच्छ ज्ञीप्सायां [पूछना] | मुच्ऌ मोक्षणे [छोडना] |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पिनष्टि | तुदति—ते | पृच्छति | मुञ्चति—ते |
| लङ् | अपिनट् | अतुदत्—त | अपृच्छत् | अमुञ्चत्—त |
| लिङ् | पिंष्यात् | तुदेत्—त | पृच्छेत् | मुञ्चेत्—त |
| लिङ् | पिष्यात् | तुद्यात्, तुत्सीष्ट | पृच्छ्यात् | मुच्यात्, मुक्षीष्ट |
| लिट् | पिपेष | तुतोद, तुतुदे | पप्रच्छ | मुमोच, मुमुचे |
| लुट् | पेष्टा | तोत्तासि—से | प्रष्टा | मोक्तासि—से |
| लुङ् | अपिषत् | अतौत्सीत्, अतुत्त | अप्राक्षीत् | अमुचत्, अमुक्त |
| लृङ् | अपेक्ष्यत् | अतोत्स्यत्, त | अप्रक्ष्यत् | अमोक्ष्यत्—त |
| लृट् | पेक्ष्यति | तोत्स्यति—ते | प्रक्ष्यति | मोक्ष्यति—ते |
| लोट् | पिनष्टु | तुदतु, तुदताम् | पृच्छतु | मुञ्चतु, ताम् |
| णिजन्त | पेषयति—ते | तोदयति—ते | प्रच्छयति-ते | मोचयति—ते |
| सन्नन्त | पिपिक्षति, ते | तुतुत्सति—ते | पिपृच्छिषति | मुमुक्षति |
| यङन्त | पेपिष्यते | तोतुद्यते | परीपृच्छ्यते | मोमुच्यते |
| कर्मवाच्य | पिष्यते | तुद्यते | पृच्छ्यते | मुच्यते |
| शतृ० | पिंषन् | तुदन्—मानः | पृच्छन् | मुञ्चन्, मानः |
| क्त,क्तवतु | पिष्टः, वान् | तुन्नः, वान् | पृष्टः, वान् | मुक्तः, वान् |
| क्त्वाच् | पिष्ट्वा | तुत्त्वा | पृष्ट्वा | मुक्त्वा |
| संज्ञा | पेषणम् | तोदनम् | प्रच्छनम्प्रश्नः | मोचनम्, मुक्तिः |

| | सृज विसर्गे [रचना] | कृष विलेखने [जोतना] | विश प्रवेशने [घुसना] | गॄ निगरणे * [निगलना] |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सृजति | कृषति—ते | विशति | गिर [ल] ति |
| लङ् | असृजत् | अकृषत्—त | अविशत् | अगिरत् |
| लिङ् | सृजेत् | कृषेत्—त | विशेत् | गिरेत् |
| लिङ् | सृज्यात् | कृष्यात्, कृक्षीष्ट | विश्यात् | गीर्यात् |
| लिट् | ससर्ज | चकर्ष, चकृषे | विवेश | जगार |
| लुट् | स्रष्टा | क्रष्टा (कर्ष्टा)सि,से | वेष्टा | गरी(रि) ता |
| लुङ् | अस्राक्षीत् | अक्राक्षीत्,अकृक्षत्,<br>अकृक्षत अकृष्ट | अविक्षत् | अगारीत् |

* इस धातु के रूपों में प्रायः "र" की जगह "ल" भी होता है ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अस्रक्ष्यत् | अक्रक्ष्यत्—त | अवेक्ष्यत् | अगरि(री)ष्यत् |
| लृट् | स्रक्ष्यति | क्रक्ष्यति, कर्क्ष्यते | वेक्ष्यति | गरि(री)ष्यति |
| लोट् | सृजतु | कृषतु | विशतु | गिरतु |
| णिजन्त | सर्जयति—ते | कर्षयति—ते | वेशयति ते | गारयति |
| सन्नन्त | सिसृक्षति | चिकृक्षति—ते | विविक्षति | जिगरिषति |
| यङन्त | सरीसृज्यते | चरीकृष्यते | वेविश्यते | जेगिल्यते |
| क० वा० | सृज्यते | कृष्यते | विश्यते | गीर्यते |
| शतृ० | सृजन् | कृषन्, कृषमाणः | विशन् | गिरन् |
| क्त क्तवतु | सृष्टः, वान् | कृष्टः, वान् | विष्टः, वान् | गीर्णः, वान् |
| क्त्वा | सृष्ट्वा | कृष्ट्वा | विष्ट्वा | गीर्त्वा |
| संज्ञा | सर्जनम्, सृष्टिः | कर्षणं, कृषिः | वेशनम् | निगरणम् |

| | स्पृश संस्पर्शने [ छूना ] | विद्लृ लाभे (पाना) | लिख अक्षर विन्यासे (लिखना) | मृङ् प्राणत्यागे [ मरना ] |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्पृशति | विन्दति—ते | लिखति | म्रियते |
| लङ् | अस्पृशत् | अविन्दत्—त | अलिखत् | अम्रियत |
| लिङ् | स्पृशेत् | विन्देत्—त | लिखेत् | म्रियेत |
| लिङ् | स्पृश्यात् | विद्यात् वित्सीष्ट वेदिषीष्ट | लिख्यात् | मृषीष्ट |
| लिट् | पस्पर्श | विवेद, विविदे | लिलेख | ममार |
| लुट् | स्प्रष्टा, स्पर्ष्टा | वेत्तासि, वेदितासे | लेखिता | मर्ता |
| लुङ् | अस्प्राक्षीत् अस्पृक्षत् | अविदत् अवेदिष्ट अवित्त | अलेखीत् | अमृत |
| लृङ् | अस्प्रक्ष्यत् | अवेत्स्यत्, अवेदिष्यत | अलेखिष्यत् | अमरिष्यत् |
| लृट् | स्पृक्ष्यति, स्पर्क्ष्यति | वेदिष्यति, वेत्स्यते | लेखिष्यति | मरिष्यति |
| लोट् | स्पृशतु | विन्दतु | लिखतु | म्रियताम् |
| णिजन्त | स्पर्शयति-ते | वेदयति—ते | लेखयति | मारयति |
| सन्नन्त | पिस्पृक्षति | विवित्सति विवेदिषति | लिलिखिषति लिलेखिषति | मुमूर्षति |
| यङन्त | परीस्पृश्यते | वेविद्यते | लेलिख्यते | मेम्रीयते |
| क० वा० | स्पृश्यते | विद्यते | लिख्यते | म्रियते |
| शतृ० | स्पृशन् | विन्दन् | लिखन् | म्रियमाणः |
| क्त, क्तवतु | स्पृष्टः, वान् | विदितः, वान् | लिखितः, वान् | मृतः, वान् |
| क्त्वा | स्पृष्ट्वा | विदित्वा, वित्त्वा | लिखित्वा | मृत्वा |
| संज्ञा | स्पर्शनम् | वेदनम् | लेखनम् | मरण मृत्युः |

| | अथ तनादिः तनु विस्तारे (फैलाना) | अथ क्र्यादिः। डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये (खरीदना) | मन्थ विलोडने (मथना) | अश भक्षणे (खाना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | तनोति, तनुते | क्रीणाति, क्रीणीते | मथ्नाति | अश्नाति |
| लङ् | अतनोत्, अतनुत | अक्रीणात् अक्रीणीत | अमथ्नात् | आश्नात् |
| लिङ् | तनुयात्, तन्वीत | क्रीणीयात्, क्रीणीत | मथ्नीयात् | अश्नीयात् |
| लिङ् | तन्यात्, तनिषीष्ट | क्रीयात्, क्रेषीष्ट | मथ्यात् | अश्यात् |
| लिट् | ततान, तेने | चिक्राय, चिक्रिये | ममन्थ | आश |
| लुट् | तनितासि-से | क्रेतासि—से | मन्थिता | अशिता |
| लुङ् | अत(ता)नीत् अतत अतनिष्ट | अक्रैषीत्, अक्रेष्ट | अमन्थीत् | आशीत् |
| लृङ् | अतनिष्यत्—त | अक्रेष्यत्—त | अमन्थिष्यत् | आशिष्यत् |
| लृट् | तनिष्यति—ते | क्रेष्यति—ते | मन्थिष्यति | अशिष्यति |
| लोट् | तनोतु, तनुताम् | क्रीणातु, क्रीणीताम् | मथ्नातु | अश्नातु |
| णिजन्त | तानयति—ते | क्रापयति—ते | मन्थयति | आशयति |
| सन्नन्त | तितं(ता)सति—ते तितनिषति—ते | चिक्रीषति—ते | मिमन्थिषति | अशिशिषति |
| यङन्त | तन्तन्यते | चेक्रीयते | मामथ्यते | अशाश्यते |
| क० वा० | तन्यते | क्रीयते | मथ्यते | अश्यते |
| शतृ० | तन्वन्, तन्वानः | क्रीणन्, क्रीणानः | मथ्नन् | अश्नन् |
| क्त, क्तवतु | ततः, ततवान् | क्रीतः, वान् | मथितः, वान् | अशितः, वान् |
| क्त्वाप् | तनित्वा | क्रीत्वा | मथित्वा, मन्थित्वा | अशित्वा |
| संज्ञा | तननम्, ततिः | क्रयणम्, क्रयः | मन्थनम् | अशनम् |

| | डुकृञ् करणे (करना) | प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (खुश करना) | ज्ञा अवबोधने (जानना) | दॄ विदारणे (फाड़ना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | करोति, कुरुते | प्रीणाति, प्रीणीते | जानाति | दृणाति |
| लङ् | अकरोत्, अकुरुत | अप्रीणात्, अप्रीणीत | अजानात् | अदृणात् |
| लिङ् | कुर्यात्, कुर्वीत | प्रीणीयात्, प्रीणीत | जानीयात् | दृणीयात् |
| लिङ् | क्रियात्, कृषीष्ट | प्रीयात्, प्रेषीष्ट | ज्ञा (ज्ञे) यात् | दीर्यात् |
| लिट् | चकार, चक्रे | पिप्राय, पिप्रिये | जज्ञौ | ददार |
| लुट् | कर्तासि—से | प्रेतासि—से | ज्ञाता | दरि[री] ता |
| लुङ् | अकार्षीत्, अकृत | अप्रैषीत्, अप्रेष्ट | अज्ञासीत् | अदारीत् |
| लृङ् | अकरिष्यत्—त | अप्रेष्यत्, त | अज्ञास्यत् | अदरि[री]ष्यत् |
| लृट् | करिष्यति—ते | प्रेष्यति—ते | ज्ञास्यति | दरि[री]ष्यति |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | करोतु, कुरुताम् | प्रीणातु, प्रीणीताम् | जानातु | दृणातु |
| णिजन्त | कारयति—ते | प्राययति, ते | ज्ञापयति | दारयति |
| सन्नन्त | चिकीर्षति—ते | पिप्रीषति—ते | जिज्ञासति | दिदीर्षति<br>दिदरि[री]षति |
| यङन्त | चेक्रीयते | पेप्रीयते | जाज्ञायते | देद्रीयते |
| क०वा० | क्रियते | प्रीयते | ज्ञायते | दीर्यते |
| शतृ० | कुर्वन्, कुर्वाणः | प्रीणन्, प्रीणानः | जानन् | दृणन् |
| क्त,क्तवतु | कृतः, वान् | प्रीतः, प्रीतवान् | ज्ञातः, वान् | दीर्णः, वान् |
| क्त्वाल्य | कृत्वा | प्रीत्वा | ज्ञात्वा | दरि[री]त्वा |
| संज्ञा | करणं, कृतिः | प्रेम, प्रीतिः | ज्ञानम् | दरण, दीर्णिः |

| | मुषस्तेये [चुराना] | लूञ् छेदने [काटना] | ग्रह उपादाने (लेना) | पृ पालने पूर्त्तौ च (पालनापूराकरना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मुष्णाति | लुनाति, लुनीते | गृह्णाति, गृह्णीते | पृणाति |
| लङ् | अमुष्णात् | अलुनात्, अलुनीत | अगृह्णात्, अगृह्णीत | अपृणात् |
| लिङ् | मुष्णीयात् | लुनीयात्, लुनीत | गृह्णीयात्, गृह्णीत | पृणीयात् |
| लिङ् | मुष्यात् | लूयात्, लविषीष्ट | गृह्यात्, ग्रहीषीष्ट | पूर्यात् |
| लिट् | मुमोष | लुलाव, लुलुवे | जग्राह, जगृहे | पपार |
| लुट् | मोषिता | लवितासि, से | ग्रहीतासि—से | परि(री)ता |
| लुङ् | अमोषीत् | अलावीत्, अलविष्ट | अग्रहीत्, अग्रहीष्ट | अपारीत् |
| लृङ् | अमोषिष्यत् | अलविष्यत्, त | अग्रहीष्यत्—त | अपरि(री)ष्यत् |
| लृट् | मोषिष्यति | लविष्यति—ते | ग्रहीष्यति—ते | परि (री) ष्यति |
| लोट् | मुष्णातु | लुनातु, लुनीताम् | गृह्णातु, गृह्णीताम् | पृणातु |
| णिजन्त | मोषयति | लावयति | ग्राहयति—ते | पारयति |
| सन्नन्त | मुमुषिषति | लुलूषति—ते | जिघृक्षति—ते | पिपरि(री)षति<br>पुपूर्षति |
| यङन्त | मोमुष्यते | लोलूयते | जरीगृह्यते | पेप्रीयते |
| कर्मवाच्य | मुष्यते | लूयते | गृह्यते | पूर्यते |
| शतृ० | मुष्णन् | लुनन्, लुनानः | गृह्णन्, गृह्णानः | पृणन् |
| क्त,क्तवतु | मुषितः, वान् | लूनः, वान् | गृहीतः, वान् | पूर्णः, वान् |
| क्त्वाल्य | मु (मो) षित्वा | लवित्वा | ग्रहीत्वा | परि [री] त्वा |
| संज्ञा | मोषणम् | लवनम्, लूनिः | ग्रहणम्, | पूर्तिः, पूर्णिः |

| | बन्ध बन्धने (बांधना) | पूञ् पवने (पवित्र करना) | क्लिश् विबाधने (क्लेश पाना) | अथ चुरादिः* । चुर स्तेये [चुराना] |
|---|---|---|---|---|
| लट् | बध्नाति | पुनाति, पुनीते | क्लिश्नाति | चोरयति—ते |
| लङ् | अबध्नात् | अपुनात्, अपुनीत | अक्लिश्नात् | अचोरयत्—त |
| लिङ् | बध्नीयात् | पुनीयात्, पुनीत | क्लिश्नीयात् | चोरयेत्—त |
| लिङ् | बध्यात् | पूयात्, पविषीष्ट | क्लिश्यात् | चोर्यात्, चोरयिषीष्ट |
| लिट् | बबन्ध | पुपाव, पुपुवे | चिक्लेश | चोरयाञ्चकार चक्रे |
| लुट् | बन्द्धा | पवितासि—से | क्लेशिता, क्लेष्टा | चोरयितासि-से |
| लुङ् | अभान्त्सीत् | अपावीत्, अपविष्ट | अक्लेशीत्, अक्लिक्षत् | अचूचुरत्—त |
| लृङ् | अभन्त्स्यत् | अपविष्यत्—त | अक्लेशिष्यत्, अक्लेक्ष्यत् | अचोरयिष्यत्-त |
| लृट् | भन्त्स्यति | पविष्यति—ते | क्लेशिष्यति, क्लेक्ष्यति | चोरयिष्यति ते |
| लोट् | बध्नातु | पुनातु-पुनीताम् | क्लिश्नातु | चोरयतु |
| णिजन्त | बन्धयति | पावयति | क्लेशयति | चोरयति—ते |
| सन्नन्त | बिभन्त्सति | पुपूषति—ते | चिक्ले(क्लि)शिषति, चिक्लिक्षति | चुचोरयिषति ते |
| यङन्त | बाबध्यते | पोपूयते | चेक्लिश्यते | |
| क० वा० | बध्यते | पूयते | क्लिश्यते | चोर्यते |
| शतृ० | बध्नन् | पुनन्, पुनानः | क्लिश्नन् | चोरयन्-माणः |
| क्त,क्तवतु | बद्धः, वान् | पूतः, वान् | क्लिष्टः, वान् | चोरितः, वान् |
| क्त्वा | बद्ध्वा | पवित्वा | क्लिशित्वा, क्लिष्ट्वा† | चोरयित्वा |
| संज्ञा | बन्धनम् | पवनं, पूतिः | क्लेशः | चोरणम्, चौरः |

| | कॄत संशब्दने [तारीफ करना] | गण संख्याने [गिनना] | भक्ष अदने [खाना] |
|---|---|---|---|
| लट् | कीर्तयति—ते | गणयति—ते | भक्षयति-ते |
| लङ् | अकीर्तयत्—त | अगणयत्—त | अभक्षयत्—त |
| लिङ् | कीर्तयेत्—त | गणयेत्—त | भक्षयेत्—त |
| लिङ् | कीर्त्यात्, कीर्तयिषीष्ट | गण्यात्, गणयिषीष्ट | भक्ष्यात्, भक्षयिषीष्ट |

* चुरादि गण से यङन्त के रूप नहीं होते ।

† और रूपों के लिये भ्वादिगण का "गुपू" धातु देखो ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| लिट् | कीर्तयाञ्चकार—चक्रे | गणयाञ्चकार, चक्रे | भक्षयाञ्चकार—चक्रे |
| लुट् | कीर्तयितासि—से | गणयितासि—से | भक्षयितासि—से |
| लुङ् | अचिकीर्तत्, अचीकृतत्—त | अजी [ज] गणत्, त | अबभक्षत्—त |
| लृङ् | अकीर्तयिष्यत्—त | अगणयिष्यत्—त | अभक्षयिष्यत्—त |
| लृट् | कीर्तयिष्यति—ते | गणयिष्यति-ते | भक्षयिष्यति-ते |
| लोट् | कीर्तयतु | गणयतु, ताम् | भक्षयतु-ताम् |
| णिजन्त | कीर्तयति—ते | गणयति—ते | भक्षयति-ते |
| सन्नन्त | चिकीर्तयिषति—ते | जिगणयिषति—ते | बिभक्षयिषति, ते |
| क० वा० | कीर्त्यते | गण्यते | भक्ष्यते |
| शतृ० | कीर्तयन्—मानः | गणयन्—मानः | भक्षयन्-माणः |
| क्त, क्तवतु | कीर्तितः—वान् | गणितः—वान् | भक्षितः, वान् |
| क्त्वाप् | कीर्तयित्वा | गणयित्वा | भक्षयित्वा |
| संज्ञा | कीर्तिः कीर्तनम् | गणनम्, गणना | भक्षणम् |
| • | मत्रि गुप्तभाषणे [सलाह करना] | तुल उन्माने [ तोलना ] | चिति स्मृत्याम् [ सोचना ] |
| लट् | मन्त्रयते | तोलयति—ते | चिन्तयति—ते |
| लङ् | अमन्त्रयत | अतोलयत्—त | अचिन्तयत्—त |
| लिङ् | मन्त्रयेत | तोलयेत्—त | चिन्तयेत्—त |
| लिङ् | मन्त्रयिषीष्ट | तोल्यात्, तोलयिषीष्ट | चिन्त्यात्, चिन्तायिषीष्ट |
| लिट् | मन्त्रयाञ्चक्रे | तोलयाञ्चकार चक्रे | चिन्तयाञ्चकार,—चक्रे चिचिन्त |
| लुट् | मन्त्रयिता | तोलयितासि—से | चिन्तयितासि—से |
| लुङ् | अममन्त्रत | अतुतुलत्—त | अचिचिन्तत्—त अचिन्तीत् |
| लृङ् | अमन्त्रयिष्यत | अतोलयिष्यत्—त | अचिन्तयिष्यत्—त |
| लृट् | मन्त्रयिष्यते | तोलयिष्यति—ते | चिन्तयिष्यति—ते |
| लोट् | मन्त्रयताम् | तोलयतु—ताम् | चिन्तयतु—ताम् |
| णिजन्त | मन्त्रयति—ते | तोलयति, ते | चिन्तयति—ते |
| सन्नन्त | मिमन्त्रयिषते | तुतोलयिषति—ते | चिचिन्तयिषति—ते |
| क० वा० | मन्त्र्यते | तोल्यते | चिन्त्यते |
| शतृ० | मन्त्रयमाणः | तोयलन्, मानः | चिन्तयन् मानः |
| क्त, क्तवतु | मन्त्रितः, वान् | तोलितः, वान् | चिन्तितः वान् |
| क्त्वाप् | मन्त्रयित्वा | तोलयित्वा | चिन्तयित्वा |
| संज्ञा | मन्त्रणं, मन्त्रः | तोलनम् तुला | चिन्तनम् चिन्ता |

| | पीड अवगाहने [पीड़ा देना] | स्पृह ईप्सायाम् (चाहना) | तर्जभर्त्स तर्जने (डाँटना) |
|---|---|---|---|
| लट् | पीडयति ते | स्पृहयति—ते | तर्जयते, भर्त्सयते |
| लङ् | अपीडयत् त | अस्पृहयत्—त | अतर्जयत, अभर्त्सयत |
| लिङ् | पीडयेत् त | स्पृहयेत्—त | तर्जयेत, भर्त्सयेत |
| लिङ् | पीड्यात्-पीडयिषीष्ट | स्पृह्यात्, स्पृहयिषीष्ट | तर्जयिषीष्ट, भर्त्सयिषीष्ट |
| लिट् | पीडयाञ्चकारचक्रे | स्पृहयाञ्चकार, चक्रे | तर्जयाञ्चक्रे, भर्त्सयाञ्चक्रे |
| लुट् | पीडयितासि से | स्पृहयितासि—से | तर्जयिता, भर्त्सयिता |
| लुङ् | अपीपिडत् त | अपस्पृहत्—त | अततर्जत, अबभर्त्सत |
| लृङ् | अपीडयिष्यत् त | अस्पृहयिष्यत्—त | अतर्जयिष्यत, अभर्त्सयिष्यत |
| लृट् | पीडयिष्यति ते | स्पृहयिष्यति—ते | तर्जयिष्यते, भर्त्सयिष्यते |
| लोट् | पीडयतु ताम् | स्पृहयतु—ताम् | तर्जयताम्, भर्त्सयताम् |
| णिजन्त | पीडयति—ते | स्पृहयति—ते | तर्जयति ते, भर्त्सयति ते |
| सन्नन्त | पिपीडयिषति ते | पिस्पृहयिषति—ते | तितर्जयिषते, बिभर्त्सयिषते |
| क० वा० | पीड्यते | स्पृह्यते | तर्ज्यते, भर्त्स्यते |
| शतृ० | पीडयन् मान० | स्पृहयन्—माणः | तर्जयमानः, भर्त्सयमानः |
| क्त, क्तवतु | पीडित, वान् | स्पृहितः, वान् | तर्जित, वान्, भर्त्सितः, वान् |
| क्त्वा | पीडयित्वा | स्पृहयित्वा | तर्जयित्वा, भर्त्सयित्वा |
| संज्ञा | पीडनम्, पीडा | स्पृहणम् स्पृहा | तर्जनम् तर्जना भर्त्सनम् भर्त्सना |

| | सान्त्व सामप्रयोगे [शान्त करना] | तडि आघाते (पीटना) | अर्थ उपयाच्ञायां (माँगना) | पृ पूरणे (पूरा करना) |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सान्त्वयति ते | ताडयति—ते | अर्थयते | पारयति-ते |
| लङ् | असान्त्वयत् त | अताडयत्-त | आर्थयत | अपारयत्-त |
| लिङ् | सान्त्वयेत् त | ताडयेत्-त | अर्थयेत | पारयेत् त |
| लिङ् | सान्त्व्यात्, सान्त्वयिषीष्ट | ताड्यात् ताडयिषीष्ट | अर्थयिषीष्ट | पार्यात् पारयिषीष्ट |
| लिट् | सान्त्वयाञ्चकार चक्रे | ताडयाञ्चकार, चक्रे | अर्थयाञ्चक्रे | पारयाञ्चकार, चक्रे |
| लुट् | सान्त्वयितासि-से | ताडयितासि-से | अर्थयिता | पारयितासि-से |
| लुङ् | अससान्त्वत् त | अतीतडत्-त | आर्तिथत | अपीपरत् त |
| लृङ् | असान्त्वयिष्यत् | अताडयिष्यत् त | आर्थयिष्यत | अपारयिष्यत् त |
| लृट् | सान्त्वयिष्यति ते | ताडयिष्यति—ते | अर्थयिष्यते, | पारयिष्यति ते |
| लोट् | सान्त्वयतु ताम् | ताडयतु-ताम् | अर्थयताम् | पारयतु ताम् |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| णिजन्त | सान्त्वयति ते | ताडयति-ते | अर्थयति ते | पारयति ते |
| सन्नन्त | सिसान्त्वयिषति ते | तिताडयिषति-ते | अर्तिथयिषत | पिपारयिषति ते |
| क० वा० | सान्त्व्यते | ताड्यत | अर्थ्यत | पार्य्यते |
| शतृ० | सान्त्वयन् मान | ताडयन्-मान | अर्थयमान | पारयन् माण |
| क्त, क्तवतु | सान्त्वित -वान् | ताडित -वान् | अर्थित ,वान् | पारित वान् |
| क्त्वा० | सान्त्वयित्वा | ताडयित्वा | अर्थयित्वा | पारयित्वा |
| संज्ञा | सान्त्वनम् | ताडनम् ताडना | अर्थनम् | पारणम् प रणा |

जिस प्रकार दश गण हैं उसी प्रकार १ णिजन्त, २ सन्नन्त, ३ यङन्त, ४ यङ् लुगन्त ५ नामधातु ६ आत्मनेपद, ७ परस्मैपद, ८ भावकर्म, ९ कर्मकर्तृ, १० लकारार्थ इन नामों की दश प्रक्रिया भी हैं जिनका एक संक्षिप्त विवरण उदाहरण सहित आगे किया जाता है ।

## अथ णिजन्त [ण्यन्त] प्रक्रियाप्रदर्शको नवमोऽध्यायः ।

णिजन्त, ण्यन्त वा प्रेरणार्थक (Causative verbs) प्रक्रिया वह है जिसमें किया द्वारा किसी को प्रेरणा व आज्ञा पाई जाय, इस प्रक्रिया में अकर्मक क्रिया भी सकर्मक बन जाती है । इन क्रियाओं के रूप प्राय चुरादिगणी धातुओं के से होते हैं । उभयपदी अष्टमअध्याय में आये हुए सभी धातुओं का ण्यन्तरूप वहीं पर दिया गया है परन्तु यहा पर थोडा उदाहरणार्थ दिखलाते हैं बुद्धिमान् इसी विधि से सब लकारों में रूप रूलें देवदत्त शृणोति त अन्य प्रेरयति श्रावयति ते, श्रावयेत् त, श्रावयतु ताम् , अश्रावयत्-त, श्रावयामास-चक्रे, श्राव्यात् श्रावयिषीष्ट, श्रावयिताखि-से श्रावयिष्यति-ते, अश्रावयिष्यत् त, अशि(शु)श्रवत् न ।

भू भावयति-अबीभवत् ष्ठा स्थापयति अतिष्ठिपत्, शी शाययति, अशीशयत् गम् गमयति, अजीगमत्, कृ कारयति, अचीकरत्, दा दापयति, अदीदपत्, पूङ् पावयति अपीपवत् रु रावयति अरीरवत्, लूञ् लावयति, अलीलवत्, स्रु स्रावयति, असि(स्रु)स्रवत्, स्वप् स्वापयति असूषुपत्, पा पाययति, अपीपयत घ्रा घ्रापयति अजिघ्रिपत्, अधि+इ अध्यापयति, अध्यजीगपत्, अध्यापिपत् ।

## अथ सन्नन्तप्रक्रियाप्रदर्शको दशमोऽध्यायः ।

सन्नन्त या इच्छार्थक (Desiderative verbs) प्रक्रिया वह है जिसमें क्रिया द्वाराही कर्त्ता की इच्छा प्रकट हो जाय; इस प्रक्रिया में क्रियाओं के रूप अपनी धातु के पद के ही अनुसार होते हैं और धातु को द्वित्व हो जाता है और "स" बीच में आ जाता है फिर परस्मैपदी धातुओं के रूप पठ धातु के समान और आत्मनेपदी धातुओं के लभ् धातु के समान रूप दशों लकारों में चलते हैं जैसे पठ्—पठितुमिच्छति पिपठिषति पिपठिषतु, पिपठिषेत्, अपिपठिषत, पिपठिषांचकार, पिपठिष्यात्, पिपठिषिता, पिपठिषिष्यति, अपिपठिषिष्यत, अपिपठिषीत् । पातुमिच्छति पिपासति, पिपासतु पिपासेत्, अपिपासत्, पिपासांचकार, पिपास्यात्, पिपासिता, पिपासिष्यति, अपिपासिष्यत्, अपिपासीत् । आत्मने पद में जैसे लभ्-लब्धुमिच्छति लिप्सते लिप्सताम्, लिप्सेत, अलिप्सत, लिप्सांचक्रे, लिप्सीष्ट, लिप्सिता, लिप्स्यते अलिप्स्यत, अलिप्सिष्ट । ज्ञा-ज्ञातुमिच्छति-जिज्ञासते, जिज्ञासताम्, जिज्ञासेत अजिज्ञासत, जिज्ञासांचक्रे, जिज्ञासिषीष्ट, जिज्ञासिता, जिज्ञासिष्यते, अजिज्ञासिष्यत, अजिज्ञासिष्ट । इसी प्रकार आठवें अध्याय में आयेहुए सब धातुओं के सन्नन्त रूप लट् लकार के यहां दिखाये हैं शेष उपरोक्त क्रमानुसार अपनीबुद्धिसे लेजाओ । परन्तु यह ध्यानरहे कि ज्ञा, श्रु, स्मृ, दृश् धातुओं के सन्नन्त रूप आत्मनेपदही में होते हैं।

## अथ यङन्तप्रक्रियाप्रदर्शक एकादशोऽध्यायः ।

यङन्त प्रक्रिया, (Frequentative verbs) शुभ और रुच्को छोड़कर हलादि और एक स्वरवाली धातुसे पौनः पुन्य (बारम्बार) या अतिशयार्थ (अधिकता) द्योतन करने के लिये धातुको द्वित्वकर और यङ् प्रत्ययलगाकर बनाते हैं इनके रूप दशों लकारों में आत्मनेपदीही इस प्रकार चलते हैं जैसे पुनः पुनः अतिशयेन वा भवतीति बोभूयते बोभूयताम्, बोभूयेत, अबोभूयत, बोभूयाञ्चक्रे, बोभूयिषीष्ट, बोभूयिता, बोभूयिष्यते अबोभूयिष्यत, अबोभूयिष्ट अतिशयेन वर्तते इति वरीवृत्यते, वरीवृतांचक्रे, वरीवृतिता अवरीवृतिष्ट (कुछ) विशेष धातुओं के यङन्त रूप ज्ञातकरने केलिये अष्टम अध्याय देखो । यहां पर यह भी ज्ञात होजायगा कि, किन २ धातुओं के रूप इस प्रक्रिया में नहीं होते

## अथ * यङ्लुगन्तप्रक्रियाप्रदर्शको द्वादशोऽध्यायः।

यङ् लुगन्त (Frequentative verbs rejecting यङ्) प्रक्रिया उपरोक्त अध्याय केही अर्थ व नियमों पर बनती है, केवल भेद इतनाही है कि रूप परस्मैपदीही होते हैं और यङ् का लुक् हो कर ईट् विकल्प होजाता है-जैसे अतिशयेन पुनः पुनर्वा भवतीति बोभवीति, बोभोति, बोभूतः बोभुवति; बोभूयात्, बोभवीतु बोभोतु; बोभवाञ्चकार-मास; लङि अबोभवीत् अबोभोत्; बोभूयात्, बोभविता, बोभविष्यति, अबोभविष्यत्, अबोभूवीत्, अबोभोत्।

स्पर्ध सङ्घर्षे-पास्पर्धीति पास्पार्धि, पास्पर्धः, पास्पर्धति, पास्पर्त्सि इत्यादि लङि अपास्पर्त् अपास्पर्द्, अपास्पाः; पास्पर्धाञ्चकार, पास्पर्धिता, पास्पर्धिष्यति, पास्पर्धीतु पास्पर्धु लुङि अपास्पर्धीत् अपास्पर्धिष्टाम्, अपास्पर्धिष्यत् इ०। गाधृ प्रतिष्ठादौ. जागाद्धि जागाधीति जागाधीतु जागाद्धु, लङि अजागाधीत् अजाधात् अजागाद्धाम् लुङि अजागाधीत् अजागाधिष्टाम्। नाथ नाधृ याच्ञादौ नानात्ति नानाधीति नानात्तः इ० दध धारणे दाद्धि दादधीति, लुङि अदादा (द) धीत्। मुदहर्षे मोमोत्ति मोमुदीति; मोमोदाञ्चकार, मोमोदिता, लङि अमोमुदीत् अमोमोत् अमोमुत्ताम् अमोमुदुः लुङि अमोमोदीत्। गम्लृगतौ जङ्गमीति जङ्गन्ति, लङि अजङ्गमीत् अजङ्गताम्, अजङ्गमुः लुङि अजङ्गमीत् अजङ्गमिष्टाम् इ० चरगतिभक्षणयोः चञ्चुरीति चञ्चूर्ति, अचञ्चुरीत्। चलु अवदारणे [खोदना] चङ्खनीति चङ्खन्ति चङ्खातः चङ्खनति लङि अचङ्खनीत् लुङि अचङ्ख (खा) नीत्। ञिस्वप्शये सास्वपीति सास्वप्ति, लङि असास्वपीत् सास्वप्यात् आशिषि सासुप्यात् लुङि असा[स्व]स्वापीत् वृतुवर्तने वर्वृतीति, परिवृतीति, वरीवृतीति, वर्वर्ति, वरिवर्ति, वरीवर्ति, वर्वृतः वर्वर्तामास वर्वर्तिता, वर्वर्तिष्यति, अवर्वर्तीत् अवर्वृतीत् अवर्वर्त्। डुकृञ् करणे चर्करीति चर्कर्ति चरिकर्ति, चरीकर्ति चर्कृतः चर्कति, चर्कराञ्चकार, चर्करिता, अचर्करीत्, चर्कृयात् आशिषि चर्क्रियात् लुङि अचर्कारीत् कृविक्षेपे चाकर्ति चाकरीति लङि अचाकरीत् अचाकः अचाकीर्ताम्, अचाकरुः लुङि अचाकरीत् एवं तृप्लवनसन्तरणयोः तातर्ति, तातरीति, तातीर्तः तातिरति लङि अतातरीत् लुङि अतातारीत् ग्रह उपादाने जाग्रहीति जाग्राढि, जागृढः, जागृहति, अजाग्रहीत्। प्रच्छज्ञीप्सायाम् पाप्र-

---

* विद्यार्थियों को विदित हो कि यह प्रक्रिया रूपभेद, और रूप विलक्षण होने के कारण और प्रक्रियाओं से कुछ क्लिष्ट है अतएव साधारण रीति से इस अध्याय की रूप प्रक्रिया को समझ लें इसमें अधिक अपनी बुद्धि को भ्रमित करना आवश्यक नहीं क्योंकि संस्कृत बोलने तथा शास्त्रादि समझने के लिये इन रूपों की कुछ अधिक अपेक्षा नहीं है।

च्छीति पाप्रष्टि पाप्रष्टः पाप्रच्छति, पाप्रश्मि पाप्रच्छ्वः पाप्रच्मः लोटि पाप्रच्छतु पाप्रष्टु पाप्रछाम् पाप्रच्छतु पाप्रड्ढि लङि अपाप्रट् अपाप्रच्छीः अपाप्रश्म्। मूर्छा मोहसमुच्छ्राययोः मोमूर्छीति मोमोर्ति मोमूर्तः मोमूर्च्छति मोमूर्च्छाञ्चकार मोमूर्च्छिता, मोमूर्च्छीतु मोमोर्तु लङि अमोमूर्च्छीत् मोमूर्च्छ्यात्, लुङि अमोमोर्च्छीत्, अमोमूर्च्छिष्ठाम् अमोमूर्च्छिष्यत् इत्यादि।

## अथ नामधातुप्रक्रियाप्रदर्शकस्त्रयोदशोऽध्यायः।

संज्ञा व अव्ययों से क्यच्, क्यङ्, काम्यच्, णिच् और क्विप् प्रत्यय लगा कर कर्ता की इच्छा, यथोचित आचरण, करना आदि अर्थ बोधन करने के लिये जो धातु बनाई जावे वह नाम धातु कहलाती है विशेषता यह है कि जो नाम धातु काम्यच् (काम्य) क्यच् (य) और क्विप् (०) प्रत्यय लगाकर बनती हैं वे परस्मैपदी और क्यङ् (य) प्रत्ययवाली आत्मनेपदी और णिच् (इ) प्रत्ययवाली उभयपदी होती हैं क्रम से उदाहरण देखो जैसे आत्मनः पुत्रमिच्छति (इच्छा) पुत्रीयति (क्यच्) पुत्रकाम्यति (काम्यच्), नमः करोतीति नमस्यति (क्यच्) चिरंकरोतीति चिरयति (णिच्) शब्दं करोतीति शब्दायते [क्यङ्] प्रणं करोतीति प्रणयति—ते [णिच्]; रासभ इव आचरतीति रासभायते [क्यङ्] विष्णुमिवाचरतीति विष्णूयति द्विजम् (क्यच्), कृष्ण इव आचरति कृष्णति (क्विप्)। ध्यान रहे कि उपरोक्त धातुओं के रूप प्रायः भ्वादिगण के से होते हैं। जैसे तपः करोतीति तपस्यति, तपस्येत्, तपस्यतु, अतपस्यत्, तपस्याञ्चभूव इत्यादि, तपस्यात्, तपसिता, तपसिष्यति, अतपसिष्यत्, अतपसीत्, अतपसिष्टाम्।

## अथात्मनेपदप्रक्रियाप्रदर्शकश्चतुर्दशोऽध्यायः।

इस प्रक्रिया में यह दिखाया है कि धातु चाहे जिस पद की हो परन्तु कुछ उपसर्गों के लगने से चाहे उसका अर्थ बदले वा नहीं सदैव आत्मनेपदी ही रहेगी। जैसे नि+विश (आई हुई सेना का ठहरना); वि, परि, अव+क्री (बेचना, धात्वर्थ, मोल चुकाना); वि, परा+जि (जीतना, हारना); आ+दा [देना] परन्तु जहां फैलाना चीरना व अपना मुखादि बाना अर्थ हो वहां परस्मैपद होता है जैसे सिंहोमुखंव्याददाति वैद्यःस्फोटकं व्याददाति; अनु, परि, आ और सम्+क्रीड् [धात्वर्थ] परन्तु कूजनार्थ में सम्+क्रीड् परस्मैपद होता है जैसे संक्रीडति चक्रम्। आ+नु प्रच्छ [धात्वर्थ] में; सम्, अव, प्र,

वि+स्था [रहना, ठहरना, इज़्ज़त पाना इ०] उत्+स्था [यत्न करना] जैसे मुक्तावुत्तिष्ठते-यततेइत्यर्थः; परन्तु जहां उठना अर्थ है वहां परस्मैपद होता है जैसे आसनादुत्तिष्ठति; वि+तप [दीप्त होना] वितपते; उप+स्था [देवपूजन, मिलन या मैत्रीकरण] अर्थ में जैसे विष्णुमुपतिष्ठतेवैष्णवः, यमुनामुपतिष्ठते गङ्गा, -साधुमुपतिष्ठतेसाधुः; और जहां कुछ धन लाभेच्छा प्रकट हो वहां विकल्प से आत्मनेपद होता है जैसे धनिनमुपतिष्ठते [ति] भिक्षुः धनलाभेच्छया धनिसमीपंगच्छतीत्यर्थः। आ+हन् और यम् [अकर्मकार्थ में]; परन्तु सकर्मकार्थ में परस्मैपद होता है जैसे कूपाद्रज्जुमायच्छति [खींचना फैलाना], आहन्तिशत्रुम्; परन्तु जहां स्वाङ्गही कर्म हो वहां आत्मनेपद होता है जैसे आयच्छते पाणिमात्मीयम्, आहतेस्वीयं शिरः इ०; अप+कृ [किसी चतुष्पादादि जीवों का खाली प्रसन्न होकर या भोजन की तलाश में या लेटने के लिये पृथ्वी का खोदना इस अर्थ में] जैसे अपस्किरतेवृषोहृष्टः, कुक्कुटोभक्ष्यार्थी, श्वा आश्रयार्थीच; सम्+गम् और श्रु साथ आना, ध्यान देना [अकर्मकार्थमें] परन्तु सकर्मकार्थ में परस्मै० होता है जैसे सङ्गच्छति मित्रम्, संशृणोति शास्त्रम्; आ+ह्वे (स्पर्धा करना) जैसे मल्लमाह्वयतेमल्लः, और किसी अर्थ में परस्मैपद होता है जैसे पिता पुत्रमाह्वयति; केवल क्रम् धातु और उप, परा उपसर्ग के साथ (वृद्धि, उत्साह और अप्रतिबन्ध अर्थ में) जैसे सतां श्रीः क्रमते, वर्धतइत्यर्थः अध्ययनाय प्रक्रमतेछात्रः (उत्सहते), शास्त्रेपुक्रमतेबुद्धिः (न प्रतिहन्यते); आ+क्रम् (उदय होने अर्थ में) जैसे आक्रमते सूर्यः (उद्यतइत्यर्थः); वि+क्रम् (पादविक्षेपार्थ में) जैसे साधु विक्रमतेवाजी (वल्गतीत्यर्थः वलाप्लुतगतौ) विक्रामति सन्धिः (द्विधाभवतीत्यर्थः); प्र, उप+क्रम् (आरम्भार्थ में) जैसे प्रक्रमते उपक्रमते वा भोक्तुम् (आरभतइत्यर्थः); अप+ज्ञा (मना करना) उक्तमपजानीते; सम्, प्रति+ज्ञा (स्मरणार्थ छोड़) जैसे शतं संजानीते (अवेक्षते), शतंप्रतिजानीते [अङ्गीकरोति], स्मरण में जैसे पुत्रं संजानाति, प्रतिजानाति वा स्मरतीत्यर्थः वद धातु (भासन, सान्त्वन, ज्ञान, यत्न, विमति, प्रार्थना और मनुष्यों के एकत्रित होकर उच्चारण करने अर्थ में) जैसे शास्त्रेवदते (भासमानोवदतीति) भृत्यानुपवदते (सान्त्वयति) शास्त्रेवदते (जानाति), क्षेत्रेवदते (यतते) क्षेत्रेविवदन्ते, उपवदते (प्रार्थयते) संप्रवदन्ते ब्राह्मणाः; सम्+गॄ (प्रतिज्ञार्थ में) जैसे शतं सङ्गिरते (प्रतिजानीते); उत्+चर (सकर्मक) या सम्+चर (तृतीया के साथ) जैसे गुरुवचनमुच्चरते [उल्लंघयतीत्यर्थः], रथेनसञ्चरते; अकर्मक से जैसे उच्चरतिधूमः। उप+यम् [विवाहार्थ में] सुलक्षणांकन्यामुपयच्छते; युज् धातु निर, दुर, सम् उपसर्गों को छोड़ प्रत्येक उपसर्ग के साथ में जैसे प्रयुङ्क्ते उद्युङ्क्ते इत्यादि परन्तु जहां यज्ञ, पात्रों के साथ इनका प्रयोग हो वहां परस्मैपद होगा जैसे यज्ञपात्राणि प्रयुनक्ति।

## अथ परस्मैपदप्रक्रियाप्रदर्शकः पञ्चदशोऽध्यायः ।

परस्मैपद प्रक्रिया में यह दिखायागया है कि धातुचाहे जिसपद की हो कुछ उपसर्गों के लगने से सदैव परस्मैपदीही होगी जैसे अनु, परा + कृञ् (नकल करना, रद्द करना), प्र + वह (तेज बहना), अभि, प्रति; अति + क्षिप् (किसी ओरफेंकना; रद्दकरना निकालदेना, तिरस्कार करना, परेफेंकना), परि + मृष परिमृष्य (मर्ष) नि; (खफाहोना, डाहकरना) वि, आ, परि + रम् [ठहरना, आरामलेना, खुशहोना]; उप + रम [अकर्मकार्थ अर्थात् निवृत्त होना अर्थ में विकल्प से], बुध् युध् नश् जन् और अधि + इ, प्र, द्रु, स्रु [प्रेरणार्थक में] जैसे बोधयति-प्रावयति [प्रापयति], द्रावयति [विलापयति] स्रावयति [स्यन्दयति]; अद् धातु छोड़ चे धातु जो निगलना और चलना अर्थदिखाती हैं प्रेरणार्थक में परस्मैपद होती हैं ।

---

## अथ वाच्यप्रदर्शकः षोडशोऽध्यायः ।

१ जिन वाक्यों में कर्ता प्रथमान्त और कर्म द्वितीयान्त और क्रिया दशों गणों में कोई-सी, कर्तानुसार वचनादि में होवे कर्तृवाच्य (active voice) कहलाते हैं जैसे देवदत्तः मातरं स्मरति, वयं ग्रामंगच्छामः ।

कुछ धातु द्विकर्मक होती हैं जिनके दोकर्म होते हैं उनमें जोकर्म कि क्रिया से ठीक सम्बन्ध रखता है [मुख्य वा प्रधान Direct] और दूसरा [अप्रधान या गौण Indirect] कहलाता है जैसे गोपोगां [गौण] दुग्धं [मुख्य] दोग्धि, दरिद्रो राजानं [गौण] धनं [मुख्य] याचते, दुह्याच्पच्दण्ड्रुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमन्थ्मुषाम् नी हृकृष्वहां इत्येते धातवःस्युर्द्विकर्मकाः १

कर्मवाच्य प्रयोगों में द्विकर्मक धातुओं के दोनोंकर्म इस प्रकार विभक्ति पाते हैं गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम् विभक्तिः प्रथमा ज्ञेया द्वितीया च तदन्यतः । १ ।

जैसे द्विकर्मक कर्तृवाच्य प्रयोग गोपोगांदुग्धंदोग्धि इसकाकर्मवाच्य गोपेन गौः दुग्धं दुह्यते अजाजीव. अजांग्रामं नयति इसका कर्मवाच्य अजाजीवेन अजाग्रामंनीयते सारांश यह है कि दुहादि धातुओं के गौणकर्म में और न्यादि धातुओं के प्रधान कर्म में प्रथमाविभक्ति होती है और तदितर कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है ।

कर्मवाच्य [Pauive voice] प्रयोग सकर्मकधातुओं से बनते हैं कर्तृवाच्य प्रयोग में जोकर्ता होता है वह कर्मवाच्य में सविशेषण तृतीयान्त होजाता है और कर्म सविशेषण प्रथमान्त और इसीके अनुसार क्रिया के वचनादिहोते हैं और वाक्य में इनके सिवाय कोई शब्द नहीं बदलता । जैसे धीमान देवदत्तः सदैव पुस्तकं [द्वि.] पठति— [कर्तृवाच्य], धीमता देवदत्तेन सदैव पुस्तकं [प्र०] पठ्यते (कर्मवाच्य) कर्मवाच्य क्रियाओं के रूप प्रायः आत्मनेपदी दिवादि गणीधातुओं के से प्रथम चारलकारों में, औरलुङ् लकार के प्र. पु. ए. व. को छोड़ शेष ५ लकारों में अपने गुणानुसारही आत्मनेपद में, होते हैं लुङ् लकार का प्रयोग आगे दियाजाता है ।

जैसे पठ्—पठ्यते, पठ्यतां, पठ्येत, अपठ्यत, पेठे, पठिता, पठिष्यते, अपठिष्यत, पठिषीष्ट लुङि अपाठि अपठिषाताम् शेषं पूर्ववत् । विशेषकर्मवाच्य धातुरूप जानने के लिये अष्टम.अध्याय देखो कुछ धातुओं के अभ्यासार्थ लुङ् लकार के प्र० पु० एक व० के रूप दियेजाते हैं । स्तु—अस्तावि; स्मृ—अस्मारि; दा—अदायि; नी—अनायि; ग्रह—अग्राहि, दृश्-अदर्शि हन्—अघानि, अवधि; जन्—अजनि; लभ्—अलाभि, अलम्भि गम्—अगमि, कृ—अकारि इत्यादि ।

३ भाव वाच्य (Intransitive Passive voice) प्रयोग अकर्मक धातुओं से बनते हैं । अकर्मक क्रियावाले कर्तृवाच्य प्रयोग के जब भाववाच्य में बदलते हैं तब कर्ता सविशेषण तृतीयान्त होता है परन्तु क्रियाकेवल अन्यपुरुष एक वचन कीही सर्वत्ररहती है जैसे बालकाः शेरते ( कर्तृवाच्य ), बालकैः शय्यते, अहं शये मया शय्यते भू—भूयते, भूयताम्, भूयेत, अभूयत, बभूवे, भविता, भविषीष्ट, भविष्यते, अभविष्यत, अभावि स्था-स्थीयते लुङि अस्थायि इत्यादि केवल अ० पु० एक० वचन में ही रूप चलते हैं । सपितृको देवदत्तोऽत्रतिष्ठति [कर्तृवाच्य] सपितृकेण देवदत्तेनात्र स्थीयते । इत्यादि जानो ।

## अथ लकारार्थप्रक्रियाप्रदर्शकः सप्तदशोऽध्यायः ।



यह वह प्रक्रिया है जिससे वाक्यों में लकारोंका प्रयोग करना दिखाया गया है । सामान्य रीति से वर्तमानकाल द्योतन करने केलिये लट्, और भूतकाल द्योतन करने के लिये लङ् लिट् औरलुङ् और भविष्यकाल द्योतन करने के लिये लुट् और लट् लकार प्रयोग किये जाते हैं निम्न लिखित विशेषनियम यह यह है १ जब लट् लकार के साथ "स्म"का प्रयोग होता है तब भूतकाल द्योतन करता है जैसे स विप्रेभ्यः प्रचुरं धनं ददातिस्म [अदात्]। २"मास" के साथलट् या लुट् लकार तीनों काल द्योतन करते हैं जैसे क्रैव्यं मास्मगमः पार्थ । ३ "मा" के साथ विकल्प से लुङ् लकार का प्रयोग तीनों काल द्योतन करता है जैसे

माभूत् शोकः । ४ यावत्, पुरा अव्ययोंके साथ लट् लकार भविष्यार्थ द्योतन करता है सः पुरागच्छति [अचिराद्गमिष्यतीत्यर्थः] । ५ कदा, कर्हि के योग में लट् लकार विकल्प से भविष्यार्थ द्योतन करता है जैसे कदा कर्हिवा आगच्छामीति नजाने [आगमिष्यामि] ।

६ यदा, यदि अव्ययोंके योग में विधिलिङ् भविष्यार्थ द्योतन करता है जैसे वक्ष्यामि यदास आगच्छेत् [आगमिष्यति] । ७ आशीर्वादार्थ में आशीर्लिङ् वा लोट् लाते हैं जैसे तवसुखं भूयात् भवतुवा । ८ कर्तव्यार्थेदा जहां उपदेश हो या सम्भावनाहो वहां विधिलिङ् लाते हैं जैसे सत्यं वदेत् ९ यदि एक वाक्य में दो क्रिया एक दूसरी परनिर्भरहों तो दोनों क्रिया भविष्यार्थ दिखाने केलिये विधिलिङ् में प्रयोग की जायगी जैसे यदि प्रियं वदेत् सर्वेषा प्रियोभवेत् । १० कर्ता की सामर्थ्य दिखाने के लिये लोट् या विधिलिङ् कोईसा लकार प्रयोग कर सके हैं जैसे भिन्धुमीप शोषयाणि शोषयेयवा । ११ दो भूतकाल जो एक दूसरे पर निर्भरहों और क्रियाकी अनिष्पत्ति [असिद्धि] दिखाते हों वहां लृङ् लकार प्रयोग होता है जैसे यदि सुवृष्टिरभविष्यत्तदासुभिक्षमभविष्यत् । १२ जहां पौनः पुन्य वा अतिशयार्थ द्योतन करना होता है वहां केवल लोट् लकार के मध्यम पुरुष एक वचन बहुवचन के प्रयोग [हि, त, स्व, ध्वम्] तीनों कालों तीनों पुरुषों व तीनों वचनों में किये जाते हैं जैसे पुरीमवस्कन्दलुनीहि नन्दनं मुषाण रत्नानिहरामराङ्गनाः ।

---

## अथ कृत्प्रत्ययप्रदर्शकोऽष्टादशोऽध्यायः ।

---

धातुओं में जिन प्रत्ययों के लगाने से संज्ञादि शब्द बनते हैं वे कृत् प्रत्यय और तदन्त शब्द कृदन्त कहलाते हैं ।

१ निमित्तार्थ [injunctive] बोध कराने के लिये धातु के उत्तर तुमुन् [तुम्] प्रत्यय लगा देते हैं जैसे "जि" जेतुम्, भुज्—भोक्तुम्, दा-दातुम्, गम—गन्तुम्, परन्तु रूप बनाने में यह ध्यान रहे कि सेट धातुओं के बीच में "इ" लग जाता है जैसे भू—भवितुम्, कथ् कथितुम् इत्यादि ।

२ पूर्वकाल बोध [पूर्वकालिक] कराने के लिये अर्थात् जहां एकही कर्ता की दो क्रिया बतलाती हों वहां पूर्व क्रिया के उत्तर "त्वा" प्रत्यय लगा देते हैं परन्तु "नञ समास" छोड़ और कोई उपसर्ग धातु से पहिले आवे तो 'त्वा' 'य' [ल्यप्] में बदल जाता है और जहां अभीक्ष्ण और नित्यवीप्सा दिखाई जाती है वहां पहिली क्रिया में 'त्वा' की जगह 'अम्' [णमुल्] भी होता है क्रम से उदाहरण देखो जैसे दा-दत्त्वा, स्था-स्थित्वा, वच-

उक्त्वा, गम्-गत्वा, नञ् समास जैसे अगत्वा, आ+गम्—आगम्य आगत्य, प्रणम्-प्रणम्य। सेट, अनिट का उपरोक्त ध्यान यहां भी रहना चाहिये जैसे वस्—उषित्वा, शी—शयित्वा इत्यादि। अभीक्ष्ण या नित्य वीप्सार्थ में स्मारंस्मारंनमति शिवं [स्मृत्वास्मृत्वा इत्यर्थः]।

३ धातुओं से भूतकाल बोधन कराने के लिये कर्म तथा भाव अर्थ में 'त' प्रत्यय, और कर्ता अर्थ में 'तवत्' प्रत्यय होता है जैसे रामेण रावणोहतः, त्वयास्नातम्; स्रष्टाविश्वंरचितवान् शॄ-शीर्णः, भिद्-भिन्न, शुष-शुष्कः, पच-पक्वः, धा-हितम् इत्यादि

४ योग्यता अर्थ बोधन करने के लिये और क्रिया का कर्म बतलाने के लिये धातु के उत्तर 'तव्य', 'अनीय' और 'य' प्रत्यय लगाते हैं जैसे ग्रह—ग्रहीतव्यं, ग्रहणीयं, ग्राह्यं धनमेतत्।

५ कर्तृवाच्य प्रयोग में विशेषण [Present particeple] बनाने के लिये परस्मैपदी धातुओं से अत् [शतृ], और आत्मनेपदी धातुओं से 'आन' [शानच्] लगाते हैं इनका लिङ्ग वचन अपने विशेष्यानुसार होता है। यह ध्यान रहे कि इनके रूप धातु के गणानुसार पहिले 'शप्' आदि विकरण लगा कर बनाये जाते हैं और वर्तमान काल द्योतन करते हैं जैसे गम्-गच्छत् [जाता हुआ]; भुज भुञ्जत्-भुञ्जानः; दा-ददत् ददानः; दृश्-पश्यत्, चुर—चोरयत् इत्यादि।

६ कर्तृवाच्य प्रयोग में भूतकाल द्योतन करने वाले विशेषण शब्द Past Participle बनाने के लिये परस्मैपदी धातुओं से वस् (क्वसु) और आत्मनेपदी धातुओं से 'आन' (कानच्) लगाते हैं जैसे श्रु-शुश्रुवस्, भू-बभूवस्, घस्-जक्षिवस्, स्था-तस्थिवस्, गम् जग्मिवस और रच-ररचानः, युध्-युयुधानः, शिक्ष-शिशिक्षाणः इत्यादि। सगानं शुश्रुवान् जगाम।

७ कर्तृवाच्य प्रयोग में भविष्यकाल द्योतन करने के लिये परस्मैपदी धातुओं से 'स्यत्' और आत्मनेपदी धातुओं से 'स्यमान' प्रत्यय लगाकर विशेषण शब्द Future Participle बनाते हैं जैसे गम्-गमिष्यत्, दृश्-द्रक्ष्यत्, स्था-स्थास्यत्, वृत्-वर्तिष्यमाणः, जन्-जनिष्यमाणः, सेव्-सेविष्यमाणः।

८ कर्तृवाच्य प्रयोग में कर्त्रर्थद्योतन करने के लिये धातुओं के उत्तर 'तृ' (तृन्) 'अक' (णक) और 'इन्' (णिन्) प्रत्यय लगाते हैं जैसे दा-दातृ, कृ-कर्तृ, हन्-हन्तृ, नी-नायकः कृ-कारकः, पच-पाचकः, णिन्-वद्-वादिन्, वस्-वासिन्, द्रुह-द्रोहिन्। कहीं २ शील अर्थ में भी 'णिन्' प्रत्यय होता है जैसे त्यक्तुंशीलमस्य स त्यागिन्, भज्-भागिन्, गम्-गामिन्।

९ किसी प्रकार का कार्य अर्थात् धात्वर्थ बनाने के लिये धातु से उत्तर 'अ' (घञ्) 'अ' (अच्) प्रत्यय लगा कर प्रायः पुलिङ्ग संज्ञा बनाते हैं जैसे

घञ्–पच्–पाकः, त्यज्–त्यागः, जापः अच्–जि–जयः, स्तु–स्तवः, भी–भयम् इत्यादि ।

१० किसी प्रकार का कार्य अर्थात् धात्वर्थ करण (ज़रिया) और ओर (तरफ़) द्योतन करने के लिये धातु से उत्तर 'अन' प्रत्यय लगा कर संज्ञा बनाते हैं और ये संज्ञा प्रायः नपुंसक होती हैं जैसे कार्य में–गम्–गमनम्,–भुज्–भोजनम्, करण में नी–नयनम्, श्रु–श्रवणम्, और ओर में शीशायनम्–भू–भवनम् ।

११ कर्म उपपद होने से धातु के उत्तर 'अण्' प्रत्यय लगा कर संज्ञा बनाते हैं जैसे कुम्भं करोतीति कुम्भकारः ।

१२ इच्छार्थक धातु, आङ्पूर्वक शंस, और भिक्ष धातु इनसे 'उ' प्रत्यय होता है जैसे जिगमिषुः, आशंसुः, भिक्षुः ।

१३ भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये धातु के उत्तर 'ति' प्रत्यय लगाते हैं जैसे गम्–गतिः, मन्–मतिः, मुच्–मुक्तिः इत्यादि ।

१४ (अ) जल्प, भिक्ष, कुट्ट, लुण्ट, और वृङ् धातुओं से 'आक' प्रत्यय होता है जैसे जल्पतीतिजल्पाकः, भिक्षाकः, लुण्टाकः, कुट्टाकः, वराकः ।

(ब) हलन्त शब्द प्रायः क्विप् प्रत्ययान्त होते हैं क्योंकि उक्त प्रत्यय लोप होनेसे केवल धातुमात्र सा रूप रहजाता है जैसे वि×भ्राज् [विशेषण भ्राजते इति] विभ्राट्, भाष्–भाः, वि×द्युत्–विद्युत्, प्रच्छ–प्राट्, वच्–वाक्, परि+भ्रज परिभ्राट् ।

(स) करण अर्थ में दा, नी, शस्, यु, युज्, स्तु, तुद्, सि, सिच्, मिह्, पत्, दंश, और नह धातुओं से "त्रन्" प्रत्यय होता है और अर्ति, लू, धू, सू, खन्, सह्, चर, और पू इन धातुओं से "इत्र" प्रत्यय होता है। जैसे दात्यनेनेति दात्रम्, नेत्रम्, शस्त्रम्, योत्रम्, योक्त्रम्, स्तोत्रम्, तोत्त्रम्, सेत्रम्, सेक्त्रम्, मेढ्रम्, पत्रम्, दंष्ट्रा, नध्री; और अरित्रम्, लवित्रम्, धवित्रम्, सवित्रम्, खनित्रम्, सहित्रम्, चरित्रम्, पवित्रम् इत्यादि ।

१५ यज, याच, यत, विच्छ, प्रच्छ, रक्ष इनसे नङ् प्रत्यय और स्वप् धातु से नन् प्रत्यय होता है जैसे यज्ञः, याच्ञा, यत्नः विश्नः (प्रतापः) रक्ष्णः और स्वप्नः ।

गौडान्ववायजातः गोविन्दाङ्घ्रिसरोजषट्पदोऽयम् ।
दुर्गाप्रसादसूनुः सुखानन्दाख्यत्रिपाठीति ॥ १ ॥
रसारसाङ्कभूमिते, हायने मासितु सहस्यनामके ।
उद्यानदि शुक्लचतुर्थ्यां कृत्वा पूर्णमधार्प्पयच्छिवाय ॥ २ ॥

शमस्तु ।

# व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोध की शुद्धाशुद्धपत्रसूची।

| पृष्ठ | का | अशुद्धि. | शुद्धि. | पृष्ठ | का | अशुद्धि. | शुद्धि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | २ | कुक्षि | कुक्षिः | ३३ | ३ | चहुगादर | चमगादर |
| " | ४ | मन्यते | मन्यते * | ३५ | २ | फलयमुत्थाय | फल्य उत्थाय |
| ५ | " | मार्धि | मार्ढि | ३७ | " | समाने | स माने |
| ४ | २ | स्वपति | स्वपिति | ३९ | " | रौतिति | रौतीति |
| ६ | " | क्षालयसि | (क्षालयसि) | ४० | " | श्वाविघ | श्वाविध |
| १० | " | रुक्यरिक्षा | रुक्परीक्षा | ५३ | १ | ५५ रुपये | ६५ रुपये |
| ११ | " | पुरस्कृत्या पण्डितः | पुरस्कृत्या- पण्डितैः | " | २ | पञ्चपञ्चाश- न्मुद्राः | पञ्चषष्ठिमुद्राः |
| " | " | आघापितु | अघापितु | ५९ | " | आधुनिको | आधुनिकाः |
| " | " | शब्दकरोति | शब्दंकरोति | ६६ | " | जम्बुः-बु | जम्बुः-बू |
| १२ | " | पारसिक | पारसीक | " | ४ | मूलिका,काथली | मूलिका |
| १४ | " | श्रुयताम् | श्रूयताम् | ६८ | २ | पार्करा | शर्करा |
| " | ४ | शय्याच्छादःनम् | शय्याच्छादः-नम् | ७० | " | समस्त | समस्तु |
| १५ | " | वयति ते वयति ते | वपति-ते, वयति-ते | ७१ | " | शर्करैरेवा | शर्करयाचैवा |
| " | २ | नयान्यंशुकनि | नवान्यंशुकानि | " | " | लेह्यां | लेह्या. |
| १६ | " | शिरस्त्राणां | शिरस्त्राणम् | " | " | शलाढ्द | शलाडुद |
| " | " | तदन्विष्याना- नयं | तदन्विष्यात्रानय | ७२ | " | पितृस्वसा | पितृष्वसा |
| १७ | " | तूलेन भृत | तूलेन च भृत | " | " | भागिनय | भागिनेयः |
| १९ | " | निर्मापयिता ऽसि | निर्मापयितासि | ७३ | " | पुड्याः | पुड्यः |
| " | " | स्त्रीयो | स्त्रियो | ७६ | ४ | चित्कारः | चीत्कारः |
| २० | " | अपहरत् | अपाहरत् | ७७ | " | पलगण्ड | पलगण्डः |
| २१ | " | अरधट्टः | अरघट्टः | " | " | चर्मप्रभेदिका | चर्म प्रभेदिकाः |
| २३ | " | शृणं | शृणु | ७८ | " | कृपीः | कृपिः |
| २४ | १ | गृहस्थ और वर्तन | गृहस्थ के स्थान और वर्तन (सर्वत्र) | ७९ | " | विनि मे ते | विनिमयते |
| " | ४ | मञ्चः | मञ्चाः | ८० | २ | समापततिति | सम्+आ+पतति |
| २५ | " | गृहस्थानां विशेषाः | गृहस्थानां स्थान विशेषाः (सर्वत्र) | ८१ | " | स्तानात् | स्नानात् |
| २६ | २ | पाकाणला | पाकशाला | ८३ | " | क्षुद्रराजानः | क्षुद्राराजानः |
| | | | | ९१ | ४ | कर्णोरः | कर्णेरः |
| | | | | ९२ | " | द्वो | द्वौ |
| | | | | ९५ | २ | (अमरूद) | अमृतफल |
| | | | | ९६ | " | दन्तशठवृक्षा | दन्तशठवृक्षाः |

* प्रत्येक धातु का गण पद दिखाने के लिये सर्वत्र वर्तमान कालिक रूप दिखाये हैं।

| पृष्ठ | का | अशुद्धि. | शुद्धि. | पृष्ठ | का | अशुद्धि. | शुद्धि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३० | पृ० १५ | रायण् | पयग् | ४५ | प्रे. | भापयते | भीपयते |
| ३१ | पृ० १ | स्पर्स | स्पर्श | ४६ | ५ | घृत्वा | घत्वा |
| ,, | ९ | स | से | ४९ | ४ | अधोष्यत | अधो (धोव) |
| ३२ | २ | है | हैं | ५० | २ | घृयान् | म्रियान् |
| ३३ | नो | प्रणार्थक | प्रेरणार्थक | ,, | ,, | टकना | ढकना |
| ,, | | अष्टमोऽध्याय | अष्टमोऽध्यायः | ५१ | ,, | चम्रीयते | चेम्रीयते |
| ,, | १ | चङ्क्रम्यते | चङ्कन्यते | ,, | ४ | कुन्तेत् | कृन्तेत् |
| ३६ | ४ | विवेप | विवेपे | ,, | १ | भक्ता | भक्त्वा |
| ,, | ५ | दासनम् | शासनम् | ५४ | ,, | तनुयात | तनुयात् |
| ,, | ,, | शास्ता, शास्ति | शासा, शस्ति | ५५ | ४ | जिज्ञासति | जिज्ञासते |
| ३७ | १ | असाहत | असहत | ,, | २ | अलूनात् | अलुनात् |
| ,, | ३ | इं० | सर्वत्र उडादीजे | ५६ | ,, | तोयलन् | तोलयन् |
| ,, | ४ | अप्रात् | अप्रात् | ५९ | | होतेहैं। उभयपदी | उभयपदी होते हैं |
| ४० | १ | ईयाज | इयाज | ६० | | शुभ् और रूच् | भूषार्थमें शुभ् और रुच् |
| ४१ | ,, | नन्देत् | निन्दित् | ,, | | | |
| ,, | ४ | वर्ततात् | वर्तताम् | ६५ | | Pauivo | Passive |
| ,, | ५ | ममीयते | मेमीयते | ,, | | गुणानुसार | गणानुसार |
| ४१ | ४ | अजागरीष्यत् | आजागरिष्यत् | ,, | | अभ्यासाथ | अभ्यासार्थ |
| ४२ | ,, | पीपते | पायते | ,, | | Iatrausitive | Intrausitive |
| ४४ | ,, | दायीत् | शायीत | ,, | | रुथ | रुधा |
| ,, | ५ | गुग्धे | दुग्धे | ६६ | | Injeuetivo | Infiuitive |
| ४५ | ,, | ह्रुच् | भ्रूच् | ६७ | | Parteceple | Particeple |